00042011

Jac
133·5
Gan/Gra
42011

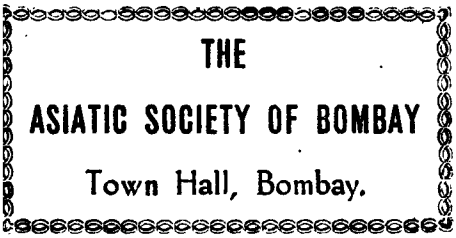

Digitized with financial assistance from
Hemendra Kothari
on 06 November, 2019

॥ श्रीः ॥

श्रीमहामहोपाध्यायगणेशदैवज्ञविरचितं

ग्रहलाघवम् ।

42011

रोहतकप्रदेशान्तर्गत-घेरीग्रामनिवासि-पण्डित-
जियारामशास्त्रिकृतभाषाटीकया
संवलितम् । B1294

आगरानगरनिवासिना पण्डितरामेश्वर-
भट्टशर्मणा संशोधितम् ।

JJ d 51

तच्च

श्रीकृष्णदासात्मज–गंगाविष्णुना
स्वकीये "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" यन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

शके १८२१, संवत् १९५६.

कल्याण–मुंबई.

JJ-d 51

इस पुस्तकका राजिष्टरी सब हक्क १८६७ के ऍक्ट २५ के
बमुजब यन्त्राधिकारीने अपने स्वाधीन रक्खा है.

ROYAL BOMBAY B
JACKSO
MEMORIA
COLLECTIO
ROYAL ASIATIC

00042011

GRAHALAGHAVA

BY

PT. GANESH DAIVAJNA

WITH

HINDI TRANSLATION

BY

PANDIT JIYÁ RÁM SHÁSTRI

CORRECTED

BY

PT. RAMESHWAR BHATT

HEAD PANDIT AGRA COLLEGE.

PRINTED AND PUBLISHED

BY

GANGAVISHNU SHRIKRISHNADASS,

PROPRIETOR "LAXMI-VENKATESHWAR" PRESS

KALYAN-BOMBAY.

1899

(Registered under Act XXV of 1867.)

JAC
133.5
Gan/Goa
42011

भूमिका।

विदित हो कि यह अपूर्व ग्रन्थ ग्रहलाघव आज दिन करण-ग्रन्थोंका शिरोमाणि हो रहा है सिद्धान्त विषयके अनेक ग्रन्थ होनेपरभी ग्रहगणितके जिज्ञासु विद्यार्थी प्रथम इसीका पढना आरंभ करते हैं। इसकी सुगम रीतिपर बडे २ विद्वान् चकित हैं और गणेशदैवज्ञकी विलक्षण और निर्मल बुद्धिकी प्रशंसा करते हैं। गणेशदैवज्ञकी बुद्धि साक्षात् गणेशजीकीसी थी ऐसा कहनाभी अत्युक्ति न होगा जो ग्रहगणित सिद्धान्तशिरोमणिकी रीतिसे करनेमें ज्योतिषी चकराते थे और दस दस बीस बीस अंकोंसे गुणाभाग करतेमें जिन्होंकी बुद्धि चकित हो जाती थी उन्हीं पदार्थोंको सूक्ष्म रीतिसे सिद्ध कर देना कुछ थोडी बात नहीं है। जिन पदार्थोंकी आंग्लवासी अनेक गणितकी परीक्षा पास करकेभी लाभ नहीं कर सक्ते यहांके छोटे २ विद्यार्थी ग्रहलाघव पढकर उनके मुख मोडते हैं। जिन पदार्थोंको भास्कराचार्य आदिने ज्या और चापके द्वारा कठिनतापूर्वक सिद्ध कर अहंकाररूपी पर्वतके शिखरपर स्थित अपनेको माना है उन्हीं पदार्थोंको विना ज्या, चाप सिद्ध कर देना यह गणेशदैवज्ञकी निर्मल बुद्धिका उदाहरण है।

गणेशदैवज्ञकी बुद्धिकी विलक्षणता पढकर बहुतसे विद्यार्थियोंके चित्तमें इस बातके सुननेकीभी उत्कंठा होगी कि गणेशदैवज्ञ कौन थे कहांके निवासी थे अतएव जो कुछ उनके जीवनवृत्तान्तका निदर्शन मात्र है सो इस ग्रंथके अंतिम श्लोकमें दिया है कि गणेशदैवज्ञ पश्चिम समुद्रस्थ नन्दिग्रामके निवासी थे इनका कौशिक गोत्र था और इनके पिताका नाम केशव दैवज्ञ था गणेशदैवज्ञका

जन्म किस संवत्में हुआ सो केवल इस संकेतसे कि इस पुस्तकमें अहर्गण निकालनेमें १४४२ शाकः लिखा है इससे ऐसा अनुभव हो सक्ता है कि गणेशदैवज्ञका जन्म शक १४४२ से १५।२० वर्ष पहिले हुआ होगा और कुछ पता नहीं चलता सो, पता कहांसे चले ऐसे बहुतही थोडे कवीश्वर हैं कि जिन्होंने पूर्णरूपसे अपना जीवनवृत्तान्त लिखा हो और जब किसी योग्य और विख्यात मनुष्यका जीवनवृत्तान्त नहीं मिलता है तो चित्त बडा व्याकुलीभूत होता है ग्रहलाघवकी कई संस्कृत टीका हैं परंतु उनमें मल्लारीटीका बहुतसी पाई जाती है और ग्रहलाघवका उदाहरण तथा सारिणीभी जहां तहां छप गई हैं परंतु जो कुछ है सब गुरुकी पूर्ण कृपापरही निर्भर है विद्यार्थीको सुगमता कुछभी नहीं ऐसी दशा देखकर परोपकारी दयावान् गुणग्राहक सेठजी गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासजीने विद्यार्थियोंके लाभके लिये सोदाहरण ग्रहलाघवकी भाषाटीकाको श्रीमद्विविधशास्त्रपरमपण्डित और अनेक ग्रन्थोंके भाषानुवादक पण्डित रविदत्त शास्त्रीजीके पुत्र पण्डित जियालाल शास्त्रीजीसे बनवाकर छापना चाहा और छापनेके पूर्व अपने यंत्रालयके नियमानुसार मेरे पासभी पर्य्यालोचनके लिये भेज दी । मैंने इसे आद्योपान्त देखी और शास्त्रीजीने जो इसके भाषान्तरमें सुगमता की है उससे विद्यार्थियोंके लिये बहुतही उपकार कर दिया है अतएव उनको जितना धन्यवाद दिया जाय थोडा है ।

अब ज्योतिषियोंसे प्रार्थना है कि वे इस भाषाको देख इसकी अवज्ञा प्रकट न करें क्योंकि जो स्वयं ज्ञाता हैं उनके लिये यह परिश्रम नहीं है यह केवल इसलिये है कि विद्यार्थीको गुरुसे वारंवार पूंछना न पडे और गुरुको वारंवार बतानेका कष्ट न उठाना पडे और जिस शहरमें गुरु विद्यमान हैं वहां तो शिष्य जाकर वार २ अपने संशयको दूर कर सक्ता है परन्तु जो विद्यार्थी प्रदे-

शसे पढकर अपने स्थानपर लौट जाते हैं और फिर जब कोई कठिनता उनको आ पडती है तो उनका चित्त बडाही व्यग्र होता है अतएव ऐसे समयमें इस भाषाटीकासे यदि कुछभी उपकार हो जाय तो इससे बढकर और क्या बात है ।

अब अन्तमें सेठजी महाशयको अनेक धन्यवाद दिया जाता है कि जो इस समयमें अनेक दुर्लभ ग्रन्थ छाप २ कर देशोपकार कर रहे हैं और दानमानसे पण्डितोंको संतुष्ट करते हैं । परमेश्वर इनको सकुटुम्ब चिरायु करे और इनकी अतुल कीर्ति देशदेशान्तरोंमें होवे ।

रामेश्वरभट्ट
प्रथमसंस्कृताध्यापक,
आगरा कालेज.

॥ श्रीः ॥

अथ ग्रहलाघवस्य विषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठ.	श्लो.
मध्यमग्रहसाधनाधिकारः १ ।		
इष्टदेवताको नमस्काररूप मङ्गलाचरण	१	१
ग्रन्थरचना करनेकी आवश्यकता	५	३
अहर्गण जाननेकी रीति.	५	४
सूर्यादि ग्रहोंके ध्रुवाङ्क....	१२	६
सूर्यादिकोंके क्षेपक	१३	८
अहर्गणसे मध्यम ग्रहकी रीति....	१४	९
मध्यम रविकी रीति	१६	१०
मध्यमचंद्रकी रीति	१७	१०
चंद्रोच्चकी रीति	१८	११
मध्यम राहुकी रीति	१९	११
मध्यम मङ्गलकी रीति....	२०	१२
बुधकेन्द्रकी रीति	२०	१२
मध्यमगुरुकी रीति	२१	१३
केन्द्रशुक्रकी रीति	२२	१३
मध्यम शनिकी रीति....	२३	१४
सूर्यादिकोंकी मध्यम गति.	२४	१४
कौन ग्रह किस ग्रन्थके अनुसार वेधसे मिलता है यह विषय.	२५	१६
रविचंद्रस्पष्टीकरणाधिकारः २ ।		
भुज, कोटि, पद, सूर्यमन्दोच्च, केन्द्र और रविमन्दफलकी रीति	२७	१७
पलभा और चरखंडकी रीति	२९	१९
चर बनानेकी रीति	३०	२०
चरसंस्कार भुज फलसंस्कार और अयनांशकी रीति	३१	२१
स्पष्ट चन्द्रकी रीति	३२	२२
चंद्रगतिका प्रकार	३५	२३
रवि और चंद्रकी गतिके स्पष्टीकरण	३७	२४
तिथि, करण, नक्षत्र और योगकी रीति	३७	२५
पञ्चतारास्पष्टीकरणाधिकारः ३ ।		
मङ्गलादि पंचग्रहोंके शीघ्रांक.	४१	१
शीघ्रफल साधनेकी रीति.	४४	६
भौमादि पंच ग्रहोंके मन्दांक.	४५	७
ग्रहोंके मंद केन्द्र बनानेकी रीति	४६	८
भौमादि ग्रहोंके मन्द फलकी रीति	४७	९
शीघ्र फल और मन्द फलका संस्कारविचार	४८	१०
मन्द स्पष्ट गति साधनकी रीति	५६	११
भौमादि ग्रहोंकी स्पष्ट गतिकी रीति	५७	१२
शुक्र और मङ्गलका विशेष स्पष्टीकरण	६०	१३

विषय.	पृष्ठ.	श्लो.
भौम, बुध और शुक्रके गतिका विशेष संस्कार	६१	१४
भौमादिकोंका वक्री और मार्गी होना	६२	१५
मङ्गल गुरु और शनिके उदय अस्तके शीघ्र केन्द्रांश	६३	१६
बुध और शुक्रके उदयास्तके शीघ्रकेन्द्रांश	६३	१७
भौमादिकोंकी वक्र गति उदय अस्त सरल गतिके दिनकी रीति	६४	१८
बुध और शुक्रकी वक्रगति उदय अस्त और मार्गी होनेके दिन....	६५	१९
मंगल, गुरु और शनिके वक्री भवन, उदय, अस्त और मार्गी होनेके दिन....	६६	२०
त्रिप्रश्नाधिकारः ४ ।		
लङ्कोदयका निरूपण....	६९	१
लग्नसाधनकी रीति	६९	२
भोग्यकालसे कम इष्ट कालके लग्न साधनकी रीति....	७२	४
लग्नसे इष्टकालसाधन	७३	४
लग्न और सूर्य एक राशिमें हों तो लग्नसे इष्टकाल साधन और रात्रि लग्न साधनकी रीति	७३	५
गोलसंज्ञा, अयनसंज्ञा दिनार्ध-ज्ञान रात्र्यर्धज्ञान तथा अंशज्ञान	७५	६
नतकाल और उन्नतकालकी रीति	७७	७
अक्षकर्णकी रीति	७७	७
हार साधनकी रीति	७८	८
इष्टकर्ण और इष्ट च्छायाकी रीति	७९	९
इष्टच्छायासे कर्ण और नत कालकी रीति	८१	१०
क्रान्तिसाधनकी रीति	८३	११
क्रान्तिसाधनकी दूसरी री.	८५	१२
स्थूलक्रान्तिसाधनकी रीति.	८६	१३
स्थूलक्रान्तिसे भुजांश साधन	८७	१४
नतांश, उन्नतांश और पराख्य-की रीति	८९	१६
उन्नत कालसे अभीष्ट कर्णकी रीति	९२	१६
इष्टकर्णसे उन्नतकालकी रीति	९२	१७
उन्नतकालसे यंत्रजोन्नतांश-की रीति....	९३	१८
यंत्रजोन्नतांशसे उन्नत-कालकी रीति	९४	१९
यंत्रजोन्नतांशसे इष्टकर्णकी रीति	९५	२०
दिक्साधनकी रीति	९६	२१
दिक्साधनकी दूसरी रीति और भुजसाधनकी रीति.	९७	२२
दिगंशसाधनकी रीति....	९८	२३
दिगंशोंसे दिक्साधनकी रीति	१००	२४
भुज और कोटीकी रीति.	१००	२५

विषय.	पृष्ठ.	श्लो.
नलिकाबन्धकी रीति	१०९	२६
चन्द्रग्रहणाधिकारः ५।		
ग्रहोंके चालनकी रीति.	१०६	१
ग्रहणसम्भव और चन्द्रशरकी रीति	१०८	२
सूर्यबिम्ब चन्द्रबिम्ब तथा भूभाबिम्बसाधन	१०९	३
मानैक्यखंड और ग्राससाधन	११०	४
ग्रहणमर्दस्थिति तथा खग्रास मर्दस्थिति	१११	५
स्पर्श मोक्ष स्पर्शमर्द मोक्षमर्दकी रीति	११२	६
मध्यग्रहणके स्पर्श मोक्ष संमीलन तथा उन्मीलन कालकी रीति	११३	७
इष्टकालीन ग्रास साधनकी रीति	११४	८
अयनवलनसाधनकी रीति	११५	९
अक्षवलनसाधनकी रीति	११६	१०
ग्रासांघ्रि और खग्रासांघ्रिकी रीति	११९	११
ग्रहणमध्यकी दिशा जाननेकी रीति	१२०	११
स्पर्श और मोक्षकी दिशाका ज्ञान	१२०	१२
सूर्यग्रहणाधिकारः ६।		
हार लम्बन और लम्बनसंस्कृत तिथिकी रीति	१२२	१
लम्बन संस्कृत व्यग्वर्क और चन्द्रशरकी रीति	१२४	३
नति और स्पष्टशरकी रीति.	१२५	४
स्पर्शलम्बन मोक्षलम्बन स्पर्श और मोक्षकी रीति	१२७	५
संमीलन उन्मीलन तथा बर्ण जाननेकी रीति	१२९	६
इष्टकालीन ग्राससाधनकी रीति	१३०	७
ग्रहणद्वयसाधनाधिकारः ७।		
चमत्कारिक मासगणसे ग्रहणकी रीति	१३१	१
क्षेपकाङ्क कथन	१३२	२
सूर्यादि ग्रहोंके ध्रुवाङ्क	१३३	३
मध्यम रविसाधनेकी रीति	१३३	४
व्यगु साधनकी रीति	१३३	४
रविका ध्रुवोनक्षेपक व्यगुं वृत्त और वारादिके ध्रुव युक्तकी रीति	१३५	५
वृत्तसाधनकी रीति	१३५	५
वारादि साधनकी रीति	१३५	५
मासगणपरसे सूर्य आदिकोंका ध्रुव आदिका संस्कार.	१३७	६
पक्षचालनकी रीति	१३८	७
षाण्मासिक चालन	१३८	८
वारादि रवि और वृत्तसाधनकी रीति	१३९	९
वृत्तफल और रविमन्दकेन्द्र फलकी रीति	१४०	१०

विषय.	पृष्ठ.	श्लो.
हारसाधनकी रीति	१४२	११
स्पष्टतिथि साधनकी रीति.	१४२	१२
रवि और व्यगु इनके स्पष्ट करनेकी रीति	१४४	१३
चन्द्रबिम्बसाधनकी रीति.	१४४	१३
सूर्यबिम्ब और भूभाबिम्बकी रीति	१४५	१४
ग्रहणासम्भवकथन	१४६	१५
चन्द्रग्रासकी रीति	१४७	१६
सूर्यग्रासकी रीति	१४९	१७
ग्रहणके स्वामी जाननेकी रीति	१४९	१८
स्पष्ट चन्द्र और चन्द्रकी स्पष्टगति	१५०	१९
पञ्चांगादू ग्रहणद्वयसाधनाधिकारः ८।		
पञ्चाङ्गसे ग्रहणके गणितकी रीति	१५४	१
चन्द्रग्रास लानेकी रीति.	१५५	२
चन्द्रबिम्ब और भूभाबिम्बकी रीति	१५६	३
भूभाके संस्कारकी रीति.	१५६	४
नक्षत्रकी घटिकाओंसे चन्द्रग्रासकी रीति	१५७	५
नक्षत्रसे चन्द्रबिम्ब और भूभाबिम्बसाधन	१५८	६
तिथि और नक्षत्रकी घटिकाओंसे सूर्यग्राससाधन.	१५९	७
सूर्यबिम्बसाधन	१६०	८
अस्तोदयाधिकारः ९।		
शुक्ल प्रतिपदाके चन्द्रोदयकी रीति	१६२	१
मासगणसे गुरुका अस्त	१६५	४
शुक्रके अस्तउदयकी रीति.	१६८	५
शुक्रका पश्चिम दिशामें अस्त और पूर्वमें उदय बनानेका प्रकार	१६९	६
शुक्र और गुरुका उदयास्तके सामान्य नियम	१७०	७
चन्द्रशर साधनकी रीति.	१७१	८
चन्द्रके सूक्ष्मशरकी रीति.	१७२	९
ग्रहके उदयास्तके ज्ञान.	१७३	१०
ग्रहोंके उदयास्तका कालांश	१७३	११
भौमादि ग्रहोंके पातांशकी रीति	१७४	१२
भौम आदि ग्रहोंके शीघ्रकर्णकी रीति	१७४	१३
भौमादि ग्रहोंके शर और स्पष्टक्रांतिकी रीति	१७६	१४
पञ्चांगमें स्थित स्पष्ट ग्रह और वक्रास्तादि दिनोंसे इष्ट दिनके विषै मन्दस्पष्ट ग्रहकी रीति	१८०	१५
दृक्कर्म साधनके निमित्त नतांश	१८१	१६
दृक्कर्म बनानेका प्रकार	१८२	१७
ग्रहका उदयास्त दिननिमित्त		

विषय.	पृष्ठ.	श्लो.
गतगम्य लक्षण	१८३	१८
दिन लानेकी रीति	१८५	१९
शुक्र और चन्द्रमाके कालांशोंके संस्कार	१८६	२०
अगस्त्यके उदय और अस्तका रीति	१८७	२१
ग्रहके नित्यउदयास्तकी रीति	१८८	२२
गात्रके समय ग्रहके उदय और अस्तकी गतघाटकाकी रीति	१८९	२३
चन्द्रमाके स्पष्टोदयास्तकालका रीति	१९०	२४
ग्रहच्छायाधिकारः १०।		
अभीष्ट ग्रहके दिनगतकाल साधनकी रीति	१९१	१
ग्रहका दिनमान जाननेकी रीति	१९३	२
वेधसे ग्रहच्छायासाधनकी रीति	१९४	३
ग्रहकी च्छायासे दिनगतकालसाधनकी रीति	१९५	४
ग्रहके उदयमें दिनशेषरात्रिगतकाल साधन	१९५	५
सूर्यास्तसे रात्रिगतकालकी रीति	१९६	६
नक्षत्रच्छायाधिकारः ११।		
नक्षत्रोंके उदयध्रुव और अस्तध्रुव दो साधनकी रीति	१९७	१
नक्षत्रोंके शरभाग	१९९	३
प्रजापति आदिके ध्रुवांश	२०१	४
प्रजापति आदिके शरभाग	२०१	५
नक्षत्रच्छायादि साधनकी रीति	२०२	६
ग्रहोंका रोहिणीशकटभेद और उसका फल	२०३	७
चन्द्रमाका रोहिणीशकटको भेदनेका काल	२०३	८
याम्योत्तरवृत्तस्थ नक्षत्रसे तत्काल लग्न और गत रात्रिका रीति	२०४	९
नक्षत्रकी उदयलग्न और अस्त लग्न तथा तिन दोनोंसे रात्रिगतकालकी रीति	२०५	१०
स्वदेशीय नक्षत्रोंदयोंके स्थिरलग्न	२०६	११
शृंगोन्नत्यधिकारः १२।		
चन्द्रमाकी शृङ्गोन्नतिका काल	२०७	१
गत एष्य सावयव तिथि और पञ्चांगस्थ रविसे चन्द्र साधनेकी रीति	२०८	२
बलन और सित इन दोनोंकी रीति	२०८	३
चन्द्रका शृंगोन्नकी रीति	२१०	४
ग्रहयुत्यधिकारः १३।		
ग्रहबिम्बसाधनकी रीति	२११	१
युतिके गतगम्यकी रीति	२१३	२

विषय.	पृष्ठ.	श्लो.
ग्रहयुतिके दिन जाननेकी रीति	....	२१४–३
ग्रहोंका दक्षिणोत्तर दिशामें संस्थान और उनके अन्तर.	२१५	–४
पाताधिकारः १४ ।		
पातकालका अनुमान करनेकी रीति	....	२१८–१
स्पष्टपातके संभवलक्षण और असंभवलक्षण	२२१	–२
पात संशयको भेदन करनेकी रीति	....	२२१–३
पातके गतगम्यलक्षणकी रीति	....	२२३–५
शरखण्ड और शरसाधनकी रीति	....	२२४–६
शरको स्पष्ट करनेकी रीति.	२२५	–७
क्रान्त्यङ्क कहते हैं	२२६	–८
क्रान्त्यङ्क और शरांकका संस्कार	....	२२७–९
पातमध्यकाल साधनकी रीति	....	२२९–११
पातस्थितिकालसाधनकी रीति	....	२३०–१३
सूर्यसे चन्द्रज्ञानकी रीति.	२३१	–१४
पञ्चाङ्गचन्द्रग्रहणानयनाधिकारः १५ ।		
तिथिसाधन	....	२३२–१
नक्षत्र ध्रुवकके साधनकी रीति	....	२३३–२
पिण्डसाधनकी रीति		२३४–३
सूर्यनक्षत्रसे फलघटिकाकी रीति	....	२३५–४
सूर्यनक्षत्रकी साधनकी रीति	२३५	–५
पिण्डफल	....	२३६–६
तिथि स्पष्ट करनेकी रीति.	२३८	–७
नक्षत्रसाधनकी रीति	२३८	–८
योगसाधनकी रीति	२४०	–९
पूर्णान्तकालमें राहुसाधनकी रीति	....	२४०–१०
सूर्यसाधन और ग्रहणसंभवकी रीति	....	२४१–११
ग्रासमान जाननेकी रीति.	२४२	–१२
चन्द्रबिंब और भूभासाधन	२४३	–१३
प्रतिमासमें वारादिका चालन	....	२४४–१४
पूर्वशकादहर्गणाद्यानयनाधिकारः १६ ।		
यदि शाक १४४२ वर्षोंसे पहिलेका होय तब अहर्गण लानेकी रीति		२४५–१
ग्रहसाधनकी रीति		२४६–३
पूर्व आचार्योंका गर्व और ग्रन्थकर्ताकी नम्रता		२४७–४
ग्रन्थकर्ताके नामादि कथन.	२४८	–५

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

अन्वयभाषाटीकासहितः

ग्रहलाघवः।

श्रीमद्गुरून् गणेशं च प्रणम्य शिरसा मुदा ॥
श्रीग्रहलाघवस्यादौ भाषाटीका प्रतन्यते ॥ १ ॥

भाषा—काशिकराजकीय संस्कृतपाठशालीय ज्योतिषशास्त्र-प्रधानाध्यापक श्रीयुत महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदीका शिष्य मैं श्रीयुत गुरुजी और गणेशजीको आनंदपूर्वक शिरसे प्रणाम कर ग्रहलाघव ग्रंथकी भाषाटीका रचता हूं ॥ १ ॥

ज्योतिःप्रबोधजननी परिशोध्य चित्तं तत्सूक्तकर्म्म-चरणैर्गहनार्थपूर्णा। स्वल्पाक्षरापि च तदंशकृतैरुपायैर्व्यक्तीकृता जयति केशववाक्छ्रुतिश्च ॥ १ ॥

अन्वयः—श्रुतिः सर्वोत्कर्षेण वर्तते कथंभूता श्रुतिः केशववाक् (केशवस्य विष्णोः वाक् वाणी) पुनः कथंभूता तत्सूक्तकर्मचरणैः (तस्यां श्रुतौ सु उक्तानि प्रतिपादितानि यानि सन्ध्यास्नानजप्होमयज्ञादीनि कर्माणि तेषां चरणैः अनुष्ठानैः) चित्तं संशोध्य ज्योतिःप्रबोधजननी (ज्योतिषः परब्रह्मणः प्रबोधं ज्ञानं जनयतीति) पुनः कथंभूता गहनार्थपूर्णा (गहनश्चासौ अर्थः गम्भीरार्थः तेन पूर्णा) पु० कं० भू० स्वल्पाक्षरा (स्वल्पानि अक्षराणि यस्यां सा) पु० क० भू० तदंशकृतैः (तस्य परमेश्वरस्य ये अंशाः रावणादयः तैः कृतैः) उपायैः (भाष्यादिभिः) व्यक्तीकृता ॥१॥

भाषा—श्रुति अर्थात् वेद सब शास्त्रोंका शिरोमणि है वेद कैसा है कि केशव कहिये विष्णुभगवान्की वाणी है अर्थात् उनके मुखसे निकला है (यस्य निश्वसितं वेदा इति प्रमाणं) फिर

कैसा वेद है कि वेदमें कहे हुए जो (संध्या स्नान दान जप होम यज्ञादि) कर्म हैं उन्होंके द्वारा चित्तको शुद्ध करके (मायामें लिपटे हुए देहात्ममानी जीवको परब्रह्मके ज्ञानको उत्पन्न कराता है (अर्थात् यह देह नष्ट होनेवाला है आत्मा नित्यव्यापक निराकार है इत्यादि ज्ञान वेदके द्वारा जो श्रवण मनन निदिध्यासन आदि हैं उनसेही होता है) फिर कैसा है कि गंभीर अर्थसे परिपूर्ण है (कदाचित् कहो कि गंभीर अर्थसे पूर्ण है तौ अक्षर बहुत होंगे तहां कहते हैं कि) स्वल्पाक्षरा अर्थात् उसमें थोडे अक्षर हैं (जो कहो कि गंभीर अर्थसे पूर्ण है और अक्षर थोडे हैं तो वेदका अर्थज्ञान कैसे होगा और जब अर्थज्ञानही न होगा तो उसमें कहे हुए कर्मोंके अनुष्ठान कैसे होंगे तहां कहते हैं कि) 'तदंशकृतैः' अर्थात् उस परमेश्वरके अंश जो रावणादि हैं उन्होंके बनाये हुए जो उपाय कहिये भाष्यादि हैं उनसे स्पष्ट किया गया है अर्थात् रावणादि भाष्य देखनेसे वेदकथित आचरण अच्छे प्रकार स्पष्ट हो जाते हैं ॥ १ ॥

अब इसी श्लोकको गणेश दैवज्ञके पिता जो केशव दैवज्ञ थे उनकी वाणीमें लगाते हैं ।

अन्वयः-केशववाक् सर्वोत्कर्षेण वर्तते कथंभूता केशवस्य वाक् श्रुतिः (श्रुतिसमाना) पु० क० भू० कर्मचरणैः (तस्यां केशवदैवज्ञवाचि सूक्तानि सुष्ठु उक्तानि यानि ग्रहसाधनानि कर्माणि तैः) चित्तं परिशोध्य ज्योतिःप्रबोधजननी (ज्योतिषां ग्रहनक्षत्रादीनां प्रबोधं ज्ञानं जनयतीति) पु० क० भू० ग्रहनार्थपूर्णा पु० क० भू० स्वल्पाक्षरा पु० क० भू० तदंशकृतैः (तस्य केशवदैवज्ञस्य अंशाः शिष्याः तै कृतैः) उपायैः (टीकाद्यैः तैः) व्यक्तीकृता ॥ १ ॥

भाषा-केशव दैवज्ञकी वाणी सर्वोपरि वर्तमान है वह वाणी कैसी है कि श्रुति जो वेद तिसके समान है अर्थात् जैसे वेदकथित सब कार्य सत्य हैं ऐसेही केशव दैवज्ञकथित ग्रहणादिकी गणित सत्य है, फिर कैसी है कि केशव दैवज्ञकी उस वाणीमें अच्छे

प्रकारसे कहे हुए जो ग्रहसाधन आदि कर्म हैं उनसे चित्तको शुद्ध करके ग्रहनक्षत्रादिकोंके ज्ञानको उत्पन्न करानेवाली है फिर कैसी है कि गंभीर अर्थसे पूर्ण है फिर कैसी है कि उसमें थोडे अक्षर हैं फिर कैसी है कि केशव दैवज्ञके शिष्योंकरके बनाई हुई टीकासे सब स्पष्ट कर दी गई है ॥ १ ॥

परिभग्नसमौर्विकेशचापं दृढगुणहारलसत्सुवृत्तबाहुम् ।
सुफलप्रदमात्तनृप्रभं तत्स्मर रामं करणं च विष्णुरूपम्२

अन्वयः-(हे शिष्य!) रामं स्मर कथंभूतं रामं परिभग्नसमौर्विकेशचापम् (परिभग्नं कृतशकलं मौर्विकया जीवया सह ईशस्य शिवस्य चापं धनुर्येन स तं) पु० क० भू० दृढगुणहारलसत्सुवृत्तबाहुं (दृढाः गुणाः रज्जवो यस्मिन् स चासौ हारस्तेन लसत् शोभमानं सुतरां वृत्तौ वर्तुलौ बाहू यस्य स तं) पु० क० भू० सुफलप्रदं (सुष्ठु फलं मोक्षादि तत् प्रकर्षेण ददातीति) पु० क० भू० आत्तनृप्रभं (आत्ता अंगीकृता नुः मनुष्यस्य प्रभा येन स तं मनुष्यदेहधारिणमिति यावत्) पु० क० भू० विष्णुरूपम् ॥२॥

भाषा-हे शिष्य! रामचन्द्रजीका स्मरण कर। कैसे राम है कि जिन्होंने प्रत्यंचासहित शिवजीका धनुष तोडा है फिर कैसे हैं कि दृढ डोरोंमें पुहे हुए मोतियोंके हारोंसे जिनके गोल २ भुजदंड शोभायमान हैं फिर मोक्षआदि सुन्दर फलको देनेवाले हैं फिर कैसे हैं कि जिन्होंने मनुष्यका शरीर धारण किया है पुनि कैसे हैं कि साक्षात् विष्णुस्वरूप हैं ॥ २ ॥

अब इसी श्लोकको करणग्रन्थमें लगाते हैं ।

अन्वयः-हे गणक ! करणं स्मर कथंभूतं करणं परिभग्नसमौर्विकेशचापम् (मौर्विकया जीविया सह वर्तमानं समौर्विकम् परिभग्नं समौर्विकं ईशं ग्रहकर्तव्यतायां समर्थं चापं धनुः यस्मिन् तत् अस्मिन्करणे धनुर्ज्येन कृत इत्यर्थः) पु० क० भू० दृढगुणहारलसत्सुवृत्तबाहुम् (दृढाः अपवर्तिता गुणाः हाराः तैर्लसत् सुष्ठु वृत्तबाहू यस्मिन् तत् अस्मिन् ग्रन्थे वृत्तं साधितमस्ति तत्तु चन्द्रमन्दकेन्द्रं बाहुः भुजः प्रसिद्धः) पु० क० भू० सुफलप्रदम् (सुफलं ग्रहणादिज्ञानरूपं फलं प्रददाति) पु० क० भू० आत्तनृप्रभम्

(आत्ता नुः शंकोः प्रभा छाया यस्मिन् तत् अत्र शंकुच्छायासाधनमपि कृतमस्तीत्यर्थः) पु० क० भू० रामं (नानाछन्दोभिः मनोरमं) ॥ २ ॥

भाषा-हे ज्योतिषी ! करणग्रंथका स्मरण करो । कैसा करण ग्रंथ है कि ज्या करके युक्त और ग्रहकर्त्तव्यतामें समर्थ ऐसे चाप-को जिसमें त्याग दिया अर्थात् इस ग्रन्थमें ज्या और चापसे कुछ काम नहीं लिया है और फिर कैसा है कि छोटे गुणे भागसे जिसमें वृत्त चन्द्र मन्द केन्द्र और बाहु कहिये भुज बनाये हैं । फिर कैसा है कि सुन्दर फलका देनेवाला है अर्थात् मन्दफल शीघ्रफल आदि जिसमें हैं अथवा सुन्दरफल कहिये चन्द्रग्रहण सूर्यग्रहण तारोंका उदयास्त इनके ज्ञानका फल देनेवाला है फिर कैसा जिसमें नुः कहिये शंकुकी छाया ग्रहण करी है फिर कैसा है कि रामं अर्थात् अनेक प्रकारके छन्दोंसे सुन्दर है ॥ २ ॥

अब पूर्वके आचार्य भास्कर आदिकृत सिद्धान्तशिरोमणीसे इसकी विशेषता प्रकट करते हुए इस ग्रन्थके आरंभका प्रयोजन कहते हैं । क्योंकि प्रयोजन कहे विना ग्रन्थ पढनेमें रुचि नहीं होती है जैसा कहा है कि-सिद्धिः श्रोतृप्रवृत्तीनां संबन्धकथनाद्यतः । तस्मात् सर्वेषु शास्त्रेषु संबन्धः पूर्वमुच्यते ॥ १ ॥ किमेवात्राभि-धेयं स्यादिति पृष्टस्तु केनचित् । यदि न प्रोच्यते तस्मै फलशून्यं तु तद्भवेत् ॥ २ ॥ पूर्वस्यैव हि शास्त्रस्य कर्मणो वापि कस्यचित् । यावत्प्रयोजनं नोक्तं तावत्केन न गृह्यते ॥ ३ ॥ अर्थात् संबन्ध कह देनेसे कि यह ग्रन्थ इस विषयका है तो श्रोताओंकी प्रवृत्ति उसमें हो जाती है ॥ १ ॥ यदि कोई पूछे कि इस पुस्तकका नाम क्या है और जो कुछ न कहे तो उसका फल शून्य हो जाता है ॥ २ ॥ और सब शास्त्र अथवा हर किसी कामकीभी यही दशा है कि जबतक प्रयोजन नहीं कहा जायगा तबतक उसको कोई ग्रहण नहीं करेगा । अतएव इस ग्रन्थके बनानेका प्रयोजन कहते हैं ॥ ३ ॥

यद्यप्यकार्षुरुरवः करणानि धीरास्तेषु ज्यकाधनुरपास्य न सिद्धिरस्मात्। ज्याचापकर्म्मरहितं सुलघुप्रकारं कर्तुं ग्रहप्रकरणं स्फुटमुद्यतोऽस्मि ॥ ३ ॥

अन्वयः-अहं गणेशदैवज्ञः ग्रहप्रकरणं (ग्रहाः ग्रहसंबंधीनि ग्रहणोदयास्तादीनि कर्माणि प्रक्रियन्ते साध्यन्ते यस्मिन् तत्) कर्तुं उद्यतः अस्मि (कस्मात् हेतोः) यद्यपि उरवः (महान्तः) धीराः (गर्गाद्या ऋषयः भास्कराचार्याः) करणानि अकार्षुः (परं) तेषु ज्यकाधनुः (जीवाधनुषी) अपास्य (त्यक्त्वा) सिद्धिः (न भवति) अस्मात् कथंभूतं ग्रहप्रकरणं ज्याचापकर्मरहितं पु०क०भू० सुलघुप्रकारं पु०क०भू०स्फुटम् ॥३॥

भाषा-मैं गणेश दैवज्ञ ग्रहसंबन्धी ग्रहण उदयास्त कर्मयुक्त ग्रहप्रकरणको बनानेके लिये उद्यत हूं। क्यों बनाता हूं कि यद्यपि बडे २ पण्डित गर्गादिऋषि भास्कराचार्य लोगोंने करणग्रंथ बनाये हैं परन्तु उनमें ज्या और धनुको छोडकर ग्रहादिकी सिद्धि नहीं होती इसलिये बनाता हूं। कैसा यह ग्रन्थ है कि इसमें ज्या और चाप इनके कार्यको छोडकर सब काम किया है फिर कैसा है कि इसमें छोटी २ सुगम रीतियां हैं फिर कैसा है कि स्पष्ट अर्थ करके युक्त है ॥ ३ ॥

प्रथम अहर्गण जाननेका प्रकार कहते हैं।

द्व्यब्धीन्द्रोनितशक ईशहृत्फलं स्याच्चक्राख्यं रविहृतशेषकं तु युक्तम्। चैत्राद्यैः पृथगमुतः सहग्रचक्रादिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ ४ ॥ खत्रिघ्नं गततिथियुङ्निरग्रचक्रांगांशाढ्यं पृथगमुतोऽब्धिषट्कलब्धैः। ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्वै वारः स्याच्छरहतचक्रयुग्गणोज्जात् ॥ ५ ॥

अन्वयः-द्व्यब्धीन्द्रोनितशकः ईशहृत् (कार्य्यः), फलम् चक्राख्यम् स्यात्। रविहृतशेषकम् तु चैत्राद्यैः युक्तम् पृथक् (स्थाप्यम्),

सद्गग्नचक्रात् दिग्युक्तात् अमुतः अमरफलाधिमासयुक्तम् खत्रिघ्नम् गततिथियुक् निरग्रचक्रांगांशाढ्यम् पृथक् (स्थाप्यम्), अमुतः अब्धिषट्कलब्धैः ऊनाहैः वियुतम् अहर्गणः भवेत् । वै गणः शरहत-चक्रयुक् अब्जात् वारः स्यात् ॥ ४ ॥ ५ ॥

भाषा-वर्तमान शाकेमें १४४२को घटानेसे गत वर्षोंका समूह होता है फिर उसमें एकादशका भाग देनेसे जो फल मिले उसे चक्र कहते हैं और जो शेष बचे उसे १२ से गुणा करे फिर उसमें चैत्रसे इष्टकालपर्यन्त जितने मास हों उनको जोड देवे (यह मध्यममास गण कहाता है) इसको दो स्थानोंमें स्थापित करे एक जगह चक्रको दो गुणा करके उसमें जोड दे और फिर दशयुत करे फिर उसमें ३३ का भाग देनेसे जो फल मिले वह अधिकमास होता है, इसको दूसरे स्थानमें धरे हुए मध्यममासगणमें युत करनेसे महीनोंका समूह होता है इस माससमूहको ३० से गुणा करे और गुणन फलमें युक्त पक्षकी प्रतिपदासे जितनी गततिथि इष्टकालतक हों उन्हें युक्त कर चक्रका छटा भाग युत करे (यह मध्यम अहर्गण होता है) फिर इस मध्यम अहर्गणको दो स्थानोंमें धरे एक जगह इसमें ६४ का भाग देनेसे क्षय दिन मिलते हैं इनको दूसरी जगह धरे हुए मध्यम अहर्गणमें घटानेसे अहर्गण अर्थात् सावन दिनोंका समूह होता है ॥

अब वार निकालनेकी रीति लिखते हैं ।

अहर्गणमें चक्रको पांच गुणा करके जोड दे और सातका भाग देनेसे जो शेष बचे वह सोमवारसे आदि लेकर वार होता है अर्थात् शून्य बचे तौ सोमवार एक बचे तो मंगलवार इत्यादि और जो वार एक शून्य अथवा अधिक मिलें तो उस अहर्गणमें वारके लिये एक युत करे अथवा ऊन करे ऐसा करनेसे अहर्गण स्पष्ट होता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

उदाहरण।

महाराज विक्रमके संवत् १६६९ में और शके शालिवाहन १५३४ में वैशाख शुक्ल पूर्णिमा सोमवार ५४ घटी १० पल है विशाखा नक्षत्र ३९ घटी ५५ पल है और वरीयान् योग ८० घटी ९ पल है उस दिन चन्द्रग्रहण देखनेके लिये अहर्गण साधन करते हैं॥

शाके १५३४ में १४४२ को घटाया तो वर्षोंका समूह ९२ हुआ इसमें ११ का भाग दिया तो फलचक्र ८ मिला फिर शेष ४ को १२ से गुण दिया तो ४८ हुए इसमें चैत्रसे एक गतमास है इसलिये एक जोडा तो ४९ हुए (यह मध्यममास गण हुआ) इसको दो जगह स्थापन किया एक जगह तो इसमें द्विगुणित चक्र १६ जोडा तो ६५ हुए फिर इसमें १० और युत करे तो ७५ हुए फिर इसमें ३३ का भाग दिया तो फल अधिमास २ मिला इसको दूसरी जगह धरे हुए ४९ में युत किया तो मास गण ५१ मिला इसको ३० से गुण दिया तो १५३० हुए फिर इसमें गत-तिथि १४ जोडी तौ १५४४ हुए इसमें चक्र ८ का छटा भाग जोड दिया तो १५४५ (मध्यम अहर्गण हुआ) इसको दो स्थानोंमें धरा एक जगह इसमें ६४ का भाग दिया तो फल (क्षय दिन) २४ मिले इनको दूसरी जगह धरे हुए मध्यम अहर्गण १५४५ में घटाया तो सावन अहर्गण १५२१ हुआ॥

वार निकालनेका उदाहरण।

चक्र ८ को ५ गुणा किया तो ४० हुए इनको अहर्गण १५२१ में जोडा तो १५६१ हुए इनमें ७ का भाग दिया तो शून्य बचा और सोमवार मिला यही इष्टवार है॥

अहर्गण निकालनेकी सूक्ष्म रीति।

१५३४ वर्तमान शाकेमेंसे
१४४२ पुस्तक शकाको घटाया

भाग११) ९२ (८ चक्र मिला
८८

४ वर्ष रहे
१२ से गुणाकर मास करे

४८ हुए
१ गतमास जोडा

४९ हुए (मध्यममासगण)

५१ मासगण
३० से गुणाकर दिन किये

१५३० तिथि हुई
१४ गततिथि जोडीं

१५४४ तिथि समूह भया
१ चक्र ८ का षष्ठांश जोडा

६४) १५४५ (२४ क्षय दिन
१५३६ घटाये

९ जाने दो

फिर १५४५ मध्यम अहर्गणमें
२४ क्षयदिन घटाये

१५२१ यह अहर्गण हुआ ॥

४९ म. मा. गण दूसरी जगह चक्र८×२=१६ जोडे [धरा

६५ हुए
१० और जोडे

३३)७५(भाग दिया
६६ घटाये

९ बचे जाने दो

२ गत अधिकमास मिले

४९ प्र. म. मा. ग. जोडे

५१ मासगण हुआ

फिर १५२१ अहर्गणमें
चक्र८×५=४० जोडे

७)१५६१(२२३ लब्ध जाने दो
१५६१

० शून्य रहा

इस कारण सोमवार हुआ और अहर्गणोत्पन्न तथा इष्ट वार दोनों मिल गये ॥

अब विशेषरीति लिखते हैं।

जो अहर्गणमें इष्टवार न मिले तो उसको लानेके लिये अहर्गणमें एक युत अथवा ऊन करना चाहिये। जिस काल वर्षोंके समूहमें ११ का भाग देनेसे चक्र मिलता है और शेष शून्य हो तो उस काल अहर्गणसे उत्पन्न हुए वारमें दो वारोंका अंतर पडता है इसलिये उसका उदाहरण लिखते हैं ॥

शके १५७४ में चैत्र शुक्ल १ रविवारके दिन अहर्गण साधन किया। उस दिन चक्र १२ है शेष शून्य है इस परसे अहर्गण ३२ मिला और वार भौम आया और अभीष्ट रविवार है ऐसे स्थलमें २ युत अथवा ऊन करना योग्य है ॥

१५७४ वतमान शकामें
१४४२ गतशका घटाया

भाग ११)१३२(१२ चक्र
१३२
०

० गतमास
० मध्यमास गणजोडा

चक्र १२×२=२४ जोडे
१० जोडे

भाग ३३)३४(१गत अधिकमास
३३
१ शेषको जाने दो ॥

१ गत अधिमास है
३०से गुणाकर तिथि करीं

३० तिथि समूह
० गत तिथि जोडी

३०

चक्रका१२÷६=२ चक्रषष्ठांश जोडा

३२ मध्यम अहर्गण हुआ अब यहां ६४ का भाग नहीं लगता जो क्षयदिन आते और मध्यम अहर्गणमेंसे घटाते इससे ३२ ही अहर्गण हुआ अब
३२ अहर्गण है

चक्र१२×५=६० जोडे

भाग ७)९२(१३लब्ध जाने दो
९१
१ शेष रहा इस लिये भौम आया और अभीष्ट रवि है ऐसे समय दो घटाना वा बढाना चाहिये।

जिस वर्षमें अधिकमास पडता है वहांभी अन्य-विशेष कहते हैं।

अहर्गणके बनानेमें अधिक माससे पहिले महीनोंमें पहिले वर्ष-के अधिमासकी अपेक्षासे जो अधिक अधिमास मिले वह ग्रहण करना योग्य नहीं है किंतु पहिले वर्षके समान अधिमास ग्रहण करना चाहिये ॥

शाके १५५५ चैत्रशुक्ला १ शुक्रवारके दिन अहर्गण साधते हैं इसमें वैशाख अधिकमास है ॥

उदाहरण ।

शाके १५५५ में १४४२ को घटाया तो ११३ हुए इनमें ११ का भाग दिया तो चक्र १० मिला शेष ३ रहे फिर इसको १२ से गुणा किया तौ ३६ हुए इसमें चैत्र आदि गतमास शून्य युत किया तौ ३६ ही हुए इनको दो स्थानोंमें धरा एक जगह इनमें द्विगुणित चक्र २० जोडा तौ ५६ हुए फिर १० जोडे तौ ६६ हुए इनमें ३३ का भाग दिया तौ अधिमास २ मिले यहां वैशाखसे पहिले अधिमास मिला सो यह ग्रहण करना योग्य नहीं है किन्तु एक ऊन ग्रहण करना योग्य है इसलिये एकको दूसरी जगह धरे हुए ३६ में जोडा तो ३७ हुए इसको ३० से गुणा किया तौ १११० हुए इनमें गत तिथि शून्य जोडी तौ १११० ही हुए फिर इनमें चक्र १० का छटाभाग १ जोडा तौ ११११ मध्यम अहर्गण हुआ इसको दो जगह धरा एक जगह इसमें ६४ का भाग दिया तौ क्षय दिन १७ मिले फिर इसको दूसरी जगह धरे हुए १११९ में ऊन किया तौ अहर्गण १०९४ मिला । यहां इष्ट वारके लिये अहर्गण-में एक जोड दिया तौ शुक्रवारके दिन अहर्गण १०९५ हुआ और जो गत अधिमास परसे अहर्गण बनावे तौ ११२४ यह अहर्गण मिलता है फिर यहां इष्ट वारके लिये अहर्गणमें एक ऊन करते हैं तौ ११२३ यह अहर्गण अशुद्ध है क्योंकि इसपरसे बनाये हुए ग्रह अशुद्ध होते हैं इसलिये स्पष्ट अधिमाससे पहिले लब्ध हुआभी

अधिमास ग्रहण नहीं करना चाहिये और स्पष्ट अधिमाससे उपरांत महीनोंमें अहर्गणके लानेमें जो अधिक मास नहीं मिलै तौभी ग्रहण करना चाहिये ॥

दूसरा उदाहरण ।

संवत् १६६५ शाके १५३० में भाद्रपद अधिक मास है और कार्तिक शुक्ल १ शनिवारके दिन अहर्गण साधन करते हैं ॥

शाके १५३० में १४४२ को घटाया तो ८८ हुए इनमें ११ का भाग दिया तो चक्र ८ मिला शेष शून्यको १२ से गुणा किया तो शून्यही हुए इसमें गतमास ७ जोडे तो सातही हुए इसे दो जगह धरा एक जगह इसमें द्विगुणित चक्र १६ जोडा तो २३ हुए फिर इनमें १० और जोडे तो ३३ हुए इनमें ३३ का भाग दिया तो एक अधिमास मिला (यहां अधिमास नहीं मिलता तौभी ग्रहण करना) ऐसा करनेसे अधिमास २ हुए इनको दूसरी जगह धरे हुए ७ में जोडा तो ९ हुए इनको ३० से गुणा किया नो २७० हुए इनमें गत तिथि शून्य जोडी तो २७० ही हुए फिर इनमें चक्र ८ का छटा भाग एक जोडा तौ २७१ हुए इनको दो जगह धरा एक जगह ६४ का भाग दिया तो ४ मिले इनको दूसरी जगह धरे हुए २७१ में घटाया तो २६७ हुए यह अहर्गण मिला फिर इसमें अभीष्ट वारके लिये एक घटाया तो शनिके दिन अहर्गण २६६ हुआ और पहिले आया हुआ अधिमास एक था उससे अहर्गण बनानेमें २३८ अहर्गण मिलता है सो यह अशुद्ध है क्योंकि इससे स्पष्ट किये हुए ग्रह अशुद्ध होते हैं। स्पष्ट अधिमासके उपरांत अहर्गण साधन करनेमें जो अधिमास न मिले तोभी एक अधिमास लेना चाहिये जैसा सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है " स्पष्टोधिमासः पतितोप्यलब्धो यदा यदा वा पतितोपि लब्धः। सैकैर्निरेकैः क्रमशोधिमासैस्तदा दिनौघः सुधिया प्रसाध्यः ॥ " ॥

अब सूर्यादि ग्रहोंके ध्रुवांक कहते हैं।

खविधुतानभवास्तरणेर्ध्रुवः खमनला रसवार्द्धय ईश्वराः। सितरुचो भमुखोथ खगा यमौ शरकृता गदितो विधुतुङ्गजः॥६॥ शैला द्वौ खशरा अगोः क्षितिभुवो भूतत्वदन्ता विदः केन्द्रस्याब्धिगुणोडवः सुरगुरोः खं षड्यमा वस्विलाः। द्राक्केंद्रस्य भृगोः कुशक्रयमला राश्यादिकोऽथो शनेः शैलाः पञ्चभुवो यमाब्धय इमेऽथ क्षेपकः कथ्यते ॥७॥

अन्वयः-तरणेः (सूर्यस्य) खविधुतानभवाः ध्रुवः (भवति)। सितरुचः (चन्द्रस्य) खम् अनला रसवार्द्धयः ईश्वराः (ध्रुवः भवति)। अथ खगाः यमौ शरकृताः विधुतुंगजः (ध्रुवः) गदितः। शैलाः द्वौ खशराः अगोः (ध्रुवः भवति), भूतत्वदन्ताः क्षितिभुवः (ध्रुवः भवति)। अब्धिगुणोडवः केन्द्रस्य विदः (ध्रुवः भवति)। खम् षड्यमाः वस्विलाः सुरगुरोः (ध्रुवः भवति)। कुशक्रयमलाः द्राक्केन्द्रस्य भृगोः (ध्रुवः भवति)। अथ शैलाः पञ्चभुवः यमाब्धयः इमे शनेः राश्यादिकः (ध्रुवः भवति)। अथ क्षेपकः कथ्यते ॥ ६ ॥ ७ ॥

भाषा-ख अर्थात् शून्य, विधु कहिये १, तान ४९ और भव ११ यह सूर्यका राश्यादि ध्रुवा है। ख ० अनल ३ रसवार्द्धय ४६ ईश्वर ११ यह चन्द्रमाका ध्रुवा है। खग ९ यम २ शरकृत ४५ यह चन्द्रमाके मन्दोच्चका ध्रुवा है। शैल ७ द्वौ २ खशर ५० यह राहुका ध्रुवा है। भू १ तत्व २५ दन्त ३२ यह मंगलका ध्रुवा है। अब्धि ४ गुण ३ उडु २७ यह बुधके केन्द्रका ध्रुवा है। ख ० षड्यम २६ वस्विला १८ यह बृहस्पतिका ध्रुवा है। कु १ शक्र १४ यमल २ यह शुक्र केन्द्रका ध्रुवा है। शैल ७ पंचभू १५ यमाब्धि ४२ यह शनिका ध्रुवा है॥ ६ ॥७॥

ग्रहोंके ध्रुवांकोंका यन्त्र.									
ग्रहनाम	सू.	चं.	चं.उ.	रा.	मौ.	बु.केंद्र	गुरु.	शु.केंद्र	श.
राशि.	०	०	९	७	१	४	०	१	७
अंश.	०१	०३	०२	०२	२५	०३	२६	१४	१५
कला.	४९	४६	४५	५०	३२	२७	१८	०२	४२
विकला.	११	११	०	०	०	०	०	०	०

अब सूर्यादि ग्रहोंके क्षेपक कहते हैं।

रुद्रा गोब्जाः कुवेदास्तपन इह विधौ शूलिनो गोभुवः षट् तुङ्गेक्षात्यष्टिदेवास्तमसि खमुडवोऽष्टाग्नयोऽथो महीजे। दिक्छैलाष्टौ ज्ञकेन्द्रे विभकलनवभं पूजितेऽद्र्यश्विभूपाः शौक्रे केन्द्रे ग्रहाद्योऽद्रिनखनव शनौ गोतिथिस्वर्गतुल्यः ॥ ८ ॥

अन्वयः–रुद्राः गोब्जाः कुवेदाः तपने ग्रहाद्यः (क्षेपकः स्यात्)। शूलिनः गोभुवः षट् इह विधौ (क्षेपकः भवति)। अक्षात्यष्टिदेवाः तुंगे (क्षेपकः भवति)। खम् उडवः अष्टाग्नयः तमसि (क्षेपकः भवति)। अथो दिक्छैलाष्टौ महीजे (क्षेपकः भवति)। विभकलनवभम् ज्ञकेन्द्रे (क्षेपकः भवति)। अद्र्यश्विभूपाः पूजिते (क्षेपकः भवति)। अद्रिनखनव शौक्रे केन्द्रे (क्षेपकः भवति)। गोतिथिस्वर्गतुल्यः शनौ (क्षेपकः भवति) ॥ ८ ॥

भाषा–रुद्र ११ गोब्ज १९ कुवेद ४१ यह राशि आदि सूर्यका क्षेपक है। शूलिनः ११ गोभुवः १९ षट् ६ यह चन्द्रमाका क्षेपक है। अक्ष ५ अत्यष्टय १७ देव ३३ यह चंद्रके मंदोच्चका क्षेपक है। ख ० उडु २७ अष्टाग्नय ३८ यह राहुका क्षेपक है। दिक् १० शैल

७ अष्ट ८ यह भौमका क्षेपक है। "विभवकलनभम्" वि कहिये नहीं है भकल कहिये २७कला जिनमें ऐसे ९ अर्थात् ८।२९।३३ यह बुधके शीघ्र केंद्रका क्षेपक है। अद्रि ७ अश्विनौ २ भूप १६ यह गुरुका क्षेपक है। अद्रि ७ नख २० नव ९ यह शुक्रके शीघ्र केंद्रका क्षेपक है। गो ९ तिथि १५ स्वर्ग २१ यह शनिका क्षेपक है॥ ८॥

ग्रहोंके क्षेपकांकोंका स्पष्ट यन्त्र.

ग्रहनाम.	सू.	चं.	चं. उ.	राहु	भौ	बु. कें.	गु.	शु. कें.	श.
राशि.	११	११	५	०	१०	८	७	७	९
अंश.	१९	१९	१७	२७	०७	२९	०२	२०	१५
कला.	४१	०६	३३	३८	०८	३३	१६	०९	२१
विकला.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अब अहर्गणसे मध्यम ग्रह बनानेका प्रकार लिखते हैं।

दिनगणभवखेटश्चक्रनिघ्नध्रुवोनो दिवसकृदुदये स्वक्षेपयुङ् मध्यमः स्यात्। निजनिजपुररेखान्तःस्थिताद्योजनौघाद्रसलवमितलिप्ताः स्वर्णमिन्दौ परे प्राक्॥९॥

अन्वयः-चक्रनिघ्नध्रुवोनः स्वक्षेपयुक् दिनगणभवखेटः दिवसकृदुदये मध्यमः स्यात्। निजनिजपुररेखान्तःस्थितात् योजनौघात् रसलवमितलिप्ताः परे प्राक् इन्दौ स्वर्णम् (भवति)॥ ९॥

भाषा-अहर्गणसे ग्रह बनानेकी रीति जो आगे कहेंगे उसके अनुसार अहर्गणसे बनाये हुए ग्रहमें चक्रसे गुणा किये हुए ध्रुवेको

१ ऊपर जो कहा कि अहर्गणोत्पन्न ग्रहमें चक्रसे गुणित ध्रुवेको घटा दे और शेषमें क्षेपक जोड दे सो इसकी ध्रुवोन क्षेपक संज्ञा जानो। इसका उदाहरण देते हैं।

उदाहरण-रविका ध्रुवांक ०।०१।४९।११ राश्यादि है इसको चक्र ८ से गुणा किया तो ०।१४।३३।२८ राश्यादि हुआ इसे सूर्यके क्षेपक ११।१९।४१।०० में घटा

घटावे और जो शेष बचे उसमें अपना क्षेपक युक्त कर दे फिर जो अंक हो वह सूर्यके उदयमें मध्यम ग्रह होता है अर्थात् लंकामें मध्यम सूर्यके पासके उदयमें मध्यम ग्रह हो जाता है। यथा "दशशिरःपुरमध्यमभास्करे क्षितिजसन्निधिगे सति मध्यमः॥"

और अपने २ नगरसे अर्थात् ग्रह स्पष्ट करनेवाले ज्योतिषीका नगर मध्यरेखासे जितने योजन हो उस योजनकी संख्यामें ६ का

दिया तो ११।०५।०७।३२ यह सूर्यका राश्यादि ध्रुवोन क्षेपक हुआ इसे अहर्गणोत्पन्न रवि १।२९।०६।१० में जोडा तो मध्यम सूर्य १।०४।१३।४२ हुआ। इसी प्रकार विद्यार्थियोंकी सुगमताके लिये संपूर्ण ग्रहोंका ध्रुवोन क्षेपक स्पष्ट रीतिसे चक्रमें लिखे देते हैं कि जिसमें अहर्गणोत्पन्न ग्रहमें जोड देनेसे शीघ्र मध्यम ग्रह हो जाय और वार २ चक्रसे गुणा करने और क्षेपकक जोडनेका तारतम्य दूर हो। अब यहां कदाचित् कोई विद्यार्थी यह शंका करे कि चक्रसे गुणित ध्रुवेको तो अहर्गणोत्पन्न ग्रहमें घटाना चाहिये था और क्षेपक जोडना था यहां चक्र गुणित ध्रुवेको क्षेपकमेंसे क्यों घटाया इसका समाधान यह है कि जो चक्रसे गुणित ध्रुवको अहर्गणोत्पन्न ग्रहमें घटाते और क्षेपक जोडते तोभी वही आता कि जो अब आया है क्योंकि रविका ध्रुवांक ०।०१।४९।११ है इसको चक्र ८ से गुणा किया तो ०।१४।३३।२८ हुआ इसे आगे स्पष्ट किये अहर्गणोत्पन्न सूर्य १।२९।०६।१० में घटाया तो १।१४।३२।४२ रहे इसमें क्षेपक ११।१९।४१।०० जोडा तो मध्यम सूर्य १।०४।१३।४२ हुआ॥

ध्रुवोनक्षेपकचक्रम्.

ग्रहनाम.	सू.	चं.	चं.उ.	रा.	मं.	बु.केंद्र	गुरु.	शु.केंद्र	श.
राशि.	११	१०	४	४	७	०	०	७	९
अंश.	०५	१८	२५	०४	१२	०१	०१	२७	०९
कला.	०७	५६	३३	५८	५२	५७	५२	५३	४५
विकला.	३२	३२	००	००	००	००	००	००	००

१ मध्यरेखाका स्थान जो भास्कराचार्यने अपने ग्रंथ सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है उसे कहते हैं। यथा "यल्लङ्कोज्जयिनीपुरीपरिकुरुक्षेत्रादिदेशान् स्पृशत् सूत्रं मेरुगतं

भाग देनेसे जो फल कलादि मिले उसे जो अपना नगर मध्य-रेखासे पश्चिम हो तो धन और पूर्व हो तो ऋण जानना चाहिये। (इसको रेखांतर संस्कार और प्रथम फल संस्कार कहते हैं) ॥९॥

मध्यम सूर्य लानेकी रीति लिखते हैं।

स्वखनगलवहीनो ध्रुवजोर्कज्ञशुक्राः खतिथिहृतगणोनो लिप्तिकास्वंशकाद्याः ॥

अन्वयः-स्वखनगलवहीनः ध्रुवजः लिप्तिकासु खतिथिहृतगणोनः (कार्य्यः तदा) अंशकाद्याः अर्कज्ञशुक्राः (स्युः) ॥

भाषा-अहर्गणमें ७० का भाग देनेसे जो अंशादि लब्ध हो उसे अहर्गणमें घटावे जो बचे उसकी कलादिमें अहर्गणमें १५० का भाग देनेसे जो कलादि फल मिले उस कलादिको ऊन करनेसे अंशादि अहर्गणोत्पन्न सूर्य बुध शुक्र होते हैं और अंशोंमें ३० का भाग देनेसे लब्धि राशि मिलती है फिर उसमें चक्रसे गुणित अपने ध्रुवेको ऊन करे और उसमें क्षेपकको जोड दे और राशिमें १२ का भाग देनेसे भगण मिलते हैं उनको छोड दे इस प्रकार मध्यम सूर्य बुध शुक्र बनते हैं ॥

उदाहरण।

अहर्गण १५२१ में ७० का भाग दिया तो २१ अंश मिले शेष ५१ रहे इसको ६० से गुणा किया तो ३०६० हुए फिर इनमें ७० का भाग देनेसे अंशोंके नीचेकी कला अर्थात् ४३ घटी मिली फिर शेष ५० को ६० से गुणा दिया तो ३००० हुए इनमें ७० का भाग देनेसे कलाओंके नीचे विकला अर्थात् ४२ पल मिले ऐसे अंश कला विकला २१।४३।४२ मिले फिर इन्होंको अहर्गण १५२१ में ऊन किया तो अंश कला विकलात्मक १४।९९।१६।१८ बचे। फिर इनकी कलादि १६।१८ में अहर्गण १५।२१ में १५०

बुधैर्निगदिता सा मध्यरेखा भुव इति ॥" अर्थात् लंका उज्जयिनीपुरी कुरुक्षेत्र इन देशोंको स्पर्श करता हुआ सूत्र जो सुमेरुपर गया है वह पृथ्वीकी मध्यरेखा है।

का भाग दिया तौ १० कला मिलीं बचे २१ उसको ६० गुणा किया और १५० का भाग दिया तौ ८ विकला मिलीं अर्थात् १०–८ कलादि मिलीं फिर इनको घडियोंमें ऊन किया तौ अंशादि १४।९९।६।१० हुए फिर (अंशोंमें ३० का भाग देनेसे शेष अंश रहते हैं लब्धि राशि मिलती है और जो राशि १२ से अधिक हो तो उसमें १२ का भाग दे शेष राशि रहती हैं) इसलिये यहां १४९९ अंशोंमें ३० का भाग दिया तो २९ अंश शेष बच रहे और ४९ लब्ध राशि हुई यह १२ से अधिक है इसलिये १२ का भाग दिया शेष १ बचा लब्ध ४ को त्याग दिया अतएव ऐसा करनेसे यहां राशि आदि १।२९।०६।१० हुए यह अहर्गण से उत्पन्न सूर्य भया। फिर इस सूर्यके ध्रुवे ०।१।४९।११ को चक्र ८ से गुणा दिया तौ ०।१४।३३।२८ हुए इसको अहर्गणोत्पन्न ग्रह १।२९।६।१० में घटाया तौ १।१४।३२।४२ हुए फिर इसमें सूर्यके क्षेपक ११।१९।४१।०० को युत किया तौ मध्यम सूर्य १।०४।१३।४२ हुआ। इसी प्रकार मध्यम बुध शुक्रभी अपना २ ध्रुव घटाने और क्षेपक जोडनेसे स्पष्ट होते हैं॥

अब मध्यमचन्द्रमा स्पष्टका प्रकार कहते हैं।

गणमनुहृतिरिन्दुः स्वाद्रिभूभागहीनः स्वमनुहृत-
गणोनो लिप्तिकास्वंशपूर्वः॥ १०॥

अन्वयः–गणमनुहृतिः स्वाद्रिभूभागहीनः लिप्तिकासु स्वमनुहृतगणोनः (कार्य्यः) (तदा) अंशपूर्वः इन्दुः (भवति) ॥ १० ॥

भाषा–अहर्गणको १४ से गुणा करे (इनको अंशादि मानना) फिर इसमें अहर्गणके १७ वें भागको अर्थात् अहर्गणमें १७ का भाग देनेसे जो फल मिले उसको हीन करना फिर अहर्गणके १४० वें भागको कलादिमें घटानेसे अंशादि अहर्गणोत्पन्न चंद्र होता है। फिर १२ का भाग देकर राशि करना फिर उसमें चक्रसे गुणे हुए ध्रुवेको घटाकर क्षेपकको जोडनेसे मध्यमचंद्र स्पष्ट होता है॥ १०॥

उदाहरण ।

अहर्गण १५२१ को १४ से गुणा किया तो अंशात्मक २१२९४ हुए इनको दो जगह धरा एक जगह इसमें १७ का भाग देनेसे अंश आदि १२५२।३५।१७ मिले इनको १४ से गुणा किये अहर्गणमें ऊन किया तो अंशादि चंद्रमा २००४१।२४।४३ हुआ फिर अहर्गण १५२१ में १४० का भाग देनेसे कलादि १०।५१ मिले इनको चन्द्रमाके कलादिमें घटाया तो २००४१।१३।५२ हुए फिर अंशोंमें ३० का भाग देनेसे शेष अंश रहे और राशिके अंकोंमें १२ का भाग देनेसे राशि अंश घटी पलादि अहर्गणोत्पन्न चन्द्रमा ८।०१।१३।५२ हुआ। फिर इस चन्द्रमाके ध्रुवे ०।०३।४६।११ को चक्र ८ से गुणा दिया तो १।०।०९।२८ हुए इनको अहर्गणोत्पन्न चन्द्रमामें हीन किया तो ७।०१।४।२४ हुए इनमें चन्द्रमाके क्षेपक ११।१९।०६।० को जोडनेसे मध्यम चन्द्रमा ६।२०।१०।२४ हुआ ॥

अब चन्द्रोच्चसाधनका प्रकार कहते हैं।

नवहृतदिनसंघश्चन्द्रतुङ्गं लवाद्यं भवति खनगभक्तद्युजत्रोपेतलिप्तम् ॥

अन्वयः-नवहृतदिनसंघः खनगभक्तद्युत्रजोपेतलिप्तं लवाद्यं चन्द्रतुङ्गं (भवति) ॥

भाषा-अहर्गणमें ९ का भाग देनेसे जो अंशादि मिले उसकी कलादिमें, अहर्गणमें ७० का भाग देनेसे जो कलादि लब्ध हो उसे युत करे यह अंशादि चन्द्रोच्च होता है ॥

उदाहरण ।

अहर्गण १५२१ में ९ का भाग दिया तो लब्धि अंशादि १६९।००।०० मिले फिर अहर्गण १५२१ में ७० का भाग देनेसे लब्धि कला आदि २१।४३ मिली इनको कलादिमें जोड दिया तो १६९।२१।४३ हुए फिर अंशोंमें ३० का भाग देनेसे राशि

आदि ५।१९।२१।४३ हुए यह अहर्गणोत्पन्न चन्द्रमाका उच्च हुआ इसमें चन्द्रमाके उच्चके ध्रुवे ९।०२।४५।०० को चक्र ८ से गुणा दिया तौ ०।२२।००।०० भये इसको अहर्गणोत्पन्न चन्द्रमाके उच्च ५।१९।२१।४३ में ऊन किया तो ४।२७।२१।४३ रहे इसमें चन्द्रमाके उच्चका क्षेपक ५।१७।३३।०० जोडा तो चन्द्रमाका मन्दोच्च मध्यम १०।१४।५४।४३ हुआ ॥

अब मध्यम राहुके बनानेका प्रकार लिखते हैं ।

नवकुभिरिषुवेदैर्घस्रसंघाद्विधाप्तात्फललवकलिकै-
क्यं स्यादगुश्चक्रशुद्धः ॥ ११ ॥

अन्वयः–नवकुभिः इषुवेदैः द्विधा घस्रसंघात् आप्तात् फललवकलिकैक्यं चक्रशुद्धः अगुः स्यात् ॥ ११ ॥

भाषा–अहर्गणको दो जगह लिखे एक जगह १९ का भाग दे (यहां अंश आवेंगे) और दूसरी जगह ४५ का भाग दे (यहां कलादि आवेंगी) फिर दोनों जगह जो अंशादि मिलें उन्हें जोड दे फिर उसको १२ में घटावे तौ अंशादि अहर्गणोत्पन्न राहु होता है॥११॥

उदाहरण।

अहर्गण १५२१ को दो स्थानोंमें लिखा एक जगह १९ का भाग देनेसे अंशादि ८०।०३।०९ मिले फिर दूसरी जगह ४५ का भाग देनेसे कलादि ३३।४८ मिलीं इन दोनोंका योग किया तो ८०।३६।५७ हुए इनमें ३० का भाग देनेसे राशि आदि २।२०।३६।५७ हुए इनको १२ राशिमें घटाया तो अहर्गणोत्पन्न राहु ९।०९।२३।०३ हुआ। फिर राहुके ध्रुवे ७।०२।५०।०० को चक्र ८ से गुणा दिया तो ८।२२।४०।० हुए इसको अहर्गणोत्पन्न राहु ९।०९।२३।०३ मेंसे घटाया तो ०।१६।४३।०३ हुए इसमें राहुके क्षेपक ०।२७।३८।०० को जोडनेसे मध्यम राहु १।१४।२१।०३ हुआ ॥

अब मध्यम मंगल लानेकी रीति कहते हैं।

दिग्घ्नो द्विधा दिनगणोंककुभिस्त्रिशैलैर्भक्तः फलां-शककलाविवरं कुजः स्यात्।

अन्वयः-दिग्घ्नः दिनगणः द्विधा अंककुभिः त्रिशैलैः भक्तः (कार्य्यः), (ततः) फलांशककलाविवरं कुजः (स्यात्) ॥

भाषा-अहर्गणको १० से गुणा करके २ जगह स्थापित करे एक जगह १९ का भाग देनेसे जो लब्धि मिले वे अंश हैं और दूसरी जगह ७३ का भाग देनेसे कलादि मिलेंगी इन दोनों लब्धियोंका अंतर करनेसे अहर्गणोत्पन्न मंगल होता है ॥

उदाहरण।

अहर्गण १५२१ को १० से गुणा किया तो १५२१० हुए इनको २ जगह धरा एक जगह १९ का भाग देनेसे अंशादि ८००।३१।३४ मिले और दूसरी जगह ७३ का भाग दिया तो कलादि २०८। २१ मिले इन दोनोंका अंतर किया तो ७९७। ०३। १३ हुए इनको पहिली रीतिसे राशि आदि करीं तो अहर्ग-णोत्पन्न मंगल २। १७। ०३। १३ हुआ फिर मंगलके ध्रुवे १। २५। ३२ को चक्र ८ से गुणा दिया तो २। २४। १६ हुए इनको अहर्गणोत्पन्न मंगलकी राशि आदि २। १७। ०३। १३ में हीन किया तो ११। २२। ४७। १३ हुए इनमें मंगल-के क्षेपक १०। ०७। ०८। ०० को जोड देनेसे मध्यम मंगल ९। २९। ५५। १३ हुआ ॥

बुधके केन्द्रके लानेका प्रकार कहते हैं।

त्रिघ्नो गणः स्ववसुदृग्लवयुग्ज्ञशीघ्रकेन्द्रं लवाद्य-हिगुणाष्टगणोनलिप्तम् ॥ १२ ॥

अन्वयः-त्रिघ्नः गणः स्ववसुदृग्लवयुक् अहिगुणाष्टगणोनलिप्तं लवादि ज्ञशीघ्रकेन्द्रं (स्यात्) ॥ १२ ॥

भाषा–अहर्गणको तीनसे गुणा कर दो जगह स्थापित करे एक जगह उसमें २८ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसको दूसरी जगह तीनसे गुणा किये भये अहर्गणमें जोड दे फिर अहर्गणमें ३८ का भाग देनेसे जो कला आदि फल मिले उसे कलादिमें हीन करनेसे अहर्गणोत्पन्न बुधका शीघ्र केन्द्र होता है फिर पूर्वोक्त रीतिसे मध्यम बुधका शीघ्र केन्द्र कर लेना चाहिये॥ १२॥

उदाहरण।

अहर्गण १५२१ को तीनसे गुणा किया तो ४५६३ हुए इनको दो जगह धरा एक जगह २८ का भाग दिया तो लब्ध अंशादि १६२। ५७। ५१ मिले फिर इसमें तीनसे गुणा किया हुआ अहर्गण ४५६३ को जोड दिया तो ४७२५। ५७। ५१ भये फिर अहर्गण १५२१ में ३८ का भाग देनेसे लब्धि कलादि ४०। ०१ इसको पहिलेके ४७२५। ५७। ५१ के कलादिमें हीन किया तो ४७२५। १७। ५० हुए फिर इसको पहिली रीतिसे ३० का भाग देकर राशि आदि किया तो १। १५। १७। ५० अहर्गणोत्पन्न बुध केन्द्र भया। अब बुध केन्द्रके ध्रुवे ४। ०३। २७। ०० को चक्र ८ से गुणा किया तो ८। २७। ३६ हुए फिर इसको अहर्गणोत्पन्न बुध केन्द्रकी राशि आदि १। १५। १७। ५० में घटाया तो ४। १७। ४१। ५० हुए फिर इसमें बुध केन्द्रके क्षेपक ८। २९। ३३। ०० को जोडा तौ बुधका शीघ्र केन्द्र १। १७। १४। ५० मिला॥

अब मध्यम गुरुके साधनका प्रकार कहते हैं।

द्युपिण्डोर्कभक्तो लवाद्यो गुरुः स्याद्द्युपिण्डात्स्वशैलाप्तलिप्ताविहीनः।

अन्वयः–अर्कभक्तः द्युपिण्डः द्युपिण्डात् स्वशैलाप्तलिप्ताविहीनः लवाद्यः गुरुः स्यात्॥

भाषा-अहर्गणमें १२ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसकी कलादिमें अहर्गणमें ७० का भाग देनेसे लब्ध कलादि फलको हीन करे तौ अहर्गणोत्पन्न गुरु होता है फिर पूर्वोक्त रीतिके अनुसार मध्यम गुरु सिद्ध कर लेना चाहिये ॥

उदाहरण।

। अहर्गण १५२१ में १२ का भाग देनेसे अंशादि फल १२६। ४५। ० मिला फिर अहर्गण १५२१ में ७० का भाग देनेसे फल कलादि २१। ४३ मिला इसको अंशादि १२६। ४५।०० में घटाया तो १२६। २३। १७ हुए। फिर पूर्वोक्त रीतिसे ३० का भाग देकर राशि आदि ४। ०६। २३। १७ यह अहर्गणोत्पन्न गुरु हुआ फिर बृहस्पतिके ध्रुवे ०। २६। १८। ०० को चक्र ८ से गुणा दिया तौ ७। ००। २४। ०० हुए फिर इसको पूर्वोक्त अहर्गणोत्पन्न गुरुके राश्यादिमें घटाया तो ९। ० ५। ५९। १७ हुए इसमें गुरुके क्षेपक ७। ०२। १६। ०० को जोड देनेसे मध्यम गुरु ४। ० ८। १५। १७ हुआ ॥

अब शुक्रकेन्द्रसाधनका प्रकार कहते हैं।

त्रिनिघ्नद्युपिण्डाद्विधाक्षैः क्विभाब्जैरवाप्तांशयो-
गो भृगोराशुकेन्द्रम् ॥ १३ ॥

अन्वयः-त्रिनिघ्नद्युपिण्डात् अक्षैः क्विभाब्जैः द्विधा अवाप्तांशयोगः भृगोः आशुकेन्द्रम् (भवति) ॥ १३ ॥

भाषा-अहर्गणको ३ से गुणा करके दो जगह धरे एक जगह ५ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले और दूसरी जगह धरे हुए अहर्गणमें १८१ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले इन दोनोंका योग कर राशी आदि करनेसे अहर्गणोत्पन्न शुक्रका शीघ्र केन्द्र होता है। फिर पूर्वोक्त प्रकारसे मध्यम शुक्र केन्द्र करना चाहिये ॥ १३ ॥

उदाहरण।

अहर्गणको ३ से गुणा किया तो ४५६३ हुए इनको दो जगह धरा एक जगह ५ का भाग देनेसे ९१२। ३६। ०० अंशादि लब्ध भये और दूसरी जगह ३ से गुणित अहर्गण ४५६३ में १८१ का भाग देनेसे अंशादि फल २५। १२। ३५ हुए इन दोनोंका योग किया तो ९३७। ४८। ३५ हुए फिर इनमें ३० का भाग देकर राशि आदि किया तो ७। ०७। ४८। ३५ यह शुक्रका शीघ्र केन्द्र हुआ फिर शुक्रके केन्द्रके ध्रुवे १। १४। ०२। ०० को चक्र ८ से गुणा किया तो ११। २२। १६। ०० हुए फिर इसको शुक्रके शीघ्र केन्द्रकी राशि आदिमें ऊन किया तो ७। १५। ३२। ३५ हुए इसमें शुक्रके क्षेपक ७। २०। ०९। ०० को युत किया तो मध्यम शुक्रका शीघ्र केन्द्र ३। ०५। ४१। ३५ हुआ॥

अब मध्यम शनिसाधनका प्रकार कहते हैं।

खाग्न्युद्धृतो दिनगणोंशमुखः शनिः स्यात्षट्पञ्च-भूहृतगणात्फललिप्तिकाढ्यः।

अन्वयः-खाग्न्युद्धृतः दिनगणः षट्पञ्चभूहृतगणात् फललिप्तिकाढ्यः अंशमुखः शनिः स्यात्॥

भाषा-अहर्गणमें ३० का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसकी कलादि अहर्गणमें १५६ का भाग देनेसे लब्ध कला आदि फलको युक्त करनेसे अहर्गणोत्पन्न शनि होता है फिर पूर्वोक्त रीतिसे मध्यम शनि लाना चाहिये॥

उदाहरण।

अहर्गण १५२१ में ३० का भाग दिया तो अंशआदि फल ५०। ४२। ०० मिला फिर अहर्गण १५२१ में १५६ का भाग देनेसे कलादि ९।४५ लब्ध हुई इसको पूर्वोक्त अंशादिफल ५०।४२।०० में जोड़ दिया तो ५०।५१।४५ हुए फिर अंशोंमें

३० का भाग देनेसे राशि आदि १।२०।५१।४५ यह अहर्गणोत्पन्न शनि हुआ फिर शनिके ध्रुवे ७।१५।४२।०० को चक्र ८ से गुणा किया तो ००।०५।३६।०० हुए इसको अहर्गणोत्पन्न शनिकी १।२०।५१।४५ राशि आदिमें हीन किया तो १।१५।१५।४५ हुए इनमें शनिके क्षेपक ९।१५।२१ को युत किया तो मध्यम शनि ११।००।३६।४५ हुआ ॥

इस प्रकार मध्य रेखाके उदयकालके मध्यम ग्रहोंका साधन कर अब मध्यम ग्रहोंकी दिन गति अर्थात् मध्यम गतिको कहते हैं ।

गोक्षा गजा रविगतिः शशिनोऽभ्रगोश्वाः पञ्चाग्नयोऽथ षडिलाब्धय उच्चभुक्तिः ॥१४॥ राहोस्त्रयं कुशशिनोऽसृज इन्दुरामास्तर्कांश्विनो ज्ञचलकेन्द्रजवोऽर्यहिक्ष्माः । लिप्ता जिना विकलिकाश्च गुरोः शराः खं शुक्राशुकेन्द्रगतिरद्रिगुणाः शनेर्द्वे ॥१५॥

अन्वयः-गोऽक्षाः गजाः रविगतिः (अस्ति) । अभ्रगोश्वाः पञ्चाग्नयः शशिनः (गतिः अस्ति) । अथ षट् इलाब्धयः उच्चभुक्तिः (अस्ति) । त्रयं कुशशिनः राहोः (गतिः अस्ति) । इन्दुरामाः तर्कांश्विनः असृजः (गतिः अस्ति) । अर्य्यहिक्ष्माः लिप्ताः जिनाः विकलिकाः ज्ञचलकेन्द्रजवः (अस्ति) । शराः खं गुरोः (गतिः अस्ति) । अद्रिगुणाः शुक्राशुकेन्द्रगतिः (अस्ति) । द्वे शनेः (गतिः अस्ति) ॥ १४ ॥ १५ ॥

भाषा-सूर्यकी मध्यम गति गो ९ अक्ष ५ अर्थात् ५९ कला और गज अर्थात् ८ विकला है । चन्द्रमाकी मध्यमगति अभ्र० गो ९ अश्व ७ अर्थात् ७९० कला और पंच ५ अग्नय ३ अर्थात् ३५ विकला है । चन्द्रमाके मंदोच्चकी गति षट् अर्थात् ६ कला और इला १ अब्धि ४ अर्थात् ४१ विकला है । राहुकी मध्यम गति त्रय अर्थात् ३ कला और कु १ शशि १ अर्थात् ११

विकला है। मंगलकी मध्यम गति इन्दु १ राम ३ अर्थात् ३१ कला और तर्क ६ अश्वि २ अर्थात् २६ विकला है। बुधके शीघ्र केन्द्रकी मध्यम गति अरि ६ अहि ८ क्ष्मा १ अर्थात् १८६ कला और जिन २४ विकला है। गुरुकी मध्यम गति शर ५ कला और ख० विकला है। शुक्रके शीघ्र केन्द्रकी मध्यम गति अद्रि ७ गुण ३ अर्थात् ३७ कला और शून्य विकला है शनैश्चरकी मध्यम गति द्वे २ कला और शून्य विकला है ॥१४॥१५॥

ग्रहोंकी गतिका चक्र.

ग्र. ना.	सू.	चं.	चं.उ.	रा.	मं.	बु.के.	गुरु.	शु. के.	शनि.
क.	५९	७९०	६	३	३१	१८६	५	३७	२
वि.	०८	३५	४१	११	२६	२४	०	०	०

अब यह दिखलाते हैं कि कौनसे ग्रह किस ग्रंथकी रीतिपर लानेसे वेधसे मिलता है।

सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्ककलिकोनाब्जो गुरुस्त्वार्य्यजोऽमृग्राहू च कजज्ञकेन्द्रकमथार्य्ये सेषुभागः शनिः। शौक्रं केन्द्रमजार्य्यमध्यगमितीमे यान्ति दृक्तुल्यतां सिद्धैस्तैरिह पर्वधर्म्मनयसत्कार्य्यादिकं त्वादिशेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः-अर्कः सौरः (घटते)। विधूच्चं (सौरपक्षीयं घटते)। अङ्ककलिकोनाब्जः अपि (सौरः घटते)। गुरुः तु आर्य्यजः (घटते)। अमृग्राहू च (आर्य्यपक्षीयौ घटेते)। कजज्ञकेन्द्रकं (घटते)। अथ सेषुभागः शनिः आर्य्ये (घटते)। शौक्रं केन्द्रं अजार्य्यमध्यगं (घटते)। इति इमे दृक्तुल्यतां यान्ति। इह तु सिद्धैः तैः पर्वधर्म्मनयसत्कार्य्यादिकम् आदिशेत् ॥ १६ ॥

भाषा-सौरपक्ष अर्थात् सूर्यसिद्धान्तसे सूर्यको और चन्द्रमन्दोच्चको साधन करे चन्द्रमाको सौरपक्षसे साधन कर उसमें ९ कला घटा दे बृहस्पतिको आर्यपक्ष अर्थात् आर्यभट्टके सिद्धान्तसे साधन करे और मंगल और राहुकोभी आर्यपक्षसे साधे। बुधके केन्द्रको ब्रह्मपक्ष अर्थात् ब्रह्मसिद्धान्तसे साधन करे। शनिको आर्यपक्षसे साधन कर उसमें पांच अंश और युत करे और शुक्रके केन्द्रको ब्रह्म और आर्य इन दोनों पक्षोंसे साधन कर उन दोनोंका योग करे फिर उनके आधेको शुक्रका केन्द्र माने इन पक्षोंसे साधन किये हुए ग्रह दृष्टिगोचर होते हैं। इन सिद्धि किये ग्रहोंपरसे ज्योतिषी ग्रहण आदि धर्मकार्य नीति और सत्कर्म अर्थात् विवाह यज्ञोपवीत आदि कहे ॥ १६ ॥

मध्यमग्रहचक्रम्.

सू. बु. शु.	चं. उ.	चं.	मं.	बु. के.	बृ.	शु. के.	श.	रा.	के.
१	१०	६	९	१	४	३	११	१	७
४	१४	२०	२९	१७	८	५	००	१४	१४
१३	५४	१०	५५	१४	१५	४१	३६	२१	२१
४२	४३	२४	१३	५०	१७	३५	४५	०३	०३
५९	६	७९०	३१	१८६	५	३७	२	३	३
०८	४१	३५	२६	२४	००	००	०	११	११

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गौड़वंशावतंस-विविधशास्त्रपरमपण्डित-श्रीराविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां प्रथमः मध्यमग्रहसाधनाधिकारः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः।

सूर्यचन्द्रका स्पष्ट करना और पंचांगानयनका अधिकार कहा जाता है उसमेंभी पहिले भुजकोटिपद सूर्य मन्द उच्चोंके साधनेका प्रकार लिखते हैं।

दोस्त्रिभोनं त्रिभोर्ध्वं विशेष्यं रसैश्चक्रतोऽङ्काधिकं स्याद्भुजोनं त्रिभम्। कोटिरेकैककं त्रित्रिभैः स्यात्पदं सूर्य्यमन्दोच्चमष्टाद्र्योंशा भवेत् ॥१७॥ मन्दोच्चं ग्रहवर्जितं निगदितं केन्द्रं तदाख्यं बुधैः केन्द्रं स्यात्स्वमृणं फलं क्रियतुलाद्येथो विधेयं रवेः। केन्द्रे तद्भुजभागखेचरलवोनघ्ना नखास्ते पृथक् तद्भोंशोननगेषुभिः परिहृतास्तेंशादिकं स्यात्फलम् ॥ १८ ॥

अन्वयः-त्रिभोनं (केन्द्रं) दोः (भवति)। त्रिभोर्ध्वं रसैः विशेष्यं (तदा दोः स्यात्)। अङ्काधिकं चक्रतः (विशोध्यम् तदा दोः) स्यात्। भुजोनं त्रिभं कोटिः (स्यात्)। त्रित्रिभैः एकैककं पदं स्यात्। अष्टाद्र्यः अंशाः सूर्य्यमन्दोच्चं भवेत्। ग्रहवर्जितं मन्दोच्चं बुधैः तदाख्यं केन्द्रं निगदितम्। क्रियतुलाद्ये केन्द्रे स्वम् ऋणं फलं स्यात्। अथ रवेः केन्द्रं विधेयम्। तद्भुजभागखेचरलवोनघ्नाः नखाः (कार्य्याः)। ते पृथक् (स्थाप्याः)। तद्भोंशोननगेषुभिः परिहृताः ते अंशादिकं फलं स्यात् ॥ १७ ॥ १८ ॥

भाषा-केन्द्र अथवा ग्रह तीन राशिसे कम हो तो वही भुज होता है और जो तीन राशिसे अधिक हो तो ६ राशिमें घटाकर जो शेष रहेगा वह भुज होता है और जो ६ से नवपर्यन्त हो तो ९ मेंसे घटावे और नवसे अधिक हो तो १२ राशिमेंसे घटाकर

जो शेष रहे वह भुज होता है। ३ राशिमेंसे भुजको घटावे तौ कोटि होती है तीन २ राशिका एक २ पद होता है (जैसे प्रथम तीन राशि हों तो विषम पद दूसरी तीन राशि हों तो सम पद तीसरी हों तो विषम पद और चौथी हों तो फिर सम पद) और २ राशि १८ अंश कला० विकला० यह सूर्यका मन्दोच्च होता है। मन्दोच्चमें ग्रहको घटाओ जो बाकी रहे वह मन्दकेन्द्र होता है (और इतना ध्यान रखना कि शीघ्रोच्चमें ग्रह घटाकर जो बचेगा वह शीघ्र केन्द्र होगा) फिर केन्द्र मेषसे आदि ले ६ राशितक हो तो धन मंद फल होता है अर्थात् जोड़ा जायगा और जो तुलासे लेकर ६ राशितक केन्द्र होगा तो ऋण होगा अर्थात् घटाया जायगा इस प्रकार सूर्यका मन्द केन्द्र लाना चाहिये। फिर उस मन्द केन्द्रके भुज करे और भुजोंके अंश करे फिर उसमें नौका भाग देनेसे जो हाथ लगे उसको २० अंशमें घटावे जो बाकी बचे उसको ऊपर कहे हुए नवमांशसे गुणा कर दे और जो गुणनफल आवे उसको एक जगह अलग धरे। फिर ९ का भाग देनेसे जो मिले उसको ५७ अंशमें घटावे और जो बचे उसका पहिले अलग धरे हुए अंशादिमें भाग देय और जो भाग देनेसे मिले उसको अंशादि मंद फल जानना। यह मन्द फल केन्द्र मेषसे तुला राशिके भीतर हो तो धन और तुलासे लेकर मेषतकके भीतर हो तो ऋण जानना फिर जो यह मन्द फल मध्यम सूर्यमें धन हो तो जोड़ दे और ऋण होय तो घटा दे तो मंद स्पष्ट सूर्य होता है॥ १७॥ १८॥

उदाहरण।

सूर्यका मन्दोच्च है २।१८।०।० इसमेंसे मध्यम सूर्य १।४।१३। ४२ घटाया तो १।१३।४६।१८ बाकी रहे यह सूर्यका केन्द्र हुआ यह केन्द्र ३ राशिसे कम है इसलिये भुज हुआ इसकी राशिके अंश किये तो ३० हुए उसमें फिर अंशादि १३।४६।

१८ जोड़े तो ४३।४६।१८ हुए फिर इनमें ९का भाग दिया तो अंशादि ४।५१।४८ मिले इनको २० अंशमेंसे घटाया तो १५। ८।१२ यह बाकी बचे इनको भुजका जो नवमांश ४।५१।४८ भाग देकर लिया था उससे गुणा किया तो ७३।३६।५२ अंशादि हुए इनको दो जगह धरा एक जगह ९का भाग दिया तो ८। १०।४५ प्राप्त हुए इनको ५७ अंशमेंसे घटाया तो ४८।४९।१५ अंशादि मिले इनको दूसरी जगह धरे हुए ७३।३६।५२ में भाग देनेके लिये एक राशि कर लिया तो ७३।३६।५२ की २६५०१२ कला हुई और ४८।४९।१५ की१७५७५५कला हुई फिर इसका भाग २६५०१२में दिया तो १।३०।२८ अंशादि सूर्यका मन्द फल हुआ और यह केन्द्र मेषादि ६ राशिसे कम है इसलिये धन हुआ अत एव १।३०।२८ अंशादि मंद फलको मध्यम सूर्य १।०४।१३।४२ राश्यादिमें जोड़ा तो १।०५।०४४। १० यह मन्द स्पष्ट सूर्य हुआ ॥

अब पलभा और चरखंडा बनानेका प्रकार कहते हैं।

मेषादिगे सायनभागसूर्य्ये दिनार्द्धजा भा पलभा भवेत्सा। त्रिस्था हता स्युर्दशभिर्भुजङ्गैर्दिग्भिश्च-राद्धानि गुणोद्धतान्त्या ॥ १९ ॥

अन्वयः—सायनभागसूर्य्ये मेषादिगे (सति) (या) दिनार्द्धजा भा सा पलभा भवेत्। (सा) त्रिस्था दशभिः भुजङ्गैः दिग्भिः हता (ततः) अन्त्या गुणोद्धृता (कार्य्या)। (तदा) चरार्द्धानि स्युः ॥ १९ ॥

भाषा—आगे जो रीति कहेंगे उस रीतिसे अयनांश बनावे फिर उसे स्पष्ट सूर्यमें जोड़ देनेसे सायन सूर्य होता है वह सायन सूर्य जिस दिन मेष राशिमें राशि अंश कला विकलासे शून्य होय उस दिन मध्यान्ह कालके समय एकसी भूमिपर बारह अंगुलका शंकु खड़ा करे उसके खड़ा करनेसे जो छाया पड़े वह पलभा होती है उस पलभाको तीन जगह धरे और

एक जगह १० से दूसरी जगह ८ से और तीसरी जगह १० से गुणा करे फिर अंतकी १०से गुणित पलभामें ३ का भाग देनेसे ३ चरखंडे होते हैं। (बहुतसे प्रसिद्ध स्थानोंकी पलभा ग्रन्थके अंतमें मिलेगी) ॥ १९ ॥

उदाहरण।

काशीकी पलभा पांच अंगुल ४५ प्रत्युंगल निश्चित है इसको पहिले १० से गुणा किया तो प्रथम खण्ड ५७।३० हुआ। दूसरी वार ८से गुणा किया तो ४६।० अंगुल दूसरा खंड हुआ। तीसरी वार १० से गुणा किया तौ ५७।३० हुआ। इसमें तीनका भाग दिया तो १९।१० मिले यह तीसरा चरखण्डा हुआ ॥

अब चर बनानेकी रीति कहते हैं।

स्यात्सायनोष्णांशुभुजर्क्षसंख्यचरार्द्धयोगो लव-भोग्यघातात्। खाग्न्याप्तियुक्तस्तु चरं धनर्णं तु-लाजषड्भे तपनेऽन्यथास्ते ॥ २० ॥

अन्वयः-सायनोष्णांशुभुजर्क्षसंख्यचरार्द्धयोगः लवभोग्यघातात् खाग्न्याप्तियुक्तः चरं स्यात्। (तत्) तु तपने तुलाजषड्भे धनर्णं (स्यात्)। अस्ते अन्यथा ॥ २० ॥

भाषा-सूर्यमें अयनांशको जोडे फिर पूर्वोक्त रीतिके अनुसार उसका भुज बनावे फिर जो राशिकी जगह शून्य हो तौ अंशादिको प्रथम चरखंडेसे गुणा करे और जो भुजमें एक राशि हो तौ अंशादिको दूसरे चरखंडेसे गुणा करे जो भुजमें दो राशि हों तो अंशादिको तीसरे चरखंडेसे गुणा करे फिर जो गुणनफल मिले उसमें ३० का भाग दे जो लब्ध हो उसमें जिस चरखंडेसे अंशादिको गुणा किया था उससे पहिले अर्थात् गत चरखंडेको जोड देनेसे चर होता है। फिर जो सायन सूर्य तुला आदि ६ राशियोंके भीतर हो तो युत करे और मेष आदि ६ राशियोंमें स्थित सूर्य हो तौ घटावे और जो सन्ध्याके समय

ग्रह साधन करना हो तो विपरीत रीति करे अर्थात् जो सायन रवि तुलादि ६ राशिमें स्थित हो तो घटावे और मेषादि ६ राशियोंमें हो तो जोड दे ॥ २० ॥

अब चरसंस्कार भुज फल और अयनांश बनानेका प्रकार कहते हैं।

देयं तच्चरमरुणे विलिप्तिकासु मध्येन्दौ द्विगुणनवोद्धृतं कलासु। भाप्तं तद्द्युमणिफलं लवेऽथ वेदाब्ध्यब्ध्यूनः खरसहृतः शकोऽयनांशाः ॥ २१ ॥

अन्वयः—तत् चरम् अरुणे विलिप्तिकासु देयम्। (तत् एव) द्विगुणनवोद्धृतं मध्येन्दौ कलासु (देयम्)। भाप्तं (यत्) द्युमणिफलं तत् (अपि) लवे (देयम्)। अथ शकः वेदाब्ध्यब्ध्यूनः (ततः) खरसहृतः अयनांशाः स्युः ॥ २१ ॥

भाषा—उस चरको सूर्यकी विकलाओंमें संस्कार करे धन हो तौ जोडे और ऋण हो तौ घटावे तब सूर्य स्पष्ट होता है। फिर उस चरको दोसे गुणा करे और ९ का भाग देनेसे जो फल मिले उसे मध्यम चंद्रमाकी कलादिमें संस्कार करे अर्थात् फल धन हो तो जोडे ऋण हो तो घटावे (इसे चरसंस्कार अथवा द्वितीय फलसंस्कार कहते हैं) फिर सूर्यके मन्द फलमें २७ का भाग देनेसे जो लब्धि मिले उसे मध्यम चन्द्रके अंशादिके स्थानमें सूर्यकी तरह संस्कार करे इसे मन्द फलसंस्कार अथवा तृतीय फलसंस्कार कहते हैं (ये दोनों रीतें चन्द्रस्पष्टमें काम देंगी) और वर्तमान शाकेमें ४४४ को घटावे शेषको कलादि जाने फिर उसमें ६० का भाग देनेसे जो लब्ध मिले वह अयनांश होता है ॥ २१ ॥

उदाहरण।

काशीमें पलभा ५।४५ है और चरखंडा ५७।४६।१९ है। वर्तमान शाके १५३४ में ४४४ को घटाया तौ १०९० हुए इन-

को कला जानों इनमें ६० का भाग देनेसे अयनांशा १८।१० मिला ॥

चर बनानेका उदाहरण ।

अयनांशा १८।१० को मन्द स्पष्ट सूर्य १।०५।४४।१० में युत किया तौ सायन सूर्य १।२३।५४।१० हुआ और यह सायन सूर्य तीन राशिके भीतर है इसलिये यही भुज हुआ फिर इस १।२३।५४।१० भुजके राशिस्थानमें एक है इसलिये इसके अंशादि २३।५४।१० को दूसरे चरखंडे ४६ से गुणा किया तौ अंशादि १०९९३१।४० हुए फिर इसमें ३० का भाग देनेसे ३६ विकला मिलीं इनको गत चरखंडे ५७ में जोड़ दिया तौ ९३ चर हुआ । अब यहां सायन सूर्य मेष आदि ६ राशियोंके भीतर है इसलिये चर ९३ अर्थात् १ कला ३३ विकलाको मन्द स्पष्ट सूर्य १।०५।४४।१० में घटाया तौ चर संस्कृत स्पष्ट सूर्य १।०५।४२।३७ हुआ ॥

अब चन्द्र स्पष्टकी रीति कहते हैं ।

विधोः केन्द्रदोर्भागषष्ठोननिघ्नाः खरामाः पृथक् तन्नखांशोनितैश्च । रसाक्षैर्हृतास्ते लवाद्यं फलं स्याद्रवीन्दू स्फुटौ संस्कृतौ स्तश्च ताभ्याम् ॥ २२ ॥

अन्वयः-विधोः केन्द्रदोर्भागषष्ठोननिघ्नाः खरामाः पृथक् (स्थाप्याः)। तन्नखांशोनितैः रसाक्षैः हृताः ते च लवाद्यं फलं स्यात् । ताभ्यां च संस्कृतौ स्फुटौ रवीन्दू स्तः ॥ २२ ॥

भाषा-चन्द्रोच्चमें त्रिफल संस्कृत चन्द्रको घटावे जो शेष बचे वह चन्द्रमाका केन्द्र होता है फिर उस केंद्र[1]के भुज करे फिर उसके अंश करे और उसमें ६ का भाग देनेसे जो मिले वह अंशादि हैं और उसे ३० अंशमेंसे घटा देय जो बचे और पहिले जो ६ का भाग

---

१ चन्द्रमाके उच्चमें त्रिफल संस्कृत चन्द्रको घटानेसे चन्द्र केन्द्र आवेगा ।

देनेसे मिला है उसके साथ आपसमें गुणा करे फिर जो गुणन-फल आवे उसको २ जगह स्थापित करे एक जगह २०का भाग देय जो अंशादि मिले उनको ५६ मेंसे घटा देय जो बचें उसको दूसरी जगह धरे हुएमें भाग देय फिर जो कुछ मिले वह अंशादि चन्द्रमाका मन्द फल होता है फिर वही रीति करे जो सूर्यमें करी थी अर्थात् जो मेषादि छः राशिके भीतर चन्द्र केन्द्र हो तो धन जानकर त्रिफल चन्द्रमें जोड़ दे और तुलादि छः राशिके भीतर हो तो ऋण मानकर घटा दे तो स्पष्ट चन्द्र होता है ॥ २२ ॥

अब प्रथम त्रिफल संस्कृत चन्द्रकी रीति लिखते हैं।

पीछे नवें श्लोकका जो उत्तरार्ध है कि " निजनिज-पुररेखान्तःस्थिताद्यौ जनौघाद्रसलवमितालिप्ता स्वर्णमिन्दौ परे प्राक्। " अर्थात् अपने २ पुर और मध्य रेखा इन्होंके अन्तरमें जितने योजन हों उसमें ६ का भाग दे और जो कलादि मिलें उसको अपने नगरकी मध्य रेखासे पूर्व हो तो चन्द्रकी कला विकलामें घटावे और जो पश्चिममें हो तो जोडे। इसको रेखान्तर संस्कार और प्रथम फलसंस्कार कहते हैं ॥

अब द्वितीय चरसंस्कार लिखते हैं।

२१ वें श्लोकका दूसरा चरण देखो यथा,"मध्येन्दौ द्विगुण-नवोद्धृतं कलासु " अर्थात् चरको दुगुणा करे और८का भाग देय जो लब्ध मिले उस कलादिको रेखान्तर संस्कार किये मध्यम चन्द्रमें धन अथवा ऋण करे। यह द्वितीय फलसंस्कार है ॥

अब तीसरा संस्कार कहते हैं।

श्लोक २१ वें का तृतीय चरण यथा " भाप्तं च द्युम-णिफलेत्यादि " अर्थात् सूर्यके मन्द फलमें २७ का भाग देनेसे जो अंशादि मिलें उनको द्वितीय फलसंस्कार चन्द्रमें धन अथवा ऋण करे इसे मन्द फलसंस्कार अथवा त्रिफलसंस्कार कहते हैं ऐसा करनेसे त्रिफलसंस्कृत चन्द्र होता है ॥

उदाहरण।

काशी मध्य रेखाके ६४ योजन पूर्व है इसलिये ६४ में ६ का भाग दिया १०।४० कला विकला मिलीं। यह प्रथम संस्कार ऋण हुआ॥

फिर चर ९३ को २ से गुणा किया तौ १८६ हुए इनमें ९ का भाग दिया तो २०।४० कला विकला मिलीं यह दूसरा संस्कार ऋण है॥

फिर सूर्यके मन्द फल १।३०।२० अंश कला विकलामें २७ का भाग दिया तो ०।०३।२१ अंशादि मिले यह तीसरा संस्कार है। और यह धन है॥

अब मध्यम चन्द्रमा है–	६	२०	१०	२४
प्रथम संस्कार ऋण घटाया–	०	००	१०	४०
शेष–	६	१९	५९	४४
द्वितीय संस्कार ऋण घटाया	०	००	२०	४०
शेष रहे	६	१९	३९	०४
फिर तीसरे संस्कारको जोडा	०	००	०३	२१
यह त्रिफल संस्कृत चन्द्र हुआ.	६	१९	४२	२५

उदाहरण।

चन्द्रोच्च १०।१४।५४।४३ मेंसे ६।१९।४२।२५ त्रिफल संस्कृत चन्द्रको घटाया तो ३।२५।१२।१८ ही बचे यह चन्द्र केन्द्र हुआ इसको ६ राशिमेंसे घटाया तो २।०४।४७।४२ यह राश्यादि भुज हुआ फिर इसके अंशादि किये तो ६४।४७।४२ हुए इसमें ६का भाग दिया तो अंशादि १०।४७।५७ हुए इसको ३० अंशमेंसे घटाया तो १९।१२।३ अंशादि बचे इनको ऊपर जो ६ का भाग देनेसे १०।४७।५७ अंशादि मिले उनसे गुणा किया तो २०७।२१।१० हुए इनमें २०का भाग दिया तो १०।२२।०३

अंशादि हुए इनको ५६मेंसे घटाया तो ४५।३७।५७अंशादि बचे फिर इनका पूर्व कथित गुणन फल जो २०७।२०।५४ आया था उसमें भाग दिया तो एक राशि करनेसे भाज्य हुआ ७४६४७० और भाजक हुआ १६४२७७ फिर भाग देनेसे ४।३२।३८ अंशादि मिले यह मन्द फल है और यह केन्द्र मेषादि ६ राशिके भीतर है अत एव धन हुआ तो इसे त्रिफल संस्कृत चन्द्र ६।१९।४२।२५में जोड दिया तो ६।२४।१५।०३ यह चन्द्र स्पष्ट हुआ ॥

अब सूर्य चन्द्रमाकी गति स्पष्टकी रीति लिखते हैं।

प्रथम सूर्य गतिकी रीति–सूर्य मन्द केन्द्रके भुज करे फिर भुजसे कोटि बनावे फिर उस कोटिके अंश कर ले फिर उनमें २० का भाग देनेसे जो फल मिले वह अंशादि है और उसे ११ अंशमें घटावे जो बचे उसे और जो २० का भाग देनेसे प्रथम लब्ध मिला है उन दोनोंका आपसमें गुणा करे फिर जो गुणनफल मिले उसमें १३का भाग देय जो फल मिले वह कलादि रविका गति फल होता है फिर जो केंद्र कर्कादि ६ राशिके भीतर हो तो धन और मकर आदि ६ राशिके भीतर हो तो ऋण जानना। फिर उस गति फलको सूर्यकी मध्यम गतिमें घटावे अथवा जोडे जैसा अवसर हो तो सूर्यकी गति स्पष्ट होती है ॥

चन्द्र गतिका प्रकार।

केन्द्रस्य कोटिलवखाश्विलवोननिघ्ना रुद्रा रवे-
स्त्रिकुहताः शशिनो द्विनिघ्नाः। स्वांगांशकेन
सहिताश्च गतौ धनर्णं केन्द्रे कुलीरमृगषट्कगते
स्फुटा सा ॥ २३ ॥

अन्वयः–रुद्राः केन्द्रस्य कोटिलवखाश्विलवोननिघ्नाः (कार्य्याः। ते) रवेः (चेत् तर्हि) त्रिकुहताः (कार्य्याः। तदा रवेः कलाद्यं गतिफलं

स्यात् । चेत्) शशिनः (तर्हि) द्विनिघ्नाः (कार्य्याः । ततः) स्वाङ्गांशकेन सहिताः च (कार्य्याः । तदा चन्द्रगतेः कलाद्यं फलं स्यात्) । कुलीरमृग-षट्कगते केन्द्रे गतौ धनर्णे (भवतः) सा स्फुटा (गतिः भवति) ॥ २३ ॥

भाषा—चन्द्र मन्द केन्द्रके भुज करे फिर उससे कोटि करे तदनन्तर उसके अंश बनावे उन अंशोंमें २०का भाग देनेसे जो फल मिले वह कलादि है उसे ११ कलामें घटावे जो बचे उसे प्रथम २० का भाग देनेसे जो फल मिला है उन दोनोंको आपसमें गुणा करे जो फल मिले उसे २ से गुणा करे और इस गुणनफलमें ६ का भाग देनेसे जो फल मिले उसे २ से गुणा किये हुएमें जोड देनेसे कलादि गत फल होता है फिर पूर्व रीतिसे जो धन ऋण हो उस गति फलको चन्द्रमाकी मध्यम गतिमें धन ऋण करनेसे चन्द्रमाकी गति स्पष्ट होती है ॥ २३ ॥

सूर्यकी गति बनानेका उदाहरण ।

सूर्यके मन्द केन्द्र १।१३।४६।१८ तीन राशिके भीतर है इस लिये यही भुज हुआ इसको तीन राशिमें घटाया तो १।१६।१३।४२ कोटि हुई इसकी राशिके अंश कर लिये तो ४६।१३।४२ हुए इसमें २० का भाग देनेसे २।१८ फल मिला इसको ११ अंशमें घटाया तो ८।४२ हुए इसको २० का भाग देनेसे जो २।१८ मिले थे उससे गुणा दिया तो २०।०० हुएइसमें १३ का भाग देनेसे १।३२ कला विकला फल मिला यह सूर्यका गतिफल है और यह केन्द्र मकर आदि ६ राशिके भीतर है इसलिये ऋण है इसको सूर्यकी मध्यम गति ५९।८ में घटानेसे सूर्यकी स्पष्ट गति ५७।३६ हुई ॥

अब चन्द्रमाकी गति साधनका प्रकार लिखते हैं ।

चन्द्रमाका मन्द केन्द्र ३।२५।१२।१८ है इसके भुज २।४।४७।४२ को ३ राशिमें घटाया तो कोटि ०।२५।१२।१८ हुई इसके अंशादि २५।१२।१८ में २० का भाग दिया तो १।१५ फल मिला इसको ११ में घटाया तो ९।४५ हुए फिर इसे वीसका

भाग देनेसे जो १।१५ मिले थे उससे गोमूत्रिकाकी रीतिसे गुण दिया तो १२।११ हुए फिर इसको २ से गुणा किया तो २४।२२ हुए फिर इसमें ६ का भाग दिया तो ४।३ हुए इसको २४।२२में जोड़ देनेसे २८।२५ कलादि गति फल हुआ यहां चन्द्रमाका केन्द्र कर्क आदि छः राशिके भीतर होनेसे धन है इसलिये चन्द्रमाके गति फल २८।२५ को चन्द्रमाकी मध्यम गति ७९।३५ में जोड़ दिया तो चन्द्रमाकी स्पष्ट गति ८१९।०० हुई ॥

अब तिथि नक्षत्र योग और करण बनानेका प्रकार कहते हैं ।

भक्ता व्यर्कविधोर्लवा यमकुभिर्याताऽतिथिः स्या-
त्फलं शेषं यातमिदं हरात्प्रपतितं भोग्यं विलिप्ता-
स्तयोः । भुक्त्योरन्तरभाजिताश्च घटिका यातै-
ष्यिकाः स्युः क्रमात्पूर्वार्द्धे करणं बवाद्ध्रततिथिर्द्वि-
घ्नाद्रितष्टा भवेत् ॥ २४ ॥ तत्सैकं त्वपरे दलेऽथ
शकुनेः स्युः कृष्णभूतोत्तरादर्धाच्चाथ विधोश्च सा-
र्कसितगोर्लिप्ताः खखाष्टोद्धृताः । याते स्तो भयुती
क्रमाद्गगनषण्निघ्ने गतैष्ये तयोरिन्दोर्भुक्तिहृते
जवैक्यविहृते यातैष्यनाड्यः क्रमात् ॥ २५ ॥

अन्वयः-व्यर्कविधोः लवाः (कार्य्याः । ते) यमकुभिः भक्ताः (कार्य्याः) फलं यातातिथिः स्यात् । शेषं (अपि) यातम् । इदं हरात् प्रपतितं भोग्यं (स्यात्) । तयोः विलिप्ताः भुक्त्योः अन्तरभाजिताः (कार्य्याः । तदा लब्धिः) क्रमात् यातैष्यिकाः घटिकाः स्युः । द्विघ्ना (ततः) अद्रितष्टा गततिथिः बवात् (तिथेः) पूर्वार्द्धे करणं भवेत् ॥ सैकं तु तत् अपरे दले (करणं स्यात्) । अथ कृष्णभूतोत्तरात् अर्द्धात् च शकुनेः स्युः । अथ विधोः सार्कसितगोः च लिप्ताः खखाष्टो द्धृताः (कार्य्याः) । (फलम्) क्रमात् याते भयुती स्तः । तयोः गतैष्ये गगनषण्निघ्ने इन्दो-

भुक्तिहृते (ततः) जवैक्यविहृते (तदा) क्रमात् यातैष्यनाड्यः (स्युः) ॥ २४ ॥ २५ ॥

भाषा-चन्द्रमामें सूर्यको घटानेसे जो राशि आदि फल मिले उसके अंश बनावे फिर उसमें १२का भाग देनेसे जो फल मिले वह गति तिथि होती है और जो शेष गति बचे वह मिली तिथिका भुक्त है इसको १२ में घटानेसे तिथिका भोग्य होता है फिर गति और भोग्य तिथियोंकी कलाओंकी विकला बना ले फिर गत विकला और भोग्य विकलाको अलग २ धरके ६० से गुणा करे जो गुणन फल मिले उसमें सूर्य और चन्द्रमाकी गतिके अंतरका गतमें भाग देनेसे तिथिकी भोगी हुई घड़ी और भोग्यमें भाग देनेसे भोग्य घड़ी होती हैं। (करण) और गति तिथिको २ से गुणा करे फिर उसमें सातका भाग देनेसे लब्धिको त्याग करे और जो शेष अंक मिले उसके समान तिथिके पूर्वार्द्धमें बव करणसे गणना करनेपर वर्तमान करण होता है। फिर उस करणमें १ जोड़नेसे तिथिके (बवकरणसे गिनकर) उत्तरार्द्धमें करण होता है और कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके पिछले आधे भागमें शकुनि करण होता है और अमावास्याके पहले भागमें चतुष्पद करण और पिछले भागमें नाग करण होता है और शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके पहले भागमें किंस्तुघ्न करण होता है गत और भोग्य तिथिके घटी पलोंका योग करे फिर उसका आधा करनेसे घटी आदि करणका मान होता है फिर उसमें गति तिथिके मानको घटानेसे करणकी वर्तमान घंडी होती हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥

नक्षत्र बनानेका प्रकार।

चन्द्रमाकी राशि आदिकी कला बनावे फिर उनमें ८०० का भाग देनेसे जो फल मिले वह गतनक्षत्र है फिर जो बचा वह वर्तमान नक्षत्रका भुक्त भाग है उसे ८०० में घटावे तो शेष भोग्य

१ तिथिमें २ करण जानना जो तिथि ३० घडीसे कम हो तो उत्तरार्द्धकी भोग्य घटी और ३० घडीसे अधिक हो तो पूर्वार्द्धकी भोग्य घटी लिखना चाहिये।

अथवा एष्य रहता है फिर भुक्त भागकी ६० से गुणाकर विकला करे और चन्द्रमाकी गतिका भाग दे तो वर्तमान नक्षत्रका भुक्त मान घटी पल मिलेंगे फिर भोग्यको ६० गुणा करके चन्द्रमाकी गतका भाग देनेसे भोग्य घडी मिलती हैं ॥

योग बनानेका प्रकार कहते हैं।

सूर्य चन्द्रमाके योगकी कलाओंमें ८०० का भाग देनेसे लब्ध हो वह गतयोग मिलता है और जो बचे वह आगेके योगका गत भाग होता है उसको ८०० में घटानेसे एष्य होता है फिर गत और एष्यको ६० से गुणा करके अर्थात् उसकी विकला बनाकर उसमें सूर्य चन्द्रमाकी गतियोंके योगका भाग देनेसे योगकी गत और एष्य घडी होती हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥

अब तिथि बनानेका उदाहरण कहते हैं।

स्पष्ट चन्द्रमा ६। २४। १५। ३ में स्पष्ट सूर्य १। ५ ४२। ३७ को घटानेसे ५। १८। ३२। २६ शेष रहे इसके अंश बनाये तो १६८। ३२। २६ हुए फिर इन्होंमें १२ का भाग देनेसे फल गत तिथि १४ और वर्तमान तिथि पूर्णिमा मिली और शेष ००। ३२। २६ यह भुक्त पूर्णिमा रही इसको १२ में घटा दिया तौ ११। २७। ३४ यह भोग्य पूर्णिमा रही फिर गत पूर्णिमा ३२। २६ कलाओंकी विकला करीं तो १९। ४६ विकला हुईं इनको ६० से गुणा किया तो ११६७६० हुए इनमें सूर्यकी गति ५७। ३६ और चन्द्रमाकी गति ८१९। ०० इन्होंके अन्तर ७६१। २४ को ६० से गुणा किया तो भाजक ४५६८४ का भाग देनेसे पूर्णिमाके पहले दिन भुक्त दो घडी और ३३ पल मिले फिर भोग्य कला २७।२४ की विकला करीं तो ४१२५४ हुए इनको ६० से गुणा किया तो २४७५२४० हुए इनमें ४५६८४भाजकका भाग देनेसे पूर्णिमाके दिन भोग्य ५४ घड़ी १० पल मिले ॥

अब करण बनानेका उदाहरण लिखते हैं ।

गत तिथि १४को २ से गुणा किया तो २८ हुए इसको ७ से तष्ट करनेसे शेष शून्य रहा ऐसा करनेसे पौर्णमासीके पहले भागमें भद्राकरण और परले भागमें बव करण मिला ॥

अब करणका मान जाननेकी रीति लिखते हैं ।

तिथिकी गत घड़ी २।३३ और वर्तमान तिथिकी ५४ घडी १० पल हैं इन्होंका योग किया तो ५६।४३ मिले इन्होंका आधा किया तौ (भद्राकरणका) मान २८।२१ मिला इसमें गत तिथि २।३३ को घटानेसे पूर्नोके दिन भद्राकरण २५।४८ हुआ ॥

अब नक्षत्र बनानेका उदाहरण लिखते हैं ।

स्पष्ट चन्द्र ६।२४।१५।०३ है इसकी कला करीं तौ १२२५५।०३ हुई इनमें ८००का भाग दिया तौ गत नक्षत्र १५ मिले अर्थात् स्वाति नक्षत्र मिला और शेष २५५।०३ यह वर्त्तमान विशाखा नक्षत्रका भुक्त भाग है इस शेष गत २५५।०३ को ८००में घटाया तौ एष्य ५४४।५७ हुए अब भुक्त विशाखा २५५।०३ की विकला करीं तौ १५३०३ हुई इनमें चन्द्रमाकी गति ८१९ का भाग दिया तौ १८।४१ यह विशाखा नक्षत्रका भुक्त मान हुआ फिर भोग्य विशाखा ५४४।५७ की विकला करीं तौ ३२६९७ हुई इसमें चन्द्र गति ८१९।०० का भाग दिया तौ ३९।५५ यह विशाखा नक्षत्रका भोग्य मान हुआ इस प्रकार पूरा विशाखा नक्षत्र ५७।६४ हुआ ॥

अब योग बनानेका उदाहरण लिखते हैं ।

सूर्य स्पष्ट है १।०५।४२।३७ और चन्द्र स्पष्ट है ६।२४।१५।०३ इनका योग किया तौ ७।२९।५७।४० हुए इनकी कला करीं तौ १४३९७।४० हुई इनमें ८०० का भाग देनेसे गत योग १७ व्यतिपात मिला और शेष ७९७।४० यह वर्यानयो-

गका भुक्त भाग है इसको ८०० में घटा दिया तौ एष्य २।२० रहे फिर गत ७९७।४० को और एष्य २।२० को ६० से गुणाकर विकला करीं तौ गत ४७८६० और एष्य १४० हुआ इन्होंमें सूर्य चन्द्रमाकी गतके योग ८७६।३६ का भाग दिया तौ योगकी गतघटी ५४।३५ और एष्य घटी ०।९।२५ मिलीं ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गतबेरीग्रामनिवासिगौड़वंशावतंस–विविधशास्त्रपरमपण्डितश्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां द्वितीया रविचन्द्रस्पष्टाधिकारः समाप्तः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ।

अब भौम आदि पांच ग्रहोंका स्पष्टाधिकार कहते हैं।

ग्रहोंके शीघ्रफलके अंक ।

खमष्टमरुतोऽद्रिभूभुव उदध्यगोर्व्योष्टद्वयदृशो नवनगाश्विनोऽक्षदशनाः शराङ्काग्नयः । गुणाङ्कदहनाः खखाब्धय इभांगरामाः क्रमान्नवाम्बुधिदृशो नभः क्षितिभुवश्चलाङ्का इमे ॥ १ ॥

अन्वयः–खम् अष्टमरुतः अद्रिभूभुवः उदध्यगोर्व्यः अष्टद्वयदृशः नवनगाश्विनः अक्षदशनाः शराङ्काग्नयः गुणाङ्कदहनाः खखाब्धयः इभाङ्गरामाः नवाम्बुधिदृशः नभः इमे क्रमात् क्षितिभुवः चलाङ्काः (सन्ति) ॥१॥

भाषा–ख अर्थात् शून्य, अष्ट ८ मरुत ५ अर्थात् ५८, अद्रि ७ भू १ और भू १ अर्थात् ११७, उदधि ४ अग ७ उर्वी १ अर्थात् १७४, अष्ट ८ द्वय २ और द्वय २ अर्थात् २२८, नव ९ और नग ७ अश्विन २ अर्थात् २७९, अक्षि ५ दशन ३२ अर्थात् ३२५, शर५ अंग ६ अग्नि ३ अर्थात् ३६५, गुण ३ अंक ९ दहन ३ अर्थात् ३९३, ख० ख० अब्धि ४ अर्थात् ४००, इभ ८ अंग ६

राम ३ अर्थात् ३६८, नव ९ अंबुधि ४ दृक् २ अर्थात् २४९, नभ अर्थात् शून्य ये क्रमसे मंगलके शीघ्राङ्क हैं ॥ १ ॥

खं भूकृताः कुवसवोऽद्रिभवाः खतिथ्योऽष्टाद्री-
न्दवो नवनवक्षितयोऽर्कपक्षाः । अर्काश्विनः शर-
खगक्षितयोऽक्षतिथ्यो गोष्टौ खमाशुफलजाः
स्युरिमे विदोऽङ्काः ॥ २ ॥

अन्वयः-खं भूकृताः कुवसवः अद्रिभवाः खतिथ्यः अष्टाद्रीन्दवः नवनवक्षितयः अर्कपक्षाः अर्काश्विनः शरखगक्षितयः अक्षतिथ्यः गोष्टौ खम् इमे विदः आशुफलजाः अङ्काः स्युः ॥ २ ॥

भाषा-ख०अर्थात् शून्य, भू १ कृत ४ अर्थात् ४१, कु १वसु ८ अर्थात् ८१, अद्रि ७ भव ११ अर्थात् ११७, ख० तिथि १५ अर्थात् १५०, अष्ट ८ अद्रि ७ इन्दु १ अर्थात् १७८, नव९ नव ९ क्षिति १ अर्थात् १९९, अर्क १२ पक्ष २ अर्थात् २१२, अर्क १२ अश्विन २ अर्थात् २१२, शर ५ खग ९ क्षिति १ अर्थात् १९५, अक्ष ५ तिथि १५ अर्थात् १५५, गो ९ अष्ट ८ अर्थात् ८९, ख अर्थात् ० ये बुधके शीघ्राङ्क हैं ॥ २ ॥

खं तत्वानि नगाब्धयोऽष्टषट्काः पञ्चेभा गजखे-
चरा रसाशाः । नागाशा द्विदिशो नवाहयः षट्-
षष्टिः षट्कगुणा नभो गुरोः स्युः ॥ ३ ॥

अन्वयः-खं तत्वानि नगाब्धयः अष्टषट्काः पञ्चेभाः गजखेचराः रसाशाः नागाशाः द्विदिशः नवाहयः षट्षष्टिः षट्कगुणाः नभः (इमे) गुरोः (आशुफलजाः अंकाः) स्युः ॥ ३ ॥

भाषा-ख अर्थात्०, तत्व अर्थात् २५, नग ७ अब्धि ४ अर्थात् ४७, अष्ट ८ षट् ६ अर्थात् ६८, पंच५इभ ८ अर्थात् ८५, गज ८ खेचर ९ अर्थात् ९८, रस ६आशा१० अर्थात् १०६, नाग ८ आशा १० अर्थात् १०८, द्वि २ दिश १०अर्थात् १०२, नव ९

अहि ८ अर्थात् ८९, षट् ६ षष्टि ६० अर्थात् ६६, षट् ६ गुण ३ अर्थात् ३६ और नभ अर्थात् ० ये बृहस्पतिके शीघ्राङ्क हैं ॥ ३ ॥

खमग्न्यङ्कैस्तुल्या रसयमभुवः षट्कधृतयोऽरिसि-
द्धाः पक्षाभ्राग्नय उदधिनाराचदहनाः। द्विशून्यो-
दन्वन्तः खजलधिकृता भूरसकृतास्त्रिवेदोदन्वन्तो
रसयमगुणाः खं भृगुजनेः ॥ ४ ॥

अन्वयः–खम् अग्न्यङ्कैः तुल्याः (अङ्काः) रसयमभुवः षट्कधृतयः अरिसिद्धाः पक्षाभ्राग्नयः उदधिनाराचदहनाः द्विशून्योदन्वन्तः खजलधिकृताः भूरसकृताः त्रिवेदोदन्वन्तः रसयमगुणाः खम् (इमे) भृगुजनेः (अङ्काः स्युः) ॥ ४ ॥

भाषा–ख अर्थात्०, अग्नि ३ अंग ६ अर्थात् ६३, रस ६ यम २ भू १ अर्थात् १२६, षट् ६ धृति १८ अर्थात् १८६, अरि ६ सिद्धि २४ अर्थात् २४६, पक्ष २ अभ्र० अग्नि ३ अर्थात् ३०२, उदधि ४ नाराच ५ दहन ३ अर्थात् ३५४, द्वि २ शून्य० उदन्वत् ४ अर्थात् ४०२, ख० जलधि ४ कृत ४ अर्थात् ४४०, भू १ रस ६ कृत ४ अर्थात् ४६१, त्रि ३ वेद ४ उदन्वत् ४ अर्थात् ४४३, रस ६ यम २ गुण ३ अर्थात् ३२६ और ख अर्थात् ० ये शुक्रके शीघ्राङ्क हैं ॥ ४ ॥

खमिषुक्षितयो गजाश्विनो गोदहना नागकृताः
पयोधिबाणाः। द्विरगेषुमिता हुताशबाणाः शरवे-
दास्त्रिगुणा धृतिः खमार्कैः ॥ ५ ॥

अन्वयः–खम् इषुक्षितयः गजाश्विनः गोदहनाः नागकृताः पयोधिबाणाः द्विः अगेषुमिताः हुताशबाणाः शरवेदाः त्रिगुणाः धृतिः खम् (इमे) आर्कैः (अङ्काः स्युः) ॥ ५ ॥

भाषा–ख अर्थात्०, इषु ५ क्षिति १ अर्थात् १५, गज ८ अश्विन २ अर्थात् २८, गो ९ दहन ३ अर्थात् ३९, नाग ८ कृत ४

अर्थात् ४८, पयोधि ४ बाण ५ अर्थात् ५४, अग७ इषु ५ अर्थात् ५७, अग ७ इषु ५ अर्थात् ५७, हुताश ३ बाण ५ अर्थात् ५३, शर ५ वेद ४ अर्थात् ४५, त्रि ३ गुण ३ अर्थात् ३३, धृति अर्थात् १८ और खं अर्थात् ० ये क्रमसे शनिके शीघ्राङ्क हैं ॥ ५ ॥

चक्र.

नाम.	।०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मंगल.	०	५८	११७	१७४	२२८	१७९	३२५	३६५	३९३	४००	३६८	२४९	०
बुध.	०	४१	८१	११७	१५०	१७८	१९९	२१२	२१२	१९५	१५५	८९	०
बृह.	०	२५	४७	६८	८५	५८	१०६	१०८	१०२	८९	६६	३६	०
शुक्र.	०	६३	१२६	१८६	१४६	३०२	३५४	४०२	४४०	४६१	४४३	३२६	०
शनि.	०	१५	२८	३९	४८	५४	५७	५७	५३	४५	३३	१८	०

अब शीघ्राङ्कोंसे शीघ्रफल बनानेका प्रकार कहते हैं।

भौमार्कीज्यविहीनमध्यमरविः स्यात्स्वाशुकेन्द्रं तु विद्भृग्वोरुक्तमिदं रसोर्ध्वमिनभाच्छुद्धं तदंशादिनैः। भक्ताः खादिफलं क्रमादिह गताङ्कोऽसौ क्षयद्धर्या हताच्छेषाद्बाणकुलब्धिहीनयुगयं दिग्घृल्लवाद्यं फलम् ॥ ६ ॥

अन्वयः-भौमार्कीज्यविहीनमध्यमरविः स्वाशुकेंद्रं स्यात् । विद्भृग्वोः तु उक्तम् इदं रसोर्ध्वं (चेत्) इनभात् शुद्धं (कार्य्यम्) । तदंशाः दिनैः भक्ताः (सन्तः) इह क्रमात् खादिफलं गताङ्कः (भवेत्) । असौ क्षयद्धर्या हतात् शेषात् बाणकुलब्धिहीनयुक् (कार्य्यः) अयं दिग्घृत् लवाद्यं फलं (भवति) ॥ ६ ॥

भाषा-मध्यम मंगल शनि और बृहस्पति इनको मध्यम सूर्यमें घटानेसे जो बचे वह मंगल शनि और गुरुका शीघ्र केन्द्र होता है (जो सूर्यमेंसे भौमादि न घटे तो सूर्यकी राशिमें १२

जोड़ लेते हैं और बुध शुक्रका शीघ्र केन्द्र मध्यम ग्रहसाधनके समय कह आये हैं) जो यह शीघ्र केन्द्र छः राशिसे अधिक हो तो १२ में घटा दे और जो बचे उसके अंश बनावे फिर उन्होंमें १५ का भाग देनेसे जो शून्य आदि फल मिले उतने अंकोंके ऊपर गणना करनेसे जो फल मिले वह गताङ्क और उससे अगला एष्य अंक कहलाता है फिर उन दोनों अंकोंका अंतर करनेसे जो अंक मिले उससे शेष अंश आदिको गुणा करे फिर उनमें १५ का भाग देनेसे जो फल मिले उसको गत अंकमें घटावे अथवा जोड़े अर्थात् अगला अंक कम हो तो घटावे और अधिक हो तो जोड़ दे फिर उसमें १० का भाग देनेसे जो अंश आदि आवे वह ग्रहका शीघ्र फल होता है उसमें मेष आदि केन्द्र ६ राशिके भीतर हो तो जोड़ दे और तुला आदि केन्द्र ६ राशिके भीतर हो तो उसको ग्रहमेंसे घटा दे ॥ ६ ॥

अब पंचताराके मन्द फल साधनकी रीति लिखते हैं ।

खङ्गोश्विनोऽद्रिमरुतोऽक्षगजा नवाशाः सिद्धेन्दवः खदहनक्षितयोऽसृजोऽङ्काः। मान्दा बुधस्य खमिनाः कुदृशोऽष्टपक्षा देवाः शरानलमिता रसवह्नयः स्युः ॥ ७ ॥

अन्वयः–खं गोश्विनः अद्रिमरुतः अक्षगजाः नवाशाः सिद्धेन्दवः खदहनक्षितयः (एते) असृजः मान्दाः अङ्काः स्युः । खम् इनाः कुदृशः अष्टपक्षाः देवाः शरानलमिताः रसवह्नयः (एते) बुधस्य (मान्दाः अङ्काः स्युः) ॥ ७ ॥

भाषा–खं अर्थात् ०, गो ९ अश्विन २ अर्थात् २९, अद्रि ७ मरुत ५ अर्थात् ५७, अक्ष ५ गज ८ अर्थात् ८५, नव ९ आशा १० अर्थात् १०९, सिद्ध २४ इन्दु १ अर्थात् १२४, खं० दहन ३ क्षिति १ अर्थात् १३० ये मंगलके मन्द फलके

अंक हैं। खं अर्थात्०, इन अर्थात् १२, कु १ दश २ अर्थात् २१, अष्ट ८ पक्ष २ अर्थात् २८, देव अर्थात् ३३, शर ५ अनल ३ अर्थात् ३५, रस ६ वन्हि ३ अर्थात् ३६ ये बुधके मन्द फलके अंक हैं ॥ ७ ॥

अब ग्रहोंके मन्द केन्द्र बनानेकी रीति लिखते हैं।

खेन्द्रर्क्षाणि नवाग्नयोऽह्युदधयोक्षाक्षा नवाक्षा गुरोः शुक्रस्याभ्ररसेशविश्वमनवो द्विर्बाणचन्द्राः क्रमात्। खङ्गोऽब्जाः खकृताः खषण्नगनगा गोष्टौ त्रिनन्दाः शनेः शुद्धोऽब्ध्यद्रिषडग्निनागगृहतः स्यान्मन्दकेन्द्रं कुजात् ॥ ८ ॥

अन्वयः-खेन्द्रर्क्षाणि नवाग्नयः अह्युदधयः अक्षाक्षाः नवाक्षाः(एते)गुरोः (मान्दाः अङ्काः स्युः)। अभ्ररसेशविश्वमनवः द्विर्बाणचन्द्राः (एते) क्रमात् शुक्रस्य (मान्दाः अङ्काः स्युः)। खं गोब्जाः खकृताः खषट् नगनगाः गोष्टौ त्रिनन्दाः (एते) शनेः (मान्दाः अङ्काः स्युः)। अब्ध्यद्रिषडग्निनागगृहतः शुद्धः कुजात् मन्दकेन्द्रं स्यात् ॥ ८ ॥

भाषा-ख अर्थात्०, इन्द्र अर्थात् १४, ऋक्ष अर्थात् २७, नव ९ अग्नि ३ अर्थात् ३९, अहि ८ उदधि ४ अर्थात् ४८, अक्ष ५ अक्ष ५ अर्थात् ५५, नग ७ अक्ष ५ अर्थात् ५७ ये बृहस्पतिके मन्द फलके अंक हैं। अभ्र अर्थात्०, रस अर्थात् ६, ईश अर्थात् ११, विश्व अर्थात् १३, मनु अर्थात् १४, बाण ५ चन्द्र १ अर्थात् १५, बाण ५ चन्द्र १ अर्थात् १५ ये शुक्रके मन्द फलके अंक हैं। खं अर्थात्०, गो ९ अब्ज १ अर्थात् १९, ख०कृत ४ अर्थात् ४०, ख०षट् ६ अर्थात् ६०, नग ७ नग ७ अर्थात् ७७, गो ९ अष्ट ८ अर्थात् ८९, त्रि ३ नन्द ९ अर्थात् ९३ ये शनिके मन्द फलके अंक हैं। ४ राशि भौमका मन्दोच्च, ७ राशि बुधका, ६ राशि बृहस्पतिका,

३ राशि शुक्रका और ८ राशि शनिका ये मन्दोच्च हैं। ऐसे मन्दोच्च बनाकर अपने अपने मन्दोच्चमेंसे घटानेसे मन्द केन्द्र होता है॥८॥

मंदांकचक्रम् ।

नाम.	०	१	२	३	४	५	६
मङ्गलके मंदाङ्क	०	२९	५७	८५	१०९	१२४	१३०
बुधके मन्दाङ्क	०	१२	२१	२८	३३	३५	३६
बृहस्पतिके मं.	०	१४	२७	३९	४८	५५	५७
शुक्रके मंदाङ्क	०	६	११	१३	१४	१५	१५
शनिके मंदाङ्क	०	१९	४०	६०	७७	८९	९३

अब पंचताराके मन्द फलका प्रकार कहते हैं ।

मृदुकेन्द्रभुजांशका दिनाप्ताः फलमङ्कः प्रगतस्तदूनितैष्यः । परिशेषहतो दिनाप्तियुक्तो दशभक्तः फलमंशकादि मान्दम् ॥ ९ ॥

अन्वयः–मृदुकेन्द्रभुजांशकाः दिनाप्ताः (कार्य्याः । तदा यत्) फलं (तन्मितः) प्रगतः अङ्कः (स्यात्) । तदूनितैष्यः परिशेषहतः (तस्मात्) दिनाप्तियुक्तः (ततः) दशभक्तः (कार्यः, तदा) अंशकादि मान्दं फलं (भवति) ॥ ९ ॥

भाषा–किसी ग्रहके मंद केन्द्रका भुज करे और जो भुज हो उसके अंश करे और अंशोंमें १५का भाग देनेसे जो फल मिले उसके समान प्रथम कथित मन्दाङ्क ग्रहण करे वह गत अंक होता है फिर गत अंक और उससे आगिला अंक इन्होंका अंतर करनेसे जो अंक मिले उससे १५ का भाग देनेसे शेष अंश आदिको गुणा करे फिर उन्होंमें १५ का भाग देनेसे जो अंक मिलें सो गताङ्कमें युत करे फिर उसमें १० का भाग देनेसे अंश आदि मन्द फल

होता है (जो मंद केन्द्र मेषादि हो तो जोडना चाहिये और तुलादि हो तो घटाना चाहिये) ॥ ९ ॥

अब ग्रहोंमें फलोंका संस्कार करनेके क्रमको कहते हैं।

प्राङ्मध्यमे चलफलस्य दलं विदध्यात्तस्माच्च मान्दमखिलं विदधीत मध्ये। द्राक्केन्द्रकेऽपि च विलोममतश्च शीघ्रं सर्वं च तत्र विदधीत भवेत्स्फुटोऽसौ ॥ १० ॥

अन्वयः-प्राक् चलफलस्य दलं मध्यमे विदध्यात्। तस्मात् च मान्दं (फलं साध्यम्। तत्) अखिलं मध्ये विदधीत। अपि च (तत्) द्राक्केन्द्रके विलोमं (विदध्यात्)। अतः च शीघ्रं (साध्यम्। तत्) सर्वं तत्र विदधीत असौ स्फुटः भवेत् ॥ १० ॥

भाषा-पहले मध्यम ग्रहमें शीघ्र फलके आधेको जोडे अथवा घटावे फिर शीघ्र फलके आधेका संस्कार किये हुए ग्रहपरसे मन्द फल साधन करे उस सम्पूर्ण मन्द फलका मध्यम ग्रहमें संस्कार करे अर्थात् धन ऋण करे फिर उस मन्द फलको पहले शीघ्र फलमें विपरीत रीतिसे जोडे अथवा घटावे अर्थात् ऊन हो तो जोडे और युत हो तो घटावे ऐसा करनेसे दूसरा मन्द फल संस्कृत शीघ्र केन्द्र होता है। फिर इस परसेभी शीघ्र फल साधन करे और इस सम्पूर्ण शीघ्र फलको मन्द फलसंस्कार किये हुए ग्रहमें पहलेकी तरह युत ऊन करनेसे स्पष्ट ग्रह होता है ॥ १० ॥

अब मंगलके स्पष्ट करनेका उदाहरण कहते हैं।

मध्यम सूर्य १।४।१३।४२ में मध्यम मंगल ९।२९।५५।१३ को घटानेसे मंगलका शीघ्र केन्द्र ३।४।१८।२९ हुआ इसके पहिली रीतिसे अंश बनाये तो ९४।१८।२९ हुए इन अंशोंमें १५ का भाग देनेसे फल ६ मिला अब पिछले ५ श्लोकके पीछे जो शीघ्राङ्कका कोष्टक है उसमें शून्य आदि क्रमके अनुसार गणना करनेसे गत अंक ३२५ और इससे अगला अंक ३६५ हुआ इन

दोनों अंकोंका अंतर ४० हुआ इससे पहिले अंशादि ९४।१८। १९ में १५ का भाग देनेसे जो अंशादि ४।१८।२९ बचे हैं इनको गुणा किया तो १७२।१९।२० हुए इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल ११।२९।१७ मिला फिर इसको आगिले अंकके अधिक होनेके कारण इस फलको गत अंक ३२५में जोडा तो ३३६।२९। १७ हुए फिर इन्होंमें १० का भाग देनेसे अंश आदि फल ३३। ३८।५५ मिला इसके आधे १६।५९।२७ हुए यह मेषादि ६ राशिके भीतर होनेसे धन है इसलिये मध्यम मंगल ९।२९।५५। १३में जोडनेसे फलार्द्ध संस्कृत अर्थात् शीघ्र फलके आधे संस्कार किया मंगल १०।१६।४४।४० हुआ ॥

अब मन्द फल बनानेका उदाहरण कहते हैं ।

मंगलके मन्दोच्च ४।००।००में शीघ्र फलके आधे संस्कार किये हुए मंगल १०।१६।४४।४०को घटानेसे मन्द केन्द्र५।१३।१५।२० हुआ इसके भुज किये तो अंश १६।४४।४० हुए इनमें १५ का भाग देनेसे लब्धि १ मिला उसके अनुसार मन्दाङ्क गत अंक २९ मिला और इससे आगिला अंक५७है इन्होंका अंतर किया तौ २८ हुए इनसे शेष १।४४।४०को गुणा किया तो ४८।५०।४० हुए इनमें १५ का भाग दिया तो ३।१५।२२ मिले फिर इनमें गत अंक २९ को जोड दिया तो ३२।१५।२२ हुए फिर इनमें १० का भाग देनेसे मन्द फल ३।१३।३२ मिला यह मन्द फल हुआ । यह केन्द्र मेष आदि छः राशिके भीतर होनेसे फल धन है इसलिये मन्द फलको मध्यम मंगल ९।२९।५५।१३में जोडनेसे मन्द स्पष्ट मंगल १०। ३।८।४५ हुआ ॥

अब फिर शीघ्र फल बनानेका उदाहरण कहते हैं ।

शीघ्र केन्द्रमें विलोम रीति होती है अर्थात् मेषादि छः राशिके भीतर हो तो ऋण और तुलादि ६ राशिके भीतर हो तो धन इसलिये पहले शीघ्र केन्द्र ३।४।१८।२९ में धन मन्द फल ३।१३।३२

को घटाया तो दूसरे शीघ्र फलके बनानेके प्रकारमें शीघ्र केन्द्र ३।१।४।५७ हुआ यह केन्द्र छः राशिसे अधिक होता तो इसको १२ में शोधन करते सो यहां नहीं है इसलिये इसके अंश किये तो ९१।४।५७ हुए इनमें १५ का भाग दिया तो ६ मिले इसके अनुसार भौमका शीघ्राङ्क ३२५ मिला और एष्य अंक ३६५ हुआ इन्होंके अंतर करनेसे ४० शेष रहे इनसे ऊपरके १।४।५७ अंशादिको गुणा दिया तो ४३।१८।०० हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल २।५३।१२ मिला इसमें गत शीघ्राङ्क ३२५ को जोड़ दिया तो ३२७।५३।१२ हुए इनमें १० का भाग देनेसे अंश आदि द्वितीय शीघ्र फल ३२।४७।१९ धन मिला यह मेषादि है इसलिये इसको मन्द स्पष्ट मंगल १०।३।८।४५ में जोड़ देनेसे स्पष्ट मंगल ११।५।५६।४ हुआ ॥

बुधके स्पष्ट करनेका उदाहरण लिखते हैं।

पहिले अध्यायके "दिग्घ्नो द्विधादिनेति" इस १२ वें श्लोकके उत्तरार्द्धके अनुसार बुधका शीघ्र केन्द्र १।१७।१४।५० है यह छः राशिके भीतर है इसलिये उसके अंश किये तौ ४७।१४।५० हुए इनमें १५ का भाग देनेसे ३ मिले और शेष रहे २।१४।५० फिर तीसरा गत शीघ्र अंक ११७ हुआ और एष्य अंक १५० हुआ इन दोनोंका अंतर हुआ ३३ इससे शेष २।१४।५० को गुणा किया तो ७४।९।३० हुए इनमें १५ का भाग देनेसे ४।५६।३८ मिले और गत शीघ्राङ्क ११७ से एष्य अंक १५० अधिक है इसलिये ४।५६।३८ में गत अंक ११७ को जोडा तो १२१।५६। ३८ हुए इसमें १० का भाग देनेसे शीघ्र फल १२।११।३९ मिला और यह मेषादि ६ राशिके भीतर है इसलिये धन है अतएव इसके आधे ६।५।४९ को मध्यम बुध १।४।१३।४२ में जोडा तो शीघ्र फलार्ध संस्कार किया हुआ बुध १।१०।१९।३१ हुआ फिर इसको मन्द फल लानेके लिये बुधके मंदोच्च ७।०।०।० में घटा

दिया तौ ५।१९।४०।२९ यह बुधका मन्द केन्द्र हुआ। इसके भुज करके अंश किये तौ १०।१९।३१ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल शून्य मिला शेष १०।१९।३१ रहे फिर बुधका गत मंदांक और एष्य मंदांक १२ हुआ इन्होंका अंतर किया तौ १२ ही हुए इससे पूर्वोक्त शेष १०।१९।३१ को गुणा दिया तौ १२३।५४।१२ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ८।१५।३६ मिला इसमें गत अंक ० को युत करनेसे ८।१५।३६ ही हुए फिर इसमें दशका भाग देनेसे अंश आदि मंद फल ० ।४९। ३३ मिला यह केन्द्र मेषादि होनेसे धन है इसको मध्यम बुध १।४।१३।४२ में जोडा तो मन्द स्पष्ट बुध १।५।३।१५ हुआ। अब द्वितीय शीघ्र फल लानेके लिये पहले बनाये हुए शीघ्र केन्द्र १।१७।१४।५० में मंद फल ०।४९।३३ को घटा दिया तो द्वितीय शीघ्र केन्द्र १।१६।२५।१७ हुआ यह मेषादि ६ राशिसे न्यून है इसलिये इसके अंश करे तौ ४६।२५।१७ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ३ मिला और शेष १।२५।१७ रहे फिर लब्ध ३ के अनुसार बुधका गत शीघ्र अंक ११७ और एष्य अंक १५० हुआ इन्होंका अंतर ३३ हुआ इससे पूर्वोक्त शेष १।२५।१७ को गुणा दिया तो ४६।५४।२१ हुए इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल ३।७।३७ मिला इसमें गत अंक ११७ को जोडा तो १२०।७।३७ हुए फिर इनमें १० का भाग देनेसे अंश आदि द्वितीय शीघ्र फल १२।०।४५ मिला यह केन्द्र मेषादि धन है इसलिये इसको मंद स्पष्ट बुध १।५।३।१५ में जोडा तो स्पष्ट बुध १।१७।४।०० हुआ॥

अब बृहस्पतिके स्पष्ट करनेका उदाहरण कहते हैं।

"भौमार्कीज्येत्यादि" छटे श्लोकके अनुसार मध्यम सूर्य १। ४।१३।४२ में मध्यम बृहस्पति ४।८।१५।१७ को घटा दिया तो बृहस्पतिका शीघ्र केन्द्र ८।२५।५८।२५ हुआ यह छः राशिसे

अधिक है इसलिये इसको १२ में घटा दिया तौ ३।४।१।३५ रहे फिर इसके अंश किये तौ ९४।१।३५ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ६ मिला और शेष ४।०।१।३५ रहा फिर फल ६ के अनुसार गुरुका गत शीघ्रांक १०६ और इससे अगला अंक १०८ है इन्होंका अंतर किया तौ २ हुआ इससे शेष ४।१।३५।०० को गुणा दिया तो ८।३।१० हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल ०।३२।१२ मिला और गत अंक १०६ से अगला अंक १०८ अधिक है इसलिये १०६ में ०।३२।१२ को जोडा तौ १०६।३२।१२ हुए इन्होंमें १० का भाग देनेसे अंश आदि फल १०।३९।१३ यह शीघ्र फल हुआ यह केन्द्र तुला आदि छः राशिके भीतर है तौ ऋण हुआ इसलिये शीघ्र फलके आधे ५।१९।३६ को मध्यम बृहस्पति ४।८।१५।१७ में घटा दिया तौ शीघ्र फल अर्द्ध संस्कार किया हुआ बृहस्पति ४।२।५५।४१ हुआ फिर मन्द फल लानेके लिये शीघ्र फलार्द्ध संस्कारित बृहस्पति ४।०२।५५।४१ को अपने मंदोच्च ६।०।०।०।० में घटा दिया तो गुरुका मन्द केन्द्र १।२७।४।१९ हुआ फिर इसके भुजके अंश किये तो ५७।४।१९ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ३ मिला और शेष १२।४।१९ रहे फिर और फल ३ के अनुसार गुरुका मन्दांक ३९ और इससे अगला अंक ४८ है इन्होंका अंतर किया तौ ९ बचे इससे शेष १२।४।१९ को गुणा दिया तो १०८।३८।५१ हुए इन्होंमें १५ का भाग देनेसे ७।१४।३५ हुए इन्होंमें गत मंदाङ्क ३९ को युत किया तौ ४६।१४।३५ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे अंश आदि मंद फल ४।३७।२७ हुआ यह राशिसे कम है इस कारण धन है इसको मध्यम बृहस्पति ४।८।१५।१७ में जोडा तौ मंद स्पष्ट बृहस्पति ४।१२।५२।४४ हुआ। अब दूसरा शीघ्र फल लानेके लिये पहिले बनाये हुए शीघ्र केन्द्र ८।२५।५८।२५ में विलोम रीति धनको ऋण मान-

कर मंद फल ४।३७।२७ को घटा दिया तो ८।२१।२०।५८ हुए यह द्वितीय शीघ्र केन्द्र है और यह छः राशिसे अधिक है इसलिये इसको १२ में घटा दिया तौ ३।८।३९।२ हुए फिर इन्होंके अंश करे तौ ९८।३९।२ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ६ मिला और शेष ८।३९।२ रहा फिर लब्ध ६ के अनुसार इसका गत शीघ्रांक १०६ और इससे अगला अंक १०८ है इन्होंका अंतर किया तो २ रहे इससे शेष ८।३९।२ को गुणा दिया तो १७।१८।४ हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे लब्धि १।९।१२ मिली इन्होंमें शीघ्रांक १०६ को जोडा तो १०७।९।१२ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे द्वितीय शीघ्र फल १०।४२।५५ मिला यहां तुला आदि ६ राशिके अंतर्गत होनेसे ऋण है इसलिये इसको मंद स्पष्ट ४।१२।५२।४४ में घटाया तो स्पष्ट बृहस्पति ४। २।९।४९ हुआ ॥

अब शुक्रके स्पष्ट करनेका उदाहरण कहते हैं।

प्रथम अध्यायके १३ वे श्लोकके उत्तरार्द्ध "त्रिनिघ्नाद्युपिंडादिति" के अनुसार बनाये हुए शुक्रका शीघ्र केन्द्र ३।५।४१।३५ छः राशिके भीतर है इसलिये इसके अंश किये तो ९५।४१।३५ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ६ मिला शेष ५।४१।३५ रहे इसका गत लब्ध ६ के अनुसार शुक्रका शीघ्रांक ३५४ और इससे अगला अंक ४०२ हुआ इन्होंका अंतर किया तो ४८ हुआ इससे शेष ५।४१।३५ को गुणा दिया तो २७३।१६।०० हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल १८। १३।४ मिला फिर गत शीघ्रांक ३५४ से एष्यशीघ्रांक ४०२ अधिक है इसलिये फल १८।१३।०४ में गत अंक ३५४ को युत किया तो ३७२। १३।४ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे अंश आदि शीघ्र फल ३७। १३।१८ मिला यहां यह केन्द्र मेष आदि ६ राशिमें स्थित है इसलिये धन हुआ इसको शीघ्र फलके आधे १८।३६।३९ को मध्यम शुक्र १।४।१३।४२ में युत किया तौ अर्द्ध शीघ्र फलसे संस्कार

किया हुआ शुक्र १।२२।५०।२१ हुआ। अब मन्द फल लानेके लिये पूर्व लब्ध १।२२।५०।२१ को शुक्रके मंदोच्च ३।०।० में घटा दिया तो शुक्रका मन्द केन्द्र १।७।९।३९ हुआ फिर इसके भुजके अंश किये तौ ३७।९।३९ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल २ मिला और शेष रहा ७।०९।३९ फिर फल २ के अनुसार शुक्रका मन्दांक ११ और इससे अगला अंक १३ है इन्होंका अंतर किया तौ २ हुए इससे शेष ७।९।३९ को गुणा दिया तौ १४।१९।१८ हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल ०।५७।१७ मिला इसमें गत मन्दांक ११ को युत किया तौ ११।५७।१७ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे अंश आदि मन्द फल १।११।४३ मिला यहां यह मन्द केन्द्र मेष आदि ६ राशिके भीतर है इसलिये धन है इसको मध्यम शुक्र १।४।१३।४२ में जोडा तो मन्द स्पष्ट शुक्र १।५।२५।२५ हुआ। अब द्वितीय शीघ्र फल लानेके लिये फिर पहले बनाये हुए शीघ्र केन्द्र ३।५।४१।३५ में मन्द फल १।११।४३ को यद्यपि मेषादि ६ राशिके भीतर होनेसे धन है पर विपरीत रीतिसे ऋण मानकर ऊन किया तौ द्वितीय शीघ्र केन्द्र ३।४।२९।५२ हुआ यह ६ राशिके भीतर है इसलिये इसके अंश किये तो ९४।२९।५२ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ६ मिला और शेष ४।२९।५२ रहे फिर लब्ध ६ के अनुसार शुक्रका शीघ्रांक ३५४ और इससे अगला अंक ४०२ है इन्होंका अंतर किया तो ४८ हुआ इससे शेष ४।२९।५२ को गुणा दिया तो २१५।५३।३६ हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल १४।२३।३४ मिला फिर इसमें प्रथम शीघ्रांक ३५४ को युत किया तो ३६८।२३।३४ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे शीघ्र फल ३६।५०।२१ मिला यहां केन्द्र मेष आदि ६ राशिके भीतर है इसलिये धन है इसको मंद स्पष्ट शुक्र १।०५।२५।२५ में युत किया तो स्पष्ट शुक्र २।१२।१५।४६ हुआ॥

अब शनि बनानेका उदाहरण कहते हैं।

पूर्व कथित छटे श्लोक "भौमार्कीज्येत्यादि" के अनुसार मध्यम सूर्य १।४।१३।४२ में मध्यम शनि ११।०।३६।४५ को घटा दिया तो शनिका शीघ्र केन्द्र २।३।३६।५७ हुआ यह ६ राशिसे कम है इसलिये इसके अंश किये तो ६३।३६।५७ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ४ मिला और शेष ३।३६।५७ रहे इसके फल ४ के अनुसार शनिका शीघ्रांक ४८ और एष्य अंक ५४ हुआ इन दोनोंका अंतर किया तो ६ रहे इससे शेष ३।३६।५७ को गुणा दिया तो २१।४१।४२ हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल १।२६।४६ मिला फिर इसमें गत अंक ४८ को युत किया तो ४९।२६।४६ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे शनिका अंश आदि शीघ्र फल ४।५६।४० मिला यहां यह केन्द्र मेष आदि ६ राशिके भीतर होनेसे धन है इसलिये फलके आधे २।२८।२० को मध्यम शनि ११।०।३६।४५ में जोडा तो शनि ११।३।५।५ शीघ्र फल दल स्पष्ट हुआ। फिर मन्द फल लानेके लिये पूर्वोक्त ११।०३।०५।०५ को शनिके मंदोच्च ८।०।०।० में घटा दिया तो शनिका मन्द केन्द्र ८।२६।५४।५५ हुआ फिर इसका भुज किया तो २।२६।५४।५५ हुए फिर इसके अंश किये तो ८६।५४।५५ हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ५ मिला शेष ११।५४।५५ रहे फिर फल ५ के अनुसार शनिका मन्दांक ८९ और इससे अगला अंक ९३ है इन्होंका अन्तर किया तो ४ हुआ इससे ११।५४।५५ शेषको गुणा किया तो ४७।३९।४० हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल ३। १०।३८ मिला इसमें मन्दांक ८९ को युत किया तो ९२।१०।३८ हुए फिर इनमें दशका भाग देनेसे अंश आदि मन्द फल ९।१३। ३ मिला और यहां मन्द केन्द्र तुला आदि ६ राशिके भीतर होनेसे ऋण है इसलिये इसको मध्यम शनि ११।००।३६।४५ में

घटा दिया तो मन्द स्पष्ट शनि १०।२१।२३।४२ हुआ । अब द्वितीय शीघ्र फल लानेके लिये पहले बनाये हुए शीघ्र केन्द्र २। ३।३६।५७ में विलोम रीतिसे अर्थात् ऋणको धन मानकर ९। १३।०३ मंद फलको जोड दिया तो शीघ्र केन्द्र २।१२।५०।०० हुआ फिर इसके अंश बनाये तो ७२।५०।०० हुए इनमें १५ का भाग देनेसे फल ४ मिला और शेष १२।५०।०० रहा फल ४ का शीघ्रांक ४८ हुआ और अगला अंक ५४ हुआ इनका अंतर किया तो ६ मिले इससे शेष १२।५०।०० को गुणा दिया तो ७७।००।०० हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल ५।८।० मिला फिर इसमें गत शीघ्रांक ४८ को युत किया तो ५३।८।० हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे द्वितीय शीघ्र फल ५।१८। ४८ मिला यहां केन्द्र मेष आदि ६ राशिके भीतर होनेसे धन है इसलिये इसको मंद स्पष्ट शनि १०।२१।२३।४२ में जोडा तो स्पष्ट शनि १०।२६।४२।३० हुआ ॥

इस प्रकार ग्रहोंका स्पष्ट बनाकर अब मंद स्पष्ट गति बनानेकी रीतिको लिखते हैं।

मान्दाङ्कान्तरमार्क्यसृग्गुरूणां भक्तं बाणनगैः शरैः खरामैः । विद्भृग्वोर्द्विहतेषु भाजितं तद्द्या-त्प्राग्वदितौ मृदुस्फुटा सा ॥ ११ ॥

अन्वयः-आर्क्यसृग्गुरूणां मान्दाङ्कातरं (क्रमेण) बाणनगैः शरैः खरामैः भक्तं विद्भृग्वोः (मान्दाङ्कान्तरम्) द्विहतेषु भाजितं (कलाद्यं) तत् प्राग्वत् इतौ दद्यात् । (तदा)सा मृदुस्फुटा (गतिः भवति)॥ ११ ॥

भाषा-शनि मंगल और बृहस्पति इनके मन्द फल साधनेके समय शनिके जो मन्दांकोंके अन्तर आये थे उनमें क्रमसे शनिके मन्दांकोंके अंतरमें ७५ का भाग देवे और मंगलके गत मन्दाकोंके अंतरमें पांच ५ का भाग देवे और बृहस्पतिके मन्दांकोंके अंतरमें

३० का भाग देवे ऐसे भाग देनेसे जो कला आदि फल मिले उसको दो जगह रक्खे ऐसे करनेसे गतिका मन्द फल होता है। और बुध शुक्रके गत मन्दांकोंके अंतरको दोसे गुणा करे फिर उसमें पांचका भाग देनेसे जो मिले वह कलादि है ऐसे करनेसे इन दोनों ग्रहोंकी गतिका मंद फल होता है उन गतियोंके मन्द फलोंको केन्द्र कर्क आदि छः राशिमें स्थित हो तो ग्रहकी मध्यम गतिमें युत करे और मकर आदि छः राशियोंमें केन्द्र हो तो ऊन करे ऐसे करनेसे मन्द स्पष्ट गति होती है ॥ ११ ॥

अब स्पष्ट गति बनानेकी रीति लिखते हैं।

भौमाच्चलाङ्कविवरं शरहृत्स्वबाणांशाढ्यं त्रिहृत्कृतहृतं द्विगुणाक्षभक्तम्। तद्धीनयुक्क्षयचये तु मृदुस्फुटा स्यात्स्पष्टाऽथ चेद्बहु ऋणात्पतिता तु वक्रा ॥ १२ ॥

अन्वयः-भौमात् चलाङ्कविवरं (क्रमेण) शरहृत् स्वबाणांशाढ्यं त्रिहृत् कृतहृतं द्विगुणाक्षभक्तं (कार्य्यम्)। (लब्धिः गतेः शीघ्रफलं स्यात्)। क्षयचये तद्धीनयुक् मृदुस्फुटा स्पष्टा स्यात्। अथ चेत् (ऋणफलं) बहु (तदा) ऋणात् पतिता (कार्य्या) (शेषं) वक्रा (स्यात्)॥ १२ ॥

भाषा-मंगलको आदि लेकर शनिपर्यन्त ग्रहोंके दूसरे (शीघ्र फल) साधनमें जो शीघ्रांकोंका अंतर आया था उनमें क्रमसे मंगलके अंतरमें पांच ५ का भाग देवे फिर बुधके शीघ्रांकोंके अंतरमें पांचका भाग देवे और जो फल मिले उसको उसी अंतरमें जोड देवे फिर बृहस्पतिके अंकोंके अंतरमें तिनका भाग देवे फिर शुक्रके अंकोंके अंतरमें चारका भाग देवे और शनिके अंकोंके अंतरको दोसे गुणा करे फिर उसमें पांचका भाग देवे जो अंक लब्ध हो उसे कलादि जाने ऐसे करनेसे पांचों ग्रहोंके गतिका शीघ्र फल हो जाता है। और जो प्रथम शीघ्रांक दूसरे शीघ्रांकसे

अधिक हो तो ऋण और अल्प हो तो धन माने फिर पूर्वकथित मन्द स्पष्ट गतिमें धन अथवा ऋण करे तौ स्पष्ट गति हो जाती है। यदि लब्धि ऋण हो और मन्द स्पष्ट गतिमें न घट सक्ता हो अर्थात् लब्धि मन्द स्पष्ट गतिसे अधिक होय तौ विपरीत रीति करे अर्थात् ऋण लब्धिमें मन्द स्पष्ट गतिको घटावे और जो बचे उसे उसी ग्रहकी वक्र गति जाने। ऐसे प्रकरणमें ग्रहकी वक्र गति होती है ॥ १२ ॥

अब उदाहरण लिखते हैं।

मंगलके मन्द फल बनानेमें मन्दांकोंका अंतर २८ है इसमें पांचका भाग देनेसे फल ५।३६ मिला यहां मन्द केन्द्र कर्क आदि छः राशिमें स्थित है इसलिये फल ५।३६ का भौमकी मध्यम गति ३१।२६ में जोडा तौ भौमकी मन्द स्पष्ट गति ३७।२ हुई। फिर मंगलके द्वितीय शीघ्रांकोंके अंतर ४० में पांचका भाग दिया तो फल कलादि ८।० मिला यहां प्रथम शीघ्राङ्क दूसरे शीघ्राङ्कसे कम था इस कारण धन है इसलिये फल ८।० का भौमकी मन्द स्पष्ट गति ३७।०२ में युत किया तौ भौमकी स्पष्ट गति ४५।२ हुई ॥

अब बुधकी गतिके स्पष्ट करनेका उदाहरण कहते हैं।

बुधके मन्दांकोंके अन्तर १२ को दो गुना किया तो २४ हुए फिर इसमें पांचका भाग देनेसे फल कलादि ४।४८ मिला यहां केन्द्र कर्क आदि छः राशीमें स्थित होनेसे धन है इसलिये फलको बुधकी मध्यम गति ५९।८ में जोडा तो बुधकी मन्द स्पष्ट गति ६३।५६ हुई। फिर बुधके शीघ्रांकोंके अंतर ३३ में पांचका भाग दिया तो फल ६।३६ मिला इसको अंतर ३३ मेंही जोड दिया तो फल ३९।३६ हुए यहांभी प्रथम शीघ्राङ्क दूसरे शीघ्राङ्कसे कम है इसलिये फल धन हुआ उसको बुधकी मंद स्पष्ट गति ६३।५६ में युत किया तो बुधकी स्पष्ट गति १०३।३२ हुई ॥

अब बृहस्पतिकी गति बनानेका उदाहरण कहते हैं।

बृहस्पतिके मंदांकोंके अंतर ९ में तीसका भाग देनेसे फल ०। १८ मिला यहां केन्द्र मकर आदि छः राशियोंमें स्थित है इसलिये फल ०।१८ को गुरुकी मध्य गति ५।० में घटा दिया तो गुरुकी मन्द स्पष्ट गति ४।४२ हुई फिर बृहस्पतिके शीघ्र फलके अंतर २ में तीनका भाग दिया तो फल कला०विकला४०मिला यहां प्रथम शीघ्राङ्क दूसरेसे कम होनेके कारण धन है इसलिये इसको गुरुकी मन्द स्पष्ट गति ४।४२ में युत किया तो गुरुकी स्पष्ट गति ५।२२ हुई ॥

अब शुक्रकी गति बनानेका उदाहरण कहते हैं।

शुक्रके मंदांकोंके अंतर २ को दोसे गुणा किया तो ४ हुए फिर इन्होंमें पांचका भाग देनेसे फल कलादि ०।४८ मिला यहां केन्द्र मकर आदि छः राशियोंमें स्थित होनेसे ऋण है इसलिये फलको शुक्रकी मध्यम गति ५९।८ में ऊन किया तो शुक्रकी मन्द स्पष्ट गति ५८।२० हुई। फिर शुक्रके शीघ्र फलके अंतर ४८ में चारका भाग दिया तो फल १२।० मिला यह पूर्वोक्त रीतिके अनुसार धन है इसको शुक्रकी मन्द स्पष्ट गति ५८।२० में जोडा तो शुक्रकी स्पष्ट गति ७०।२० हुई ॥

अब शनिकी गति बनानेका उदाहरण कहते हैं।

शनिके मन्दांकोंके अंतर ४ में ७५ का भाग दिया तो फल ०।३ मिला यहां केन्द्र कर्क आदि छः राशिमें स्थित होनेसे धन है इसलिये फलको शनिकी मध्यम गति २।०० में जोडा तो शनिकी मन्द स्पष्ट गति २।३ हुई। फिर शनिके शीघ्र फलके अंतर ६ को दो गुना किया तो १२ हुए फिर इसमें पांचका भाग दिया तो धन फल २।२४ मिला यहभी पूर्वोक्त रीतिसे धन है इसलिये इसको शनिकी मन्द स्पष्ट गति २।०३ में जोडा तो शनिकी स्पष्ट गति ४।२७ हुई ॥

स्पष्टाः ग्रहाः गतिकाः.									
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्र.
१	६	११	१	४	२	१०	१	७	रा.
५	२४	५	१७	२	१२	२६	१४	१४	अं.
४२	१५	५६	०४	९	१५	४२	२१	२१	क.
३७	३	४	००	४९	४६	३०	३	३	वि.
५७	८१	४५	१०३	५	७०	०४	३	३	क.
३६	००	२	३२	२२	२०	२७	११	११	वि.
००	००	००	००	००	००	००	००	००	००

अब शुक्र और मंगलके द्वितीय शीघ्र फल लानेके समय अंत्यका शीघ्रांक आवे तो ग्रहमें अंतर पडता है इसलिये स्पष्ट करनेकी विशेष रीति कहते हैं।

शुक्रारयोश्चलभवोऽन्त्यगतो यदाङ्कः शेषांशकाश्च पतिताः पृथगक्षभूभ्यः। येऽल्पा भृगोस्त्रिविहृता असृजोऽक्षभक्ता देयाः स्वशीघ्रफलवत्स्फुटयोः स्फुटौ तौ ॥ १३ ॥

अन्वयः-यदा शुक्रारयोः चलभवः अङ्कः अन्त्यगतः (स्यात्, तदा) शेषांशकाः पृथक् (स्थाप्याः। एकत्र) अक्षभूभ्यः पतिताः च (कार्य्याः)। (तयोः) ये अल्पाः (ते) भृगोः त्रिविहृताः असृजः अक्षभक्ताः स्वशीघ्रफलवत् स्फुटयोः देयाः (तदा) तौ स्फुटौ (स्तः) ॥ १३ ॥

भाषा-शुक्र और मंगल इन्होंके अंत्यका शीघ्रांक आ जाय तो द्वितीय शीघ्र केन्द्रमें १५ का भाग देनेसे जो शेष अंशादि रहे उन्होंको दो जगह स्थापन करे फिर उन्होंको एक जगह तो १५ में घटा दे और फिर दूसरी जगह रक्खे हुए और १५ में घटानेसे जो शेष रहा हो इन दोनोंमें जो अल्प हो उसको ग्रहण करे ऐसे करनेसे जो शुक्रका केन्द्र हो तो उन्होंमें तीनका भाग दे और मंगलका केन्द्र हो तो उन्होंमें पांचका भाग दे ऐसा

करनेसे जो अंशादि फल मिले उसको अंश आदि ग्रहण करे फिर उस फलको स्पष्ट शुक्र और स्पष्ट मंगलमें शीघ्र फलकी रीतिसे जोडे अथवा घटावे ऐसा करनेसे शुक्र और मंगल स्पष्ट होते हैं। बुध, बृहस्पति और शनि इन्होंके अंत्य अंक आ जानेमें अंतर पडता है परन्तु अल्प अंतर है इसलिये उन्होंका अंतर नहीं कहा और मंगल शुक्रमें बहुत अन्तर पडता है इसलिये इन्होंका फिर स्पष्ट कहा है। मंगल शुक्रके शीघ्रांकको शेष अंशके तीसरे हिस्सेके गत अंक और उससे अगले अंक इन्होंके अंतरसे गुणा हुआ अपने शेषमें तीसरे हिस्सेको घटा देवे फिर उसमें दशका भाग देनेसे अंश आदि फल होता है और २४९, १९२, १४६, १०० तथा ५२ और ०० ये मंगलके शीघ्रांक हैं।

०	१	२	३	४	५	६
२४९	१९२	१४६	१००	५२	००	मंगल
३२६	२६०	२०८	१४४	७९	००	शुक्र

और ३२६,२६०,२०८, १४४, ७९ और ० ये शुक्रके शीघ्रांक हैं। इन सब फलको मंद स्पष्ट ग्रहमें संस्कार करनेसे स्पष्ट ग्रह होता है यह प्रकार टीकाकारने लिखा है ॥ १३ ॥

अब मंगल बुध और शुक्र इन्होंकी गतिमें विशेष कहते हैं।

कुजबुधभृगुजानां चेच्चलाङ्कोऽन्तिमः स्याद्दशहृतपरिशेषांशा नगाद्र्यग्निभक्ताः। फलमिषुदहनैर्युक्तसप्तगोभिस्त्रिबाणैर्भवति गतिफलं तत्स्यात्तदा नैव पूर्वम् ॥ १४ ॥

अन्वयः—चेत् कुजबुधभृगुजानां चलाङ्कः अन्तिमः स्यात् (तदा) दशहृतपरिशेषांशाः (क्रमेण) नगाद्र्यग्निभक्ताः फलं (क्रमेण) इषुदहनैः सप्तगोभिः त्रिबाणैः युक्तं (कार्य्यम्) तत् गतिफलं स्यात् तदा पूर्वं नैव भवति॥१४॥

भाषा-जो मंगल, बुध और शुक्र इन्होंके अंत्यका शीघ्राक आ जावे तो शेष अंशोंको दशसे गुणा करे फिर मंगलके शेष अंश हों तो सातका भाग देवे बुधके शेष अंश हों तो उन्होंमें ७ का भाग देवे और शुक्रके शेष अंश हों तो तीनका भाग देवे ऐसे करनेसे जो कला आदि फल मिले उसमें मंगलके हों तो पैंतीस युत करे बुधके हों तो ९७ युत करे और शुक्रके हों तो ५३ युत करे ऐसे करनेसे उन ग्रहोंकी गतिका शीघ्र फल होता है और पहले जो गतिफल बनानेकी रीति कह आये हैं उसको नहीं करे इस गतिफलको मंद स्पष्ट ग्रहमें धन हो तो युत करे और क्षय हो तो हीन करे ऐसे करनेसे स्पष्टगति होती है ॥ १४॥

अब मंगल आदि पांच ग्रहोंके वक्री होनेके शीघ्र केन्द्रके अंशोंको कहते हैं।

त्रिनृपैः शरजिष्णुभिः शरार्कैर्नगभूपैस्त्रिभवैः क्रमात्कुजाद्याः। चलकेन्द्रलवैः प्रयान्ति वक्रं भगणात्तैः पतितैर्व्रजन्ति मार्गम् ॥ १५ ॥

अन्वयः-कुजाद्याः क्रमात् त्रिनृपैः शरजिष्णुभिः शरार्कैः नगभूपैः त्रिभवैः चलकेन्द्रलवैः वक्रं प्रयान्ति। (तथा) भगणात् पतितैः तैः (वक्रं) मार्गं व्रजन्ति ॥ १५ ॥

भाषा-जिस दिन मंगलके शीघ्र केन्द्रके अंश एक सौ तरेसठ हो जाते हैं उस दिन मंगल वक्री होता है अर्थात् उसकी उलटी चाल हो जाती है जिस दिन बुधके शीघ्र केन्द्रके एकसौ पैंतालीस अंश जाते हैं उस दिन बुध वक्री होता है। जिस दिन बृहस्पतिके शीघ्र केन्द्रके एकसौ पचीस अंश जाते हैं उस दिन बृहस्पति वक्री होता है जिस दिन शुक्रके शीघ्र केन्द्र एकसौ सढसठ अंश जाते हैं उस दिन शुक्र वक्री होता है और जिस दिन शनिके शीघ्र केन्द्रके एकसौ तेरह अंश जाते हैं उस दिन शनि वक्री

होता है इन शीघ्र केन्द्रोंके अंशोंको भगणोंके अंशोंमें अर्थात् बारह राशियोंके ३६० अंशोंमें घटा देनेसे द्वितीय शीघ्र केन्द्रांश जो बचे उतने अंशोंसे मंगल आदि पांचों ग्रह मार्गी होते हैं। भौमादिके द्वितीय शीघ्र केन्द्रांश ३६० में घटानेसे ये हुए अर्थात् मंगलके १९७ बुधके २१५ बृहस्पतिके २३५ शुक्रके १९३ शनिके २४७ ॥ १५ ॥

अब मंगल, बृहस्पति और शनि इन्होंके उदय और अस्तके अंशोंको कहते हैं।

क्षितिजोऽष्टयमैरुदेति पूर्वं गुरुरिन्द्रै रविजस्तु सप्तचन्द्रैः। स्वस्वोदयभागसंविहीनैर्भगणांशैरपरत्र यान्ति चास्तम् ॥ १६ ॥

अन्वयः–क्षितिजः अष्टयमैः गुरुः इन्द्रैः रविजः तु सप्तचन्द्रैः पूर्वं उदेति। च स्वस्वोदयभागसंविहीनैः भगणांशैः अपरत्र अस्तं यान्ति ॥ १६ ॥

भाषा–मंगल अठाईश शीघ्र केन्द्रके अंशोंपर पूर्व दिशामें उदय होता है बृहस्पति चौदह शीघ्र केन्द्रके अंशोंपर पूर्व दिशामें उदय होता है और शनि शीघ्र केन्द्रके सत्तरह अंशोंपर पूर्व दिशामें उदय होता है। फिर अपने अपने उदयके अंशोंको ३६० अंशोंमें घटा देनेसे ३३२।३४६।३४३ जो शीघ्र केन्द्रके अंश रहे अर्थात् मंगलके २३२ बृहस्पतिके ३४६ शनिके ३४३ इनके समान पश्चिम दिशामें मंगल बृहस्पति और शनि ये क्रमसे अस्त होते हैं ॥ १६ ॥

अब बुध शुक्रके उदय और अस्तके अंशोंको कहते हैं।

खशरैश्च जिनैः परे ज्ञभृग्वोरुदयोऽस्तोऽक्षदिनैर्नगाद्रिभूभिः। उदयोऽक्षनखैस्त्र्यहीन्दुभिः प्राग्स्तो दिग्दहनैश्च षट्सुरैः स्यात् ॥ १७ ॥

अन्वयः–खशरैः जिनैः परे ज्ञभृग्वोः उदयः च अक्षदिनैः नगाद्रिभूभिः

(परे) अस्तः स्यात् । (तथा) अक्षनखैः त्र्यहीन्दुभिः प्राक् उदयः (च) दिग्दहनैः षट्सुरैः (प्राक्) अस्तः (स्यात्) ॥ १७ ॥

भाषा-जिस दिन बुधके द्वितीय शीघ्र केंद्रके पचास अंश जाते हैं उस दिन पश्चिम दिशामें बुधका उदय होता है जिस दिन शुक्रके द्वितीय शीघ्र केन्द्रके चौवीस अंश जाते हैं उस दिन शुक्रका पाश्चिम दिशामें उदय होता है और जिस दिन बुधके शीघ्र केन्द्रके एकसौ पचपन अंश जाते हैं उस दिन बुधका पाश्चिम दिशामें अस्त होता है जिस दिन शुक्रके शीघ्र केन्द्रके एकसौ सतत्तर अंश जाते हैं उस दिन शुक्रका पश्चिम दिशामें अस्त होता है जिस दिन बुधके शीघ्र केंद्रके दो सौ पांच अंश जाते हैं उस दिन बुधका पूर्व दिशामें उदय होता है जिस दिन शुक्रके शीघ्र केंद्रके एकसौ तिरासी अंश जाते हैं उस दिन शुक्रका पूर्व दिशामें उदय होता है और जिस दिन बुधके शीघ्र केंद्रके तीन सौ दश अंश जाते हैं उस दिन बुधका पूर्व दिशामें अस्त होता है जिस दिन शुक्रके शीघ्र केन्द्रके तीनसौ छत्तीस अंश जाते हैं उस दिन शुक्रका पूर्व दिशामें अस्त होता है ॥ १७ ॥

भौमादि ग्रहोंके वक्री मार्गी उदय अस्त इनके दिन जाननेका प्रकार कहते हैं ।

वक्रोदयादिगदितांशकतोऽधिकाल्पाः केन्द्रांशकाः क्षितिसुताद्द्विगुणास्त्रिभक्ताः । सांकांशका दशहतांग-हृताः कुभक्ता वक्राद्यमाप्तदिवसैः क्रमशो गतैष्यम् १८॥

अन्वयः-वक्रोदयादिगदितांशकतः (यदि) केन्द्रांशकाः अधिकाल्पाः (स्युः, तदा) क्षितिसुतात् द्विगुणाः त्रिभक्ताः सांकांशकाः दशहताङ्ग-हृताः कुभक्ताः (कार्य्याः) । आप्तदिवसैः क्रमशः वक्राद्यं गतैष्यं (स्यात्) ॥ १८ ॥

भाषा-वक्री मार्गी उदय अस्त इन्होंके शीघ्र केंद्रांशोंको पहले कह आये हैं इन शीघ्र केंद्रांशोंसे इष्ट केद्रांश अधिक हों अथवा

कम हों तो शीघ्र केंद्रांशोंका और इष्ट केंद्रांशोंका अंतर करे जो वह अंतरके अंश मंगलके हों तो दुगुने करे बुधके हों तो उन्होंमें तीनका भाग देवे बृहस्पतिके हों तो अपना नौमां हिस्सा उसमें जोड देवे शुक्रके हों तो उन्होंको दशसे गुणाकर उसमें छःका भाग देवे और शनिके हों तो उन्होंमें एकका भाग देवे ऐसे भाग देनेसे गत अथवा एष्य जो दिन मिलें उन दिनोंमें ग्रह वक्री मार्गी अस्त उदय होते हैं। जो कहे हुए शीघ्र केन्द्रके अंशोंसे इष्ट केन्द्रके अंश हीन हों तो वक्री अस्त आदिके एष्य अर्थात् अगाडीके दिन जानने और जो इष्ट केन्द्रके अंश अधिक हों तो गत दिन जानने ॥ १८ ॥

अब वक्री मार्गी उदय अस्त इन्होंके दिनोंका क्रम कहते हैं।

पूर्वास्तादुदयः परेऽनृजुगतिस्तोयास्तमैन्द्रद्रुद्रमो मार्गोऽस्तोऽत्र च दन्तदन्तदहनाष्टचाज्याशदन्तैर्दिनैः। चान्द्रेस्तत्परतत्परं त्वथ भृगोरस्तद्वद्विमाः स्यात्ततोऽष्टाभिर्व्यंघ्रिभुवांघ्रिणा विचरणैकेनाष्टमासैः क्रमात् ॥ १९ ॥

अन्वयः-दन्तदन्तदहनाष्टचाज्याशदन्तैः दिनैः चान्द्रेः क्रमात् पूर्वास्तात् परे उदयः अनृजुगतिः तोयास्तम् ऐन्द्रद्रुद्रमः मार्गः अस्तः स्यात्। अत्र च तत्परतत्परम् अथ (क्रमात्) द्विमाः ततः अष्टाभिः व्यंघ्रिभुवा अंघ्रिणा विचरणैकेन च अष्टमासैः भृगोः तद्वत् (स्यात्) ॥ १९ ॥

भाषा-जिस दिन बुधका पूर्व दिशामें अस्त होता है उस दिनसे बत्तीस दिन उपरांत बुधका पश्चिम दिशामें उदय होता है फिर पश्चिमके उदयसे बत्तीस दिनमें वक्री होता है फिर वक्रीसे तीन दिनमें पश्चिम दिशामें अस्त होता है फिर पश्चिमके अस्तसे सोलह दिनमें पूर्वमें उदय होता है फिर पूर्वके उदयसे तीन दिनमें

मार्गी होता है और मार्गीसे बत्तीस दिनमें पूर्वमें अस्त होता है इस प्रकार बुधके उदय अस्त वक्री मार्गी इन्होंकी वारंवार गणना करे और शुक्रका पूर्व दिशामें अस्त होनेके दो महीनोंमें पश्चिम दिशामें उदय होता है फिर पश्चिम दिशाके उदयसे आठ महीनोंमें वक्री होता है फिर वक्रगतिसे बाईस दिनमें पश्चिम दिशामें अस्त होता है फिर पश्चिमके अस्तसे आठ दिनमें पूर्व दिशाविषें उदय होता है फिर पूर्वके उदयसे बाईस दिनमें मार्गी होता है और मार्गीसे ८ महीनोंमें शुक्र पूर्वदिशामें अस्त होता है ऐसेही शुक्रके उदय आदिकोंकी वारंवार गणना करे ॥ १९ ॥

अब मंगल बृहस्पति और शनि इन्होंके वक्री मार्गी उदय अस्तके दिनोंको कहते हैं ।

भौमस्यास्तादुदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यं क्रमात्स्या-
न्मासैर्वेदैरथ दशमितैर्लोचनाभ्यां च दिग्भिः ।
जीवस्योर्व्या सचरणयुगैः सागरैः साङ्घ्रिवेदैः
सांघ्र्येकेन त्रियुगदहनैरर्धयुक्तैस्तथार्कैः ॥ २० ॥

अन्वयः-भौमस्य अस्तात् वेदैः अथ दशमितैः लोचनाभ्यां दिग्भिः च मासैः क्रमात् उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यं स्यात् । जीवस्य (अस्तात्) उर्व्या सचरणयुगैः सागरैः साङ्घ्रिवेदैः (मासैः क्रमात् उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यं स्यात्) । तथा आर्कैः (अस्तात्) सांघ्र्येकेन अर्द्धयुक्तैः त्रियुगदहनैः (मासैः क्रमात् उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यं स्यात्) ॥ २० ॥

भाषा-मंगल अपने अस्तसे चार महीनेमें उदय होता है उदयसे १० महीनेमें वक्री होता है वक्री होनेसे दो महीनेमें मार्गी होता है और मार्गीसे दश महीनेमें अस्त होता है ऐसे मंगलके अस्त उदय वक्री मार्गी इन्होंकी वारंवार गणना करे बृहस्पति अपने अस्तसे एक महीनेमें उदय होता है उदयसे सवा चार महीनोंमें वक्री होता है वक्रीसे चार महीनोंमें मार्गी और मार्गीसे सवा-

चार महीनोंमें अस्त होता है ऐसे बृहस्पतिकी वारंवार गणना करे। शनि अपने अस्तसे सवामहीनेमें उदय होता है उदयसे साढेतीन महीने अर्थात् १०५ दिनमें वक्री होता है वक्रीसे साढेचार महीने अर्थात् १३५ दिनमें मार्गी होता है और मार्गीसे साढेतीन महीने अर्थात् १०५ दिनमें शनिका अस्त होता है ऐसे शनिकी वारंवार गणना करे ॥ २० ॥

मंगल आदि ग्रहाणां वक्रांशादिचक्रम्.

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह.
१६३	१४५	१२५	१६७	११३	वक्रांश.
१९७	२१५	२३५	१९३	२४७	मार्गांश.
२३२	००	३४६	००	३४३	पश्चिमास्तांश.
२८	००	१४	००	१७	पूर्वोदयांश.

बुधशुक्रयोः पश्चिमोदयांशादिचक्रम्.

बु.	शु.	ग्रह.
५०	२४	पश्चिमोदयांश.
१५५	१७७	पश्चिमोदयांश.
२०५	१८३	पूर्वोदयांश.
३१०	३३६	पूर्वास्तांश.

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत–वेरीग्रामनिवासि–गौडवंशावतंस–विविधशास्त्रपरमपण्डित–श्रीराविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां तृतीयः पञ्चतारास्पष्टीकरणाधिकारः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः ।

अथ त्रिप्रश्न अर्थात् दिशा देश और काल इनका उदाहरण कहते हैं ।

लङ्कोदया विघटिका गजभानि गोङ्कदस्राश्त्रिपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः । हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैर्मेषादितो धटत उत्क्रमतस्त्विमे स्युः ॥१॥

अन्वयः-गजभानि गोङ्कदस्राः त्रिपक्षदहनाः (एते क्रमस्थाः मेषादित्रयाणाम्) विघटिकाः लङ्कोदयाः स्युः (एते एव उत्क्रमस्थाः कर्कादित्रयाणां लङ्कोदयाः स्युः) इमे क्रमगोत्क्रमस्थाः क्रमगोत्क्रमस्थैः चरदलैः हीनान्विताः (क्रमतः) मेषादितः उत्क्रमतः धटतः (लङ्कोदयाः स्युः) ॥१॥

भाषा-पहिले लंकाके उदयमें मेष आदि राशियोंका पलादि मान कहते हैं । मेषका २७८ पल वृषका २९९ पल मिथुनका ३२३ पल इन्होंको विपरीत स्थापन करनेसे कर्कसे कन्यातक तीन राशियोंके उदयके मान होते हैं और इससे विपरीत अर्थात् उलटा करनेसे तुलासे मीनतक छः राशियोंका मान होता है ऐसे चक्रमें देखना चाहिये । फिर पहले लंकाके तीन राशियोंके उदयके मानोंमें अपने देशके चरखण्डेको ऊन करे फिर उससे अगली तीन राशियोंमें अर्थात् कर्क, सिंह, कन्या इनके पलात्मक लंकोदयमें अपने देशके चरखण्डेको उलटा युत करे ऐसे करनेसे अपने देशके मेष आदि छः राशियोंका मान होता है । इन्होंको उलटा स्थापन करनेसे तुला आदि छः राशियोंका मान होता है ॥ १ ॥

अथ लंकोदय.		
मे.	२७८	मी.
वृ.	२९९	कुं
मि.	३२३	म.
क.	३२३	ध.
सिं.	२९९	वृ.
क.	२७८	तु.

अथ उदाहरण।

कल्पना किया कि काशीका उदयकाल लाना है तो काशीके चरखंडे ५७।४६।१९ को लंकाके उदयकी मेष आदि तीन राशियोंके मान २७८।२९९।३२३ में घटाया तो काशीमें मेष आदि तीन राशियोंके उदयोंके मान २२१।२५३।३०४ मिले फिर लंकाके उदयकी कर्क आदि तीन राशियोंके मानों ३२३।२९९।२७८ में काशीके चरखण्डे ५७।४६।१९ को विपरीत युत करनेसे काशीमें कर्क आदि तीन राशियोंका मान ३४२।३४५।३३५ मिला ऐसा काशीमें छः राशियोंके मान हुए इन्होंको उलटे स्थापन करनेसे काशीमें तुला आदि छः राशियोंके मान हुए ये मेष आदिके मान चक्रमें देखने चाहिये ऐसे करनेसे अपने अपने देशके उदय होते हैं॥

काश्यां राश्युदयमानानि.		
मे.	२२१	मी.
वृ.	२५३	कुं.
मि.	३०४	म.
कर्क.	३४२	ध.
सिं.	३४५	वृ.
क.	३३५	तु.

अब लग्न स्पष्ट बनानेके प्रकारको कहते हैं।

तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाः खन्युद्धृता भोग्यकालः। एवं यातांशैर्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः॥ २॥ तदनु जहीहि गृहोदयांश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धदृल्लवा-

द्यम् । सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नम-दोयनांशहीनम् ॥ ३ ॥

अन्वयः-(यस्मिन् काले लग्नं साध्यते) तत्कालार्कः सायनः (कार्य्यः)। भोग्यांशाः स्वोदयघ्नाः खखयुद्धृताः भोग्यकालः (स्यात्)। एवं यातांशैः यातकालः भवेत् । भोग्यः अभीष्टनाडीपलेभ्यः शोध्यः । तदनु (तस्मात्) गृहोदयान् च जहीहि शेषं गगनगुणघ्नम् अशुद्धहृत् (फलं) लवाद्यं (स्यात् । तत्) अजादिगृहैः अशुद्धपूर्वैः सहितम् अदः अयनांशहीनं विलग्नं भवति ॥ २ ॥ ३ ॥

भाषा-जिस कालका लग्न साधन करे उस कालका सूर्य स्पष्ट करके उसमें अयनांश युत कर देनेसे सायन सूर्य होता है फिर उस सायन सूर्यकी राशि दूर करके जो बचे वह भोगे हुए अंशादि हैं उस अंशादिको तीसमें घटानेसे योग्य अंश आदि होते हैं फिर जो सूर्यकी राशि दूर कर दी थी उस राशिके अपने देशके उदयसे उन भुक्त भोग्योंको गुणा करे फिर गुणनेसे जो फल मिले उसमें तीसका भाग देनेसे कला भुक्त और भोग्यकाल होता है फिर इष्ट कालकी घडियोंके पल करके भुक्त और भोग्य कालको घटा देवे फिर ऐसे घटा देनेसे जो अंक शेष रहे उसमें जिस राशिके उदयसे गुणा किया था उससे आगेकी जितनी राशियोंके उदय घटें उतने घटा देवे ऐसे घटानेसे जो शेष रहे उसको तीससे गुणा करे फिर जो गुणनफल हो उसमें अशुद्धोदय अर्थात् जिस राशिका उदय उसमें नहीं घटा हो उस राशिके उदयका भाग देवे ऐसे भाग देनेसे जो अंश आदि फल मिले उसमें मेषसे आदि लेकर जितनी राशियोंका उदय घटा हो उतनी राशिकी संख्याको राशिके स्थानमें युत करे फिर उसमें अयनांशको घटावे तब जो शेष बचे वह उस कालकी राशि आदि स्पष्ट लग्न होती है । जो भुक्त लग्न बनावे तौ जिस उदयसे गुणा करे उस उदयसे पिछले उदयको घटावे और जो भोग्य लग्न बनावे तो उस उदयसे अगले उदयको घटा देवे ॥ २ ॥ ३ ॥

अथ उदाहरण।

सं० १६६९ शकः १५३४ वैशाख शुक्ला १५ सूर्यके उदयसे इष्ट घडी १०।३० हैं इस समयपर लग्न साधन करना है और उस दिन मध्यम सूर्य १।४।१३।४२ है इसकी गति ५९।८ है। इष्ट घडियोंपरसे आगे जो पांचवे अधिकारके गत गम्य इत्यादि प्रथम श्लोककी रीतिसे जो चालन बनानेकी रीति कहेंगे उस रीतिसे कला विकला आदि चालन १०।२० मिला इसको मध्यम सूर्य १। ४।१३।४२ में युत किया तो तात्कालिक अर्थात् इष्ट कालका मध्यम सूर्य १।४।२४।२ हुआ। इसको मंदोच्च २।१८।०० में घटा दिया तौ मन्द केन्द्र १।१३।३५।५८ हुआ इसपरसे पहली रीतिके अनुसार मन्द फल धन १।३०।११ मिला इसको तात्कालिक मध्यम सूर्य १।०४।२४।०२ में युत किया तो मन्द फलसे संस्कार किया हुआ सूर्य १।५।५४।१३ हुआ। फिर इसमें कला आदि ऋण चर ९३ को घटा दिया तो स्पष्ट सूर्य १।५।५२।४० हुआ। फिर इसमें अयनांश १८।१० को युत किया तो सायन सूर्य १।२४।२।४० हुआ। फिर इसकी राशि १ को दूर किया तो २४।२।४० अंश आदि वृषका भुक्त हुआ फिर इसके अंश आदिकोंको तीसमें घटा दिया तो सूर्यके भोग्य अंश अर्थात् भोगनेके योग्य अंश ५।५७।२० हुए इन भोग्य अंशोंसे वृष राशिके उदय २५३ को गुणा दिया तो १५०६।४५।२० हुए फिर इन्होंमें तीसका भाग देनेसे पलादि भोग्य काल ५०।१३।३० मिला इसी प्रकारसे भोगे हुए अंशोंपरसे भुक्त काल होता है फिर इष्ट घडियोंके पल ६३० में भोग्य काल ५०।१३।३० को घटा दिया तो शेष ५७९।४६।३० रहे फिर इस-में मिथुनके उदय ३०४ को घटा दिया तो शेष २७५।४६।३० रहे फिर मिथुनसे अगाडी कर्कका उदय ३४२ है यह शेषमें नहीं घटता इसलिये शेष २७५।४६।३० को तीससे गुणा दिया तो

८२७३।१५ हुए फिर इसमें अशुद्ध कर्क राशिके उदय ३४२ का भाग दिया तो फल अंश आदि २४।११।२१ मिला इसमें मेषसे अशुद्ध पर्यंत संख्या ३ है इसको युत किया तो ३।२४।११।२१ हुए फिर इन्होंमें अयनांश १८।१० को घटा दिया तो स्पष्ट लग्न ३।६।०।१।२१ हुई ॥

अब भोग्य कालसे इष्ट काल अल्प हो तो लग्न बनानेका प्रकार ।

भोग्यतोऽल्पेष्टकालात्खरामाहतात्स्वोदयार्कांशयु-ग्भास्करः स्यात्तनुः ।

अन्वयः-भोग्यतः अल्पेष्टकालात् खरामाहतात् स्वोदयार्कांशयुक् भास्करः तनुः स्यात् ॥

भाषा-पूर्वोक्त रीतिसे बनाये हुए भोग्यकालसे इष्ट काल अल्प हो तो उस इष्टको तीससे गुणा करे फिर उसमें सायन रविकी राशिके उदयका भाग देनेसे जो अंश आदि फल मिले उसको सूर्यमें युक्त करनेसे इष्टकालीन लग्न होता है । और सायन सूर्यके भोग्य कालमें सायन लग्नके भोगे हुए अंशोंपरसे जो भुक्त काल मिले उसको युक्त करे फिर सायन सूर्य और सायन लग्न इन्होंके मध्यमें जितने लग्न हों उन्होंके उदयोंको युत करे फिर उसमें साठका भाग देनेसे लग्नसे इष्ट काल होता है ॥

अथ उदाहरण ।

शकः १५३४ वैशाख शुक्ला १५ के दिन सूर्यके उदयसे शून्य चालीस(०।४०)घटी इष्टपर लग्न साधन करना है तो गतगम्येत्यादिकी रीतिसे चालित सूर्य १।५।४३।१५ हुआ इसमें अयनांशा १८।१० जोडा तौ सायन सूर्य १।२३।५३।१५ हुआ फिर इसपरसे कही हुई रीतिके अनुसार अर्थात् सायन रविके अंश आदिको ३० में घटाकर वृषके उदय २५३ से गुणा किया और ३० का भाग दिया तो भोग्य काल घडी आदि ५१।० मिला इससे पल आदि

इष्ट काल ०।४० न्यून है इसलिये इसको तीससे गुणा दिया तो १२०० हुए फिर इसमें सायन सूर्यके वृषराशिके उदय २५३ का भाग दिया तो अंश आदि फल ४।४४।३५ मिला इसको सूर्य १।५।४३।१५ में युत किया तो लग्न १।१०।२७।५० हुई ॥

अब लग्नसे इष्ट काल बनानेका उदाहरण।

अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥ ४ ॥

अन्वयः-अर्कभोग्यः तनोः भुक्तकालान्वितः (ततः) युक्तमध्योदयः अभीष्टकालः भवेत् ॥ ४ ॥

भाषा-सायन सूर्यका भोग्य काल है ५० और लग्न ३।६।२।३७ है इसमें अयनांश १८।१० जोड दिया तो सायन लग्न ३।२४।१२।३७ हुई फिर सायन लग्नके गत अंशों २४।१२।३७ को सायन लग्नकी कर्क राशिके उदय ३४२ से गुणा दिया तो ८२७९।५४।५४ हुए फिर इनमें तीसका भाग देनेसे लग्नका भुक्त काल २७६ मिला इसमें सूर्यके भोग्य काल ५० को युत किया तो ३२६ हुए फिर इसमें सायन सूर्य और सायन लग्न इन्होंके मध्यमें मिथुनका उदय ३०४ है इसको युक्त किया तो ६३० पल हुए फिर इसमें साठका भाग देनेसे लग्नसे इष्ट काल १०।३० मिला ॥ ४ ॥

जिस जगह सायन सूर्य और सायन लग्न ये दोनों एक राशिमें हों तहां लग्नसे इष्टकाल बनानेका और रात्रिलग्न साधनका प्रकार कहते हैं।

यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशांतरहत उदयः स्यात्खाग्निहृत्त्विष्टकालः। इनत उदय ऊनश्चेत्स शोध्यो द्युरात्रान्निशि तु सरसभार्कात्स्यात्तनूरिष्टकाले ॥ ५ ॥

अन्वयः-यदि तनुदिननाथौ एकराशौ (तदा) तदंशान्तरहतः उदयः स्वाग्रिहृत इष्टकालः स्यात् । चेत् उदयः इनतः ऊनः (तदा) सः द्युरात्रात् शोध्यः । निशि तु सरसभार्कात् इष्टकाले तनूः स्यात् ॥ ५ ॥

भाषा-जो लग्न सूर्य एक राशिमें हों तो उन्होंके अंतरके अंश आदिको अपनी राशिसे उदयसे गुणा करे फिर उसमें तीसका भाग देनेसे पला आदि इष्ट काल मिलता है जो सायन सूर्यसे सायन लग्न कमती हो तो उन्होंके अंशोंके अंतरको उदयसे गुणा करे फिर उन्होंमें तीसका भाग देनेसे इष्टकाल होता है। परंतु यह इष्टकाल जिस इष्टपरसे लग्न साधन किया है वह नहीं किन्तु दूसरे दिनके सूर्यके उदय पर्य्यंत यह शेष काल है इसलिये इस शेषकालको ६० घडीमें घटानेसे सूर्योदयसे इष्ट काल होता है। और जो रात्रिमें लग्न बनाना हो तो सूर्यमें छः राशि जोडके इष्ट कालमें लग्न साधन करे ॥ ५ ॥

अथ उदाहरण।

शकः १५३४ वैशाख शुक्ला १५ के दिन सूर्यके उदयसे ५९ घडी इष्ट है इसपर लग्न साधन करना है उस दिन मध्यम सूर्य १।४।१३।४२ यह है इसकी गति ५९।८ है इस सूर्यमें इष्ट ५९ का चालन दिया तो १।५।११।५० सूर्य हुआ इसका मंद केन्द्र १।१२।४८।१० हुआ और इसपरसे मन्द फल १।२८।५२ मिला यह धन है इसको चालित मध्यम सूर्य १।५।११।५० में युत किया तो सूर्य १।६।४०।४२ हुआ फिर इसमें ऋणचर ९५ को घटानेसे तात्कालिक स्पष्ट सूर्य १।६।३९।७ हुआ इसमें अयनांशा १८।१० को जोडा तो १।२४।४९।०७ हुआ इसमें छः राशि और जोड दीनी तो ७।२४।४९।७ हुए इसपरसे पहली रीतिसे भोग्य काल ५९ मिला फिर इष्ट घडी ५९ में दिनमान ३३।१० को घटा दिया तो सूर्यके अस्तसे इष्ट घडी २५।५० हुई फिर इन इष्ट घडियोंके पल किये तो १५५० हुए इनमें भोग्य काल ५९ को घटा दिया तो शेष १४९१ रहे इनमें धनके उदयसे मेषके उदय-

तक अर्थात् धन ३४२+म. ३०४+कुं. २५३+मी. २२१+मे. २२१ इनके योग १३४१ को घटाया तौ १५० बचे इनको ३० से गुणा किया तौ ४५०० इनमें वृषोदय २५३ का भाग दिया तो अंशादि १७।४७।११ मिले इसमें गतराशि (१) मेषको जोडा तो १।१७।४७।११ हुए इसमेंसे अयनांश १८।१० को घटाया तो लग्न ०।२९।३७।११ हुई ॥

सायन सूर्य और सायन लग्नके अंशोंके अंतरका उदाहरण कहते हैं।

द्वितीय उदाहरण।

सायन सूर्य १।२४।४९।७ और सायन लग्न १।१७।४७।११ ये दोनों एक राशिमें हैं और लग्न सूर्यसे कम है इसलिये इन्होंके अंशोंका अंतर किया तो ७।१।५६ हुए इन्होंको वृषराशिके उदय २५३ से गुणा किया तो १७७९।९।०८ हुए इसमें ३० का भाग दिया तो इष्टकाल ५९ हुआ और इसपरसे शेष काल १ मिला इसको साठमें घटा दिया तो सूर्यके उदयसे कल्पित इष्ट काल ५९ मिला ॥

अब गोलसंज्ञा अयनसंज्ञा दिनार्द्ध रात्र्यर्द्ध और अक्षांश इन्होंके बनानेका प्रकार कहते हैं।

गोलौ स्तः सौम्ययाम्यौ क्रियधटरसभे खेचरेऽथा-
यने स्तो नक्रात्कर्काच्च षड्भेऽथ चरपलयुतोना-
स्तु पञ्चेन्दुनाड्यः। घस्रार्द्धं गोलयोः स्यात्तदयुत-
खगुणाः स्यान्निशार्द्धं त्वथाक्षच्छायेषुघ्न्यक्षभायाः
कृतिदशमलवोनेयमाशापलांशाः ॥ ६ ॥

---

१ यह लोक दूसरे रविचंद्रस्पष्टीकरणाधिकारमें २२ मा लिखा है उसका उदाहरणभी सविस्तर लिखा गया है परंतु यहां त्रिप्रश्नाधिकारमेंही प्रासंगिक है वहां केवल आनुषंगिक है सो जान लेना.

अन्वयः-खेचरे क्रियघटरसभे सौम्ययाम्यौ गोलौ स्तः। अथ नक्रात् कर्कात् च षड्भे अयने स्तः अथ तु पञ्चेन्दुनाडचः गोलयोः चरपलयुतोनाः घस्रार्द्धं स्यात्। तदयुतखगुणाः निशार्द्धं स्यात्। अथ तु अक्षच्छाये षुघ्नी अक्षभायाः कृतिदशमलवोना इयम् आशापलांशाः (स्युः) ॥ ६ ॥

भाषा-मेष आदि छः राशियोंमें ग्रह स्थित हो तो उत्तर गोलका ग्रह होता है और तुला आदि छः राशियोंमें ग्रह स्थित हो तो दक्षिण गोलका ग्रह होता है उसी भांति मकर आदि छः राशियोंमें उत्तरायण और कर्क आदि छः राशियोंमें दक्षिणायन ग्रह होता है। और उत्तर गोलमें सायन सूर्य हो तो पंदरह घडियोंमें चर पलोंको युत करे और दक्षिण गोलमें सायन सूर्य हो तो पंदरह घडियोंमें चर पलको ऊन करे ऐसे करनेसे दिनार्द्ध अर्थात् दिनका आधा भाग होता है उस दिनार्द्धको ३० में घटानेसे रात्र्यर्द्ध अर्थात् रात्रिका आधा भाग होता है फिर दिनार्द्धको दुगुना करनेसे दिनमान और रात्र्यर्द्धको दुगुना करनेसे रात्रिमान होता है। और पलभाको पांचसे गुणा करे फिर पलभाके वर्गके दशमें हिस्सेको अर्थात् पलभामें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उसे पंच गुणित पलभामें ऊन करनेसे दक्षिणदिशाके अक्षांश होते हैं ॥ ६ ॥

अथ उदाहरण।

चर ९३ पल है और यहां सायन सूर्य उत्तर गोलमें स्थित है इसलिये १५ घडियोंमें चर ९३ पलको अर्थात् एक घडी ३३ पलको युत किया तो दिनार्द्ध १६।३३ हुआ इसको दुगुना करनेसे दिनमान ३३।६ मिला फिर दिनार्द्ध १६।३३ को ३० में घटानेसे रात्र्यर्द्ध अर्थात् रात्रिका आधा भाग १३।२७ मिला इसको दूना करनेसे रात्रिका मान २६।५४ हुआ ॥

अब अक्षांश बनानेका उदाहरण कहते हैं।

पलभा ५।४५ अंगुलादिको पांचसे गुणा दिया तो २८।४२ हुए फिर पलभा ५।४५ का वर्ग ३३।३ हुआ इसमें १० का भाग दिया तो दशांशके ३।१८।१८ अंशादि मिले इनको पंच

गुणित पलभा २८।४५ में घटा दिया तो दक्षिण दिशाके अक्षांश २५।२६।४२ हुए ये सदा दक्षिण दिशाके होते हैं॥

अब उन्नत नत और अक्ष कर्ण इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

यातः शेषः प्राक्परत्रोन्नतं स्यात्कालस्तेनोनं द्युखण्डं नतं स्यात्।

अन्वयः–प्राक् यातः उन्नतं स्यात्। परत्र शेषः कालः (उन्नतं स्यात्) तेन ऊनं द्युखण्डं नतं स्यात्॥

भाषा–सूर्यके उदयसे दिनके आधे भागपर्यंत पूर्व कपाल और मध्याह्नसे सूर्यके अस्तपर्यंत पश्चिम कपाल होता है सूर्योदयसे पूर्वकपालका जो घडी आदि भोगा हुआ काल है वह पूर्व उन्नत काल कहलाता है और पश्चिम कपालका जो सूर्यास्त पर्यंतका दिन शेष काल है वह पश्चिम उन्नतकाल कहलाता है उस उन्नतकालको दिनार्द्धमें घटानेसे नतकाल होता है और पलभाका वर्ग करे फिर उसमें २५ का भाग देनेसे जो फल मिले उसे बारहमें जोडनेसे अंगुल आदि अक्षकर्ण होता है॥

अथ उदाहरण।

सूर्यके उदयसे भोगी हुई घडी आदि १०।३० हैं यह पूर्व कपालमें हैं इसलिये पूर्व उन्नतकाल १०।३० हुआ इसको दिनार्द्ध १६।३३ में घटा दिया तो पूर्वनत ६।३ हुई॥

अब अक्षकर्णके बनानेका उदाहरण कहते हैं।

अक्षच्छायावर्गतत्त्वांशयुक्तो मार्त्तण्डः स्यादंगुलाद्योऽक्षकर्णः॥ ७॥

अन्वयः–अक्षच्छायावर्गतत्त्वांशयुक्तः मार्त्तण्डः अंगुलाद्यः अक्षकर्णः स्यात्॥ ७॥

भाषा–पलभा ५।४५ का वर्ग किया तो३३।३।४५ हुआ इसमें

पचीसका भाग देनेसे अंश आदि १।१९ मिले इन्होंको १२ में युत किया तो अंगुल आदि अक्षकर्ण १३।१९ मिला ॥ ७ ॥

अब इष्ट छाया बनानेके लिये हार कहते हैं ।

वेदेशाः शरहच्चराब्यरहिताः सौम्यानुदग्गोलयो-
र्हारोऽथो घटिकार्द्धयुङ्नतकृतेर्द्व्यंशः समाख्यः
स्मृतः । चेत्सार्द्धत्रिकृतो नतं यदधिकं वेदाहतं
तद्वियुक्स्पष्टोऽसौ तदयुग्घरस्त्वभिमतः स्याद-
क्षकर्णोद्धृतः ॥ ८ ॥

अन्वयः-वेदेशाः सौम्यानुदग्गोलयोः शरहच्चराढ्यरहिताः हारः (स्यात्) अथो घटिकार्द्धयुक् नतकृतेः द्व्यंशः समाख्यः स्मृतः । चेत् नतं यत् सार्द्धत्रिकृतः अधिकं (स्यात् तदा सार्द्धत्रयोदशहीनं कृत्वा) वेदाहतं तद्वियुक् असौ स्पष्टः (स्यात्) । तदयुक् हरः अक्षकर्णोद्धृतः अभिमतः स्यात् ॥ ८ ॥

भाषा-चरमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसको सायन सूर्य उत्तर गोलमें हो तौ एकसौ चौदहमें युत करे और जो सायन सूर्य दक्षिण गोलमें हो तो घटा देय ऐसा करनेसे मध्यम हार होता है । फिर नतमें तीस पलको युत करके उसका वर्ग करे फिर वर्ग करनेसे जो फल मिले उसमें दोका भाग देनेसे जो फल मिले वह समाख्य अर्थात् सम संज्ञावाला होता है जो नतकाल साढेतेरह अर्थात् १३।३० से अधिक हो तो साढेतेरहको नतमें घटानेसे जो शेष रहे उसको चारसे गुणा करे फिर उस गुणनफलको समाख्यमें जोड दे और जो नतकाल १३।३० से कम हो तो यथावत् रहने दे फिर मध्यम हारमें समाख्यको घटाकर जो बचे उसमें अक्षकर्णका भाग देनेसे जो फल मिले वह स्पष्ट हार होता है ॥ ८ ॥

उदाहरण ।

चर ९३ है इसमें ५ का भाग दिया १८।३६ मिले यहां

सायन सूर्य उत्तर गोलमें स्थित है इसलिये १८३६ को ११४ में जोड दिया तो १३२।३६ हुए यह मध्यम हार हुआ। फिर नतकाल ६।३ में ३० पलयुक्त करे तो ६।३३ हुए इसका वर्ग किया तो ४२।५४ हुए इसमें २ का भाग दिया तो २१।२७ मिले यह समाख्य हुआ। अब मध्यम हार १३२।३६ मेंसे २१।२७ समाख्य घटाया तो १११।०९ बचे फिर इसमें अक्षकर्ण १३।१९ का भाग दिया तो स्पष्ट हार ८।२० मिला॥

अब भाज्य इष्ट कर्ण और इष्ट छाया इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

दिग्घ्नाक्षभाहृतचरं स्वगुणं द्विनिघ्नं स्वेष्वंशयुग्युगभवान्वितमत्र भाज्यः। कर्णोंगुलादिक इहेष्टहराप्तभाज्यः कर्णार्कवर्गविवरात्पदमिष्टभा स्यात् ॥९॥

अन्वयः-दिग्घ्नाक्षभाहृतचरं स्वगुणं (ततः) द्विनिघ्नं (ततः) स्वेष्वंशयुक् (ततः) युगभवान्वितम् अत्र भाज्यः (स्यात्)। इष्टहराप्तभाज्यः इह अंगुलादिकः कर्णः (स्यात्) कर्णार्कवर्गविवरात् पदम् इष्टभा स्यात् ॥ ९ ॥

भाषा-पलभाको दशसे गुणा करे फिर उस गुणनफलका चरमें भाग देनेसे जो फल मिले उसका वर्ग करे फिर उसको दो गुणा करे फिर जो गुणनफल हो उसमें पांचका भाग देकर जो फल मिले उसको उस गुणनफलमें युत करे फिर जो अंक हो इसको एकसौ चौदहमें युत करनेसे जो अंक आवे वह भाज्य होता है फिर इसमें इष्ट हारका भाग देनेसे अंगुल आदि इष्ट कर्ण होता है। इष्ट कर्णका वर्ग और बारहका वर्ग इन्होंके अंतरका वर्गमूल निकालनेसे इष्ट छाया होती है॥ ९॥

अथ उदाहरण।

पलभा ५।४५ अंगुलादिको १० से गुणा दिया तो ५७।३० हुए फिर इसमें चर ९३ का भाग देनेसे फल १।३७ मिला फिर

इसका वर्ग किया तो २।३६ हुए इनको दूना किया तो ५।१२ हुए फिर इसमें इसके पांचवें हिस्से १।२ को युत करनेसे ६।१४ हुए फिर इन्होंको ११४ में युत किया तो १२०।१४ भाज्य हुआ फिर इसमें इष्ट हार ८।२० का भाग दिया तो फल अंगुल आदि इष्ट कर्ण १४।२५ मिला इसका वर्ग किया तौ २०७।५० हुए और १२ का वर्ग १४४ हुआ फिर इन दोनोंका अंतर किया तो ६३।५० हुए इसका वर्गमूल लिया तो ६।४६।५८ अंगुलादि इष्ट च्छाया हुई ॥

अब मूल लानेके प्रकारको कहते हैं ।

जहां अवयवसहित अंकोंका मूल लेना हो वहां ऊपरले अंकको साठसे गुणा करे फिर उसमें नीचेके अंकको युत करे फिर उसको साठसे गुणा करे ऐसे दोवार साठसे गुणा करे फिर इसका मूल ग्रहण करे जो शेष रहे उसमें एक युत करके फिर उसको साठसे गुणा करे फिर इसमें विकलाओंको युत करे इसमें दोसे गुणे हुए मूल विषैं दो और युत करके इसका भाग देवे भाग देनेसे जो फल मिले उसको मूलके नीचेके अंकमें युत करे फिर इसमें साठका भाग देनेसे मूल मिलता है ॥

अथ उदाहरण ।

कर्णका वर्ग और बारहका वर्ग इन्होंका अंतर ६३।५० है इसका सूक्ष्म मूलके जाननेके लिये इसको दो वार साठसे गुणा किया तो २२९८०० हुए इसपरसे कही हुई रीतिसे मूल ४७९ मिला फिर मूल शेष ३५९ में एक युत किया तो ३६० हुए इसको साठसे गुणा किया तो २१६०० हुए फिर इसमें विकला ० युत करनेसे २१६०० हुए फिर इसमें दोसे गुणे हुए मूल ९५८ विषैं दो युत करके ९६० इसका भाग दिया तो फल २२ मिला इसको मूलके नीचेके दरजेमें स्थापन किया तो ४७९।२२ हुए फिर इसमें साठका भाग देनेसे मूल ७।५९।२२ मिला यही इष्ट छाया है और जहां तहां अवयवकरके सहित मूल ग्रहण करना

हो वहां अंतर पडता है और मूलका वर्ग किया जावे तो वर्गका अंक नहीं होता इसलिये अवयवकरके सहित अंकका मूल ग्रहण नहीं करना ॥

अथ उदाहरण।

कल्पना किये हुए इष्ट ०।२० का वर्ग किया तो ०।६ हुए इसके ऊपरले अंकका मूल लिया तो ० मिला शेष ० में एक युत करे इस रीतिसे फल ३३ मिला ऐसे करनेसे मूल ०।३३ मिला यह कल्पित इष्टकी समान नहीं हुआ अथवा इष्ट ०।१० कल्पना किया इसका मूल ०।३५ मिला इसका वर्ग ०।२० हुआ ऐसे अल्प अंकमें बहुत अंतर पडता है और बहुत अंकमें थोडा अंतर पडता है इसलिये इस रीतसे मूल ग्रहण करना नहीं चाहिये किंतु पहिले कहे हुए प्रकारसे मूल ग्रहण करना योग्य है ॥

अब इष्ट छाया परसे कर्ण और नतके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

कर्णः स्यात्पदमर्कभाकृतियुतेस्तद्भक्तभाज्यो हरोऽभीष्टस्तत्पलकर्णघातरहितो मध्यो हरो द्व्याहृतः। चेद्वेदाङ्कधराधिकः पृथगतो वेदाङ्कभूताद्गुणाप्ताढ्यस्तस्य पदं घटीमुखनतं स्यादर्द्धनाडीवियुक् ॥ १० ॥

अन्वयः–अर्कभाकृतियुतेः पदं कर्णः स्यात् । तद्भक्तभाज्यः अभीष्टः हरः (स्यात्)। तत्पलकर्णघातरहितः द्व्याहतः मध्यः हरः चेत् वेदांकधराधिकः (स्यात् तदा) पृथक् (स्थाप्यः)। अतः वेदांकभूतात् गुणाप्ताढ्यः (कार्य्यः) तस्य पदं अर्द्धनाडीवियुक् घटीमुखनतं स्यात् ॥ १० ॥

भाषा–बारह वर्गमें इष्ट छायाके वर्गको युत करे फिर इसका वर्गमूल लेनेसे इष्ट कर्ण होता है फिर उस कर्णका भाज्यमें भाग देनेसे अभीष्ट हार होता है इस हारको अक्षकर्णसे गुणा करे फिर गुणा करनेसे जो फल मिले उसको मध्य हारमें घटा देवे

फिर शेषको दो गुना करके उसका वर्गमूल निकाले फिर उसमें तीस पलको ऊन करनेसे नत होती है और जो मध्य हारमें घटाकर और दोगुना करनेसे जो फल मिले वह एकसौ चौरानवेसे अधिक हो तो गुणनफलको दो जगह रक्खे फिर उस एक जगहकेमें १९४ घटाकर तीनका भाग देवे जो फल मिले उसको दूसरी जगह रक्खे हुए गुणनफलमें युत करे फिर उस अंकका वर्गमूल निकालकर उसमें तीस पल घटानेसे जो शेष रहे वह नत होती है ॥ १० ॥

अथ उदाहरण ।

बारहके वर्ग १४४ को इष्ट छाया ७।५९।२२ के वर्ग ६३।५० में युत किया तो २०७।५० हुए इसका वर्गमूल १४।२५ मिला यह इष्ट कर्ण हुआ फिर इसका भाज्य १२०।१४ में भाग दिया तो वांछित हर ८।२०।२३ मिला फिर इसको अक्षकर्ण १३।१९ से गुणा दिया तो १११।३ हुए फिर इन्होंको मध्य हर १३२।३६ में घटा दिया तो २१।३३ हुए फिर इन्होंको दो गुना किया तो ४३।६ हुए(फिर इन्होंको दोवार साठसे गुणा किया तो १५५१६० हुए) इसपरसे वर्गमूल लिया तो ६।३३ हुए इसमें ३० पल घटा दिये तो ६।३ यह नत हुई । अब साढेतेरहसे अधिक नत हो तो उसका उदाहरण देते हैं । कल्पना की हुई नत १५।१० में तीस पल युत किये तो १५।४० हुए फिर इसका वर्ग किया तो २४५।२६ हुए इनमें दोका भाग देनेसे १२२।४३ समाख्य हुआ और यहां नत १५।३० साढेतेरहसे अधिक है इसलिये नत १५।१० में १३।३० को घटा दिया तो १।४० हुए फिर इसको चारसे गुणा किया तो ६।४० हुए इन्होंको समाख्य १२२।४३ में घटा दिया तो स्पष्ट समाख्य ११६।३ हुआ फिर इसको हार १३२।३६ में घटा दिया तो १६।३३ रहे फिर इन्होंमें अक्ष कर्ण १३।१९ का भाग दिया तो अभीष्ट हार १।१४ मिला फिर इस अभीष्ट हार

१।१४ का भाज्य १२०।१४ में भाग दिया तो फल ९७।२९ मिला यह इष्ट कर्ण हुआ इसका वर्ग ९५०३० हुआ और बारहका वर्ग १४४ हुआ इन दोनोंका अंतर किया तो ९३५९० रहे फिर इसको ६० से सवर्णित अर्थात् दोवार साठसे गुणा किया तो ३३६९२४००० हुए इसका मूल लिया तो इष्ट छाया ९६।४४। ३० मिली ॥

अब विलोम अर्थात् उलटी रीतिसे नत बनानेका उदाहरण कहते हैं।

फिर इष्ट छायाका वर्ग किया तो ९३५८।५७ हुआ इसमें १२ के वर्ग १४४ को युत किया तो ९५०२।५७ हुए इसका मूल लिया तो कर्ण ९७।२९ मिला इसका भाज्य १२०।१४ में भाग दिया तो फल १।१४ मिला यह अभीष्ट हर है इसको अक्ष कर्ण १३।१९ से गुणा दिया तो १६।२५ हुए फिर इन्होंको मध्य हर १३२।३६ में घटा दिया तो ११६।११ रहे फिर इसको दूना किया तो २३२।२२ हुए यह १९४ से अधिक है इसलिये इसको दो जगह रक्खा २३२।२२ फिर इसमें १९४ घटा दिये तो ३८।२२ रहे फिर इन्होंमें तीनका भाग देनेसे फल १२।४७ मिला इसको दूसरी जगह रक्खे हुए २३२।२२ में युत किया तो २४५।९ हुए फिर इसका मूल लिया तो १५।४० हुआ इसमें ३० पल घटा दिये तो नत काल १५।१०हुआ ॥

अब क्रांतिके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

चत्वारिंशदशीतिरद्रिकुभवः क्षेन्दवो भूधृती षट्खार्क्षाणि जिनाश्विनोऽङ्कविकृती खाब्ध्यश्विनः सायनात्। खेटाद्दोर्लवदिग्लवप्रमगतोंकोऽसौ तदूनागताच्छेषघ्नाद्दशलब्धियुग्दशहृतोंशाद्योऽपमः स्यात्स्वदिक् ॥ ११ ॥

अन्वयः-सायनात् खेटात् दोर्लवदिग्लवप्रमगतः अंकः (स्यात्) असौ तदूनागतात् शेषघ्नात् दशलब्धियुक् (ततः) दशहृतः अंशाद्यः स्वदिक् अपमः स्यात् । (अथ) चत्वारिंशत् अशीतिः अद्रिकुभवः क्षक्षेन्दवः भूधृती षट्खाक्षीणि जिनाश्विनः अङ्कविकृती खाब्ध्याश्विनः (एते नव अङ्काः स्युः) ॥ ११ ॥

भाषा-जिस ग्रहकी क्रांति बनानी हो उस ग्रहमें अयनांश युत करे फिर उस ग्रहके भुज करे फिर उसके अंशोंमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उस अंकके समान नीचे लिखे अंकों-मेंसे ग्रहण करे और इन नवों अंकोंमें जो अंक हो उसको गत अंक माने और उससे अगले अंकको एष्य अंक माने फिर गत अंक और एष्य अंक इन्होंके अंतरसे शेषको गुणा करे फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उसको गत अंकमें युत करे फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे सायन ग्रहके गोलकी दिशाकी अंश आदि क्रांति होती है। अंक निम्नलिखित कोष्टकमें देखो॥११॥

अथ उदाहरण ।

सूर्य १।५।५२।४१ में अयनांश १८।१० युत किया तौ १।२४ २।४१ हुए फिर इसके भुजके अंश किये तो ५४।२।४१ हुए फिर इन्होंमें १० का भाग देनेसे फल ५ मिला शेष ४।२।४१ रहे फिर ४०।८०।११७।१५१।१८१।२०६।२२४।२३६।२४० इन्होंमें फल ५ की समानका अंक १८१ है इसलिये यह गत अंक १८१ हुआ फिर गत अंक १८१ और इससे अगला अंक २०६ है इन्होंका अंतर किया तो २५ हुआ इससे शेष ४।०२।४१ को गुणा दिया तो १०१।७।०५ हुए इनमें १० का भाग देनेसे फल १०।६।४२ मिला इसको गत अंक १८१ में युत किया तो १९१।०६।४२ हुए इनमें १० का भाग देनेसे अंश आदि १९।०६।४० यह क्रांति हुई यह सायन रवि उत्तर गोलमें है इसलिये उत्तर क्रांति है ॥

चक्रम्.

१	२	३	४	५	६	७	८	९
४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०

अब अन्यप्रकारसे क्रांति बनानेका उदाहरण।

सायन सूर्यके भुजके अंश ५४।२।४१ में १० का भाग दिया तो फल ५ मिला शेष ४।२।४१ रहे फिर चालीस, चालीस, सैंतीस, चौंतीस, तीस, पचीस, अठारह, बारह और चार इन्होंमें फलकी समान अंक ३० है और इससे अगला अंक २५ है इससे शेष ४।२।४१ को गुणा दिया तो १०१।७।५ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे फल १०।६।४२ मिला इन्होंको गत खण्डोंके योग १८१ में युत किया तो १९१।६।४२ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे वही अंश आदि क्रांति १९।६।४० मिली यह सायन सूर्य उत्तर गोलमें है इसलिये उत्तर क्रांति हुई ॥

चक्रम्.

१	२	३	४	५	६	७	८	९
४०	४०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४

अब लाघवके लिये स्थूल क्रांति बनानेके प्रकारको कहते हैं।

षट्षडिषूदधिदृक्कुभिरर्द्धैः खेटभुजांशदिनांशमितैक्यम्। शेषहतैष्यदिनांशयुतं वांशाद्यपमः सुखसंव्यवहृत्यै॥ १२ ॥

अन्वयः–वा षट्षडिषूदधिदृक्कुभिः अर्द्धैः खेटभुजांशदिनांशमितैक्यं शेषहतैष्यदिनांशयुतम् अंशाद्यपमः सुखसंव्यवहृत्यै (स्यात्) १२ ॥

भाषा–सायन सूर्यके भुज करे फिर उसके अंश करके उन अंशोंमें पंदरहका भाग देनेसे जो फल मिले उसके समान ६।६।

५।४।२।१ इन खण्डोंमें जो खण्डा हो उसको गत खण्डा माने और उस पर्यंत गत खण्डोंका योग करे फिर एष्य खंडेको शेष-से गुणा करे फिर उसमें १५ का भाग देनेसे जो फल मिले उस-को गत खण्डोंके योगमें युत करनेसे अंश आदि स्थूल क्रांति होती है ॥ १२ ॥

अथ उदाहरण ।

सायन सूर्य है १।२४।०२।४१ इसके भुज करके अंश किये तो ५४।२।४१ हुए इनमें १५ का भाग दिया तो फल ३ मिला और शेष रहा ९।०२।४१ फिर ६।६।५।४।२।१ में फल ३ के समान ५ है इसलिये गत खण्डोंका योग १७ हुआ फिर शेष ९।२।४१ को एष्य खण्डे ४ से गुणा दिया तो ३६।१०।४४ हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल २।२४।४३ मिला फिर इन्होंको गत खण्डोंके योग १७ में युत किये तो व्यवहारके लिये अंश आदि स्थूल क्रांति १९।२४।४३ मिली ॥

अब क्रांतिके अंशोंपरसे रीतिद्वारा भुजके अंशोंके बनानेकी रीति लिखते हैं ।

ततो दलानि शोधयेत्तिथिघ्नशेषमेष्यहृत् ।
तिथिघ्नशुद्धसंख्यया युतं भवन्ति दोर्लवाः ॥ १३ ॥

अन्वयः-ततः दलानि शोधयेत् । तिथिघ्नशेषम् एष्यहृत् (कार्य्यम्) (ततः) तिथिघ्नशुद्धसंख्यया युतं दोर्लवाः भवन्ति ॥ १३ ॥

भाषा-लघु खण्डोंपरसे साधन की हुई क्रांतिमें छःसे आदि लेके जितने खण्डे घटें उतने घटा देवे फिर शेषको गुणा करे फिर इन्होंमें अशुद्ध अर्थात् जो नहीं घटा था उस एष्य खण्डका भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसमें शुद्ध खण्डकी अर्थात् जो अंक क्रांतिमें घट गये थे उनकी जितनी संख्या हो उसको तीनसे गुणा करके युत करनेसे सूर्यके भुजके अंश होते हैं ॥ १३ ॥

अथ उदाहरण।

लघु खण्डोंपरसे साधन की हुई क्रांति १९।२४।४३ है इसमें पहले खण्डे ६ को घटा दिया तो शेष १३।२४।४३ रहे फिर इन्होंमें दूसरे खण्डे ६ को घटा दिया तो ७।२४।४३ रहे फिर इन्होंमें तीसरे खण्डे ५ को घटाय दिया तो शेष २।२४।४३ रहे फिर आगेका अंक ४ नहीं घट सक्ता तो २।२४।४३ को १५ से गुणा दिया तो ३६।१०।४५ हुए फिर इन्होंमें जो एष्य खण्ड ४ नहीं घट सका था उसका भाग दिया तो फल ९।२।४१ मिला फिर शुद्ध खण्डे ३ को १५ से गुणा किया तो ४५ हुए इनको पूर्व लब्धि ९।०२।४१ में युत किया तो सायन सूर्यके भुजांश ५४।२।४१ मिले॥

अब सूर्यका ज्ञान न हो तो दिनार्द्धसे स्थूल क्रांति बनानेके प्रकारको कहते हैं।

द्युदलतिथिवियोगस्तद्विनाड्यश्चरं स्यादथ निज-गजभागोपेतमक्षप्रभाप्तम्। दिनकृदपमभागास्त-त्वलिप्तायुताः स्युर्द्युदलकृशपृथुत्वे ते क्रमाद्या-म्यसौम्याः॥ १४॥

अन्वयः—द्युदलतिथिवियोगः विनाड्यः चरं स्यात्। अथ तत् निजगज-भागोपेतं (ततः) अक्षप्रभाप्तं (ते) दिनकृदपमभागाः (स्युः)। ते तत्व-लिप्तायुताः द्युदलकृशपृथुत्वे क्रमात् याम्यसौम्याः स्युः॥ १४॥

भाषा—दिनार्द्धका और १५ घडियोंका अंतर करे फिर अंत-रको ६० गुणाकर पल बनावे तो चर मिल जाता है फिर इसमें अपने आठवें हिस्सेको युत करे फिर इन्होंमें पलभाका भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसमें २५ कला युत करनेसे सूर्यकी क्रांतिके अंश होते हैं और जो क्रांतिके अंश पंदरह घडीसे कम हों तो दक्षिण क्रांति और अधिक हों तो उत्तर क्रांति होती है॥१४॥

अथ उदाहरण ।

दिनार्द्ध १६।३३ और १५ का अंतर किया तो १।३३ हुए फिर ऊपरलेको ६० से गुणाकरके नीचेके अंकको युत किया तो पला आदिचर ९३ मिला इसमें इसके आठवें हिस्से ११।३७।३० को युत किया तो १०४।३७।३० हुए फिर इन्होंमें पलभा ५।४५ का भाग देनेके लिये भाज्य ३७६६५० और भाजक २०७०० हुए फिर भाज्यमें भाजकका भाग देनेसे अंश आदि फल १८। ११।४४ मिला फिर इसमें कला २५ युत की तो अंश आदि सूर्यकी क्रांति १८।३६।४४ मिली और यहां क्रांतिके अंश १५ घडीसे अधिक हैं इसलिये यहां उत्तरा क्रांति मिली ॥

क्रांति बनानेका प्रकारान्तर कहते हैं ।

सायन सूर्यके भुजके अंश बनावे फिर उसके दशवें हिस्सेको १८ में ऊन करे फिर इसको दशवें हिस्सेसे गुणा करनेसे जो फल मिले उसको दो जगह रक्खे एक जगह तो उसमें ७२ का भाग देनेसे जो फल मिले उसको ४।३० में ऊन करनेसे जो फल मिले उसमें दूसरी जगह रक्खे हुएका भाग देनेसे अपने गोलकी अंश आदि क्रांति होती है ॥

अथ उदाहरण ।

सायन सूर्यके भुजके अंश ५४।२।४१ इन्होंका दशवां हिस्सा लिया तो ५।२४।१६ मिला फिर इसको १८ में घटा दिया तो १२।३५।४४ रहे फिर इसको दशमें हिस्सेसे गुणा दिया तो ६८। ४।१९ हुए फिर इसको दो जगह रक्खा एक जगह तो इसमें ७२ का भाग देनेसे फल ०।५६।३४ मिले फिर इन्होंको ४।३० में घटा दिया तो ३।३३।१७ रहे इसको दूसरी जगह रक्खे हुए ६८।४।१९ में भाग देनेसे अंश आदि उत्तराक्रांति १९।८।५९ मिली और जहां ग्रहकी क्रांतिका साधन करे वहां पहले प्रकार करके क्रांति बनावे ॥

अब नतांश और पराख्य इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

क्रांति और अक्षांश इन्होंका संस्कार करनेसे मध्यान्हके नतांश अर्थात् नतके अंश होते हैं फिर इन्होंमें छःका भाग देनेसे जो फल मिले उसको दो जगह रक्खे फिर उसके वर्गमें अलग रक्खे हुएको युत करे फिर उसमें दोका भाग देनेसे जो फल मिले उसको ११४ में घटानेसे परसंज्ञावाला अंक होता है॥

अथ उदाहरण।

क्रांति और अक्षांश इन्होंका एक दिशामें योग और भिन्न दिशामें अंतर होता है। यहां उत्तर क्रांति १९।६।४० है और अक्षांश दक्षिणके २५।२६।४२ हैं ये दोनों भिन्न दिशामें हैं इसलिये इन्होंका अंतर किया तो मध्यान्हके दक्षिण दिशाके नतांश ६।२०।२ मिले। फिर इन्होंमें छःका भाग देनेसे फल १।३।२० मिला इसको दो जगह १।३।२० रक्खे फिर इसके वर्ग १।६।५१ में दो जगह रक्खा हुआ १।३।२० युत किया तो २।१०।११ हुए फिर इन्होंमें दोका भाग देनेसे फल १।५।५ मिला इसको ११४ में ऊन करनेसे परसंज्ञावाला ११२।५४।५५ मिला॥

अब नतांश उन्नतांश और पराख्यके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

क्रान्त्यक्षजसंस्कृतिर्नतांशास्तद्धीना नवतिः स्युरुन्नतांशाः। दिनमध्यभवास्ततोऽपि ये स्युः क्रान्त्यंशा लघुखण्डकैः पराख्यः॥ १५॥

अन्वयः—क्रान्त्यक्षजसंस्कृतिः नतांशाः स्युः तद्धीना नवतिः दिनमध्यभवाः उन्नतांशाः (स्युः)। ततः अपि लघुखण्डकैः ये क्रान्त्यंशाः स्युः(ते) पराख्यः॥ १५॥

भाषा-क्रांति और अक्षांश इन्होंका संस्कार करनेसे नतांश होते हैं फिर उन नतांशको ९० में घटानेसे दिनार्द्धसे उत्पन्न हुए उन्नतांश होते हैं और उन्नतांशोंपरसे लघु खण्डोंके प्रकारसे बनाई हुई क्रांतिके जो अंश उन्होंकी परसंज्ञा है ॥ १५ ॥

अथ उदाहरण।

उत्तर क्रांति १९।६।४० और दक्षिण दिशाके अक्षांश २५।२६।४२ इन्होंको भिन्न भिन्न दिशामें स्थित होनेसे अंतर किया तो दक्षिण दिशाके नतांश ६।२०।२ हुए फिर इन्होंको ९० में घटा दिया तो मध्यान्ह कालके उन्नतांश ८३।३९।५८ हुए फिर इन्होंपरसे लघु खण्डोंकी रीतिसे क्रांति बनाई तो स्थूल क्रांति २३।३४।३९ मिली इसको पराख्य कहते हैं॥

अब क्षेपकसे नतपरसे यंत्रके अंशोंको कहते हैं।

नतमें ३० पल युत करे फिर उसको १५ से गुणा करके दिनार्द्धका भाग देनेसे जो फल मिले उसके वर्गको परसंज्ञावालेसे गुणा करे फिर उसमें ११४ का भाग देनेसे जो फल मिले उसमें ३२८ युत करे फिर इसमें दोसे गुणे हुए परसंज्ञावालेको घटा देवे ऐसे करनेसे जो फल मिले उसके मूलको ६ से गुणा करके उसमें ३ युत करे ऐसे करनेसे यंत्रके अंश होते हैं। और जहां नतका संबंध है वहां नतांशोंपरसे साधन किया हुआ पराख्य ग्रहण करना योग्य है और जहां उन्नतांशोंका सम्बन्ध है वहां उन्नतांशोंपरसे साधन किया हुआ पराख्य ग्रहण करना योग्य है॥

अथ उदाहरण।

नत ६।३ में ३० पल युत किये तो ६।३३ हुए फिर इन्होंको १५ से गुणा दिया तो ९८।१५ हुए फिर इन्होंमें दिनार्द्ध १६।३३ का भाग देनेसे फल ५।५६।११ मिला इसके वर्ग ३५।१४।२६

को परसंज्ञावाले ११२।५४।५५ से गुणा दिया तो ३९।७९।११। ४९ हुए फिर इन्होंमें ११४ का भाग देनेसे फल ३४।५४।१८ मिला फिर इन्होंमें २२८ जोड दिये तो २६२।५४।१८ हुए फिर इन्होंमें द्विगुणित परसंज्ञावाले २२५।४९।५० को घटा दिया तो ३७।४।२८ रहे फिर इसके मूल ६।५।२० को ६ से गुणा किया तो ३६।३२ हुए फिर इन्होंमें तीन घटा दिये तो यंत्रके अंश ३३।३२।० मिले ॥

अब यंत्रके अंशोंपरसे विलोम विधिकरके नत बनानेके प्रकारको कहते हैं।

यंत्रके अंशोंमें तीन युत करके ६ का भाग देवे फिर उसके वर्गमें द्विगुणित परसंज्ञावालेको युत करे फिर इन्होंमें २२८ घटाके उसको ११४ से गुणा करे फिर इन्होंमें परसंज्ञावालेका भाग देनेसे जो फल मिले उसके मूलको दिनार्द्धसे गुणा करे फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे जो फल मिले उसमें ३० पल घटानेसे घडी आदि नत होती है ॥

अथ उदाहरण।

यंत्रके अंश ३३।३२।० में तीन युत किये तो ३६।३२।० हुए फिर इन्होंमें छःका भाग देनेसे फल ६।५।२० मिला इसके वर्ग ३७।४।२८ में द्विगुणित परसंज्ञावालेको युत किया तो २६२।५४। १८ हुए फिर इन्होंमें २२८ को घटा दिया तो ३४।५४।१८ रहे फिर इन्होंको ११४ से गुणा दिया तो ३९७९।१०।१२ हुए फिर इन्होंमें परसंज्ञावाले ११२।५४।५५ का भाग देनेसे फल ३५।१४। २५ मिला इसके मूल ५।५६।१० को दिनार्द्ध १६।३३ से गुणा दिया तो ९८।१५ हुए फिर इन्होंमें १५ का भाग देनेसे फल ६। ३३ मिला फिर इन्होंमें ३० पलको घटा दिया तो घडी आदि नत ६।३ मिली ॥

अब अन्य प्रकारकरके गतपरसे इष्ट कर्ण बनानेके प्रकारको कहते हैं।

नवतिगुणितामिष्टमुन्नतं द्युदलहृतं फलभागतोपमः। कथितपरगुणस्तदुद्धृता रविनवषट् च्छ्रवणोऽथ वा भवेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः-इष्टम् उन्नतं नवतिगुणितं (ततः) द्युदलहृतं (कार्य्यं तदा) फलभागतः अपमः कथितपरगुणः (कार्य्यः) तदुद्धृताः रविनवषट् अथ वा श्रवणः भवेत् ॥ १६ ॥

भाषा-अभीष्ट उन्नतकालको ९० से गुणा करके उसमें दिनार्द्धका भाग देवे ऐसे जो अंश आदि फल मिले उसपरसे लघुखण्डोंकी रीतिसे स्थूल क्रांति बनावे फिर क्रांतिको कहे हुए पराख्यसे गुणा करे फिर इसका ६९१२ में भाग देनेसे अंगुल आदि अक्षकर्ण होता है ॥ १६ ॥

अथ उदाहरण।

उन्नतकाल १०।३० को ९० से गुणा दिया तो घट्यादि९४५।० हुए फिर इसमें दिनार्द्ध १६।३३ का भाग देनेसे अंश आदि फल ५७।५।५८ मिला फिर इसपरसे लघु खण्डोंकी रीतिसे क्रांति २०।१३।३५ मिली फिर इसको पराख्य २३।३४।३९ से गुणा दिया तो ४७६।५३।१५ हुए फिर इसका ६९१२ में भाग देनेसे अंगुल आदि अक्षकर्ण १४।२९ मिला ॥

अब विलोम रीतिसे इष्ट करण परसे उन्नतकाल बनानेके प्रकारको कहते हैं।

तरणिनवरसाः श्रवोद्धृताः पराविहृता अपमो भवेत्ततः। दिनदलगुणिता भुजांशका नवतिहृता अथ वेष्टमुन्नतम् ॥ १७ ॥

अन्वयः-अथ वा तरणिनवरसाः श्रवोद्धृताः (ततः) पराविहृताः

(कार्य्याः । फलं) अपमः भवेत् । ततः भुजांशकाः दिनदलघ्नगुणिताः (ततः) नवतिहृताः इष्टम् उन्नतं (स्यात्) ॥ १७ ॥

भाषा–६९१२ में कर्णका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें परारव्यका भाग देनेसे स्थूल क्रांति होती है फिर इनपरसे कही हुई रीतिके अनुसार भुजके अंश बनाकर उन्होंको दिनार्द्धसे गुणा करे और जो फल मिले उसमें ९० का भाग देनेसे उन्नतकाल होता है ॥ १७ ॥

अथ उदाहरण।

६९१२ में अक्षकर्ण १४।२९ का भाग दिया तो फल ४७७। १४।१७ हुए फिर इसमें परसंज्ञावाले २३।२४।३९ का भाग देनेके लिये भाज्य १७१८०५७ और भाजक ८४८७९ मिले भाज्यमें भाजक भागका देनेसे क्रांति २०।१४।२८ मिली इसपरसे कही हुई रीतिसे भुजके अंश ५७।९।१५ हुए फिर इन्होंको दिनार्द्ध १६।३३ से गुणा दिया तो ९४५।५४ हुए फिर इन्होंमें ९० का भाग देनेसे उन्नतकाल १०।३० मिला ॥

अब यंत्रसे उत्पन्न हुए उन्नतांशोंको जानकर उन्नतकालके साधनकी रीतिको कहते हैं।

अभिमतयन्त्रलवास्ततोऽपमोऽसौ जिननिघ्नः परहृत्ततो भुजांशाः। द्युदलघ्नाः खनवोद्धृताः कपाले प्राक्पश्चाद्घटिकाः क्रमाद्गतैष्याः ॥ १८ ॥

अन्वयः–अभिमतयन्त्रलवाः ततः (यः) अपमः असौ जिननिघ्नः परहृत् ततः भुजांशाः (स्युः ते) द्युदलघ्नाः खनवोद्धृताः प्राक्पश्चात् कपाले क्रमात् गतैष्याः घटिकाः (स्युः) ॥ १८ ॥

भाषा–अभीष्ट यंत्र आदिसे खण्डोंकी रीतिसे क्रांति बनावे फिर उसको गुणाकर उसमें परारव्यका भाग देवे जो फल मिले वह अंशादि क्रांति है फिर इन्होंसे कही हुई रीतिके अनुसार भुजके अंश बनावे फिर उनको दिनार्द्धसे गुणाकर उसमें ९० का भाग देनेसे

जो घटी आदि मिले वह पहले कपालमें हो तो गत घडी और पीछेके कपालमें एष्य घडी होती है ॥ १८ ॥

अथ उदाहरण ।

अभीष्ट यंत्रके उन्नतांश आदि ५५।४५।४८ इन्होंपरसे लघुखण्डोंकी रीतिसे क्रांति १९।५२।१३ मिली इसको २४ से गुणा दिया तो ४७६।५३।१२ हुए फिर इन्होंमें पराख्य २३।३४।३९ का भाग देनेसे फल अंशादि २०।१३।३५ मिला फिर इसपरसे कही हुई रीतिसे भुजके अंश ५७।५।५६ मिले फिर इन्होंको दिनार्द्ध १६।३३ से गुणा दिया तो ९४५ हुए फिर इन्होंमें ९० का भाग देनेसे पहले कपालमें गत उन्नतघडी १०।३० मिली ॥

अब इष्ट उन्नत कालपरसे यंत्रसे उत्पन्न हुए नतांश साधनप्रकार कहते हैं ।

खाङ्कघ्नोन्नतघटिका दिनार्द्धभक्ता भागाः स्युस्तदपमजांशकाः परघ्नाः । सिद्धास्ता निगदितवत्ततो भुजांशास्तत्काले स्युरिति च यन्त्रजोन्नतांशाः॥१९॥

अन्वयः-खाङ्कघ्नोन्नतघटिकाः दिनार्द्धभक्ताः भागाः स्युः । तदपमजांशकाः परघ्नाः (ततः) च सिद्धास्ताः ततः निगदितवत् भुजांशाः तत्काले यंत्रजोन्नतांशाः स्युः इति ॥ १९ ॥

भाषा-उन्नत घडियोंको ९० से गुणा करे फिर उसमें दिनार्द्धका भाग देनेसे जो अंश आदि फल मिले उस परसे लघु खण्डोंकी रीतिसे क्रांति बनावे फिर उसको पराख्यसे गुणा करे जो फल मिले उसमें २४ का भाग देनेसे जो लब्धि मिले वह क्रांति है उससे पहली रीतिके अनुसार भुजके अंश बनावे वह उस कालमें यंत्र जो नतांश अर्थात् यंत्रसे उत्पन्न हुए नतांश होते हैं ॥ १९ ॥

अथ उदाहरण ।

उन्नतकाल १०।३० को ९० से गुणा किया तो ९४५।० हुए

फिर इन्होंमें दिनार्द्ध १६।३३ का भाग देनेसे अंश आदि फल ५७।५।५८ मिला फिर इसपरसे लघु खण्डोंकी रीतिसे क्रांति २०। १३।३५ मिली फिर इसको पराख्य २३।३४।३९ से गुणा दिया तो ४७६।५३।१५ हुए फिर इन्होंमें २४ का भाग देनेसे १९। ५२।१३ मिले फिर इसपरसे पहली रीतिसे भुजके अंश ५५।४५। ४८ मिले यही यंत्रसे उत्पन्न हुए नतांश हैं ॥

अब यंत्रसे उत्पन्न हुए नतांशपरसे इष्टकर्ण और इष्टकर्ण परसे यंत्रसे उत्पन्न हुए नतांश इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

यन्त्रलवोत्थक्रान्तिलवाप्ता वस्विभदस्राः स्यादिह कर्णः। कर्णहृतास्ते स्यादपमोऽतो बाहुलवाः स्युर्यन्त्रलवा वा ॥ २० ॥

अन्वयः—यन्त्रलवोत्थक्रान्तिलवाप्ताः वस्विभदस्राः इह कर्णः स्यात्। ते कर्णहृताः अपमः स्यात् अतः बाहुलवाः वा यन्त्रलवाः स्युः ॥ २० ॥

भाषा—यंत्रके अंशोंपरसे लघु खण्डोंकी रीतिसे क्रांतिके अंश बनावे फिर उन्होंका २८८ में भाग देनेसे अंगुलादि इष्ट कर्ण होता है। और फिर इष्ट कर्णका २८८ में भाग देनेसे क्रांति होती है फिर क्रांति परसे पहली रीतिसे भुजके अंश बनावे वही यंत्रसे उत्पन्न हुए नतांश होते हैं ॥ २० ॥

अथ उदाहरण।

यंत्रके अंश ५५।४५।४८ परसे लघुखण्डोंकी रीतिसे क्रांतिके अंश १९।५२।१३ हुए फिर इन्होंका २८८ में भाग दिया तो अंगुल आदि इष्ट कर्ण १४।२९।३८ मिला फिर २८८ में इष्टकर्ण १४।२९।३८ का भाग दिया तो क्रांति १९।५२।१३ मिली इसपरसे पहली रीतिसे भुजके अंश बनाये तो यंत्रसे उत्पन्न हुए नतांश ५५।४५।४८ हुए ॥

अब नलिकाबंध कुण्ड और मण्डप इन्होंके रचना करनेकी विधिमें दिक्साधन अर्थात् दिशाओंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

वृत्ते समभूगते तु केन्द्रस्थितशङ्कोः क्रमशो विशत्यपैति। छायाग्रमिहापरा च पूर्वा ताभ्यां सिद्धतिमेरुदक्च याम्याः ॥ २१ ॥

अन्वयः-समभूगते वृत्ते केन्द्रस्थितशङ्कोः छायाग्रं क्रमशः विशति इह अपरा (स्यात् यत्र) च अपैति (तत्र) पूर्वा (स्यात्) ताभ्यां सिद्धतिमेः उदक् याम्या च (स्यात्) ॥ २१ ॥

भाषा-जलसे पृथ्वीको समान करे फिर उस पृथ्वीमें कर्कट अर्थात् त्रिज्या परिमित सूत्रसे एक वृत्त बनावे फिर उस वृत्तके मध्यमें एक बारह अंगुलका शंकु स्थापन करे फिर उस शंकुकी छाया पूर्व कपाल अर्थात् मध्यान्हसे पहले जिस जगह अभीष्ट वर्तुलमें प्रवेश करे अर्थात् स्पर्श करे उस जगह एक चिन्ह कर देवे फिर उस स्थानको पश्चिम दिशा माने फिर ऐसेही उस शंकुकी छायाका अग्रभाग मध्याह्नके अनंतर जिस जगह वृत्तसे बाहर निकलती है उस जगह एक चिह्न कर देवे फिर उस स्थानको पूर्व दिशा माने और पूर्व और पश्चिमकी सीधपर एक रेखा खींचे और ऐसे पूर्व पश्चिम दो दिशा जानकर उन दिशाओं परसे मत्स्यका आकार वृत्त बनावे फिर पूर्व पश्चिमकी रेखापर वृत्तके मध्यसे एक लंब खडा करे व लंब ऊपर और नीचे जहां जहां वृत्तको स्पर्श करे वह दक्षिण उत्तर रेखा है यह प्रकार जिस दिन दिनमान ३०घडी होता है उस दिन करना चाहिये और दिनोंमें तो भुजके विना दिक्साधन नहीं होता ॥ २१ ॥

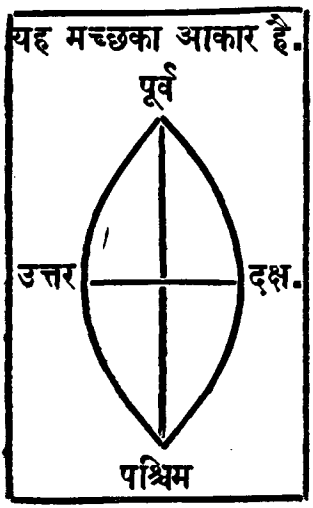

अब अन्य प्रकारसे दिक्साधन और भुज इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

वार्कक्रान्तिलवाक्षकर्णनिहतिर्भाकर्णनिघ्नी नभो-
क्षाग्न्याप्ता रविदिग्भुजो यमदिशद्विघ्नाक्षभासंस्कृतः।
केन्द्रेभोत्थवृतौ स पूर्णगुणवद्भाग्रात्प्रदेयो भवे-
द्याम्योदक्स भुजार्धकेन्द्रनिहता रज्जुस्तु पूर्वापरा॥२२॥

अन्वयः-वा अर्ककान्तिलवाक्षकर्णनिहतिः भाकर्णनिघ्नी नभोक्षाग्न्याप्ता रविदिग्भुजः (स्यात्। सः) यमदिशद्विघ्नाक्षभासंस्कृतः (शेषदिग्भुजः स्यात्) सः केन्द्रेभोत्थवृतौ पूर्णगुणवत् भाग्रात् प्रदेयः सः याम्योदक् भवेत्। भुजार्द्धकेन्द्रनिहता रज्जुः तु पूर्वापरा (स्यात्) ॥ २२ ॥

भाषा-सूर्यकी अंश आदि क्रांतिको अक्षकर्णसे गुणा करे फिर उन्होंके गुणनफलको इष्ट छायाके कर्णसे गुणा करे फिर जो फल मिले उसमें ३५० का भाग देनेसे जो फल मिले वह सायन सूर्यके गोलका मध्यम भुज है अर्थात् सायन सूर्य उत्तर गोलमें हो तो उत्तर भुज और दक्षिण हो तो दक्षिण भुज उसमें दक्षिण दिशाकी द्विगुणित पलभाका संस्कार करे अर्थात् एक दिशाके हो तो योग और भिन्न दिशामें अंतर करे ऐसे करनेसे स्पष्ट भुज होता है फिर उस भुजको छायासे बनाये हुए वृत्तमें जिस कालमें वृत्तमें प्रवेश छाया होती है उस कालकी छायाको अगले भागमें अथवा जिस कालमें वृत्तकी परिधिसे छाया निकलती है उस कालकी छायाके अगले भागमें पूर्ण जीवाकी नाई जोड देवे अर्थात् समान भूमिमें वांछित कर्कटसे एक वृत्त बनावे फिर उस वृत्त केन्द्रमें एक शंकु स्थापन करे फिर उस शंकुकी छायाका अग्रभाग वृत्तमें जहां स्पर्श करे वहां एक चिह्न कर देवे फिर उस चिह्नसे वह भुज दक्षिण दिशाका हो तो दक्षिण दिशामें पूर्ण जीवाकी नाई जोड देवे और वह भुज उत्तर दिशाका हो तो जितने अंगुल भुज

हो उतने अंगुल छायाके अगले भागसे पूर्ण जीवाकी नाईं उत्तर दिशामें जोड देवे ऐसे करनेसे दक्षिण दिशा और उत्तर दिशाकी रज्जु अर्थात् रेखा होती है और भुजका मध्य और वृत्तका मध्य इन्होंमें मिली हुई रज्जु पूर्व दिशाकी और पश्चिम दिशाकी होती है ॥ २२ ॥

अथ उदाहरण ।

सूर्य १।५।४२।३७ और इसकी गति ५७।३६ इष्टकाल १०।३० है फिर सूर्यको १०।३० का चालन दिया तो स्पष्ट सूर्य १।५।५२।४१ हुआ इसपरसे पहले कही हुई रीतिसे अंश आदि उत्तर क्रांति १९।६।४० मिली फिर इसको अक्षकर्ण १३।१९ से गुणा दिया तो २५४।२९।४६ हुए फिर इसको छायाकर्ण अंगुलादि १४।२५ से गुणा दिया तो ३६६८।५९।८ हुए फिर इन्होंमें ३५० का भाग देनेसे अंगुलादि मध्यम भुज १०।२८ मिला यहां सायन सूर्य उत्तर गोलमें स्थित होनेसे उत्तर दिशाका मध्यम भुज हुआ फिर दक्षिण दिशाकी पलभा ५।४५ को दो गुणा किया तो ११।३० अंगुलादि हुए फिर भुजको और पलभाको भिन्न २ दिशाओंमें स्थित होनेसे दोनोंका अंतर किया तो स्पष्ट दक्षिण भुज अंगुलादि १।२ मिला ॥

अब अन्य प्रकारसे दिशाओंके जाननेके लिये दिगंश अर्थात् दिशाओंके अंशोंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

द्युमानखगुणान्तरं शिवगुणं दिनेऽल्पाधिके
ह्यपागुदगथानुदग्भवति यन्त्रभागापमः ।
वसुघ्युभयसंस्कृतिर्नवतियन्त्रभागान्तरो-
द्भवापमहृतास्ततो भुजलवा दिगंशाः स्मृताः ॥२३॥

अन्वयः-शिवगुणं द्युमानखगुणान्तरं दिने अल्पाधिके अपाक् उदक् भवति अथ हि यन्त्रभागापमः (सदा) अनुदक् (भवति) । उभयसं-

स्कृतिः वसुघ्नी ततः नवतियन्त्रभागान्तरोद्भवापमहता (ततः ये) भुजलवाः (ते) दिगशाः स्मृताः ॥ २३ ॥

भाषा—दिनमान और ३० इन्होंका अंतर करे फिर उस अंतरको ११ से गुणा करे और जो ३० घडीसे दिनमान अल्प हो तो दक्षिण दिशाका फल होता है और ३० से अधिक हो तो उत्तर दिशाका फल होता है फिर यंत्र जो नतांश अर्थात् यंत्रके अंशोंपरसे क्रांति बनावे वह क्रांति सदा दक्षिण दिशाकी होती है फिर ग्यारहसे गुणे हुए और क्रांति इन्होंका संस्कार अर्थात् एक दिशामें हो तो योग और भिन्न दिशामें हो तो अंतर करे फिर उस अंतरको ८ से गुणा करे फिर इसमें ९० और यंत्रके अंश इन्होंके अंतरपरसे लघुखण्डोंकी रीतिसे क्रांति बनावे फिर इस क्रांतिका आठसे गुणे हुए अंतरमें भाग देनेसे जो फल मिले इसपरसे पहली रीतिसे भुजके अंश बनावे वही दिगंश अर्थात् दिशा जाननेके लिये अंश होते हैं ॥ २३ ॥

अथ उदाहरण।

दिनमान ३३।६ और ३० इन्होंके अंतर ३।६ को ११ से गुणा किया तो ३४।६ हुए और यहां दिनमान ३० से अधिक है इसलिये उत्तर दिशाका फल है फिर उत्तर दिशाके यंत्रके अंश ५५। ४५।४८ इन्होंपरसे लघुखण्डोंकी रीतिसे क्रांति बनाई तो दक्षिण दिशाकी क्रांति १९।५२।१३ मिली फिर इसको और ग्यारहसे गुणे हुए अंतर ३४।६ को भिन्न २ दिशाओंमें स्थित होनेसे दोनोंका अंतर किया तो १४।१३।४७ हुए फिर इन्होंको आठसे गुणा दिया तो ११३।५०।१६ हुए फिर इन्होंमें ९० और यंत्रके अंश ५५। ४५।४८ इन्होंके अंतर ३४।१४।१२ परसे लघुखण्डोंकी रीतिसे बनाई हुई क्रांति १३।२४।४४ का भाग दिया तो फल ८।२९।१५ मिला फिर इसपरसे कही हुई रीतिसे भुजके अंश बनाये तो २१। १३ हुए यही दिशाओंके अंश हैं ॥

अब दिशाओंके अंशोंपरसे दिक्साधनके प्रकारको कहते हैं।

समभुवि निहिते तुरीययन्त्रे स्पृशति यथा च दिगंशकाग्रकेंद्रे। अवलम्बविभोत्थकेन्द्रसंस्थेषीकाभाथ दिशोऽत्र यन्त्रगाः स्युः ॥ २४ ॥

अन्वयः-अथ समभुवि तुरीययन्त्रे निहिते (सति) दिगंशकाग्रकेन्द्रे अवलम्बविभोत्थकेन्द्रसंस्थेषीकाभा यथा च स्पृशति (तथा यन्त्रे साधिते) अत्र यन्त्रगाः दिशः स्युः ॥ २४ ॥

भाषा-जलसे भूमिको समान करे फिर उस भूमिमें तुरीय यंत्र अर्थात् वृत्तके चौथे हिस्सेका जो यंत्र उसको स्थापन करे फिर पहले कहे हुए दिगंशोंको क्षितिजसे गणना करे फिर उन्हींके अगले भागको केन्द्र माने फिर उस केंद्रपरसे अवलंब अर्थात् गुनीया डाले फिर उस अवलंबकी छाया अथवा यंत्रके केन्द्रमें स्थित जो इषी अर्थात् एक कीलविशेष उसकी छाया जैसे स्पर्श करे वैसे यंत्रको रक्खे ऐसे यंत्रको रखनेसे पूर्व पश्चिम रेखा होती है और इन्होंपरसे मच्छका आकार बनानेसे दक्षिण उत्तर दिशाओंका ज्ञान होता है ॥ २४ ॥

अब राजाओंकी सभामें अपनी कुशलता दिखानेके लिये और नलिका बनानेके लिये भुजकोटि इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

क्रान्तिः स्फुटाभिमतकर्णगुणाक्षकर्ण-
निघ्नी खखाद्रिहृदपक्रमदिग्भुजः स्यात्।
संस्कारितो यमदिशाक्षभया स्फुटोऽसौ
तद्वर्गभाकृतिवियोगपदं च कोटिः ॥ २५ ॥

अन्वयः-स्फुटा क्रान्तिः अभिमतकर्णगुणाक्षकर्णनिघ्नी (ततः) खखाद्रि-

हृत् (कार्य्या, तदा) अपक्रमदिग्भुजः स्यात् । असौ यमदिशा अक्षभया संस्कारितः स्फुटः (भवति) । तद्वर्गभाकृतिवियोगपदं च कोटिः (स्यात्) ॥ २५ ॥

भाषा–जिस ग्रहका नलिका बनाना होय उस ग्रहका वक्ष्यमाण अर्थात् आगे कही हुई रीतिसे दत्कर्म अर्थात् जिसका संस्कार करनेसे ग्रह आकाशमें प्रत्यक्ष दीख पडता हो उसको बनावे फिर उसका उस ग्रहमें संस्कार करे फिर उस ग्रहकी क्रांतिमें आगे शर बनानेकी रीति कहेंगे उस रीतिसे शर बनाके शरका संस्कार करनेसे स्पष्ट क्रांति होती है फिर आगे जो ग्रहच्छायाधिकार कहेंगे उसमें कही हुई रीतिसे ग्रहका दिन गतकाल बनावे फिर पलभामें २४ का भाग देवे इस रीतिसे स्पष्ट चरपरसे दिनमान साधन करे फिर ग्रहकी क्रांतिपरसे क्रांति और अक्षांशका संस्कार करे इस कही हुई रीतिसे उन्नत बनावे फिर उन्नतपरसे इष्ट उन्नतको ९० से गुणा करे इस रीतिसे इष्ट कर्ण साधन करे फिर इस इष्ट कर्णको स्पष्ट क्रांतिसे गुणा करे फिर इसमें ७०० का भाग देनेसे स्पष्ट क्रांतिकी दिशाका मध्यम भुज होता है इसका दक्षिण दिशाकी पलभामें संस्कार करनेसे स्पष्ट भुज होता है फिर इसका वर्ग और बारहका वर्ग इन्होंके अंतरका मूल लेनेसे इष्ट छाया होती है फिर इष्ट छायाका वर्ग और भुजवर्ग इन्होंके अंतरका मूल लेनेसे कोटि होती है ॥ २५ ॥

अथ उदाहरण।

संवत् १६६९ शाके १५३४ में वैशाख शुदि पौर्णिमा १५ सोमवारके दिन सूर्यके उदयसे गतघडी ५७ में मंगलका नलिका बंधन करते हैं फिर उस दिन प्रातःकालका मध्यम सूर्य १।४।१३।४२ यह है इसकी गति ५९।८ है मध्यम मंगल ९।२९।५५।१३ इसकी गति ३१।२६ इष्ट घडी ५७ के समान सूर्यको चालन दिया तो सूर्य १।५।९।५२ हुआ फिर इष्ट घटी ५७ के तुल्य मंगलको चालन दिया तो मंगल १०।०।२५।४ हुआ ॥

42011
JJ d 51

अब स्पष्टीकरण कहते हैं।

सूर्यके मंदकेन्द्र १।१२।५०।८ परसे मंद फल धन १।२८।५५ मिला इसका सूर्यमें संस्कार किया तो मंद स्पष्ट सूर्य १।६।३८।४७ हुआ इसमें ऋण चर ९५ का संस्कार किया अर्थात् मंद स्पष्ट सूर्यमें घटाया तो स्पष्ट सूर्य १।६।३७।१२ हुआ फिर मंगलके शीघ्र केन्द्र ३।४।४४।४८ इसपरसे धन शीघ्र फलका आधा १६। ५२।५८ मिला इसका चालित मंगलमें संस्कार किया तो दल स्पष्ट मंगल १०।१७।१८।२ हुआ फिर मंगलके मन्द केन्द्र ५।१२।४१। ५८ परसे धन मंद फल ३।१९।४५ मिला फिर इसको चालित मंगल १०।००।२५।०४ में संस्कार किया अर्थात् धन होनेसे जोडा तो मंद फल संस्कृत मंगल १०।३।४४।४९ हुआ फिर द्वितीय शीघ्र केन्द्र ३।१।२५।३ परसे शीघ्र फल धन ३२।५२।४० मिला इसका मन्द फल संस्कृत भौम १०।३।४४।४९ में संस्कार करनेसे स्पष्ट मंगल ११।६।३७।२९ मिला अब दृक्कर्म साधन करनेका प्रकार उदयास्ताधिकारमें १३ वें श्लोक "कुहियाब्धियुगाश्विन" इत्यादिके अनुसार एक दो तीन चार चार दो ऐसे ये छः खण्डे होते हैं और इस रीतिसे शीघ्र कर्ण ११।४८।४० मिला और उदयास्ताधिकारके १४ वें श्लोक "मन्दस्पष्टखगात्" इस श्लोककी रीतिसे मन्द स्पष्ट ग्रहमें अपने पातको घटा देवे और कही हुई इस रीतिसे दक्षिण दिशाकी क्रांति २३।४४।५९ हुई और अंगुल आदि दक्षिण दिशाका शर ३४।४१।३ मिला फिर उदयास्ताधिकारके १६ वें श्लोक "प्राक्त्रिभेणेत्यादि" श्लोकसे दिशाके उदयास्त बनानेमें ग्रह विषैं तीन राशि घटावे फिर इस रीतिसे स्पष्ट मंगल ११।०६।३७।२९ में तीन राशि घटा दीं तो मंगल ८।६। ३७।२९ हुआ इसपरसे दक्षिण दिशाकी क्रांति २३।४७।२९ मिली इन्होंमें दक्षिण दिशाके अक्षांश २५।२६।४२ को एक दिशाके होनेसे युत किया तो दक्षिण दिशाके नतांश ४९।१४।११ हुए

फिर उदयास्ताधिकारमें " षट्शैलेत्यादि " १७ वें श्लोकके अनुसार कही हुई रीतिसे दक्कर्म कला आदि धन ११८।४४ मिलें इन्होंका मंगलमें संस्कार किया तो संस्कृत मंगल ११।८।३६।१३ हुआ इसपरसे दक्षिण क्रांति १।१७।३० मिली फिर इसमें शरका संस्कार किया तो दक्षिण दिशाकी स्पष्ट क्रांति ३।१।३३ मिली इष्टकी घडी ५७ दिनमान ३३।१० सूर्यका भोग्य काल ५९ लग्न ०।१५।२३।२१ और भुक्त लग्न ३० है और दक्कर्म संस्कार किया हुआ मंगलका भोग्य काल १८ है पूर्व दक्कर्मसे संस्कार किया हुआ ग्रह इष्ट कालके लग्नसे अल्प हो तो उदयास्ताधिकारमें कही हुई रीतिसे मंगलके दिनका गत काल ४।२९ मिला फिर दक्कर्मसे संकार किये हुए मंगलपरसे दक्षिण दिशाका चर ६ हुआ फिर अंगुल आदि शरको पलभासे गुणा करे फिर उसमें २४ का भाग देवे उदयास्ताधिकारमें कही हुई इस रीतिसे दक्षिण दिशाका फल ८ मिला फिर इसका चरमें संस्कार किया तो स्पष्ट चर १४ पल मिला इसको १५ में घटाकर दुगुना किया तो मंगलका दिनमान २९।३२ हुआ फिर स्पष्ट क्रांतिमें अक्षांशकी कही हुई रीतिसे संस्कार किया तो नतांश २८।२८।१५ और उन्नतांश ६१।३१।४५ हुए इस परसे परासंख्य २१।१२।१४ हुआ फिर कही हुई रीतिसे उन्नत ४।२९ मिला फिर इसपरसे इष्ट उन्नतको नव्वेसे गुणा करे इस कही हुई रीतिसे इष्ट कर्ण साधन करते हैं कि उन्नत ४।२९ को ९० से गुणा किया तो ४०३।३० हुए फिर इन्होंमें दिनार्द्ध १४।४६ का भाग देनेसे अंश आदि फल २७।१९।३७ मिला इसपरसे क्रांति १०।४३।३६ हुई इसको परास्य २१।१२।१४ से गुणा दिया तो २२७।५।३७ हुए फिर इसका ६९१२ में भाग दिया तो फल इष्ट कर्ण ३०।२६ मिला इसको स्पष्ट क्रांति ३।१।३३ से गुणा दिया तो ९२।५।१० हुए फिर इन्होंको अक्ष कर्ण १३।१९ से गुणा दिया तो १२२६।१६।४८ हुए इन्होंमें सात-

सोंका भाग देनेसे मध्यम भुज १।४५ मिला क्रांति दक्षिण दिशाकी है इसलिये यह भुजभी दक्षिण दिशाका है फिर इस भुजमें दक्षिण दिशाकी पलभा ५।४५ का संस्कार किया तो स्पष्ट भुज ७।३० हुआ फिर इष्ट कर्णसे इष्ट छाया साधनेके लिये इष्ट कर्ण ३७।२६ का वर्ग ९२।६।११ और १२ का वर्ग १४४ इन्होंके अंतर कर ७८२।११ इसका वर्गमूल लिया तो इष्ट छाया २७।२५ हुई फिर इस छायाका वर्ग किया तो ७८२।८ हुए और भुज ७।३० का वर्ग किया तो ५६।१५ इन्होंके अंतर ७२५।५३ का मूल लेनेसे अंगुलादि कोटि २६।५६।० मिली ॥

अब नलिका बांधनेके प्रकारको कहते हैं।

जलसे समान भूमि करके दिक्साधन अर्थात् दिशाओंका ज्ञान करे फिर उस भूमिमें इष्टकालकी छायाके व्यासार्द्ध अर्थात् व्यासके आधे भागसे वृत्त बनावे फिर उस वृत्तमें दिशाओंके चिन्ह बनावे फिर वृत्तके मध्यसे पश्चिम कपालमें ग्रह हो तो पश्चिम दिशाके सन्मुख कोटिको रक्खे और पूर्व अर्थात् पहले कपालमें ग्रह स्थित हो तो पूर्व दिशाके सन्मुख कोटिको रक्खे फिर कोटिके अगले भागसे अपनी दिशा अर्थात् अपनी तर्फ जीवाकी नाईं भुजका न्यास करे फिर भुज और कोटि इन्होंके मध्यमें तिरछी छायाको रक्खे अर्थात् केंद्रसे लेके भुजके अंतके अगुपर्यंत छायाको रक्खे फिर उसीको कर्ण माने ऐसे करनेसे एक त्रिभुज क्षेत्र उत्पन्न होता है फिर छायाका अगला भाग और भुजाका अगला भाग इन्होंके संयोगमें एक बारह अंगुलका शंकु रक्खे फिर उस वृत्तके मध्यमें एक कीलको गाड देवे फिर उस कीलकसे बंधे हुए सूत्रको शंकुके मस्तकपर रक्खे फिर उस सूत्रमें एक नल अर्थात् थोथा बांस रक्खे अथवा छिद्रवाली लोहे आदिकी शलाका लगा देवे फिर उस नलके आधारभूत दो बांस अथवा शलाका लगा देवे फिर उस नलमें जिस कालके भुज आदि बनाये हों उन घडियोंमें मूलके मध्यमें

दृष्टिको लगाके आकाशमें ग्रहको देखे ऐसे करनेसे नलमें ग्रह नहीं देख पडें तो वह ग्रह नहीं घटता है और वहां अंतरभी देखे इस युक्तिसे आचार्यने सब ग्रहोंकी नलिका बनाके और अंतरको जानकर ग्रहोंका साधन किया है ॥

अथ जलमें ग्रह देखनेके लिये नलिकाका निवेश कहते हैं।

ज्ञात्वाशाः परखेचरे परमुखीं प्राक्खेचरे प्राङ्मुखीं विन्दोः कोटिमतो भुजं स्वदिशि तन्मध्ये प्रभां विन्यसेत् । बिन्दोर्भाग्रगशंकुमस्तकगते सूत्रे नले खे खगं के विन्दुस्थनराग्रभाग्रगते सूत्रे नले लोकयेत् ॥ २६ ॥

अन्वयः—आशाः ज्ञात्वा बिन्दोः परखेचरे परमुखीं प्राक्खेचरे प्राङ्मुखीं कोटिं विन्यसेत् । अतः स्वदिशि भुजं (विन्यसेत्) । तन्मध्ये प्रभां (विन्यसेत्) । बिन्दोः भाग्रगशंकुमस्तकगते सूत्रे नले खे खगं लोकयेत् । बिन्दुस्थनराग्रभाग्रगते सूत्रे नले के (खगं लोकयेत्) ॥२६॥

भाषा—यहांभी शंकुको केंद्रमें रक्खे फिर शंकुके अग्रभागसे छायाके अग्रभागपर्यंत नीचेका सूत्र बांध देवे फिर उस सूत्रमें नल रक्खे फिर छायाके अगले भागमें जलसे भरा हुआ पात्र रख देवे फिर वहां जलके मध्यमें नीचेको दृष्टि करके जलमें ग्रहको देखे ये सब विचार कर सज्जन राजाके प्रसन्नताके लिये ज्योतिषी दिखा देवे ॥ २६ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत—घेरीग्रामनिवासि—गौड़वंशावतंस—विविधशास्त्रपरमपण्डित—श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां चतुर्थस्त्रिप्रश्नाधिकारः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः।

अब चन्द्रग्रहणके अधिकारको कहते हैं।

गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः खरसाप्तांशवियुग्युतो ग्रहः स्यात्। तत्कालभवस्तथा घटीघ्याः खरसैर्लब्धकलोनसंयुतः स्यात् ॥ १ ॥

अन्वयः-गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः खरसाप्तांशवियुक् युतः ग्रहः (कार्यः सः) तत्कालभवः (ग्रहः) स्यात्। तथा घटीघ्याः खरसैः लब्धकलोनसंयुतः (ग्रहः कार्य्यः सः तत्कालभवः ग्रहः) स्यात् ॥ १ ॥

भाषा-जिस दिन ग्रहोंका साधन करे उस दिनसे गत अर्थात् जितने दिन बीत गये हों और गम्य अर्थात् जितने दिन अगाडी हों उन्होंसे ग्रहकी गतिको गुणा करे फिर उसमें साठका भाग देवे जो फल मिले वह अंश आदि फल जानो उसको गत दिन हों तो ग्रहमें घटा दे और गम्य दिन हों तौ ग्रहमें जोड दे ऐसा करनेसे वह ग्रह उस दिनका होता है कि जिस दिनका किया है और ऐसे-ही गत अर्थात् बीती हुई और एष्य अर्थात् अगाडी बीतनेवाली जो घडी हैं इन्होंसे ग्रहकी गतिको गुणा करे फिर इसमें ६० का भाग देनेसे जो कलादिकी घडी आदि मिलें उन्होंको गत घडी हों तो ग्रहमें घटा दे और एष्य घडी हों तो जोड दे ऐसा करनेसे उस कालका ग्रह होता है इसी लब्धिको चालन कहते हैं और यहां इतना विशेष है जो चंद्रमा और सूर्यके ग्रहणमें जितनी घडी पंचांगमें पौर्णिमा और अमावस होय उतनी घडियोंसे मध्यम सूर्य चन्द्र चंद्रोच्च और राहु इन्होंका चालन करे फिर इन्होंका स्पष्टीकरण करे। फिर उन सूर्य चंद्रमापरसे तिथिकी कला आदि बनावे और जो घटी आवें उन्हें पंचांगकी घटियोंमें जोडे अथवा घटावे अर्थात् जो गत तिथि चौदह अथवा २९

आवें तो वर्तमान पौर्णिमासीकी अथवा अमावास्याकी जितनी पंचांगमें एष्य घडी हों उन्होंको पर्वकी घडियोंमें युत करे। और जो चंद्रग्रहणके संभवमें पंदरह आवें और सूर्यग्रहणमें तीस गत तिथि आवें तो वर्तमान प्रतिपदा तिथिसे गत घटी साधकर उन घडियोंको पंचांगकी घडियोंमें घटा देवे ऐसा करनेसे वह पर्वांत काल होता है। और इस प्रकार जो गत गम्य घडी आवें उन्होंसे ग्रहोंको चालन देनेसे पर्वान्तकालीन अर्थात् ग्रहणके अंतकालके ग्रह होते हैं॥ १॥

अथ उदाहरण।

संवत् १६७७ शके १५४२ में मार्गशिर शुक्ला पौर्णिमा बुधवार घडी ३८ पल ११ रोहिणी नक्षत्र घटी ९ पल ८ साध्य-योग घडी १५ पल ३६ उस दिन चंद्रग्रहण साधन कहते हैं। अहर्गणकी कही हुई रीतिसे अहर्गण ६३६ और चक्र ९ मिला इसपरसे कही हुई रीतिसे मध्यम ग्रह साधन किये तो प्रातर्म-ध्यम सूर्य ८।०।८।५९ और चंद्रमा १।२५।१९।५७ और चंद्रमाका उच्च १०।३।३७।५ और राहु ७।२८।२५।२७ मिले इन्होंको कही हुई रीतिसे पौर्णिमाकी घडी आदि ३८।११ के तुल्य चालन दिया तो सूर्य ८।०।४६।३६ चंद्रमा २।३।४३।४ उच्च १०।३।४१।२० और राहु ७।२८।२३।२६ हुए॥

अब इन्होंको स्पष्ट करते हैं।

सूर्यके मंद केन्द्र ६।१७।१३।२४ परसे मंद फल ऋण ०।३९।४ मिला इसका सूर्यमें संस्कार किया तो मंद स्पष्ट सूर्य ८।०।७।३२ हुआ फिर इसमें चर धन ११४ को युत किया तो स्पष्ट सूर्य ८।०।८।२६ हुआ और अयनांशा १८।१८ मिला और कही हुई रीतिसे धन गति फल २।३ मिला इसको मध्यम सूर्यकी गतिमें युत किया तो स्पष्ट गति ६१।११ हुई फिर चंद्रमामें तीन फलोंका सं-स्कार किया तो चंद्रमा २।३।५६।१८ हुआ फिर चंद्रमाके मंद केन्द्र

७।२८।४५।२ परसे ऋण मंद फल ४।२०।१२ मिला इसको चंद्रमामें घटा दिया तो स्पष्ट चंद्रमा १।२९।३६।६ हुआ फिर कही हुई रीतिसे धन गति फल ३३।१५ मिला इसको मध्यम गतिमें युत किया तो चंद्रमाकी स्पष्ट गति ८२३।५० हुई फिर इन सूर्य चंद्रमापरसे गत तिथि १४ और एष्य घडी २।३७ मिली इन्होंको पंचांगकी घडी ३८।११ में युत किया तो ग्रहणका अंतकाल ४०।४८ हुआ फिर एष्य घडियों २।३७ का ग्रहोंको चालन दिया तो ग्रहणके अंतमें उस कालमें सूर्य ८।०।१२।६ चंद्रमा २।०।१२।१ और राहु ७।२८।२३।१८ ये ग्रह हुए ऐसे करनेसे पौर्णिमाअमावसमें सूर्य चंद्रमाके अंश कला समान होते हैं ॥

अथ ग्रहणका संभव अर्थात् ग्रहण होगा कि नहीं इसका ज्ञान और शर बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

एवं पर्वान्ते विराह्नर्कबाह्वोरिन्द्रालपांशाः सम्भवश्चेद्ग्रहस्य । तेंशा निघ्नाः शङ्करैः शैलभक्ता व्यग्वर्काशः स्यात्पृषत्कोऽगुलादिः ॥ २ ॥

अन्वयः-एवं पर्वान्ते विराह्नर्कबाह्वोः चेत् इन्द्रालपांशाः (तदा) ग्रहस्य सम्भवः । ते अंशाः शङ्करैः निघ्नाः शैलभक्ताः (कार्य्याः तदा) अंगुलादिः पृषत्कः व्यग्वर्काशः स्यात् ॥ २ ॥

भाषा-पर्वान्त कालके स्पष्ट सूर्यमें राहुको घटा दे जो शेष रहे वह विराव्हर्क कहाता है फिर उस विराव्हर्कके भुज करे भुजके अंश बनावे और जो वह अंश चौदहसे अल्प हो तो ग्रहणका संभव अर्थात् ग्रहण होगा और चौदहसे अधिक हो तो ग्रहण नहीं होगा । फिर उन अंशादिको ग्यारहसे गुणा करे फिर जो गुणनफल हो उसमें ७ का भाग देनेसे जो फल मिले वह अंगुल आदि शर होता है और विराव्हर्क जिस दिशाका हो उसी दिशाका शर होता है अर्थात् विराव्हर्क मेषादि हो तो उत्तर और तुलादि हो तो दक्षिण ॥ २ ॥

अथ उदाहरण।

सूर्य ८।०।१२।६ में राहु ७।२८।२३।१८ को घटा दिया तो ०।१।४८।४८ हुए यह विराव्हर्क हुआ इसके भुजके अंश १।४८।४८ हुए ये चौदह अंशसे कम हैं इसलिये ग्रहण होगा ऐसा जाने। फिर इन भुजके अंश आदि १।४८।४८ को ग्यारहसे गुणा दिया तो १९।५६।४८ हुए इन्होंमें सातका भाग देनेसे अंगुल आदि शर २।५० मिला विराव्हर्क उत्तर गोलमें स्थित है इसलिये उत्तर दिशाका शर हुआ॥

अथ सूर्यबिंब चंद्रबिंब और भूभाबिंब इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

व्यसुशरगतीष्वंशो दिग्युक् भवेत् वपुरुष्णगो-
रथ सितरुचो बिम्बं भुक्तिर्युगाचलभाजिता।
तदपि हिमगोर्बिम्बं त्रिघ्नं निजेशलवान्वितं
विवसु भवति क्ष्माभाबिम्बं किलांगुलपूर्वकम् ॥३॥

अन्वयः—व्यसुशरगतीष्वंशः दिग् युक् उष्णगोः वपुः भवेत्। अथ सितरुचः भुक्तिः युगाचलभाजिता (सती चन्द्रस्य) बिम्बं (स्यात्)। तदपि हिमगोः बिम्बं त्रिघ्नं निजेशलवान्वितं विवसु क्ष्माभाबिम्बं अंगुलपूर्वकं भवति किल॥ ३॥

भाषा—सूर्यकी गतिमें पचपन घटा देवे फिर उसके पांचवें हिस्सेमें दश जोडनेसे अंगुल आदि सूर्यका बिंब होता है। फिर चन्द्रमाकी गतिमें चौहत्तरका भाग देनेसे जो लब्ध हो वह अंगुलादि चन्द्रबिंब होता है और चंद्रमाके बिंबको तीन गुणा करे फिर उसमें ग्यारहका भाग देनेसे जो फल मिले उसको त्रिगुणित चंद्रमाके बिंबमें युत करे फिर उसमेंसे ८ घटावे तो अंगुलादि भूभा अर्थात् भूमिकी छाया होती है॥ ३॥

अथ उदाहरण।

सूर्यकी गति ६१।११ मेंसे ५५ घटाये तो ६।११ रहे इसमें ५

का भाग दिया तो १।१४ आये इनमें १० जोडे तो ११।१४ सूर्य-का बिंब हुआ। चन्द्र गति ८२३।५० इसमें ७४ का भाग दिया तो चन्द्रबिंब ११।७ हुआ। चन्द्रबिंब है ११।०७ इसको ३ गुणा किया ३३।२१ हुए इनमें ११ का भाग दिया तो ३।०२ मिले इनको ३३।२१ में जोडा तो ३६।२३ इनमेंसे ८ घटा दिया तो २८।२३ भूभाबिंब हुआ॥

अब मानैक्य खण्ड और ग्रास इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा छादकच्छाद्यमा-नैक्यखण्डं कुरु। तच्छरोनं भवेच्छन्नमेतद्यदा ग्राह्यहीनावशिष्टं तु खच्छन्नकम्॥ ४॥

अन्वयः-इन्दुः अर्कं छादयति भूमिभा विधुं (छादयति। हे ग-णक!) छादकच्छाद्यमानैक्यखण्डं कुरु। तत् शरोनं छन्नं भवेत्। यदा तु एतत् ग्राह्यहीनावशिष्टं (तदा) खच्छन्नकं (भवेत्)॥ ४॥

भाषा-सूर्यके ग्रहणमें सूर्यको चन्द्रमा आच्छादित अर्थात् ढक लेता है अत एव यहां चंद्रमा छादक और सूर्य छाद्य हुआ और चंद्रमाके ग्रहणमें भूमिकी छाया चंद्रमाको आच्छादित करती है तो यहां भूछाया छादक और चंद्र छाद्य हुआ लोकमें राहुका किया हुआ ग्रहण कहते हैं इसलिये जो भूमिकी छाया वही राहु है छादक और छाद्य इन दोनोंके बिंबोंका योग करके सूर्यग्रहणमें सूर्यचन्द्रके बिंबका और चन्द्रग्रहणमें चंद्रमा और भूमिके बिंबका योगकरके आधा करनेसे मानैक्य खण्ड होता है फिर इस मानैक्य खण्डमें पहले कहे हुए अंगुल आदि शरको घटानेसे जो शेष रहे वह अंगुल आदि ग्रास होता है और जो मानैक्य खण्डमें शर नहीं घटे तो ग्रहण नहीं होगा ऐसा जाने और जो ग्रास अधिक हो और छाद्य कमती हो तो ग्रासमें छाद्य

बिंबको घटानेसे जो शेष रहे उतना खग्रास अर्थात् आकाश ग्रसा जावेगा ऐसा जाने ॥ ४ ॥

अथ उदाहरण ।

यहां चंद्रमाके ग्रहणमें छादक अर्थात् भूमिकी छाया २८।१० है और छाद्य अर्थात् चन्द्रमाका बिंब ११।७ है इन्होंका योग किया तो ३९।१७ हुए इन्होंका आधा करनेसे मानैक्य खण्ड १९।३८ हुआ इसमें शर २।५ को घटा दिया तो अंगुलादि ग्रास १६।४८ हुआ अब यहां ग्रास ज्यादा है और छाद्य चन्द्रबिंब कमती है तो ग्रास १६।४८ चंद्रमाके बिंब ११।७ को घटा दिया तो खग्रास ५।४१ मिला अर्थात् सम्पूर्ण बिंब ग्रसित होगा और ५ अंगुल ४१ प्रत्यंगुल आकाश ग्रस जायगा ॥

अब ग्रहणकी तथा खग्रास मर्दकी स्थिति बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

मानैक्यखण्डमिषुणा सहितं दशघ्नं छन्नाहतं पदमतः स्वरसांशहीनम् । ग्लौबिम्बहृत्स्थितिरियं घटिकादिका स्यान्मर्द तथा तनुदलान्तरखग्रहाभ्याम् ॥ ५ ॥

अन्वयः-इषुणा सहितं मानैक्यखण्डं दशघ्नं छन्नाहतं (कार्य्यं) अतः पदं स्वरसांशहीनं ग्लौबिम्बहृत् (कार्य्यं) इयं घटिकादिका स्थितिः स्यात् । तथा तनुदलान्तरखग्रहाभ्यां मर्द (स्यात्) ॥ ५ ॥

भाषा-मानैक्य खण्डमें शरको युत करके दशसे गुणा देकर जो फल हो उसको फिर ग्राससे गुणा करे फिर इसका वर्गमूल निकाले मूलमें छःका भाग देनेसे जो फल मिले उसको वर्गमूलमें घटा देवे फिर इसमें चंद्रमाके बिंबका भाग देनेसे घडी आदि मध्य स्थिति होती है और सूर्यके ग्रहणमें सूर्यके बिंबका आधा और चंद्रमाके बिंबका आधा इन्होंका अंतर करे चंद्रमाके ग्रहणमें चंद्रमाका आधा और भूमिकी छायाके बिंबका आधा इन्होंका अंतर करे फिर इसमें शर जोडके इसको खग्राससे गुणा

करे फिर इसके वर्गमूलमें छःका भाग देनेसे जो फल मिले उसको उसे वर्गमूलमें हीन करे फिर उसमें चंद्रमाके बिंबका भाग देनेसे घडी आदि मर्द होता है ॥ ५ ॥

अथ उदाहरण।

मानेक्य खण्ड १९।३८ में शर २।५० युत किया तो २२।२८ हुए इन्होंको दशसे गुणा दिया तो २२४।४० हुए फिर इन्होंको ग्रास १६।४८ से गुणा दिया तो ३७७४।२४ हुए फिर इन्होंको दो वार साठसे गुणा किया तो १३५८७८४०० हुए इसका वर्ग-मूल निकाला तो मूल ६१।२३ हुए इनमें छःका भाग देनेसे १०। १४ मिले इन्होंको मूल ६१।२३ में घटा दिया तो ५१।१२ रहे फिर इन्होंमें चंद्रमाके बिंब ११।७ का भाग दिया तो घटी आदि मध्यम स्थिति ४।३६ मिलीं और चंद्रमाका बिंब ११।७ भूमिकी छायाका बिंब २८।१० चंद्रके बिंबका आधा ५।३३ भूमिकी छायाके बिंबका आधा १४।५ इन्होंका अंतर किया तो ८।३२ रहे इन्होंमें शर २।५० युत किया तौ ११।२२ हुए फिर इन्होंको दशसे गुणा दिया तो ११३।४० हुए फिर इसको खग्रास ५।४१ से गुणा दिया तो ६४६।० हुए इन्होंका वर्गमूल लिया तो २५।२४ हुए इनमें छःका भाग देनेसे फल ४।१४ मिला इसको मूल २५। २४ में ऊन किया तो २१।१० रहे इसमें चंद्रमाके बिंब ११।७ का भाग दिया तो घडी आदि मर्द १।५४।४ मिला ॥

अब स्पर्श मोक्ष इन्होंकी स्थिति और मर्द इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

युग्माहतैर्व्यगुभुजांशसमैः पलैः सा द्विष्ठा स्थितिर्विं-
रहिता सहितार्कषड्भात्। ऊने व्यगावितरथाभ्यधि-
के स्थिती स्तः स्पर्शान्तिमे क्रमगते च तथैव मर्दौ॥ ६ ॥

अन्वयः-सा द्विष्ठा स्थितिः व्यगौ अर्कषड्भात् ऊने (सति) युग्मा-

हतैः व्यगुभुजांशसमैः पलैः विरहिता (च) सहिता (कार्य्या)। अभ्यधिके (सति) इतरथा (विरहिता सहिता कार्य्या । तदा) क्रमगते स्पर्शान्तिमे स्थिती स्तः। तथा एव मर्दे च (साध्ये) ॥ ६ ॥

भाषा—सूर्यमें राहुको घटावे फिर उसके भुजके अंशोंको दोसे गुणा करे फिर पहले कही हुई स्थितिको दो जगह रक्खे और जो सूर्यमें घटे हुए राहुके भुजके अंश बारह राशिसे अथवा छः राशिसे कम हों तो युत करे और भुजके अंश बारह राशिसे अथवा छः राशिसे अधिक हों तो ऊन करे ऐसा करनेसे क्रमसे स्पर्श मोक्ष स्थिति होती है ऐसेही स्थितिकी नाईं मर्द साधन करे यहां ग्यारह राशि सोलह अंशसे शून्य राशि पर्यंत बारह राशिसे ऊन होता है एक विकलासे चौदह अंश पर्यंत बारह राशिसे अधिक जाने पांच राशि सोलह अंशसे लेके छः राशि ६।०।० पर्यंत छः राशिसे ऊन जाने और छः राशिसे लेके चौदह राशि पर्यंत छः राशिसे अधिक जाने ॥ ६ ॥

अथ उदाहरण।

पहले कही हुई घडी आदि स्थिति ४।३६ है फिर सूर्यमें राहुको घटाके उसके भुजके अंश किये तो १।४८।४८ हुए इन्होंको दोसे गुणा दिया तो ३ हुए फिर सूर्यमें घटे हुए राहुके भुजके अंश बारह राशिसे अधिक हैं इसलिये इसको स्पर्श स्थिति ४।३९ में घटा दिया तो मोक्ष स्थिति ४।३३ हुई और जोडा तो स्पर्श स्थिति इसी फल ३ को मर्द १।५४ में युत किया तो स्पर्श मर्द १।५७ हुआ फिर इसको मर्द १।५४ में घटा दिया तो मोक्ष मर्द १।५१ हुआ ॥

अब ग्रहणका मध्यकाल स्पर्शकाल मोक्षकाल संमीलनकाल और उन्मीलनकाल इन्होंके बनानेकी रीतिको कहते हैं।

तिथिविरतिरयं ग्रहस्य मध्यः स च रहितः सहितो

निजस्थितिभ्याम्। ग्रहणमुखविरामयोस्तु काला-
विति पिहितापिहिते स्वमर्दकाभ्याम् ॥ ७ ॥

अन्वयः-तिथिविरतिः अयं ग्रहस्य मध्यः (भवति) । स च निज-स्थितिभ्यां (एकत्र) रहितः (अन्यत्र) सहितः तु ग्रहणमुखविरामयोः कालौ (स्तः) । इति स्वमर्दकाभ्यां पिहितापिहिते (स्तः) ॥ ७ ॥

भाषा-स्पष्ट करनेसे जो घडी आदि तिथि मिले अर्थात् चन्द्र-ग्रहणमें पूर्णिमा मिलेगी उसके अंतका काल ग्रहणका मध्यकाल होता है इसमें स्पर्शस्थितिको घटानेसे स्पर्शकाल अर्थात् ग्रासका प्रारंभ और इसमें मोक्षस्थितिको युत करनेसे मोक्षकाल अर्थात् ग्रासका अभाव होता है इसी प्रकार ग्रहणके मध्यकालमें स्पर्श-कालके मर्दके घटानेसे संमीलनकाल अर्थात् सब बिंबका ग्रास और मध्यकालमें मोक्षकालके मर्दको युत करनेसे उन्मीलनकाल अर्थात् बिंबके मुक्तका प्रारंभकाल होता है ॥ ७ ॥

अथ उदाहरण ।

स्पष्ट करनेसे घडी आदि तिथि ४०।४८ मिली यही ग्रहणका मध्यकाल ४०।४८ है इसमें स्पर्शस्थिति ४।३९ को घटा दिया तो स्पर्शकाल ३६।९ हुआ फिर मध्य ग्रहणकाल ४०।४८ में मोक्ष स्थिति ४।३३ को युत किया तो मोक्षकाल ४५।२१ हुआ फिर ग्रहणके मध्यकाल ४०।४८ में स्पर्श मर्द १।५७ को घटा दिया तो संमीलनकाल ३८।५१ हुआ फिर ग्रहणके मध्यकाल ४०।४८ में मोक्ष मर्द १।५१ को घटा दिया तो उन्मीलनकाल ४२।३९ मिला॥

अब इष्टकालीनग्रास साधनका प्रकार लिखते हैं ।

पिहितहतेष्टं स्थितिविहतं तत् ।
सचरणभूयुग्ग्रसनमभीष्टम् ॥ ८ ॥

अन्वयः-पिहितहतेष्टं स्थितिविहतं तत् अभीष्टं सचरणभूयुक् ग्रसनं (भवति) ॥ ८ ॥

भाषा–कल्पित इष्टको ग्राससे गुणा करे फिर उसमें स्पर्शकालका इष्ट हो तो स्पर्शस्थितिका भाग देवे और मोक्षकालका इष्ट हो तो मोक्षस्थितिका भाग देवे जो फल मिले वह उसे अंगुलादि जाने फिर इस फलमें सवा अर्थात् १।१५ अंगुलादि युत करनेसे इष्ट ग्रास होता है और स्पर्शसे अगाडी इष्ट हो तो स्पर्शका इष्ट और मोक्षसे पहले इष्ट हो तो मोक्षका इष्ट कहलाता है ॥ ८ ॥

अथ उदाहरण ।

स्पर्शसे अनन्तर दो घडी इष्ट कल्पना किया इसको ग्रास १६।४८ से गुणा दिया तो ३३।३६ अंगुलादि हुए यहां स्पर्शकालीन इष्ट है इसलिये गुणनफल ३३।३६ में स्पर्शस्थिति ४।३९ का भाग देनेसे फल ७।१३ मिला इसमें सवा अर्थात् १।१५ अंगुलादिको युत किया तो इष्टग्रास ८।२८ अंगुलादि हुआ ॥

अथ वलन बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

त्रिभयुतोनरविः स्वविधुग्रहेऽयनलवाढ्य इतश्चर-
वद्दलैः । नगशरेन्दुमितैर्वलनं भवेत्स्वरविदिक्-

अन्वयः–स्वविधुग्रहे त्रिभयुतोनरविः अयनलवाढ्यः (कार्य्यः) इतः नगशरेन्दुमितैः दलैः चरवत् स्वरविदिक् वलनं भवेत् ॥–

भाषा–सूर्यके ग्रहणमें स्पष्ट सूर्यमें तीन राशि युत करे और चंद्रमाका ग्रहण होय तो स्पष्ट सूर्यमें ३ राशि ऊन करे फिर उस सूर्यमें अयनांश युत करे फिर उस सूर्य परसे ७।५।१ इन खण्डोंकी रीतिके चर साधनकी नाईं अयन वलन बनावे । तीन राशियोंसे युत अथवा हीन सायन सूर्य जिस गोलका हो उस दिशाका होता है अर्थात् मेषादि हो तो उत्तर और तुलादि हो तो दक्षिण होता है ॥

अथ उदाहरण ।

स्पष्ट सूर्य ८।०।१२।६ है वर्तमान चंद्रग्रहण है इसलिये इस सूर्यमें तीन राशि घटा दीं तो सूर्य ५।०।१२।६ रहा इसमें अय-

नांश १८।१८ युत किया तो सायन रवि ५।१८।३०।६ हुआ इसके भुज करे तो ०।११।२९।५४ हुआ इस भुजके राशिके स्थानमें शून्य है इसलिये ७।५।१ इन्होंमें खण्ड नहीं मिला फिर शेष ११।२९।५४ को भोग्य खंड ७ से गुणा दिया तो ८०।२९। १८ हुए इन्होंमें तीसका भाग देनेसे फल २।४० मिला इसमें गत खण्डा शून्यको युत किया तो वलन २।४० मिला तीन राशिसे ऊन सायन सूर्य उत्तर गोलमें है इसलिये यह उत्तर दिशाका वलन हुआ ॥

अथ आक्षज वलन अर्थात् अक्षांशसे उत्पन्न हुए वलनको कहते हैं ।

त्वथ मध्यनताच्च यत् ॥ ९ ॥

विषयलग्नग्रहादित उक्तवद्वलनमक्षहतं पलभाहतम् । उदगपागिह पूर्वपरे क्रमाद्रसहतोभयसंस्कृतिरंघ्रयः ॥ १० ॥

अन्वयः-अथ तु यत् मध्यनतात् (ततः) विषयलग्नग्रहादितः उक्तवत् वलनं (साध्यं ततः) पलभाहतं (ततः) अक्षहतं (अक्षवलनं स्यात्) । इह पूर्वपरे क्रमात् उदक् अपाक् (स्यात्) । उभयसंस्कृतिः रसहता (सती) अंघ्रयः (स्युः) ॥ ९ ॥ १० ॥

भाषा-पर्व अर्थात् पूर्णिमाके अंतकालके चंद्रमामें पर्वका अंतकालके राहुको घटा देवे फिर उसके भुजके अंश बनावे फिर उन अंशोंको ग्यारहसे गुणा करे इस रीतिसे शर बनावे फिर पूर्वके उदयवाले ग्रहमें तीन राशि घटा देवे इस आगे कही हुई रीतिसे दृक्कर्म कला साधन करे फिर उन कलाओंका चंद्रमामें संस्कार करे फिर मध्य ग्रहणकालके सूर्यपरसे लग्न साधन करे फिर आगे ग्रहच्छायाधिकारमें कही हुई रीतिसे चंद्रमाके दिनका गतकाल साधन करे फिर दृक्कर्मसे संस्कार किये हुए चन्द्रमापरसे चर साधन करे फिर आगे जो रीति कहेंगे उस रीतिसे स्पष्ट

चर बनावे फिर स्पष्ट चरपरसे दिनार्द्ध बनावे तो वह चंद्रमाका दिनार्द्ध होता है फिर दिन गतकाल और दिनार्द्ध इन्होंका अंतर करके नत बनावे ऐसे करनेसे ग्रहणके मध्यकालका नत होता है फिर इस नतमें पांचका भाग देनेसे जो राशि आदि फल मिले उस परसे कही हुई रीतिसे वलन बनावे इस वलनमें अयनांशका संस्कार नहीं है फिर इस वलनको पलभासे गुणा करे फिर इसमें पांचका भाग देनेसे पूर्व नत हो तो उत्तर दिशाका वलन और पश्चिम नत हो तो दक्षिण दिशाका अक्षवलन होता है। फिर दोनों वलनोंका संस्कार करे अर्थात् अयन वलन और अक्ष वलन दोनों वलन एक दिशामें होंय तो योग और भिन्न दिशामें होंय तो अंतर करे फिर उसमें छःका भाग देनेसे जो अंगुलादि फल मिले वह वलनांघ्रि अर्थात् वलनोंकी अंघ्री होती है ॥९॥ १० ॥

अथ उदाहरण।

चंद्रमा २।०।१२।२ में राहु ७।२८।२३।१८ को घटा दिया तो ६।१।४८।४४ हुए फिर इसके भुजके अंश १।४८।४४ हुए दक्षिण

स्पर्शादिकं यदि विधोर्दिवसस्य शेषे यातेऽथ वा द्युदलतद्विवरं रवेस्तु। रात्रेस्तदूनितनिशाशकलं क्रमात्स्यात्प्राक्पश्चिमं नत-मिदं वलनस्य सिद्ध्यै ॥ १ ॥

अन्वयः—अथवा यदि विधोः स्पर्शादिकं दिवसस्य शेषे याते (तदा) द्युदलतद्विवरं (मध्यनतं स्यात्)। रवेः तु (यदि) रात्रेः (शेषे याते तदा) तदूनितनिशाशकलं (कार्य्यं) इदं वलनस्य सिद्ध्यै क्रमात् प्राक् पश्चिमं नतं स्यात् ॥ १ ॥

अर्थ—चन्द्रग्रहणका स्पर्श सूर्यके अस्त जितनी घडी पहिले हो, उतनी घडीको दिनार्द्धमें घटा दे जो शेष रहे सो पूर्व मध्यनत होता है, और चन्द्रग्रहणका मोक्ष सूर्य्योदयके पीछे जितनी घडीपर हो उतनी घडी दिनार्द्धमेंसे घटा देके जो शेष रहे सो पश्चिम मध्यनत है ॥१॥

सूर्य्यके ग्रहणका स्पर्श सूर्यके उदयसे जितनी घडी पहिले हो उतनी घडी रात्र्यर्द्धमें घटा दे जो शेष रहे वह पूर्व मध्यनत होता है और सूर्य्यग्रहणका मोक्ष सूर्य्यास्त होनेके पीछे जितनी घडीपर हो, उतनी घडी रात्र्यर्द्धमें घटा देनेसे जो शेष रहे सो पश्चिम मध्यनत होता है ॥

दिशाका शर २।५० यह है और चंद्रमामें तीन राशि घटा दीं तो चंद्रमा ११।०।१२।१ हुआ इसपरसे दक्षिण क्रांति ४।३५।५९ मिली इसमें दक्षिण दिशाके अक्षांशों २५।२६।४२ का संस्कार किया तो दक्षिण दिशाके नतांश ३०।२।४१ हुए इसपरसे धन दृक्कर्म कला ४।५८ मिलीं इन्होंका चंद्रमामें संस्कार किया तो दृक्कर्मकलाओंसे संस्कार किया हुआ चंद्रमा २।०।१६।५९ हुआ दिनमान २६।१२ ग्रहणका मध्यकाल ४०।४८ और सूर्यके अस्त-से गत घडी १४।३६ और ग्रहणके मध्यकालका सूर्य ८।०।१२।६ भोग्यकाल ११६ लग्न ४।१८।१४।१४ और दृक्कर्म संस्कार किया हुआ चंद्रमाका भोग्य काल ११५ और लग्नका भुक्त काल इन्हों-का किया तो १८८ हुए इन्होंमें कर्क ३४२ और सिंह ३४५ इन्होंके उदयको युत किया तो ८७५ हुए फिर इसमें साठका भाग देनेसे १४।३५ मिले इन्होंमें ९ पल घटा दिये तो चंद्रमाके उदयसे चंद्रमाका दिन गत काल १४।२६ मिला फिर दृक्कर्मसे संस्कार किये हुए चंद्रमापरसे घडी आदि उत्तर दिशाका चर १।५४ मिला फिर अंगुल आदि शर २।५० को पलभा ५।४५ से गुणा दिया तो १६।१७ हुए फिर इन्होंमें चौवीसका भाग देनेसे दक्षिण दिशाका पल आदि फल ०।४० मिला शर दक्षिण दिशा-का है इसलिये इसको चरकी घडियोंमें संस्कार किया तो उत्तर दिशाका स्पष्ट चर १।५३।२० हुआ इन्होंमें १५ घडी युत कीं तो चंद्रमाका दिनार्द्ध १६।५३ हुआ और स्वल्प अंतर होनेसे सूर्यका जो रात्र्यर्द्ध वही चन्द्रमाका दिनार्द्ध होता है इस चंद्रमाके दिनार्द्धमें चन्द्रमाका दिन गत काल १४।२६ घटा दिया तो पूर्व नत २।२७ हुई और गत दिनको दिनार्द्धमें घटानेसे पूर्व नत और विपरीत शोधनेसे पश्चिम नत होती है ऐसे करनेसे मध्य कालकी पूर्व नत २।२७ मिली इसमें पांचका भाग देनेसे राशि आदि फल ० मिला फिर शेष २।२७ को तीससे गुणके साठका

भाग देनेसे जो फल मिला उसमें ऊपरले फलको युत किया तो ७३।३० हुए फिर इन्होंमें पांचका भाग दिया तो १४ मिले शेष ३।३० को ६० से गुणके पांचका भाग दिया तो फल कला ४२ मिलीं फिर शेषको साठसे गुणके पांचका भाग दिया तो फल विकला मिला ऐसे राशि आदि ०।१४।४२।० मिले फिर इसपरसे कही हुई रीतिसे वलन ३।२५।४८ मिला फिर इसको पलभा ५। ४५ से गुणा किया तो १९।४३ हुए इसमें पांचका भाग देनेसे उत्तर दिशाका वलन ३।५६ मिला और नत पूर्व है इसलिये पहला वलनभी उत्तर दिशाका २।४० है फिर दोनोंका संस्कार किया तो ६।३६।६ हुए इन्होंमें छःका भाग दिया तो वलनकी अंघ्रि उत्तर दिशाकी १।६ मिली ॥

ग्रासांघ्रि और खग्रासांघ्रिकी रीति लिखते हैं।

मानैक्यार्द्धहृतात्खषड्घ्नपिहितान्मूलं तदाशांघ्रयः
खच्छन्नं सदलैकयुक्च गदिताः खच्छन्नजाशांघ्रयः।

अन्वयः—मानैक्यार्द्धहृतात् खषड्घ्नपिहितात् मूलं (ग्राह्यं, तत्) तदाशांघ्रयः (स्युः)। सदलैकयुक् खच्छन्नं च खच्छन्नजाशांघ्रयः गदिताः ॥

भाषा—ग्रासको साठसे गुणाकर फिर उसमें मानैक्य खण्डका भाग देनेसे जो फल मिले उसका वर्गमूल निकाले वह अंगुलादि ग्रासकी अंघ्रि अर्थात् चरण होते हैं और खग्रासमें डेढ अर्थात् १।३० युत करनेसे अंगुलादि खग्रासकी अंघ्रि होती है ॥

अथ उदाहरण।

ग्रास १६।४८ को साठसे गुणा किया तो १००८ हुए इसमें मानैक्य खण्ड १९।३८ का भाग देनेसे फल ५१।२० मिला इसका मूल लिया तो ग्रास अंघ्रि ७।९ अंगुलादि मिले फिर खग्रास ५।४१ में डेढ १।३० युत किया तो खग्रासकी अंघ्रि ७।११ अंगुलादि मिले ॥

ग्रहणके मध्यकी दिशा जाननेका प्रकार कहते हैं।

सव्यासव्यमपागुदग्वलनजाशांघ्रीन्प्रदद्याच्छराशायाः
स्याद्ग्रहमध्यमन्यदिशि खग्रासोऽथ वा शेषकम्॥ ११ ॥

अन्वयः-शराशायाः अपागुदग्वलनजाशांघ्रीन् सव्यासव्यं प्रदद्यात्। (तत्र) ग्रहमध्यं स्यात्। अन्यदिशि खग्रासः अथ वा शेषकं (स्यात्)॥११॥

भाषा-फिर छाद्यबिंबके आधेसे एक गोला बनावे फिर उसमें दिशाओंका चिह्न कर देवे फिर उसमें समान बत्तीस भागोंका चिन्ह करे। फिर उसमें वलनसे उत्पन्न हुआ चरण दक्षिण दिशाका हो तो शरकी दिशासे सव्य क्रमसे गणना करे और वलनसे उत्पन्न हुआ चरण उत्तर दिशाका हो तो शरकी दिशासे अपसव्य अर्थात् उससे उलटी गणना करे फिर उस स्थानमें चिह्न कर देवे फिर उस दिशामें ग्रहणका मध्य जाने और इससे सन्मुख दिशामें खग्रास जाने बाकी ग्रहणसे शेष रहा चन्द्रमा जानना योग्य है ॥११॥

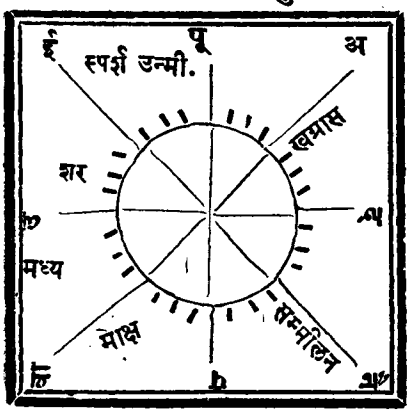

अब स्पर्श मोक्ष संमीलन और उन्मीलन इन्होंकी दिशाओंका ज्ञान कहते हैं।

मध्याच्छन्नाशांघ्रिभिः प्राक्च पश्चादिन्दोर्व्यस्तं
तूष्णगोः स्पर्शमोक्षौ। खग्रस्तात्खच्छन्नपादैः परे
प्राग्दत्तैरिन्दोर्मीलनोन्मीलने स्तः॥ १२ ॥

अन्वयः-मध्यात् प्राक् पश्चात् च (दत्तैः) छन्नाशांघ्रिभिः इन्दोः स्पर्शमोक्षौ(स्तः)। उष्णगोः तु व्यस्तम्। खग्रस्तात् परे प्राक् दत्तैः खच्छन्नपादैः इन्दोः मीलनोन्मीलने स्तः (रवेः तु व्यस्तं ज्ञेयम्) ॥ १२ ॥

भाषा–ग्रहणके मध्यस्थानसे पूर्व दिशामें ग्रासकी अंघ्रियोंकी गणना करनेसे उस स्थानमें चंद्रमाके ग्रहणमें स्पर्श होता है और ऐसेही ग्रहणके मध्यस्थानसे पश्चिम दिशामें ग्रासकी अंघ्रियोंकी गणना करनेसे उस स्थानमें चंद्रमाके ग्रहणमें मोक्ष होता है और सूर्यग्रहणमें पश्चिमदिशामें ग्रासकी अंघ्रियोंकी गणना करनेसे स्पर्श और पूर्वदिशामें ग्रासकी अंघ्रियोंकी गणना करनेसे मोक्ष होता है और खग्रासके चिह्नसे खग्रासकी अंघ्रियोंके तुल्य पश्चिमदिशामें सम्मीलन और खग्राससे पूर्व दिशामें उसकी अंघ्रियोंके तुल्य चंद्रमाके ग्रहणमें उन्मीलन होता है और सूर्यके ग्रहणमें पूर्व दिशामें संमीलन और पश्चिम दिशामें उन्मीलन होता है और सूर्यका खग्रास कभी कालांतरमें होता है ॥ १२ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत–बेरीग्रामनिवासि–गौड़वंशावतंस–विविधशास्त्रपरमपण्डित–श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां पंचमः चन्द्रग्रहणाधिकारः समाप्तः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोऽधिकारः ।

अब सूर्यग्रहणाधिकारको कहते हैं ।

संवत् १६६७ शाके १५३२ में मार्गशिर वदि अमावस ३० बुधवार घडी १२ पल ३६ मूल नक्षत्रकी घडी ५१ पल ५२ गण्ड योगकी घडी २३ पल ४५ उस दिनमें सूर्यका ग्रहण देखनेके लिये गणित करते हैं पूर्वकथित रीतिसे अहर्गण १००५ चक्र ८ अधिमास १ और अवम १५ मिले फिर इस अहर्गणपरसे कही हुई रीतिसे प्रातःकालका मध्यम सूर्य ८।५।३९।२५ मध्यम चंद्रमा ८।१।१०।३३ चंद्रोच्च ८।१७।२७।२१ और राहु २।११।४१।५९ मिले फिर इन्होंको अमावसकी घडियों १२।३६ के तुल्य चालन दिया तो सूर्य ८।५।५१।५० चंद्रमा ८।३।५६।३४ उच्च ८।१७।२८।४५ और राहु २।११।४१।१९ हुए ॥

अब इन्होंका स्पष्टीकरण कहते हैं ।

सूर्यके मंद केन्द्र ६।१२।८।१० परसे ऋण मंद फल ०।२७।५० मिला इसको मध्यमसूर्यमें घटा दिया तो मन्द स्पष्ट सूर्य८।५।२४।० हुआ अयनांश १८।८ चरखण्डा ५७।४६।१९ इसपरसे कही हुई रीतिसे चर धन ११७ मिला इसका मंद स्पष्ट सूर्यमें संस्कार किया तो स्पष्ट सूर्य ८।५।२५।५७ हुआ इसकी स्पष्ट गति ६१।१५ त्रिफल संस्कारित चंद्रमा ८।४।१०।५३ हुआ फिर इसके मंद केन्द्र ०।१३।१७।५२ परसे धन मंद फल १।९।४८ मिला इसका चंद्रमामें संस्कार किया तो स्पष्ट चंद्रमा ८।०५।२०।४१ हुआ और इसकी स्पष्ट गति ७२६।३० सूर्य चंद्रसे गत तिथि २८ मिलीं और एष्य तिथिकी घडी आदि ०।२८ मिलीं इन्होंको पंचांगकी तिथि १२।३६ में युत किया तो पर्वका अंतकाल १३।४ हुआ फिर सूर्य चंद्रमा राहु इन्होंको पर्वकालकी घडी १३।४ से चालन दिया तो पर्वके अंतका सूर्य ८।५।२६।२५ चंद्रमा ८।५।२६।२५ और राहु २।११।४१।१८ मिले फिर सूर्यमें राहुको घटा दिया तो विराद्वर्क ५।२३।४५।७ हुआ ॥

अब लंबन आदिके बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

लग्नं दर्शान्ते त्रिभोनं पृथक्स्थं तत्क्रान्त्यंशैः संस्कृतोऽक्षो नतांशाः।तद्विद्व्यंशो वर्गितश्चेद् द्विकोर्ध्वोधोऽसौ द्व्यूनः खण्डितस्तद्युतः सः ॥ १ ॥ साकौ हारः स्यात्त्रिभोनोदयार्कविश्लेषांशांशांशहीनघ्नशक्राः । हाराप्ताः स्याल्लम्बनं नाडिकाद्यं तिथ्यां स्वर्णं वित्रिभेर्काधिकोने ॥ २ ॥

अन्वयः-दर्शान्ते लग्नं त्रिभोनं पृथक्स्थं (कार्य्यं) तत्क्रान्त्यंशैः संस्कृतः अक्षः नतांशाः (स्युः) । तद्विद्व्यंशः वर्गितः (सन्) चेत् द्विकोर्ध्वः (स्यात् तदा) असौ अधः (स्थाप्यः । ततः) द्व्यूनः (सन्) खण्डितः

(कार्य्यः यत् फलं स्यात्) तद्युतः सः सार्कः हारः स्यात् । त्रिभोनोदयार्कविश्लेषांशांशांशहीनघ्नशक्राः हाराप्ताः नाडिकाद्यं लम्बनं स्यात् । वित्रिभे अर्काधिकोने (सति) तिथ्यां स्वर्णं (कार्य्यम्) ॥ १ ॥ २ ॥

भाषा—पहले अमावसके अंतकालकी लग्न साधन करे फिर उसपरसे सूर्यका भोग्य काल बनावे फिर उस लग्नमें तीन राशि घटा देवे फिर उसको दो स्थानमें रक्खे फिर उसकी क्रांतिको अक्षांशमें संस्कार करनेसे नतांश होते हैं फिर उन्होंमें बाईसका भाग देनेसे जो फल मिले उसका वर्ग करे जो वह वर्ग दोसे अधिक हो तो उसकोभी दो स्थानोंमें रक्खे एक स्थानमें तो उसमें दो घटा देवे फिर उसके आधेको दूसरे स्थानमें रक्खे हुएमें युत करे फिर इसमें बारह युत करनेसे हार होता है और तीन राशियोंसे ऊन लग्न और सूर्य इन्होंका अंतर करे यह अंतर तीन राशिसे अल्प होना चाहिये और इन्होंमें जो घटाया जावे वह न्यून जानना चाहिये इस रीतिसे धन ऋणका ज्ञान होता है फिर इस अंतरके अंश बनावे फिर इसमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उसको चौदहमें घटा देवे फिर उसके दशवें हिस्सेसे गुणा करे फिर इसमें हारका भाग देनेसे घडी आदि ऋण लंबन होता है और जो तीन राशिसे ऊन लग्न सूर्यसे अधिक हो तो उसको पर्व अर्थात् तिथिके अंतकालमें युत और कम हो तो ऊन करे ॥ १॥२॥

अथ उदाहरण।

अमावसके अंतकाल १३।४ में लग्न साधन किया तो लग्न ११।२।४६।१७ हुई इसमें तीन राशि घटा दीं तो त्रिभोन अर्थात् तीन राशिसे ऊन लग्न ८।२।४६।१७ हुई इसको दो स्थानमें रक्खा ८।२।४६।१७ फिर इसके सायन सूर्यपरसे कही हुई रीतिसे दक्षिण क्रांति २३।३८।१० मिली इसका और दक्षिण दिशाके अक्षांशों २५।२६।४२ का एक दिशा होनेके कारण योग किया तो दक्षिण दिशाके नतांश ४९।४।५२ हुए फिर इन्होंमें बाईसका भाग दिया

तो फल २।१३।५१ मिला इसका वर्ग किया तो ४।४८ हुए यह दोसे अधिक है इसलिये इसको दो जगह रक्खा फिर इसमें दो घटा दिये तो २।५८ हुए फिर इसके आधे १।२९ को दूसरे स्थानमें रक्खे हुए ४।५८ में युत किया तो ६।२७ हुए फिर इसमें बारह युत किये तो हार अंशादि १८।२७ हुआ फिर त्रिभोन अर्थात् तीन राशिसे ऊन लग्न ८।२।४६।१७ और सूर्य ८।५।२६। २५ इन्होंके अंतर ०।२।४०।८ के अंश किये तो २।४०।८ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग दिया तो फल ०।१६ मिला इसको चौदहमें घटा दिया तो १३।४४ हुए फिर इन्होंको दशवें हिस्से ०।१६ से गुणा दिया तो ३।३९ हुए फिर इन्होंमें हार १८।२७ का भाग देनेसे घडी आदि लंबन ०।११ मिला तीन राशिसे ऊन लग्न सूर्यसे कम है इसलिये इस लंबनको तिथिकी घडी १२।४२ में युत किया तो लंबनसे संस्कार किया हुआ तिथिका अंत १२। ५३ मिला ॥

अब लंबन कालमें व्यग्वर्क अर्थात् सूर्यमें घटा हुआ राहुका चालन कहते हैं ।

त्रिकुनिघ्नविलम्बनं कलास्तत्सहितोनस्तिथिवद्व्यगुः शरोऽतः । अथ षड्गुणलम्बनं लवास्तैर्युगयुग्विभक्तैः पुनर्नतांशाः ॥ ३ ॥

अन्वयः-त्रिकुनिघ्नविलम्बनं कलाः (स्युः) । तिथिवत् व्यगुः तत्सहितोनः (कार्य्यः) अतः शरः (साध्यः) । अथ षड्गुणलम्बनं लवाः (स्युः) । तैः पुनः युगयुग्विभक्तैः नतांशाः (साध्याः) ॥ ३ ॥

भाषा-लंबनको तेरहसे गुणा करनेसे कला होती हैं फिर उन कलाओंको तिथिकी नाईं अर्थात् तिथिमें लंबन धन हो तो व्यगुमें धन करे ऋण हो तो ऋण करे फिर उसके भुजके अंशोंपरसे कही हुई रीतिसे शर बनावे । फिर लंबनको छः गुना कर-

नेसे अंश आदिकों ऋण और धन हो तो धन करे फिर इसपरसे कही हुई रीतिसे तनके अंश बनावे ॥ ३ ॥

अथ उदाहरण।

लंबन ०।११ को १३ से गुणा किया तो कला आदि २।२३ हुआ तिथिमें लंबनको ऋण होनेसे कला आदिको व्यगु अर्थात् सूर्य घटा हुआ राहु ५।२३।४५।७ में घटा दिया तो लंबनसे संस्कार किया हुआ व्यगु ५।२३।४२।४४ हुआ इसके भुजके अंशों ६। १७।१६ परसे कही हुई रीतिसे शर ९।५४ मिला व्यगु उत्तर गोलमें है इसलिये शरभी उत्तर दिशाका मिला। फिर लंबन ०।११ को छःसे गुणा दिया तो अंश आदि १।६।० हुआ लंबन ऋण है इसलिये इसको तीन राशिसे ऊन लग्न ८।२।४६।१७ में घटा दिया तो ८।१।४०।१७ हुए इसकी दक्षिण क्रांति २३।३४। ३५ मिली इसमें अक्षांशों २५।२६।४२ का संस्कार किया तो दक्षिण दिशाके नतके अंश ४९।१।१७ हुए ॥

अथ नति बनानेके प्रकारको कहते हैं।

दशाहृतनतभागोनाहताष्टेन्दवस्तद्रहितसधृतिलिप्तैः षड्भिराप्तास्त एवास्वदिगिति नतिरेतत्संस्कृतः सोऽङ्गुलादिः स्फुट इषुरमुतोऽत्र स्यात्स्थितिच्छन्नपूर्वम्॥४॥

अन्वयः–दशाहृतनतभागोनाहताष्टेन्दवः (पृथक् स्थाप्याः)। ते एव तद्रहितसधृतिलिप्तैः षड्भिः आप्ताः इति स्वदिक् नतिः (स्यात्)। एतत्संस्कृतः सः अत्र स्फुटः अंगुलादिः इषुः (स्यात्) अमुतः स्थितिच्छन्नपूर्वं स्यात्॥४॥

भाषा–नतके अंशोंमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले इसको अठारहमें घटाके उसी फलसे गुणा देवे फिर गुणनेसे जो फल मिले उसको दो स्थानमें रक्खे एक स्थानमें तो इन्होंको छः अंश अठारह कलामें घटानेसे जो फल मिले उसका दूसरे स्थानमें रक्खे हुएमें भाग देनेसे अंगुल आदि नतके अंशोंकी दिशाकी नति होती है इस नतिका शरमें संस्कार करनेसे स्पष्ट

शर होता है और इस शरपरसे ग्रास और स्थिति आदि साधन करे ॥ ४ ॥

अथ उदाहरण ।

नतके अंशों ४९।१।१७ में दशका भाग देनेसे फल ४।५४ मिला इसको अठारहमें घटा दिया तो १३।६ हुए फिर इन्होंको दशसे भाग दिये हुए फल ४।५४ से गुणा दिया तो कला आदि ६४।११ हुई इसको दो स्थानमें रक्खा एक स्थानमें तो इसको छः अंश अठारह कला ६।१८ में घटा दिया तो ५।१३।४९ रहे फिर इसको दूसरे स्थानमें रक्खे हुए ६४।११ में भाग दिया तो नतके अंश दक्षिणके हैं इसलिये दक्षिण दिशाकी अंगुल आदि नति १२।१६ मिली नति और शर ९।५४ इन्होंको भिन्नदिशामें होनेसे इन्होंका अंतर किया तो नतिसे संस्कार किया हुआ दक्षिण दिशाका अंगुल आदि स्पष्ट शर २।२३ मिला फिर सूर्यकी गति ६१।१५ को दोसे गुणा किया तो १२२।३० हुए इसमें ११ का भाग देनेसे सूर्यका बिंब ११।८ हुआ चंद्रमाकी गति ७२६।३०में ७४ का भाग दिया तो चन्द्रबिंब ९।४९ फिर पूर्वोक्त रीतिके अनुसार मानैक्य खण्ड १०।२८ और ग्रास ८।५ ये मिले सूर्य-बिंबमेंसे ग्रास घटानेसे शेष बिंब रहता है अब स्थितिको बनाते हैं । मानैक्य खण्ड १०।२८ में शर २।२३ को युत किया तो १२।५१ हुए फिर इसको दशसे गुणा तो १२८।२० हुए फिर इसको ग्रास ८।६ से गुणा किया तो १०।३९।३० हुए फिर इसको दो बार ६० से गुणा किया तो ३७४२२०० हुए फिर इसके मूल ३२।१४ को दो स्थानमें रक्खा एक स्थानमें इसमें छः-का भाग देनेसे फल ५।२२ मिला इसको दूसरी जगह रक्खे हुएमें घटा दिया तो २६।५२ हुए इन्होंमें चन्द्रमाके बिंब ९।४९ का भाग देनेसे घडी आदि स्थिति २।४४ मिली ॥

अब स्पर्शकाल और मोक्षकालके बनानेके प्रकार-को कहते हैं ।

स्थितिरसहतिरंशा वित्रिभं तैः पृथक्स्थं
रहितसहितमाभ्यां लम्बने ये तु ताभ्याम् ।
स्थितिविरहितयुक्तः संस्कृतो मध्यदर्शः
क्रमश इति भवेतां स्पर्शमुक्त्योस्तु कालौ ॥ ५ ॥

अन्वयः–स्थितिरसहतिः अंशाः (स्युः) । पृथक्स्थं वित्रिभं तैः रहितसहितं (कार्य्यम्) । आभ्यां तु ये लम्बने (ते साध्ये) । ताभ्यां स्थितिविरहितयुक्तः मध्यदर्शः संस्कृतः (कार्य्यः) । इति तु क्रमशः स्पर्शमुक्त्योः कालौ भवेताम् ॥ ५ ॥

भाषा–स्थितिको छःसे गुणा करनेसे अंश होते हैं फिर तीन राशि घटे हुए लग्नको दो स्थानमें रक्खे फिर तीन राशि घटे हुए लग्नमें उस अंशोंको घटानेसे स्पर्श कालका त्रिभोन लग्न और जोडनेसे मोक्ष कालका त्रिभोन अर्थात् तीन राशि घटा हुआ लग्न होता है फिर इन दोनों वित्रिभोन लग्नोंपरसे पृथक् २ लंबन साधन करे फिर अमावसके मानमें स्पर्शकालकी स्थितिको घटा देवे फिर उसमें धन अथवा ऋण लंबनका संस्कार करनेसे स्पर्श-काल होता है फिर अमावसके मानमें मोक्षकालकी स्थितिको युत करे फिर उसमें मोक्षकालका संस्कार करनेसे मोक्षकाल होता है ॥ ५ ॥

अथ उदाहरण ।

स्थिति २।४४ इसको छःसे गुणा दिया तो अंश १६।२४ हुए फिर त्रिभोन अर्थात् तीन राशि घटा हुआ लग्न ८।२।४६।१७ इसको दो स्थानमें रक्खा एक स्थान विषे इसमें अंश १६।२४ घटा दिये तो ७।१६।२२।१७ हुए और दूसरे स्थानमें अंश जोड दिये ८।१९।१०।१७ हुए ऐसा करनेसे क्रमसे स्पर्शकाल और मोक्षकालके त्रिभोन हुए इन्होंपरसे लंबन बनावे पहले अंशोंसे

ऊन त्रिभोनपरसे लंबन साधन करते हैं। वित्रिभोन ७।१६।२२।१७ इसपरसे दक्षिण क्रांति २१।२४।३९ इन्होंमें दक्षिण अक्षांशका संस्कार किया तो नतांश दक्षिण दिशाके ४६।५१।२१ हुए इन्हों-में बाईसका भाग देनेसे फल २।७ मिला इसके वर्ग ४।२८।४।२८ को दो स्थानोंमें रक्खा एक स्थानमें दो ऊन किये तो २।२८ हुए इसके आधे १।१४ में वर्ग ४।२८ को युत किया तो ५।४२ हुए फिर इन्होंमें बारह जोड दिये तो हार १७।४२ हुआ अमावसके अंतकालका सूर्य ८।५।२६।२५ और इसकी गति ६१।१५ है इसको स्थितिकी घडियों २।४४ के तुल्य चालन दिया तो स्पर्श-कालका सूर्य ८।५।२३।३८ हुआ इसका और तीन राशिसे ऊन स्पर्शकालका लग्न ७।१६।२२।१७ इन्होंका अंतर किया तो ०।१९। १।२१ हुए इसके अंश १९।१।२१ में दशका भाग देनेसे फल १।५४ मिला इसको चौदहमें घटा दिया तो १२।६ हुए फिर इसको दशवें हिस्से १।५४ से गुणा दिया तो २२।५९ हुए फिर इसमें हार १७।४२ का भाग देनेसे घडी आदि लंबन ऋण १।१७ मिला ॥

अब मोक्षकालका लंबन साधन करते हैं।

वित्रिभोनमें मध्य स्थिति २।४४ को ६ गुणाकर १६।२४ इसमें त्रिभोनके अंश आदि ८।२।४६।१७ को जोड दिया तो ८। १९।१०।१७ हुए इसकी दक्षिण क्रांति २३।४२।२८ और अक्षांश २५।२६।४२ का संस्कार करनेसे दक्षिणके नतांश ४९।९।१० हुए इसमें २२ का भाग देनेसे फल २।२४ मिला इसके वर्ग ४।५९ को दो स्थानोंमें रक्खा एक जगह इसमें दो घटा दिये तो २।५९ रहे इसके आधे १।२९ को दूसरी जगह धरे हुए वर्ग ४।५९ में युत किया तो ६।२८ हुए इन्होंमें बारह युत किये तो हार १८।२८ हुआ मोक्षकालका सूर्य ८।५।२९।१२ और मोक्षकालका तीन राशिसे ऊन लग्न ८।१९।१०।१७ इन्होंका अंतर किया तो

०।१३।४१।५ हुए फिर इसके अंश ०।१३।४१।५ से दशका भाग देनेसे फल १।२२ मिला इसको चौदह अंशमें घटा दिया तो १२। ३८ हुए फिर इसको दशवें हिस्से १।२२ से गुणा दिया तो १७। १५ हुए फिर इन्होंमें हार १८।२८ का भाग देनेसे घडी आदि लंबन धन ०।५६ मिला फिर ग्रहणके मध्यकाल १३।४ में स्थिति २।४४ को घटा दिया तो १०।२० हुए फिर इन्होंमें स्पर्श-कालके लंबन १।१७ का संस्कार किया तो स्पर्शकाल ९।३ मिला फिर ग्रहणके मध्यकाल १३।४ में स्थिति २।४४ को युत किया तो १५।४८ हुए इसमें मोक्षकालके लंबन ०।५६ का संस्कार किया तो मोक्षकाल १६।४४ मिला ॥

अब मर्दपरसे संमीलन और उन्मीलन इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

मर्दादेवं मीलनोन्मीलने स्तो ग्रासो नादेश्योऽङ्गुला-
ल्पो रवीन्द्वोः। धूम्रः कृष्णः पिङ्गलोल्पार्द्धसर्व-
ग्रस्तश्चन्दोर्कस्तु कृष्णः सदैव ॥ ६ ॥

अन्वयः-एवं मर्दात् मीलनोन्मीलने स्तः। अंगुलाल्पः रवीन्द्वोः ग्रासः न आदेश्यः अल्पार्द्धसर्वग्रस्तः चन्द्रः (क्रमात्) धूम्रः कृष्णः पिङ्गलः (भवति) अर्कः तु सदा एव कृष्णः (भवति) ॥ ६ ॥

भाषा-इसी रीतिसे मर्दपरसे संमीलन और उन्मीलन काल होता है अर्थात् मर्दको छःसे गुणनेसे अंश होते हैं इन्होंको दो स्थानोंमें रक्खे एक स्थानमें इसको संमीलन साधन करे तो वित्रि-भमें घटावे और उन्मीलन साधन करे तो युत करे फिर इन्होंपरसे कही हुई रीतिसे पृथक् २ लंबन बनावे फिर ग्रहणके मध्यकालमें मर्दको हीन युत करे फिर इन्होंमें क्रमसे लंबनोंका संस्कार कर-नेसे संमीलन काल और उन्मीलन काल होता है और सूर्य चंद्र-माके ग्रहणमें एक अंगुलसे अल्प ग्रास हो तो किरणोंके वशसे अल्प ग्रास नहीं दिखता है इसलिये ज्योतिषी ऐसे ग्रहणको नहीं

कहे और चंद्रमाके ग्रहणमें चंद्रमाके आधेसे अल्प ग्रास हो तो धूम्र वर्ण अर्थात् ग्रहणका धूआंकैसा वर्ण होता है चंद्रमाका आधे भागके समान ग्रास हो तो काला वर्ण होता है और चंद्रमाका सर्व ग्रास हो तो पिंगल वर्ण अर्थात् अल्प पीला अथवा जन्मे हुए बालके बालोंके रंगके समान वर्णवाला होता है और सूर्यके ग्रहणमें सदा काला वर्ण होता है ॥ ६ ॥

अब इष्ट ग्रासके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

इष्टं द्विघ्नं छन्नक्षुण्णं स्पर्शान्त्यान्तर्नाडीभक्तम्।
रूपार्धेनोपेतं विद्यादिष्टे कालेऽर्कस्य ग्रासम् ॥ ७ ॥

अन्वयः-द्विघ्नं छन्नक्षुण्णं स्पर्शान्त्यान्तर्नाडीभक्तं रूपार्द्धेन उपेतम् इष्टम् इष्टे काले अर्कस्य ग्रासं विद्यात् ॥ ७ ॥

भाषा-घडी आदि इष्टको कल्पना करके उसको दो गुणा करे फिर जो गुणनफल हो उसको ग्राससे गुणा करे फिर इन्होंमें स्पर्शकाल और मोक्षकालके अंतरका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें रूपका आधा अर्थात् तीस व्यंगुलको युत करे ऐसा करनेसे इष्टकालमें सूर्यका ग्रास होता है ॥ ७ ॥

अथ उदाहरण।

इष्ट घडी १ को दो गुना किया तो २ हुए फिर इसको ग्रास ८।५ से गुणा दिया तो १६।१० हुए इन्होंमें स्पर्शकाल ९।३ और मोक्षकाल १६।४४ इन्होंके अंतर ७।४१ का भाग दिया तो फल २।६ मिला इसमें तीस ३० व्यंगुल युत किये तो इष्ट कालमें सूर्यका ग्रास २।३६ मिला ॥

और बाकी रहे वलन और परिलेख इन्होंको चंद्रग्रहणमें कही हुई रीतिसे बनावे और लंबनसे संस्कार किया हुआ तिथिका अंतकाल १२।५३ यह है इस कालका सूर्य ८।५।२६।१४ इसमें तीन राशि युत की तो ११।५।२६।१४ हुआ इसमें अयनांश १८।०८ युत किया तो ११।२३।३४।१४ हुए फिर इसपरसे कही हुई रीतिसे

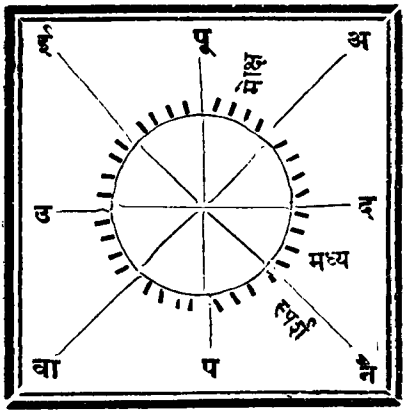

दक्षिण दिशाका वलन १।३० अंगुलादि मिला और ग्रहणका मध्य काल १२।५३ दिनार्द्ध १३।३ फिर कही हुई रीतिसे पूर्व नत ०।१० मिली इन्होंमें पांचका भाग देनेसे लब्धी राशि आदि ०।१।०।० रहे इसपरसे कही हुई रीतिसे वलन ०।१४ मिला इसको पलभा ५।४५ से गुणा दिया तो १।२० हुए इन्होंमें पांचका भाग देनेसे उत्तर दिशाका वलन ०।१६ मिला यहां नत पूर्व है इसलिये दोनोंका संस्कार किया तो १।१४ हुए फिर इन्होंमें छःका भाग देनेसे दक्षिण दिशाकी वलनकी अंघ्रि ०।१२ मिली फिर ग्रास ८।६ को साठसे गुणा किया तो ४८६ हुए फिर इन्होंमें मानैक्य खण्ड १०।२८ का भाग दिया तो फल ४६।२५ मिला इसका मूल लेनेसे ग्रासकी अंघ्रि ६।४८ मिलीं। और चन्द्रमाके परिलेखकी समान इस परिलेखको जानना॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत–भैरीग्रामनिवासि–गोडवंशावतंस–विविधशास्त्रपरमपण्डित–श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां षष्ठः सूर्यग्रहणाधिकारः समाप्तः॥ ६॥

अथ सप्तमोऽधिकारः।

अब मासगण अर्थात् महीनोंके समूहसे दोनों ग्रहणोंके बनानेके अधिकारको कहते हैं।

अथ मासगणात्सुलघुक्रियया ग्रहणद्वयसिद्धिकृते-

ऽभिदधे । स्फुटसूर्य्यविपाततिथींश्च वपुर्ग्रसनादि विशेषचमत्कृतये ॥ १ ॥

अन्वयः-अथ विशेषचमत्कृतये सुलघुक्रियया मासगणात् ग्रहणद्वयसिद्धिकृते स्फुटसूर्य्यविपाततिथीन् वपुः ग्रसनादि च अभिदधे ॥ १ ॥

भाषा-अधिक चमत्कारके लिये और सरल रीति द्वारा मासगणपरसे दोनों ग्रहणोंको बनानेके लिये स्पष्ट सूर्य स्पष्ट व्यगु स्पष्ट तिथि स्पष्ट बिंब और स्पष्ट ग्रास इन्होंको मैं कहता हूं॥ १ ॥

अब क्षेपकोंको कहते हैं ।

क्षेपो भाद्यः खं कृता भूदृशोर्के रुद्राः शैला नागचंद्रा विपाते । वृत्ते शून्यं वज्रिणश्चन्द्रबाणा वाराद्ये द्वौ व्यंघ्रिनन्दाब्धयः स्यात् ॥ २ ॥

अन्वयः-खं कृताः भूदृशः अर्के, रुद्राः शैलाः नागचन्द्राः विपाते, शून्यं वज्रिणः चन्द्रबाणाः वृत्ते, द्वौ व्यंघ्रिनन्दाब्धयः वाराद्ये भाद्यः क्षेपः स्यात् ॥ २ ॥

भाषा-शून्य चार इक्कीस यह सूर्यका राशि आदि क्षेपक है; ग्यारह, सात, अठारह यह राहुका राशि आदि क्षेपक है; शून्य, चौदह, इक्यावन यह राशि आदि वृत्तका क्षेपक है और दो, अडतालीस, पैंतालीस यह राशि आदि वार आदिका क्षेपक है ॥ २ ॥

क्षेपकचक्रम्.

नाम	सू.	रा.	वृ.	वारादि
राश्यादि	०	११	०	२
	०४	०७	१४	४८
	२१	१८	५१	४५
	०	०	०	०

अब ध्रुवोंको कहते हैं ।

भानोः खं भूः खाब्धयोऽयं ध्रुवः स्याच्छैलाः क-

र्कौ राशिपूर्वौ व्यगोः स्यात्। वृत्तस्याङ्का भू रसा-श्चाथ तिथ्या वाराद्यस्याक्षाः खगास्तर्करामाः ॥ ३ ॥

अन्वयः–खं भूः खाब्धयः अयं भानोः ध्रुवः स्यात्। शैलाः ककोः राशिपूर्वः व्यगोः (ध्रुवः) स्यात्। अङ्काः भूः रसाः च वृत्तस्य (ध्रुवः स्यात्)। अथ अक्षाः खगाः तर्करामाः तिथ्याः वाराद्यस्य (ध्रुवः स्यात्) ॥ ३ ॥

भाषा–शून्य, एक, चालीस यह राशि आदि सूर्यका ध्रुवा है; सात, एक, बारह यह राशि आदि राहुका ध्रुवा है; नौ, एक, छः यह राशि आदि वृत्तका ध्रुवा है और पांच, नौ, छत्तीस यह राशि आदि वार आदिका ध्रुवा है ॥ ३ ॥

ध्रुवचक्रम्.				
नाम	सू.	रा.	वृत्त	वा.
राश्यादि	०	७	९	५
	०१	०१	०१	०९
	४०	१२	०६	३६
	०	०	०	०

अब मासगणपरसे मध्यम सूर्य और मध्यम राहु इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

मासौघतो द्विगुणितान्नगषड्भिराप्तराश्यादिना रहितमासगणो रविः स्यात्। मासा गृहाणि विनिजत्रिलवाश्च तेंशा मासांघ्रितुल्यकलिकाः स्युरयं विपातः ॥ ४ ॥

अन्वयः–द्विगुणितात् मासौघतः नगषड्भिः आप्तराश्यादिना रहितमासगणः रविः स्यात्। मासाः गृहाणि विनिजत्रिलवाः ते अंशाः च मासांघ्रितुल्यकलिकाः स्युः अयं विपातः (स्यात्) ॥ ४ ॥

भाषा-मासगणको दोसे गुणा करे फिर उसमें ६७ का भाग देनेसे जो फल राशि आदि मिले उसको मासगणमें घटानेसे मध्यम सूर्य होता है और जितने महीनोंके समूह होते हैं उतनी राशि होती हैं और महीनोंके समूहके तीसरे हिस्सेको अर्थात् मासगणमें ३ का भाग देकर जो अंशादि लब्धि हो उसे मासगणमें घटानेसे जो शेष बचें वे राहुके अंश होते हैं और महीनोंके समूहमें चारका भाग देनेसे जो लब्धि हो वह राहुकी कला विकला होती है और ऐसे करनेसे राशि आदि मध्यम राहु होता है ॥ ४ ॥

अथ उदाहरण।

संवत् १६६९ शाके १५३४ में कार्तिक शुदि पूर्णिमा १५ बृहस्पतिवार घडी ३२ पल ३३ भरणी नक्षत्र घडी २३ पल १४ वज्रयोग घडी ४४ पल ४४ उस दिन चन्द्रग्रहणके पर्वान्त कालकी गणित करते हैं शक १५३४ में से १४४२ को घटाया तो ९२ वष बचे इनमें ११ का भाग दिया तो चक्र ८ मिला और शेष रहे ४ इनको १२ से गुणा दिया तो ४८ हुए इनमें ७ गत मास जोड दिये तो ५५ हुए यह मध्यम मासगण हुआ इसमें चक्र ८ को दुगुणा करके १६ जोडे ७१ हुए फिर १० जोडे तो ८१ हुए इनमें ३३ का भाग दिया तो २ गत अधिमास मिले इनमें मध्यम मासगण ५५ युत किये तो ५७ मासगण हुआ इसको दो गुणा किया तो ११४ हुए इसमें ६७ का भाग दिया तो राशि आदि फल १।२१।२।४१ मिला फिर इसको मासगण ५७ में घटा दिया तो मासगणोत्पन्न सूर्य ७।८।५७।१९ राश्यादि हुआ फिर सूर्यके ध्रुवे ०।१।४० को चक्र ८ से गुणा दिया तो ०।१३।२० हुए इसको उस सूर्य ७।०८।५७।१९ में घटा दिया तो मासगणोत्पन्न सूर्य ६।२५।३७।१९ हुआ फिर इसमें सूर्यके क्षेपक ०।४।२१ को युत किया तो मध्यम सूर्य ०६।२९।५८।१९ हुआ ॥

ध्रुवोनक्षेपकचक्रम्.				
नाम	सूर्य	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	११	७	०	२ वा.
अंश	२१	१६	२३	०५ घ.
कला	०१	५४	३९	३३ प.
विकला	०	०	०	०

इस चक्रका यह आशय है कि मासगणोत्पन्न सूर्यादिमें प्रत्येकका ध्रुवा जोडनेसे मध्यम हो जाता है अधिक क्रिया नहीं करनी पडती है ॥

अब राहुके बनानेका उदाहरण।

मासगण ५७ यही राशि है इसके तीसरे हिस्से अर्थात् मासगणमें ३ का भाग देनेसे लब्ध हुए १९ को मासगण ५७ में घटा दिया तो ३८ अंश हुए फिर मासगण ५७ में चारका भाग देनेसे फल १४।१५ कलादि मिला ऐसे करनेसे मासगणोत्पन्न राशि आदि राहु १०।८।१४।१५ हुआ फिर राहुके ध्रुवे ७।१।१२ को चक्र ८ से गुणा दिया तो ८।९।३६ हुए फिर इसको राहुमें युत किया तो राहु ६।१७।५०।१५ हुआ फिर इसमें क्षेपक ११।७।१८ युत किया तो राहु ५।२५।८।१५ हुआ ॥

अब वृत्त वार आदि इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

स्वाद्रयंशकेन रहिता मनुतष्टमासा वृत्तं गणाभ्रकुलवाब्यलवं गृहादि। स्वार्धान्विता दिनमुखं मनुतष्टमासा मासौघतो दशगुणाद्भगुणात्तियुक्तम् ॥५॥

अन्वयः—मनुतष्टमासाः स्वाद्रयंशकेन रहिताः गणाभ्रकुलवाढयलवं गृहादि वृत्तं (स्यात्)। मनुतष्टमासाः स्वार्द्धान्विताः (सन्तः) दशगुणात् मासौघतः भगुणात्तियुक्तं दिनमुखं (स्यात्) ॥ ५ ॥

भाषा-मासगणोंको चौदहसे तष्टित करे फिर जो शेष रहे उसमें सातका भाग देनेसे जो फल मिले उसको चौदहसे तष्टित किया हुआ शेषमें घटा देवे तो राशि आदि फल होता है फिर मासगणमें दशका भाग देनेसे जो फल अंश आदि मिले उसको राशि आदि फलमें युत करे फिर इसमें वृत्तके ध्रुवेको चक्रसे गुणकर युत करे फिर इसीमें क्षेपकको युत करनेसे वृत्त होता है और चौदहसे तष्टित किये हुए मासके आधेको चौदहसे तष्टित मासमें युत करे फिर मासगणको दशसे गुणा करे फिर उसमें ३२७ का भाग देनेसे जो फल मिले उसको अपने आधेसे युत चौदहसे तष्टित किये हुएमें युत करनेसे वार आदि होते हैं ॥ ५ ॥

अथ उदाहरण।

मासगण ५७ को चौदहसे तष्टित किया अर्थात् १४ का भाग दिया तो १ मास रहा इसको ३० गुणा करके अंश बनाये तो ३० हुए इनमें सातका भाग दिया तो ४ अंश मिले और २ बचे इनको ६० गुणा किया और सातका भाग दिया तो १७ कला मिलीं बचा १ इसे फिर ६० गुणा किया तो ६० हुए ७ का भाग दिया ८ विकला मिलीं इस प्रकार अंश आदि फल ४।१७।०८ मिला इन्होंको राशि आदि मास १ में घटा दिया तो राशि० आदि ०।२५।४२।५२ हुआ फिर मासगण ५७ में १० का भाग दिया तो अंश आदि फल ५।४२।० मिला इसको पूर्वोक्त ०।२५।४२।५२ अंश आदिमें युत किया तो १।१।२४।५२ मासगणोत्पन्न वृत्त हुआ फिर वृत्तके ध्रुवे ९।१।६ को चक्र ८ से गुणा दिया तो ०।८।४८ हुए इसको उसमें युत किया तो १।१०।१२।५२ हुए फिर इसमें क्षेपक ०।१४।५१ को युत किया तो वृत्त १।२५।३।५२ हुआ ॥

अब वार आदि बनानेका प्रकार कहते हैं।

मासगण ५७ को चौदहसे तष्टित किया तो १ मास बचा इस १ में इसके आधे ०।३०।० को युत किया तो १।३०।०

वार घटी हुए फिर मासगण ५७ को दशसे गुणा दिया तो ५७० हुए फिर इन्होंमें ३२७ का भाग देनेसे फल वारादि १।४४।३५ मिला इसको अपने आधेसे युत १।३० में जोड दिया तो मासगणोत्पन्न वारादि ३।१४।३५ हुए फिर वार आदिके ध्रुवे ५।९।३६ को चक्रसे गुणा दिया तो ६।१६।४८ हुए फिर इसको उसमें युत किया तो ९।३१।२३ हुए फिर इसमें क्षेपक २।४८।४५ को युत किया तो वार आदि ५।२०।८ मिले ॥

मध्यमसूर्यादीनां चक्रम्.				
नाम	सू.	रा.	वृत्त	वारादि
रा.	६	५	१	५
अं.	२९	२५	२५	२०
क.	५८	०८	०३	०८
वि.	१९	१५	५२	०

अब मासगणपरसे उत्पन्न हुए सूर्य आदिकोंका ध्रुव आदिका संस्कार कहते हैं।

मासगणाज्जनितो रविरूनश्चक्रहतध्रुवकेन निजेन।
सङ्कलिता इतरेऽथ च ते स्युः क्षेपयुता निजमासि सितेन ॥ ६ ॥

अन्वयः—मासगणात् जनितः रविः निजेन चक्रहतध्रुवकेन ऊनः(कार्य्यः) इतरे (तेन) सङ्कलिताः (कार्याः) अथ च ते क्षेपयुताः (सन्तः) निजमासि सितेन स्युः ॥ ६ ॥

भाषा—मासगणपरसे उत्पन्न हुआ जो सूर्य उसमें चक्रसे गुणा किये हुए अपने ध्रुवेको ऊन करे और अन्य राहु आदिमें चक्रसे गुणे हुए ध्रुवेको युत करे फिर उन सबोंमें अपने अपने क्षेपकयुत करनेसे अभीष्ट महीनेकी पूर्णिमाके अंतमें ये ग्रह होते हैं ॥ ६ ॥

अब एक पक्षके चालनको कहते हैं।

रवौ पाक्षिकं चालनं खेन्द्रदेवा विपाते नभो बाण-चन्द्रा नखाश्च। षडर्का युगाक्षा गृहाद्यं च वृत्ते दिनाद्ये नभोक्षाब्धयो बाणबाणाः॥ ७॥

अन्वयः-खेन्द्रदेवाः रवौ, नभः बाणचन्द्राः नखाः च विपाते, षट् अर्काः युगाक्षाः वृत्ते गृहाद्यं पाक्षिकं चालनं (स्यात्) । नभः अक्षाब्धयः बाणबाणाः दिनाद्ये (चालनं भवति) ॥ ७ ॥

भाषा-शून्य० राशि १४ अंश ३३ घडी ये सूर्यका पंदरह दिनका चालन है शून्य० राशि १५ अंश २० कलायें व्यगुका पंदरह दिनका चालन है ६ राशि १२ अंश ५४ कला ये वृत्तका पंदरह दिनका चालन है और शून्य० वार ४५ घडी ५५ पल ये वार आदिका पंदरह दिनका चालन है ॥ ७ ॥

पाक्षिकचालनचक्रम्.				
नाम	सूर्य	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	०	०	६	० वा.
अंश	१४	१५	१	० घ.
कला	३३	२०	५४	४५ प.
विकला	०	०	०	५५

अब छः महीनोंके चालनको कहते हैं।

शरा वेदपक्षा भुजङ्गाग्नयोर्के व्यगौ षट् कृताः कुश्च षाण्मासिकं स्यात्। शरा वार्धयस्त्रीषवो भादि वृत्ते दिनाद्ये तिथेर्द्वौ भवा भूर्दिनाद्यम् ॥ ८॥

अन्वयः-शराः वेदपक्षाः भुजङ्गाग्नयः अर्के षट् कृताः कुः च व्यगौ शराः वार्द्धयः त्रीषवः वृत्ते भादि षाण्मासिकं (चालनं)स्यात् । द्वौ भवाः भूः तिथेः दिनाद्ये दिनाद्यं (स्यात्) ॥ ८ ॥

भाषा—५ राशि २४ अंश ३८ कला ये सूर्यका छः महीनोंका चालन है और ६ राशि ४ अंश १ कला यह व्यगुका छः महीनोंका चालन है ५ राशि ४ अंश ५३ कला ये वृत्तका छः महीनोंका चालन है और २ वार ११ घडी १ पल ये वार आदिका छः महीनोंका चालन है ॥ ८ ॥

षाण्मासिकचालनचक्रम्।				
नाम	सूर्य	राहु	वृत्त	वारादि
राशि	५	६	५	०
अंश	२४	४	४	२ वा.
कला	३८	१	५३	११ घ.
विक०	०	०	०	१ प.

अब इष्ट तिथि बनानेके प्रकारको कहते हैं।

अभिमततिथिसिद्धयै प्राक्परे यास्तु तिथ्यः स्वयुगरसलवोनाश्चालनं स्यादिनाद्ये। स्वयुगगुणलवोनाः स्याल्लवाद्यं दिनेशे स्वगुणनवलवोना विश्वनिघ्नाश्च वृत्ते ॥ ९ ॥

अन्वयः—याः प्राक् परे तिथ्यः (स्युः ताः) अभिमततिथिसिद्धयै स्वयुगरसलवोनाः दिनाद्ये चालनं स्यात्। स्वयुगगुणलवोनाः (ताः) दिनेशे लवाद्यं (चालनं) स्यात्। स्वगुणनवलवोनाः विश्वनिघ्नाः च (ताः) वृत्ते (चालनं स्यात्) ॥ ९ ॥

भाषा—वांछित तिथि बनानेके लिये पूर्णिमासे पहले अथवा पश्चात् जितनी इष्ट तिथि हों उन्होंमें ६४ का भाग दे जो लब्ध हो उसे इष्ट तिथियोंमें घटानेसे वार आदिमें चालन होता है फिर इष्ट तिथियोंमें ३० का भाग देकर जो लब्ध हो उसे इष्ट तिथिमें ऊन करनेसे जो बचे वही तिथि सूर्यमें अंश आदि चालन होती है और उन्हीं तिथियोंको तेरहसे गुणाकर फिर उसमें उसीका ९३

वां हिस्सा ऊन करे और शेषको वृत्तमें धन अथवा ऋण करे शुक्लपक्षमें तिथि हो तो ऋण और कृष्णपक्षमें धन करे ॥ ९ ॥

अब तिथि बनानेके लिये वृत्तका फल और सूर्यके मन्द केन्द्रका फल इन्होंके बनानेके प्रकार-को कहते हैं ।

अत्यष्टचष्टिवृषार्कगोशरदृशः खण्डानि तैर्वृत्तदो-
र्भागत्रीन्दुलवप्रमैक्यमगतघ्नोच्छिष्टविश्वांशयुक्।
प्राग्वत्स्यात्स्वमृणं फलं त्विति रवेः केन्द्राद्यदन्यच्च
तद्व्याप्तं स्वाङ्गलवोनितं कुरु तयोः कार्य्या पुनः
संस्कृतिः ॥ १० ॥

अन्वयः-अत्यष्टचष्टिवृषार्कगोशरदृशः खण्डानि(स्युः)तैः वृत्तदोर्भागत्रीन्दु-लवप्रमैक्यं (कृत्वा) अगतघ्नोच्छिष्टविश्वांशयुक् प्राग्वत् स्वम् ऋणं फलं स्यात् । इति तु अन्यत् च केन्द्रात् रवेः यत् (फलं तत् साध्यम्) । तद्व्याप्तं स्वाङ्गलवोनितं कुरु पुनः तयोः संस्कृतिः कार्य्या ॥ १० ॥

भाषा-(सत्तरह, सोलह, चौदह, बारह, नौ, पांच और दो ये वृत्तका फल बनानेके लिये खण्डे होते हैं) फिर वृत्तके भुजके

१	२	३	४	५	६	७
१७	१६	१४	१२	९	०५	०२

अंशोंमें १३ का भाग देनेसे जो फल मिले उसके समान गतखण्डोंका योग करे फिर भोग्य खण्डा अर्थात् उन्होंसे अगले खण्डेसे तेरहका भाग देनेसे जो शेष रहा हो उसको गुणा करे फिर उसमें तेरहका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें गत खण्डोंके योगको युत करे फिर पहलेके समान मेष आदि छः राशिमें वृत्त फल धन होता है और तुला आदि छः राशिमें स्थित हो तो फल ऋण होता है और सूर्यके मन्द केन्द्रके भुजके अंशोंमें तेरहका भाग देनेसे जो फल मिले उसके समान गत खण्डोंका योग करे फिर भोग्य खण्डेसे शेषको गुणा करे फिर उसमें तेरहका भाग

देनेसे जो फल मिले उसमें गत खण्डोंके योगको युत करे फिर इसमें दोका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें अपना छठा हिस्सा ऊन करनेसे सूर्यका फल होता है फिर इसका और वृत्तफलका संस्कार करे ॥ १० ॥

अथ उदाहरण।

वृत्त १।२५।३।५२ है और इसका यही भुज है फिर इसके अंश ५५।३।५२ हुए इनमें १३ का भाग देनेसे फल ४ मिला शेष ३।०३।५२ अंशादि बचे फिर फल ४ के समान गत खण्ड १७+१६+१४+१२ का योग ५९ हुआ फिर अगले पांचवें भोग्य खण्डे ९ से शेष ३।३।५२ को गुणा दिया तो २७।३४।४८ हुए फिर इसमें १३ का भाग देनेसे जो फल २।७।१७ मिला उसमें गत ४ खण्डोंके योग ५९ को युक्त किया तो वृत्त फल ६१।७।१७ हुआ और यह मेष आदि केन्द्रमें स्थिति होनेके कारण धन हुआ और राश्यादि मध्यम सूर्य ६।२९।५८।१९ को सूर्यके मंदोच्च २।१८ राश्यादिमें घटा दिया तो रविका मंदकेन्द्र ७।१८।१।४१ हुआ इसके भुजके अंश किये तो ४८।१।४१ हुए इनमें १३ का भाग देनेसे फल ३ मिला और शेष बचा ९।०१।४१ फिर फल तीनके समान गतखण्ड १७+१६+१४ का योग ४७ हुआ फिर भोग्य खण्डे १२ से शेष अंशादि ९।१।४१ को गुणा दिया तो १०८।२०।१२ हुए फिर इसमें १३ का भाग देनेसे लब्धि अंशादि ८।२०।० मिली इसमें गतखण्डोंके योग ४७ को युत किया तो अंशादि ५५।२०।० हुए फिर इन्होंमें दोका भाग दिया तो फल २७।४०।० मिला फिर इसमें इसके छठे हिस्से अर्थात् इसमें ६ का भाग देकर जो फल ४।३६।४० मिला इसको घटा दिया तो सूर्यका मंद फल २३।३।२० हुआ यहां रवि मंद केन्द्र तुला आदिमें स्थित है इसलिये यह ऋण है फिर दोनों फलोंका संस्कार किया तो अंशादि वृत्त फल धन ६१।०७।१७ में सूर्य

मन्द फल ऋण २३।०३।२० अंशादिको घटाया तो ३८।३।५७ हुए ॥

अब हार बनानेके प्रकारको कहते हैं।

वृत्तैष्यदलाद्रसाप्तियुक्ता रहिताः कर्किमृगादिके च वृत्ते। सगुणांशखवह्नयो हरः स्यादथ सूर्य्याच्चर-मुक्तपूर्ववत्स्यात् ॥ ११ ॥

अन्वयः-सगुणांशखवह्नयः कर्किमृगादिके वृत्ते वृत्तैष्यदलात् रसाप्ति-युक्ताः रहिताः च हरः स्यात् अथ सूर्य्यात् उक्तपूर्ववत् चरं स्यात् ॥११॥

भाषा-वृत्तके भोग्य खण्डेमें छःका भाग देनेसे जो फल मिले उसको कर्क आदि छः राशिमें वृत्त हो तो ३०।२०- अंशादिमें युत करे मकर आदि छः राशिमें हो तो ऊन करे फिर सूर्यपरसे कही हुई रीतिसे चर और दिनमान बनावे ॥ ११ ॥

अथ उदाहरण।

वृत्तके भोग्य खण्डे ९ में छःका भाग दिया तो फल अंशादि १।३० मिला इसको ३०।२० अंशादिमें वृत्तके मकर आदि छः राशिमें स्थित होनेसे ऊन किया तो हार २८।५० अंशादि हुआ मध्यम सूर्य ६।२९।५८।१९ है अयनांश १८।१० है इसलिये सायन सूर्य ७।१८।८।१९ हुआ इसपरसे कही हुई रीतिसे धन चर ८४ मिला ॥

अब तिथि बनानेके प्रकारको कहते हैं।

नाड्यः स्युः फलसंस्कृतिर्दशहता हारोद्धृताथो चरं सायंलक्षणकं त्वथो विघटिकाः पश्चाद्दृणं प्राग्घ-नम्। स्वांश्यूनान्तरयोजनान्यथ तिथिः स्पष्टा त्रिभिः संस्कृता तत्संस्कारघटीसमाश्च कलिका देया व्यगौ चोष्णगौ ॥ १२ ॥

अन्वयः–फलसंस्कृतिः दशहृता (ततः) हारोद्धृता (सती) नाड्यः स्युः। अथो चरं सायंलक्षणकं (स्यात्); अथो तु स्वांघ्र्यूनान्तरयोजनानि विघटिकाः पश्चात् ऋणं प्राक् धनं (स्यात्); अथ च त्रिभिः संस्कृता तिथिः स्पष्टा (स्यात्) तत्संस्कारघटीसमाः कलिकाः व्यगौ उष्णगौ च देयाः ॥ १२ ॥

भाषा–फलोंके संस्कारको दश गुणा करनेसे और हारका भाग देनेसे फल घडी होती हैं यह प्रथम फल है और चरमें ६० का भाग देकर कलादि कर ले और जो चर धन हो तो उसको ऋण माने और ऋण हो तो धन माने यह द्वितीय फल है और मध्य रेखाके देशान्तर योजनके चतुर्थांशको उसीमें घटावे जो बचे वह रेखासे पश्चिमनगर हो तो ऋण और पूर्व हो तो धन माने यह तीसरा फल है ऐसे इन तीन फलोंसे संस्कार की हुई मध्यम तिथि स्पष्ट होती है और मध्यम सूर्य और व्यगुमें इन तीनों फलोंका संस्कार करनेसे सूर्य और व्यगु स्पष्ट तिथिके अंतके होते हैं॥१२॥

अथ उदाहरण।

दोनों फलोंके संस्कार ३८।३।५७ को १० से गुणा किया तो अंशादि ३८०।३९।३० हुए फिर इसमें हर २८।५० का भाग देनेसे फल घडी आदि १३।१२ मिला दोनों फलोंका संस्कार धन है इसलिये यहभी धन हुआ और चर धन ८४ है इसलिये ऋण ८४ चर हुआ यह प्रथम संस्कार है इसमें ६० का भाग देकर कलादि कर लीं तो १।२४ हुई और देशांतर योजन ६४ में अपने चौथे हिस्से १६ को घटा दिया तो देशांतर विकला ४८ हुए यह तृतीय फलसंस्कार है और मध्यरेखासे अपना नगर पूर्व दिशामें स्थित है इसलिये धन हुआ अब प्रथम फल धन घटी आदि १३।१२ और तृतीय संस्कारकी धन विकला ४८ का योग किया तौ १४।० हुए इनमेंसे द्वितीय संस्कार ऋण १।२४ कलादिको घटाया तो घडी १२।३६ मिलीं इन्होंको पहले कही हुई वार आदि तिथि ५।२०।८ युत करनेसे बृहस्पतिवारके दिन स्पष्ट तिथि

पूर्णिमा घडी ३२ पल ४४ हुई फिर घडी १२।३६ को मध्यम सूर्य ६।२९।५८।१९ में जोडा तो स्पष्ट तिथिके अंतका मध्यम सूर्य ७।०।१०।५५ हुआ और फिर १२।३६ को व्यगु ५।२५।८।१५ में जोडा तो स्पष्ट तिथिके अंतका व्यगु ५।२५।२०।५१ हुआ ॥

अब व्यगु और सूर्य इन्होंका स्पष्टीकरण कहते हैं ।

स्वस्वार्हल्लवमिनजं फलं युगघ्नं लिप्तास्ताः कुरु च तयोः स्फुटौ च तौ स्तः ।

अन्वयः-इनजं फलं स्वस्वार्हल्लवं युगघ्नं लिप्ताः (स्युः) ताः च तयोः कुरु (तदा) च तौ स्फुटौ स्तः ॥

भाषा-सूर्यके मन्द फलको चारसे गुणा करे फिर उसमें उसके चौवीसवें हिस्सेको अर्थात् उसमें २४ का भाग देकर जो फल मिले उसको युत करनेसे फल कला होता है और जो सूर्यका मंद फल ऋण हो तो ये कला ऋण और सूर्यका फल धन हो तो ये कला धन होती हैं और इन कलाओंका व्यगु और सूर्यमें संस्कार करनेसे व्यगु और सूर्य स्पष्ट होते हैं ॥

चन्द्रबिंबसाधनकी रीति ।

त्रिव्यंशद्वियुतहरः कृशानुभक्तश्चन्द्रस्य प्रभवति बिम्बमङ्गुलाद्यम् ॥ १३ ॥

अन्वयः-त्रिव्यंशद्वियुतहरः कृशानुभक्तः चन्द्रस्य अंगुलाद्यं बिम्बं प्रभवति ॥ १३ ॥

भाषा-और हारमें तीसरे हिस्सेसे ऊन ऐसे दो अर्थात् १।४० को युत करे फिर उसमें तीनका भाग देनेसे जो मिले वह अंगुल आदि चंद्रमाका बिंब होता है ॥ १३ ॥

अथ उदाहरण ।

सूर्यके मंद फल २३।३।२० को चारसे गुणा किया तो ९२।

---

१ " वेदघ्नं तरणिफलं सासिद्धभागम् " इत्यपि पाठः ।

१३।२० हुए फिर इसमें अपने २४ वें हिस्से ३।५०।३३ को युत किया तो इसके ऋण अंशादि १।३६।३ हुए फिर इन्होंका मध्यम सूर्य ७।००।१०।५५ में संस्कार किया अर्थात् ऋण किया तो स्पष्ट सूर्य ६।२८।३४।५२ हुआ फिर १।३६।३ मध्यम व्यगु ५।२५।२०। ५१ में ऋण किया तो स्पष्ट व्यगु ५।२३।४४।४८ हुए ॥

अथ उदाहरण।

फिर हार २८।५० में अपने तीसरे हिस्सेसे ऊन दो अर्थात् १।४० को युत किया तो ३०।३० हुए फिर इन्होंमें तीनका भाग देनेसे अंगुल आदि चन्द्रमाका बिंब १०।१० हुआ ॥

अब सूर्यका बिंब और भूभाबिंब इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

खाब्ध्याप्तार्का गतदलयुतोनाः स्वकेन्द्रे कुलीर-
नक्राद्ये स्याद्व्यरिलवभवा अङ्गुलाद्यर्कबिम्बम्।
हारो वीषुः स्वतिथिलवयुक्स्यात्कुभास्यां धनर्णं
खाक्षाप्तार्कागतदलमथो नक्रककर्कादिकेन्द्रे ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्वकेन्द्रे कुलीरनक्राद्ये (सति) व्यरिलवभवाः खाब्ध्याप्तार्काः गतदलयुतोनाः (सन्तः) अंगुलादि अर्कबिम्बं स्यात्। अथो वीषुः हारः स्वतिथिलवयुक् कुभा स्यात्। अस्यां खाक्षाप्तार्कागतदलं नक्रक-र्कादिकेन्द्रे धनर्णं (कार्य्यं तत् भूभाबिम्बं भवति) ॥ १४ ॥

भाषा—सूर्यके मंद फल साधते समय जो भोग्य खण्ड मिला था उसमें ४० का भाग देनेसे जो फल मिले वह अंगुलादि है उसको एकके छठे हिस्सेसे ऊन ऐसे ग्यारह अर्थात् १०।५० में सूर्यका मंद केन्द्र कर्क आदि छः राशिमें हो तो युत और मकर आदि छः राशिमें हो तो ऊन करनेसे सूर्यका बिंब होता है और हारमें पांच अंश घटाकर इसमें अपने १५ वें हिस्सेको युत करनेसे भूमिकी छाया होती है फिर सूर्यका फल साधन करनेमें जो भोग्य

खण्ड है उसमें ५० का भाग देनेसे जो फल मिले उसको भूमिकी छायामें सूर्यका मंद केन्द्र कर्क आदि छः राशिमें हो तो ऊन और मकर आदि छः राशिमें हो तो युत करनेसे भूमिकी छायाका बिंब होता है ॥ १४ ॥

अथ उदाहरण ।

सूर्यके भोग्य खण्ड १२ हैं इसमें ४० का भाग नहीं लगता इसलिये इसे ६० से गुणा किया तो ७२० भये इनमें चालीसका भाग देनेसे फल अंगुलादि ०।१८ मिला फिर रविका मंद केन्द्र कर्कादि ६ राशिके भीतर है इसलिये ०।१८ को एकके छठे हिस्सेसे ऊन ग्यारह अर्थात् १०।५० में युत किया तो सूर्यका बिंब ११।८ हुआ फिर हार २८।२० में पांच अंश घटा दिये तो अंशादि २३।५० रहे फिर इसमें इसके १५ वें हिस्से १।३५ को युत करनेसे भूमिकी छाया २५।२५ हुई फिर सूर्यके फलसाधनमें जो भोग्य खण्ड १२ मिला था इसमें ५० का भाग नहीं लगता इसलिये ६० गुणा किया तो ७२० हुए इनमें ५० का भाग दिया तो फल अंगुलादि ०।१४ मिला इसको भूमिकी छाया २५।२५ में सूर्य मन्द केन्द्रके कर्क आदि छः राशिमें स्थित होनेसे ऊन किया तो भूमिकी छायाका बिंब २५।११ मिला ॥

अब ग्रहणके संभवको कहते हैं ।

ज्ञात्वैवं तिथिपूर्वकं ग्रहणजं शेषं भवेत्पूर्ववत्
षण्मासैरुत पक्षवर्जितयुतैः पक्षेऽथ वालोकयेत् ।
अर्केन्दुग्रहणं व्यगोर्भुजलवैस्तिथ्यल्पकैरुष्णगो-
र्याम्यैर्वस्वधरैर्द्युरात्रिगतिथौ चाहर्निशामाश्रिते॥१५॥

अन्वयः-एवं तिथिपूर्वकं ज्ञात्वा शेषं ग्रहणजं पूर्ववत् भवेत् । अर्केन्दुग्रहणं षण्मासैः उत पक्षवर्जितयुतैः अथवा पक्षे आलोकयेत् । व्यगोः भुजलवैः तिथ्यल्पकैः (सद्भिः अर्केन्दुग्रहणं स्यात्) । उष्णगोः याम्यैः (व्यगुभुजांशैः) वस्वधरैः (सद्भिः अर्कग्रहणं स्यात्) ।

द्युरात्रिगतिथौ (सत्यां अर्थात् सूर्यग्रहणं तु दिवातिथौ सत्यां भवति चन्द्र-ग्रहणं तु रात्रौ तिथौ सत्यां भवति) अहर्निशाम् आश्रिते (सति) च (ग्रहणं ग्रस्तोदिते ग्रस्तास्ते वा स्यात्) ॥ १५ ॥

भाषा–पूर्व कही हुई रीतिसे पहले तिथि व्यगु आदिको बनावे फिर शेष रहे स्थिति शर इन्होंको चंद्रमाके ग्रहणाधिकारमें कही हुई रीतिसे बनावे और सूर्यचन्द्रमाका जिस दिन ग्रहण हो उस दिनसे छः महीनोंमें अन्य ग्रहणको देखे अथवा साढे पांच महीनोंमें देखे अथवा पंदरह दिनमें देखे अथवा साढे छः महीनोंमें ग्रहणको देखे और पहले जिस तिथिमें ग्रहण हो उस दिनके व्यगु सूर्य तिथि इन्होंको बनावे फिर उन्होंमें पंदरह दिनका चालन धन देवे फिर वहां ग्रहण देखे जो वहांभी ग्रहण न होवे तो वहांसे व्यगु आदिमें छः महीनोंका धन चालन देके ग्रहण देखे जो वहांभी ग्रहण नहीं हो तो फिर १५ दिनका ऋण चालन देवे और जो वहांभी ग्रहण नहीं हो तो फिर पंदरह दिनका धन चालन देवे ऐसे अगाडी वारंवार चालन करके ज्योतिषी ग्रहणको देखे और जहां व्यगुके भुजके अंश १५ अंशोंसे अल्प हों वहां सूर्य अथवा चन्द्रमाका ग्रहण होता है और दक्षिण दिशाके व्यगुके भुजके अंश आठसे अल्प हों और दिनमानसे तिथिका मान ऊन हो तो सूर्यका ग्रहण होता है ग्रहणका संभव हो और अमावास्या तिथि पूरी ग्रहण शुद्धिपर्यन्त दिनमें हो तो सूर्य ग्रहण होता है (और जो व्यग्वर्कके भुजांश ८ अंशसे अधिक हों तो ग्रहण नहीं होता) और इसी प्रकार पूर्णिमा तिथि रात्रिमें हो तो चन्द्रमाका ग्रहण होता है और जो तिथिका अंतर रात्रि और दिनके आसरे हो अर्थात् अमावास्या और पूर्णिमा दिनमें थोडी २ हों तो ग्रस्तोदित अथवा ग्रस्तास्त ग्रहण होता है ॥ १५ ॥

अब चन्द्रमाके ग्रास बनानेकी रीतिको कहते हैं।

सत्र्यंशगुणोनितो हरोऽयं वेदघ्नोङ्कहृतो व्यगोर्भु-

जांशैः । हीनो भवताडितोऽद्रिहृत्स्याच्छन्नं शीतरुचोंगुलादिकं वा ॥ १६ ॥

अन्वयः-सत्र्यंशगुणोनितः अयं हरः वेदघ्नः अङ्कहृतः व्यगोः भुजांशैः हीनः भवताडितः अद्रिहृत् शीतरुचः अंगुलादिकं छन्नं स्यात् ॥ १६ ॥

भाषा-हरमें एकके तीसरे हिस्से २० से युत तीन अर्थात् ३।२० को ऊन करे फिर उसको चारसे गुणा करके उसमें ९ का भाग देनेसे जो फल मिले उसमें व्यगुके भुजके अंशोंको घटा देवे (और जो वह फल व्यगुके भुजके अंशोंमें नहीं घटे तो चंद्रमाका ग्रहण नहीं होगा ऐसे जाने) फिर फलसे ऊन व्यगुके भुजके अंशोंको ग्यारहसे गुणा करे फिर उसमें सातका भाग देनेसे अंगुल आदि चंद्रमाका ग्रास होता है ॥ १६ ॥

अथ उदाहरण ।

हर अंशादि २८।५० में एकके तीसरे हिस्सेसे युत तीन अर्थात् अंशादि ३।२० को ऊन किया तो २५।३० अंशादि रहे फिर इन्होंको चारसे गुणा किया तो अंशादि १०२।० हुए फिर इन्होंमें ९ का भाग देनेसे फल अंशादि ११।२० मिला इसमें व्यगुके भुजके अंश ६।१५।१२ अंशादिको ऊन किया तो अंशादि ५।४।४८ रहे फिर इन्होंको ग्यारहसे गुणा किया तो ५५।५२।४८ अंशादि हुए फिर इन्होंमें सातका भाग देनेसे अंगुल आदि चंद्रमाका ग्रास ७।५८ अंगुलादि मिला ॥

ग्रस्तोदय अर्थात् ग्रस्त हुआ जो उदय हो वह ग्रस्तोदय कहलाता है और ग्रस्तास्त अर्थात् ग्रस्त हुआ जो अस्त हो वह ग्रस्तास्त कहलाता है अब ग्रस्तोदय अथवा ग्रस्तास्त सूर्यके ग्रहणमें नत घडियोंके जाननेके प्रकारको कहते हैं ।

जितनी रात्रि रही हो अथवा जितनी रात्रि बीती हो उन्होंमें सूर्यका ग्रहण हो तो जितनी घडियोंपै रात्रि शेषमें अथवा गत

रात्रिमें सूर्यका ग्रहण हो उतनी घडियोंको दिनार्द्धमें युत करके क्रमसे पूर्व पश्चिम नत होती है ॥

अब सूर्यके ग्रहणमें स्थूल ग्रास बनानेके प्रकारको कहते हैं।

अमान्तनतनाडिकांघ्रिरहिताद्युतात्प्राक्परे गृहादिकरवेर्नतांशकरसांशसंस्कारिताः। व्यगोर्भुजलवाः स्फुटाः स्युरथ सप्तशुद्धाश्च ते निजार्द्धसहिता रवेः स्थगितमङ्गुलाद्यं स्फुटम् ॥१७॥

अन्वयः—अमान्तनतनाडिकांघ्रिरहितात् प्राक् गृहादिकरवेः परे युतात् नतांशकरसांशसंस्कारिताः व्यगोः भुजलवाः स्फुटाः स्युः अथ च ते सप्तशुद्धाः निजार्द्धसहिताः रवेः स्फुटम् अंगुलाद्यं स्थगितं (स्यात्) ॥ १७ ॥

भाषा—पूर्वांतकालकी जो नतकी घडी हैं उन्होंमें ४ का भाग देनेसे जो चतुर्थांश मिले उसे जो पूर्व नत हो तो राश्यादि स्पष्ट सूर्यमें ऊन और पश्चिम नत हो तो युत करे फिर उसकी क्रांतिमें अक्षांशका संस्कार करे तो नतांश होते हैं फिर उन नतांशोंके छठे हिस्सेको व्यगुके भुजके अंशोंमें संस्कार अर्थात् एक दिशामें योग और भिन्न दिशामें अंतर करनेसे स्पष्ट भुजके अंश होते हैं उन्होंको सातमें घटा देवे फिर उन्होंमें अपने आधेको युत करनेसे अंगुल आदि स्पष्ट सूर्यका ग्रास होता है और इसका उदाहरण सूर्यग्रहणाधिकारमें दिखा चुके हैं ॥ १७ ॥

अब पर्वोंके स्वामियोंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

व्यगुमध्यपर्य्ययगणो द्विगुणो वणिगादिगे व्यगुगृहे कुयुतः। स्मृतचक्रसंज्ञकयुतो विधितो गतपर्वपो मुनिहृतोर्वरितः ॥ १८ ॥

अन्वयः—व्यगुमध्यपर्य्ययगणः द्विगुणः (कार्य्यः) व्यगुगृहे वणिगादिगे

(सति) कुयुतः (कार्य्यः, ततः) स्मृतचक्रसंज्ञकयुतः (ततः) मुनिहृतोर्वरितः (सन्) विधितः गतपर्वपः (स्यात्) ॥ १८ ॥

भाषा-क्षेपक और चक्रसे गुणे हुएसे युत व्यगुके भगणको दो गुणा करे और जो तुला आदि छः राशियोंमें व्यगुकी राशि हो तो एक युत करे ओर मेषादिमें न करे फिर उसमें चक्रको युत करे फिर उसमें सातका भाग देनेसे जो शेष रहे वह ब्रह्मासे आदि लेके ग्रहणका स्वामी होता है अर्थात् ब्रह्मा, चन्द्रमा, इन्द्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यमराज ये सात देवता क्रमसे ग्रहणके स्वामी हैं ॥ १८ ॥

अथ उदाहरण ।

व्यगुके भगण १० को दो गुणा किया तो २० हुए यहां तुला आदि छः राशिमें व्यगुकी राशि है इसलिये इसमें एक युत किया तो २१ हुए फिर इन्होंमें चक्र ८ को युत किया तो २९ हुए फिर इन्होंको सातसे तष्टित किया तो शेष १ रहा इसलिये यहां ग्रहणका स्वामी ब्रह्मा है और यहां ग्रहणके स्वामीका प्रयोजन शुभ अशुभ फल कहनेके लिये है ॥

अब स्पष्ट चंद्रमा और चंद्रमाकी स्पष्ट गति इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

तिथिरविहतिरंशास्तद्युतोर्कों विधुः स्या-
दथ जिनगुणहारो द्व्यङ्गयुक्तद्गतिः स्यात् ।
खचरशरकलाः स्यात्सूर्य्यभुक्तिस्ततः स्यु-
र्भयुतिजगतगम्या नाडिकास्तिथ्यपायात् ॥ १९ ॥

अन्वयः-तिथिरविहतिः अंशाः (स्युः) तद्युतः अर्कः विधुः स्यात् । अथ जिनगुणहारः द्व्यङ्गयुक् तद्गतिः स्यात् । खचरशरकलाः सूर्य्यभुक्तिः स्यात् । ततः भयुतिजगतगम्याः नाडिकाः तिथ्यपायात् स्युः ॥ १९ ॥

भाषा-तिथिको बारहसे गुणा करनेसे अंश होते हैं फिर इन अंशोंको स्पष्ट सूर्यमें युत करनेसे स्पष्ट चंद्रमा होता है और हार-

को २४ से गुणा करे फिर उसमें ६२ युत करनेसे चंद्रमाकी गति होती है और ५९ कला सूर्यकी स्पष्ट गति होती है नक्षत्र और योग इन्होंसे उत्पन्न हुई गत अथवा एष्य घडी इन्होंको तिथिके अंतकी घडियोंमें संस्कार करनेसे सूर्यके उदयसे नक्षत्र और योगकी घडी होती हैं ॥ १९ ॥

अथ उदाहरण ।

तिथि १५ को १२ से गुणा किया तो अंश १८० हुए फिर इन अंशोंको स्पष्ट सूर्य ६।२८।३४।५२ में युत किया तो चंद्रमा ०।२८।३४।५२ हुआ और हार २८।५० को २४ से गुणा किया तो फलादि ६९२।० हुए फिर इन्होंमें ६२ युत किये तो चंद्रमाकी गति ७५४।० हुई । तिथिके अंतकी घडी ३२।४४ कृत्तिका नक्षत्रकी गत घडी ९।८ एष्य घडी ५४।३१ और वरियान योगकी गत घडी ४६।२८ एष्य घडी १२।३३ मिली ॥

अब मासगण अर्थात् महीनोंके समूहपरसे सूर्यग्रहण बनानेके उदाहरणको कहते हैं ।

संवत् १६६९ शाके १५३४ में वैशाख कृष्ण अमावस ३० बुधवार घडी २६।८ है रोहिणी नक्षत्र घडी ३४।५७ और धृति योग घडी ४२।२९ है इसपरसे चक्र ८ और मासगण ५१ मिला इन्होंको दो गुणा किया तो १०२ हुए इन्होंमें ६७ का भाग देनेसे फल राशि आदि १।१५।४०।१७ मिला इसमें मासगणको घटा दिया तो १।१४।१९।४३ हुए फिर इसमें चक्रसे गुणे हुए ध्रुवे अंशादि १३।२०।०० को घटा दिया तो १।०।५९।४३ हुए फिर इन्होंमें क्षेपक ४।२१।०० को युत किया तो पूर्णिमाके अंतकालका सूर्य १।५।२०।४३ हुआ फिर इसमें १५ दिनका चालन ०।१४।३३ दिया तो अमावसके अंतमें सूर्य १।१९।५३।४३ हुआ॥

अब व्यगु बनानेका उदाहरण ।

कही हुई रीतिसे पूर्णिमाके अंतमें व्यगु ११।२१।६।४५ हुआ

इसमें पंदरह दिनका चालन अंशादि १५।२०।०० युत किया तो मासके अंतमें व्यगु ०।६।२६।४५ हुआ ॥

अब वृत्त बनानेका उदाहरण ।

कही हुई रीतिसे पूर्णिमाके अंतमें वृत्त ८।२०।१०।४३ मिला इसमें पक्षका चालन राश्यादि ६।१२।५४।०० युत किया तो अमावसके अंतमें वृत्त ३।३।४।४३ हुआ ॥

अब वार बनानेका उदाहरण ।

कही हुई रीतिसे पूर्णिमाके अंतमें वार आदि ३।९।७ मिले इन्होंमें पक्षका चालन वारादि ०।४५।५५ युत किया तो अमावसके अंतमें वार आदि ३।५५।२ हुए और वृत्तका फल धन ७४।२२। २१ अंशादि हैं सूर्यके मन्द केन्द्र ०।६।२८।१७ परसे सूर्यका मंद फल धन १४।४१।४० अंशादि मिला और यहां दोनों फलोंका योगभी धन ८९।४।१ अंशादि मिला और वृत्तका एष्य खण्ड २ और हार ३०।४० अंशादि मिला और सूर्यपरसे ऋण चर १०८ हुआ फिर कही हुई रीतिसे धन चर १०८ हुआ फिर दोनों फलोंके योग ८९।४।१ यह फलद्वय संस्कार हुआ इसको दश गुणा किया तो अंशादि ८९०।४०।१० हुए फिर इन्होंमें हार अंशादि ३०।४० का भाग देनेसे धन फल २९।२ मिला क्योंकि ऊपरके दोनों संस्कार धन थे फिर देशांतर योजन ६४ को अपने चौथे हिस्से १६ से ऊन किया तो देशांतर पल धन ४८ मिले क्योंकि यहां मध्यरेखासे नगर पूर्व दिशामें है और यहां तीनों फलोंका संस्कार किया तो घडी धन ३१।३८ हुआ इनमें तिथि ३।५५।२ को युक्त किया तो ४।२६।४० हुए अर्थात् बुधवारको अमावस २६।४० आई । और तीनों फलोंका योग ३१।३८ घटयादि है इसका संस्कार मध्यम सूर्य १।१९।५३।४३ में किया तो पर्वान्त कालका मध्यम सूर्य १।२०।२५।२१ हुआ इसमें व्यगु ०।०६।२६। ४५ में फलत्रय योग ३१।३८ को जोडा तो ०।६।५८।२३ यह पर्वान्त

कालका स्पष्ट व्यगु हुआ फिर सूर्यके मन्द फल १४।४१।४० को चारसे गुणा दिया तो ५८।४६।४० हुए फिर इन्होंमें अपना चौवीसवां हिस्सा २।२६।५६ युत किया तो कला ६१ विकला १३ हुई सूर्यका फल धन है इसलिये यह कलाभी धन हुई इन्होंको मध्यम सूर्य १।२०।२५।२१ में जोडा तो स्पष्ट सूर्य १।२१।२६। ३४ हुआ और व्यगु ०।०६।५८।२३ में युत किया तो स्पष्ट व्यगु ०।७।५९।३६ हुआ और कही हुई रीतिसे चंद्रमाका बिंब अंगुलादि १०।३६ हुआ ॥

अब सूर्यके बिंब बनानेके प्रकारको कहते हैं।

सूर्यका फल बनानेमें भोग्य खण्डा १४ है इसमें ४० का भाग देनेसे फल ०।२१ मिला इसको एकके छठे हिस्सेसे ऊन ग्यारह १०।५० में घटा दिया तो अंगुल आदि सूर्यका बिंब १०।२९हुआ॥

अब सूर्यके ग्रास बनानेका उदाहरण।

यहां अमावसका अंत २६।४० है इसमें दिनार्द्ध १६।३८ घटाया तो पश्चिम नत ९।५२ हुई इसमें चारका भाग देनेसे राशि आदि २।१४।०० हुए और यहा नत पश्चिम है इसलिये इसको सूर्यमें युत किया तो सूर्य४।५।२६।३४ हुआ और इसकी क्रांति उत्तर१३। ५२।२२ हुई और अक्षांश २५।२६।४२ दक्षिण दिशाके हैं इन दोनोंका संस्कार किया तो दक्षिण दिशाके नतांश ११।३४।२० हुए इसका छठा हिस्साभी दक्षिण दिशाका १।५५।४३ है और व्यगु भुजके अंश उत्तर दिशाके ७।५९।३६ हैं इन्होंमें छठे हिस्सेका संस्कार किया अर्थात् घटाया तो स्पष्ट ६।३।५३ हुए इन्होंको सातमें ऊन किया तो ०।५६।७ हुए फिर इन्होंमें अपने आधे ०। २८।३ को युत किया तो अंगुल आदि सूर्यका ग्रास १।२४ हुआ और व्यगुका मध्यमाधिकारमें भगण ६ है इसलिये ग्रहणका स्वामी यमराज हुआ फिर तिथि ३० को बारहसे गुणा दिया तो अंश ३६० हुए फिर इन्होंको सूर्यमें युत किया तो चंद्रमा १।२१।

२६।३४ हुआ और चंद्रमाकी गति ७९८ और सूर्यकी गति ५९ हुई तिथिका अंतसे रोहिणीनक्षत्रकी गत घडी ५१।३७ और एष्य घडी ८।३१ हुई धृतियोगकी गत घडी ४०।७ और एष्य घडी १५।५२ हुई ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गौड़वंशावतंस-विविधशास्त्रपरमपण्डित-श्रीराविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां सप्तमः ग्रहणद्वयसाधनाधिकारः समाप्तः ॥ ७ ॥

अथ अष्टमोऽधिकारः ।

अब पंचांगपरसे दोनों ग्रहणोंके बनानेके अधिकारको कहते हैं ।

अथवायं तिथिपत्रतोऽवगम्यः पर्वान्तश्च रविस्तमस्तिथेर्वा । भस्यैतैष्यघटीयुतिर्द्युमानं तेभ्योऽथ ग्रहणद्वयं प्रवच्मि ॥ १ ॥

अन्वयः-अथवा तिथिपत्रतः अयं पर्वान्तः रविः तमः च अवगम्यः तिथेः वा भस्य इतैष्यघटीयुतिः (अवगम्या) द्युमानं (अवगम्यं) अथ तेभ्यः ग्रहणद्वयं प्रवच्मि ॥ १ ॥

भाषा-तिथिपत्र अर्थात् पंचांगसे ग्रहणकी अंत घडी जान लेवे और ग्रहणके अंतमें सूर्यके समान राहुको जान लेवे फिर तिथिपत्रमें जो सूर्य राहु हो उन्होंको कही हुई रीतिसे ग्रहणके अंतकालमें तात्कालिक अर्थात् उस कालके बनावे फिर वहां पूर्णिमा अथवा अमावस इन्होंकी गति और एष्य घडियोंका योग करे फिर नक्षत्रकी गत एष्य घडियोंका योग जान लेवे फिर पंचांगपरसे दिनमान जान लेवे ऐसे सब तिथिपत्रपरसे जानकर उनसे मैं सूर्यचन्द्रके दोनों ग्रहणोंको कहता हूं ॥ १ ॥

अथ उदाहरण।

संवत् १६६९ शाके १५३४ में वैशाख शुक्ल पूर्णिमा सोमवारके दिन गत घडी २।३३ और रविके उदयसे एष्य घडी ५४।२० हैं और गत एष्य घडियोंका योग ५६।४३ है अनुराधा नक्षत्रकी गत घडी २०।४ और एष्य घडी ३८।३२ हैं इन्होंका योग ५८।३६ है दिनमान ३३।०६ है और पर्वके अंतकालका सूर्य १।६।३४।३७ और राहु १।१४।१८।११ है सूर्यमें राहुको घटा दिया तो व्यगु ११।२२।१६।२६ हुआ॥

अब ग्रास बनानेके प्रकारको कहते हैं।

तारासप्तव्यगतिथियातगम्यनाड़ीयोगास्ता व्यगुरविदोर्लवोनितास्ते। संयुक्ता निजदलभूपभागकाभ्यां छन्नं वाङ्गुलवदनं भवेत्सुधांशोः॥ २॥

अन्वयः–वा तारासप्तव्यगतिथियातगम्यनाडीयोगास्ताः व्यगुरविदोर्लवोनिताः ते निजदलभूपभागकाभ्यां संयुक्ताः (सन्तः) सुधांशोः अंगुलवदनं छन्नं भवेत्॥ २॥

भाषा–तिथिके गत एष्य घडियोंके योगमें सात घटावे जो बचे उसमें ६२७ का भाग देनेसे जो अंश आदि फल मिले उसको व्यगुके भुजके अंशोंमें घटा देवे फिर जो शेष बचे उसमें उसके आधेको और अपने १६ वें हिस्सेको युत करनेसे चन्द्रमाका अंगुल आदि ग्रास होता है और जो भुजके अंशोंमें फल नहीं घटे तौ ग्रहण नहीं होगा ऐसा जाने॥ २॥

अथ उदाहरण।

तिथिके गत एष्य घडियोंके योग ५६।४३ है इसमें ७ घटाये तो ४९।४३ हुए इनमें ६२७ का भाग देनेसे अंश आदि फल १२।३६।४१ मिला इसमें व्यगुके भुजांश ७।४३।३४ को ऊन किया तो ४।५३।७ हुए फिर इन्होंमें इनका

आधा २।२६।३३ और अपना सोलहवां हिस्सा ०।१८।१९ युत किया तो चंद्रमाका अंगुल आदि ग्रास ७।३७।५९ हुआ ॥

अब चंद्रमाका बिंब और भूमिकी छाया इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

अङ्गयुक्तितिथिघटीहृतबाणाङ्कर्त्तवोऽङ्गुलमुखं विधु-बिम्बम् । दिग्वियुक्तितिथिघटीहृतदृग्दृक्त्रीन्दवोऽङ्गु-लमुखा क्षितिभा स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः-अङ्गयुक्तितिथिघटीहृतबाणाङ्कर्त्तवः अंगुलमुखं विधुबिम्बं (स्यात्) । दिग्वियुक्तितिथिघटीहृतदृग्दृक्त्रीन्दवः अंगुलमुखा क्षितिभा स्यात् ॥ ३ ॥

भाषा-तिथिकी घडियोंके योगमें ६ युत करे फिर इन्हों-का ६९५ में भाग देनेसे अंगुल आदि चन्द्रमाका बिंब होता है फिर तिथिकी घडियोंके योगमें दश ऊन करे फिर इन्होंका १३२२ में भाग देनेसे अंगुल आदि भूमिकी छाया होती है ॥ ३ ॥

अथ उदाहरण ।

तिथिकी घडियोंका योग ५६।४३ में ६ युत किये तो ६२।४३ हुए फिर इन्होंका ६९५ में भाग दिया तो अंगुल आदि चंद्रमाका बिंब ११।४ हुआ फिर तिथिकी घडी ५६।४३ में दश घटा दिये तो ४६।४३ हुए फिर इन्होंका तेरह सौ बाईस(१३२२) में भाग दिया तो अंगुल आदि भूमिकी छाया २९।१७ मिली ॥

अब भूमिकी छायाके संस्कारको कहते हैं ।

रुद्रभूपनखभूपरुद्रखव्यङ्गुलैर्विरहिता युता क्रमात् । षड्गृहे सति रवौ घटात्क्रियान्नाडिकोद्भवकुभा स्फुटा भवेत् ॥ ४ ॥

अन्वयः-रवौ घटात् क्रियात् षड्गृहे सति क्रमात् रुद्रभूपनखभूप-रुद्रखव्यंगुलैः विरहिता युता नाडिकोद्भवकुभा स्फुटा भवेत् ॥ ४ ॥

भाषा–ग्यारह, सोलह, वीस, ग्यारह, शून्य ये क्रमसे भूमिकी छायामें व्यंगुल आदि संस्कार करनेके लिये हैं। सूर्य तुला आदि छः राशियोंमें स्थित हो तो क्रमसे इन खंडोंमेंसे सूर्यकी राशिके भूभा प्रति अंगुलोंमें नीचेका खंड घटा देवे और मेष आदि छः राशिमें हो तो युत करे ऐसे करनेसे स्पष्ट भूमिकी छाया होती है ॥ ४ ॥

नाम	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
प्रतिअंगुल	११	१६	२०	१६	११	०	११	१६	२०	१६	११	०

अथ उदाहरण।

यहां सूर्य वृष राशिमें है इसलिये भूमिकी छायामें सोलह व्यंगुल जोड दिये तो स्पष्ट भूमिकी छाया २८।३३ हुई ॥

अब नक्षत्रकी घडियोंपरसे चन्द्र ग्रास बनानेके प्रकारको कहते हैं।

विदशोडुघटीयुताः खभूषड् व्यगुभास्वद्भुजभाग-वर्जितास्ते। शितिकण्ठहतास्तुरङ्गभक्ताः स्थगितं चाङ्गुलपूर्वकं विधोः स्यात् ॥ ५ ॥

अन्वयः–खभूषट् विदशोडुघटीयुताः (ततः) व्यगुभास्वद्भुजभागवर्जिताः च (कार्य्याः) ते शितिकण्ठहताः (ततः) तुरङ्गभक्ताः (सन्तः) अंगुलपूर्वकं विधोः स्थगितं स्यात् ॥ ५ ॥

भाषा–नक्षत्रकी गत एष्य घडियोंके योगमें दश ऊन करे फिर उन्होंका छः सौ दशमें भाग देनेसे जो अंश आदि फल मिले उसको व्यगुके भुजके अंशोंमें घटावे फिर उन्होंको ग्यारहसे गुणा देवे फिर उसमें सातका भाग देनेसे अंगुल आदि चंद्रमाका ग्रास होता है ॥ ५ ॥

अथ उदाहरण।

नक्षत्रकी गत एष्य घडियोंके योग ५८।३६ में दश घटा

दिये तो ४८।३६ हुए फिर इन्होंका ६१० में भाग देनेसे अंश आदि फल १२।३३।५ मिला फिर इन्होंमें व्यगुके अंश ७।४३। ३४ को घटा दिया तो ४।४९।३१ हुए फिर इन्होंको ग्यारहसे गुणा किया तो ५३।४।४१ हुए फिर इन्होंमें सातका भाग देनेसे अंगुल आदि चन्द्रमाका ग्रास ७।३४ हुआ ॥

अब नक्षत्रकी घडीपरसे चन्द्रमाका बिंब और भूमिकी छाया इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

भगतागतनाडिकैक्यभक्ता नववेदर्त्तव इन्दुबिम्ब-मुक्तम् । विमनूडुघटीहृताः शराक्षद्विभुवः स्या-त्क्षितिभांगुलादिका वा ॥ ६ ॥

अन्वयः-वा भगतागतनाडिकैक्यभक्ताः नववेदर्त्तवः इन्दुबिम्बम् उक्त-म् । विमनूडुघटीहृताः शराक्षद्विभुवः अंगुलादिका क्षितिभा स्यात् ॥ ६ ॥

भाषा-नक्षत्रकी घडियोंके योगका छः सौ उनंचासमें भाग देनेसे अंगुल आदि चंद्रमाका बिंब होता है फिर नक्षत्रकी गत एष्य घडियोंके योगमें १४ घटानेसे जो शेष रहे उसका १२५५ में भाग देनेसे अंगुल आदि भूमिकी छाया होती है ॥ ६ ॥

अथ उदाहरण ।

नक्षत्रकी घडियोंके योग ५८।३६ का ६४९ में भाग देनेसे अंगुल आदि चंद्रमाका बिंब ११।४ हुआ फिर नक्षत्रकी गत एष्य घडियोंके योग ५८।३६ में १४ घटाये तो शेष ४४।३६ रहे इनका १२५५ में भाग देनेसे अंगुल आदि भूमिकी छाया २८।८ मध्यम भूछाया हुई फिर इसमें १६ व्यंगुल युत किये क्योंकि सूर्य वृषका है तो स्पष्ट भूमिकी छाया २८।२४ हुई अथवा नक्षत्रकी गत एष्य घडियोंके योग ५८।३६ में १६ घटाये तो ४२।३६ रहे इनका १२०० में भाग दिया तो भूमिकी छाया २८।१८ हुई फिर इन्होंमें सोलह व्यंगुल युत किये तो स्पष्ट भूमिकी छाया २८।३४

हुई यह स्थूल मत है। यहां पंचांगपरसे चंद्रमाके ग्रहण बनानेका प्रकार समाप्त हुआ ॥

अब सूर्यके ग्रहण बनानेके प्रकारको कहते हैं।

संवत् १६६७ शाके १५३२ में मार्गशिर कृष्ण ३० बुधवारको गत घडी ५१।५० एष्य घडी १२।५९ इन्होंका योग ६४।४९ हुआ और मूल नक्षत्रकी गत घडी १३।५४ और एष्य घडी ५२।२ इन्होंका योग ६५।५६ हुआ दिनमान २६।४ है और तिथिके अंतमें सूर्य ८।५।२६।२० और राहु २।११।४१।१८ हुए फिर सूर्यमें राहुको घटा दिया तो व्यगु ५।२३।४५।२ हुआ यहां अमावसके अंतमें पूर्व नत ३ है इसमें चारका भाग देनेसे राशि आदि ०।२२।३० हुआ यहां नत पूर्व है इसलिये इसको सूर्यमें घटा दिया तो सूर्य ८।५।३।५० और इसकी दक्षिण क्रांति २३। ४३।४० हुई यहां क्रांति और अक्षांश इन्होंका संस्कार करनेसे दक्षिण दिशाके नतांश ४९।१०।२२ हुए इसका छठा हिस्सा ८। ११।४३ यहभी दक्षिण दिशाका है और व्यगु भुजके अंश उत्तरके ६१।५६।४५ हैं इन्होंमें छठे हिस्सेका संस्कार किया तो स्पष्ट व्यगुके भुजके अंश १।५६।४५ हुए ॥

अब तिथि और नक्षत्र इन्होंकी घडियोंपरसे सूर्यके ग्रास बनानेके प्रकारको कहते हैं।

खात्यष्टयस्तिथिघटीविहृताः सवेदा वाथोडुना-
डिहृतदेवयमाः सरामाः। हीना व्यगुस्फुटलवै-
र्भवसंगुणास्ते शैलोद्धृताः खररुचः स्थगितां-
गुलानि ॥ ७ ॥

अन्वयः–तिथिघटीविहृताः खात्यष्टयः सवेदाः (कार्य्याः। ते) व्यगुस्फुटलवैः हीनाः (ततः) भवसंगुणाः ते शैलोद्धृताः (सन्तः) खररुचः स्थगितांगुलानि(स्युः)अथ वा उडुनाडिहृतदेवयमाः सरामाः(कार्य्याः। ते व्यगु-

स्फुटलवैः हीनाः ततः भक्तसंगुणाः ते शैलोद्धृताः सन्तः खररुचः स्थगितांगुलानि स्युः ॥ ७ ॥

भाषा-तिथिकी घडियोंके योगका एक सौ सत्तरमें भाग देनेसे अंश आदि फल होता है फिर उसमें चार और युत करे फिर उसमें व्यगुके स्पष्ट अंशोंको घटावे फिर उसको ग्यारहसे गुणा करे फिर उन्होंमें सातका भाग देनेसे अंगुल आदि सूर्यका ग्रास होता है अथवा नक्षत्रकी घडियोंके योगका दो सौ तेतीसमें भाग देनेसे जो अंश आदि फल मिले उसमें तीन अंश युत करे फिर उसमें व्यगुके भुजके अंशोंको ऊन करे फिर उसको ग्यारहसे गुणा करे फिर उसमें सातका भाग देनेसे अन्य प्रकारसे अंगुल आदि सूर्यका ग्रास होता है ॥ ७ ॥

अथ उदाहरण ।

तिथिकी घडियोंके योग ६४।४९ का १७० में भाग दिया तो अंश आदि फल २।३७।२२ मिला फिर इन्होंमें चार और युत किये तो ६।३७।२२ हुए फिर इन्होंमें स्पष्ट व्यगुके अंशों १।५६।४५ को घटा दिया तो ४।४०।३७ हुए फिर इन्होंको ११ से गुणा किया तो ५१।२६।४७ हुए फिर इन्होंमें ७ का भाग देनेसे अंगुल आदि सूर्यका ग्रास ७।२० हुआ अथवा नक्षत्रकी घडियोंके योग ६५।५६ का २३३ में भाग दिया तो अंश आदि फल ३।३२।१ मिला इन्होंमें तीन और युत किये तो ६।३२।१ हुए फिर इन्होंमें स्पष्ट व्यगुके अंशोंको ऊन किया तो ४।३५।१६ हुए फिर इन्होंको ग्यारहसे गुणा दिया तो ५०।२७।५६ हुए इन्होंमें सातका भाग देनेसे अन्य प्रकारसे ग्रास ७।१२ हुआ ॥

अब सूर्यका बिंब बनानेके प्रकारको कहते हैं।

रविलवयुतभानोर्दोर्लवत्र्यंशतुल्यैर्विरसलवमहेशाव्यंगुलैर्हीनयुक्ताः । अजघटरसभेकैं विम्बमस्यांगुलाद्यं स्थितिमुखमवशिष्टं पूर्ववच्छेषमत्र ॥ ८ ॥

अन्वयः—अर्के अजघटरसभे (सति) विरसलवमहेशाः रविलवयुतभानोः दोर्लवत्र्यंशतुल्यैः व्यंगुलैः हीनयुक्ताः (कार्य्याः । तत्) अस्य अंगुलाद्यं बिम्बं (स्यात्) । अत्र स्थितिमुखम् अवशिष्टं शेषं पूर्ववत् (ज्ञेयम्) ॥ ८ ॥

भाषा—स्पष्ट सूर्यमें बारह अंश युत करे फिर उसके भुजके अंशोंमें तीनका भाग देनेसे व्यंगुल आदि फल होता है इसको एकके छठे हिस्सेसे ऊन ग्यारह १०।५० में सूर्य मेष आदि छः राशियोंमें हो तो ऊन और तुला आदि छः राशियोंमें हो तो युत करे ऐसे करनेसे अंगुल आदि सूर्यका बिंब होता है ऐसे ग्रास आदिको जानकर शेष रहे जो स्थिति मर्द स्पर्श काल आदि हैं इन्होंको पहलेकी नाईं जान लेवे ॥ ८ ॥

अथ उदाहरण ।

सूर्य ८।५।२६।२० में १२ अंश युत किये तो ८।१७।२६।२० हुए फिर इसके भुजके अंश ७७।२६।२० में तीनका भाग देनेसे व्यंगुल आदि फल २५ मिला यहां सूर्य तुला आदि छः राशिमें है इसलिये इस व्यंगुल आदि फल २५ को एकके छठे हिस्सेसे ऊन ग्यारह १०।५० में युत किया तो सूर्यका बिंब ११।१५ हुआ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत—बेरीग्रामनिवासि—गौड़वंशावतंस—विविधशास्त्रपरमपण्डित—श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्राजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां अष्टमः पञ्चाङ्गाद् ग्रहणद्वयसाधनाधिकारः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ नवमोऽधिकारः।

अब उदयास्ताधिकार अर्थात् ग्रहोंके उदय अस्तके अधिकारको कहते हैं।

उसमें पहले शुक्ल प्रतिपदाके दिन चंद्रमाका दर्शन होगा कि नहीं इस बातको कहते हैं।

सार्कांशाविह कुरु पक्षतिक्षयेर्कव्यग्वर्कौ चरमथ केवलाद्व्यगोर्यत् । षड्बाणैर्विहृतमिदं क्रमाल्ल-वाद्यं स्वर्णं स्याद्व्यगुरविगोलयोःपृथक्तत् ॥१॥ त्रिभायनलवान्वितारुणचराहतं द्व्यक्षभाहतेः कृ-तिहृतं धनर्णमसमैकगोले व्यगोः। खखानलविशे-षितः सरसभायनार्कोदयः शरद्विकहृतो धनाध-नमनल्पकालपोदये ॥२॥ द्युमितिप्रतिपद्गमान्तरं यच्छरभक्तं स्वमृणं दिनेधिकोने । धनमत्र चतु-ष्कसंस्कृतिश्चेत्तपनास्ते विधुरीक्ष्यतेन्यथा न ॥ ३ ॥

अन्वयः-इह पक्षतिक्षये अर्कव्यग्वर्कौ सार्कांशौ कुरु । अथ केवलात् व्यगोः यत् चरं (साधितं) इदं षड्बाणैः विहृतं (कार्यं तदा) लवाद्यं (फलं) क्रमात् व्यगुरविगोलयोः स्वर्णं स्यात् तत् पृथक् (स्थाप्यं, ततः) त्रिभायनलवान्वितारुणचराहतं (ततः) द्व्यक्षभाहतेः कृतिहृतं (कार्य्यं, ततः) व्यगोः असमकगोले धनर्णं (कार्य्यं, तत् फलं पृथक् स्थाप्यम्) । सरसभायनार्कोदयः खखानलविशेषितः शरद्विकहृतः (तदा यत् फलं तत्) अनल्पकालपोदये धनाधनं (कार्य्यं) यत् द्युमितिप्रतिपद्गमान्तरं (तत्) शरभक्तम् अधिकोने दिने स्वम् ऋणं (कार्य्यं) अत्र चतुष्कसंस्कृतिः धनं चेत् (तदा) तपनास्ते विधुः ईक्ष्यते अन्यथा न ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

भाषा-प्रतिपदाके अंतकालके सूर्य और व्यगु बनावे फिर उन्होंमें बारह अंश युत करे फिर अयनांशके संस्कारसे रहित व्यगुपरसे चर बनावे फिर उस चरमें ५६ का भाग देनेसे अंश आदि प्रथम फल होता है वह फल सूर्य और व्यगु उत्तर गोलमें हों तो धन और दक्षिण गोलमें हों तो ऋण होता है फिर उस फलको पृथक् स्थापन करे । स्पष्ट सूर्यमें तीन राशि युत करे फिर उसमें अयनांशको युत करे फिर इस सूर्यपरसे चर बनावे फिर इस चरसे पृथक् रक्खे हुए फलको गुणा करे फिर उसमें द्विगुणित पलभाके वर्गका भाग देनेसे दूसरा फल होता है इस फलकोभी अलग रक्खे यहां व्यगु और सूर्य एक गोलमें हों तो यह फल ऋण और भिन्न गोलोंमें हों तो धन होता है और स्पष्ट सूर्यमें छः राशि और अयनांश मिलाकर जो होय उसके उदय और ३०० पलोंका अंतर करे फिर उस अंतरमें २५ का भाग देनेसे तृतीय फल होता है यह फल पलात्मक उदय तीन सौसे अधिक हो तो धन और ऊन हो तो ऋण होता है इस तीसरे फलकोभी एकांतमें रक्खे । फिर दिनमान और प्रतिपदाकी अंतकी घडियोंका अंतर करे फिर उस अंतरमें पांचका भाग देनेसे जो अंशादि फल हो वह चतुर्थ होता है इसेभी अलग स्थापन करे यह फल दिनमान तिथिसे अधिक हो तो धन और अल्प हो तो ऋण होता है फिर इन चारों फलोंका संस्कार करे अर्थात् आपसमें जोड दे जो चारों फलोंका संस्कार धन हो तो सूर्यके अस्तके बाद चन्द्रमा दीखता है और ऋण हो तो नहीं दीखेगा ऐसे जाने । दो धनोंका योग और दो ऋणोंकाभी योग होता है और धन ऋणका अंतर होता है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

अथ उदाहरण ।

संवत् १६६७ शाके १५३२ में माघशुक्ल प्रतिपदा शनिवार घडी ७ उस दिन श्रवण नक्षत्र घडी २९।२५ है और सिद्धि

योग घडी ४०।९ है चक्र ९ और अहर्गण १०३६ है प्रातः-कालका मध्यम सूर्य ९।६।१२।३८ मध्यम चंद्रमा ९।११।३८।३३ उच्च ८।२०।५४।२८ और राहु २।१०।३।२५ है फिर इन्होंमें तिथि-की घडी ७ का चालन दिया तो तिथिके अंतका सूर्य ९।६।१९।३१ चंद्रमा ९।२१।१०।४७ चंद्रमाका उच्च ८।२०।५५।१४ और राहु २।१०।३।३ हुए ॥

अब स्पष्ट करते हैं ।

सूर्यका मंद केन्द्र ५।११।४०।२९ है इसपरसे धन मंद फल०।४१।२७ मिला इसका सूर्यमें संस्कार किया तो मन्द स्पष्ट सूर्य ९।७।०।५८ हुआ फिर इसमें धन चर १०६ का संस्कार किया तो स्पष्ट सूर्य ९।७।२।४४ और इसकी स्पष्ट गति ६१।१० मिली अयनांश १८।८ हुआ और तीनों फलोंसे संस्कार किया हुआ चंद्रमा ९।२१।२५।१२ हुआ इसके मन्द केन्द्र १०।२९।३०।२ परसे मंद फल ऋण २।३३।० मिला इसका चंद्रमामें संस्कार किया तो स्पष्ट चंद्रमा ९।१८।५२।१२ हुआ और इसकी स्पष्ट गति ७३५।१ हुई इन सूर्य चंद्रमाओंपरसे तिथि की ०।५६ मिली इन्होंको पंचांगकी घटी ७ में युत किया तो प्रतिपदाका अंत ७।५६ हुआ फिर ०।५६ इन घडियोंके तुल्य सूर्य चंद्रमामें चालन दिया तो प्रतिपदाके अंतका सूर्य ९।७।३।४१ राहु २।१०।३।१ और विराद्धर्क अर्थात् सूर्यमें घटा हुआ राहु ६।२७।०।४० हुआ फिर सूर्य और व्यगुमें बारह अंश युत किये तो सूर्य ९।१९।३।४१ और व्यगु ७।९।०।४० हुए इस अयनांशरहित व्यगुपरसे चर ७० मिला इसमें ५६ का भाग देनेसे पहला फल १।१५।० मिला और इस फलको अलग रक्खा यहां व्यगु दक्षिण गोलमें है इसलिये यह फल ऋण है ॥

अब दूसरे फलको कहते हैं ।

अब सूर्य ९।१९।३।४१ में तीन राशि जोडी तो ०।१९।३।४१

हुए फिर अयनांश १८।८ अंशादि युत किया तो सूर्य १।७।११। ४१ इसपरसे चर ६८ मिला इसको अलग रक्खे हुए प्रथम फल १।१५।० से गुणा दिया तो ८५।०।० हुए फिर पलभा ५।४५ अंगुलादिको दो गुना किया तो ११।३० हुए फिर इसके वर्ग १। ३२।१५ का अलग रक्खे हुए फलसे गुणे हुए चर ८।०।० में भाग दिया तो दूसरा फल ०।३८।३३ मिला। यहां तीन राशियोंसे और अयनांशसे युत सूर्य और व्यगु ये भिन्न २ गोलमें हैं इसलिये यह फल धन है ॥

अब तीसरे फलको कहते हैं ।

अब सूर्य ९।१९।०३।४१ में छः राशियोंसे युत किया तो ३।१९। ०३।४१ हुए फिर इसमें अयनांश १८।८ युत किया सूर्य ४।७।११। ४१ है इसके उदय ३४५ का और ३०० का अंतर किया सो शेष ४५ रहे इसमें २५ का भाग देनेसे १।४८।० तीसरा फल मिला यहांभी उदय तीन सौसे अधिक है इसलिये यहभी फल धन है॥

अब चौथे फलको कहते हैं ।

अब दिनमान २६।२८ और प्रतिपदाके अंतकी घडी ७।५६ हैं इन्होंका अंतर १८।३२ हुआ इनमें पांचका भाग देनेसे फल ३। ४२।२४ मिला यहां दिनमान प्रतिपदाकी घडियोंसे अधिक है इसलिये यहभी फल धन हुआ फिर चारों फलोंका संस्कार किया द्वितीय फल ३८।३३ तृतीय फल १।४८ और चतुर्थ फल ३।४२। २४ ये तीनों धन थे इसलिये जोडे यो ६।८।५७ इसमेंसे प्रथम फल ऋण १।१५ घटाया तो धन संस्कार ४।५३।५७ हुआ इसलिये सूर्यके अस्तके बाद चंद्रमा दीखेगा ऐसे जान लेवे ॥

यहां चंद्रमाके दीखनेका अथवा नहीं दीखनेका प्रकार समाप्त हुआ।

अब मासगण अर्थात् महीनोंके समूहपरसे बृहस्पति-का उदय अस्त बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

चक्राढ्यो मधुवक्रमासनिचयो विश्वाप्तचक्रोनितो

द्विघ्नो युग्दशमासधूर्जटिदिनैर्भैः शेषितो भ-च्युतः । द्व्याप्तः स्याद्भमुखः पृथक्तिथिलवै-रूनोऽस्य बाह्वंशकार्काप्तांशोनयुतो घटाजर-सभे मासाधिकः स्यान्मधोः ॥ ४ ॥ तिथिदिन-रहिताढ्योऽसौ द्विधा तैश्च मासैः क्रमश इह भवेतां मंत्रिणोस्तोदयौ च ।

अन्वयः-मधुवक्त्रमासनिचयः चक्राढ्यः (कार्य्यः, ततः) विश्वाप्तचक्रो-नितः (कार्यः, ततः) द्विघ्नः (कार्यः, ततः) दशमासधूर्जटिदिनैः युक्तै-र्भैः शेषितः (ततः) भच्युतः (ततः) द्व्याप्तः भमुखः स्यात् (सः) पृथक् (स्थाप्यः) । तिथिलवैः ऊनः (कार्य्यः) अस्य बाह्वंशकार्काप्तांशोनयुतः घटाजरसभे मधोः मासाधिकः स्यात् । असौ च द्विधा तिथिदिनरहिताढ्यः तैः मासैः इह मन्त्रिणः क्रमशः अस्तोदयौ च भवेताम् ॥ ४ ॥

भाषा-चैत्रके आदिमें जो मासगण हो उसमें उसी वर्षका चक्र युत करे फिर चक्रमें तेरहका भाग देनेसे जो मास आदि फल मिले उसको मासगणमें घटा देवे फिर उस शेषको दो गुणा करे फिर उस गुणनफलमें दश महीने और ग्यारह दिन युत करे फिर उन्होंके ऊपर स्थानमें सत्ताईसका भाग देनेसे जो मासादि शेष रहे उसको २७ मासमें घटा देवे फिर उसमें दोका भाग देनेसे वह राशि आदि होता है फिर उसको दो स्थानोंमें रक्खे एक स्थानमें तो १५ अंश घटा देवे फिर उसके भुज करे और भुजके अंशोंमें बारहका भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसको तुला आदि छः राशिमें राशि आदि स्थित हो तो अलग रक्खे हुएमें ऋण और मेष आदि छः राशिमें राशि आदि हो तो युत करे ऐसे चैत्रसे महीने आदि होते हैं। और इन महीने आदिको दो स्थानोंमें रक्खे एक स्थानमें तो उन्होंमें पंदरह दिन घटा देवे और एक स्थानमें युत करे ऐसा करनेसे उन महीनोंमें क्रमसे बृहस्पतिका अस्त उदय होता है अर्थात् जिस

जगह पंदरह ऊन हैं उस जगह अस्त और जिस जगह पंदरह युत हैं उस जगह उदय होता है ॥ ४ ॥

अथ उदाहरण।

संवत् १६६७ शाके १५३२ में चैत्र शुक्ल प्रतिपदाके दिन वर्षोंका समूह ९० है चक्र ८ और महीनोंका समूह २४ है यह मध्यम मासगण हुआ इसमें द्विगुणित चक्र १६ और १० जोडे तो ५० हुए इसमें ३३ का भाग दिया तो १ अधिकमास मिला इसको २४ मध्यम मासगणमें जोडा तो २५ मासगण हुआ इसमें चक्र ८ को युत किया तो ३३ हुए फिर चक्र ८ में १३ का भाग देनेसे मास आदि फल ०।१८।२७।४१ मिला इसको चक्रसे युत मासगण ३३ में ऊन किया तो ३२।११।३२।१९ हुए फिर इसको दो गुना किया तो ६४।२३।४।३८ हुए फिर इन्होंमें दश मास और ११ दिन युत किये तो ७५।४।४।३८ हुए फिर इन्हों-के ऊपरले अंकमें २७ का भाग देनेसे शेष २१।४।४।३८ रहे फिर इन्होंको २७ में घटा दिया तो ५।२५।५५।२२ रहे फिर इन्होंमें दोका भाग देनेसे राशि आदि फल २।२७।५७।४१ हुआ इन्होंको दो स्थानोंमें रक्खा एक जगह इन्होंमें १५ अंश घटा दिये तो २।१२।५७।४१ रहे फिर इसके भुजके अंश ७२।५७।४१ हुए इनमें १२ का भाग देनेसे फल ६।४।४८ मिला फिर यहां पूर्वोक्त राशि मेष आदि छः राशिमें स्थित है इसलिये अलग हुए २।२७।५७।४१ में ६।०४।४८ को युत किये तो चैत्रसे मास आदि ३।४२।२९ हुए इन मास आदिको दो स्थानोंमें धरा एक स्थानमें दिन घटा दिये तो २।१९।२।२९ रहे और दूसरे स्थानमें पंदरह युत किये तो ३।१९।२।२९ हुए ऐसे क्रमसे बृहस्पतिका अस्त उदय हुआ अर्थात् चैत्रसे २ महीने १९ दिन २ घडी २९ पलपै बृहस्पतिका अस्त और चैत्रसे ३ महीने १९ दिन २ घडी २९ पलपै बृहस्पतिका उदय हुआ ॥

अब शुक्रका अस्त उदय बनानेके प्रकारको कहते हैं।

अथ मधुमुखमासाः सप्तभूनिघ्नचक्रैः स्वशरयुग-लवाढ्यैः संयुता मार्गणघ्नाः । उदधिरससमेता-श्छिद्रखेगामितघ्ना नवनवपरिशुद्धाः पञ्चभक्ता पृथक्स्थाः । रसगुणदिनहीनाढ्या द्विधा चैत्रत-स्तैर्भृगुजहरिदिगस्ताम्बूदयौ स्तः क्रमेण ॥ ५ ॥

अन्वयः-अथ मधुमुखमासाः स्वशरयुगलवाढ्यैः सप्तभूनिघ्नचक्रैः संयुताः (ततः) मार्गणघ्नाः (ततः) उदधिरससमेताः (ततः) छिद्रखेगामितघ्नाः (शेषाः) नवनवपरिशुद्धाः (ततः शेषाः) पञ्चभक्ताः पृथक्स्थाः (कार्य्याः । ते अत्र) द्विधा रसगुणदिनहीनाढ्याः (कार्य्याः) तैः चैत्रतः क्रमेण भृगुजहरिदिगस्ताम्बूदयौ स्तः ॥ ५ ॥

भाषा-पहले चैत्रकी आदिमें मासगण बनावे फिर चक्रको १७ से गुणा करे फिर उसमें ४५ का भाग देनेसे जो मास आदि फल मिले उसको १७ से गुणे हुएमें युत करे फिर इन्होंमें मासगणोंको युत करे फिर इन्होंको पांचसे गुणा करे फिर उसमें ६४ और युत करे फिर इनमें ९९ का भाग दे फिर शेषको ९९ में घटा देवे फिर इसमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले वह मासादि होता है। उसको दो स्थानोंमें रक्खे एक स्थानमें ३६ घटा देवे और दूसरे स्थानमें ३६ युत करे ऐसे उन महीनोंमें क्रमसे चैत्रसे शुक्रका पूर्वमें अस्त और पश्चिममें उदय होता है अर्थात् जहां ३६ ऊन करे हैं वहां शुक्रका पूर्वदिशामें अस्त होता है और जहां युत करे हैं वहां शुक्रका पश्चिमदिशामें उदय होता है ॥ ५ ॥

अथ उदाहरण ।

चैत्रकी आदिमें मासगण २५ है और चक्र ८ है इसको १७ से गुणा किया तो १३६ हुए फिर इसमें ४५ का भाग देनेसे

मास आदि ६।०।४०।० मिले फिर इन्होंको १७ से गुणे हुए १३६ में युत किया तो १३९।०।४०।० हुए फिर इन्होंमें माणगण २९ को युत किया तो १६४।०।४०।० हुए फिर इन्होंको पांचसे गुणा किया तो ८२०।३।२०।० हुए फिर इन्होंमें ६४ मास युत किये तो ८८४।३।२० हुए फिर इन्होंके ऊपरले अंक ८८४ में ९९ का भाग दिया तो ९२।३।२०।० हुए फिर इन्होंको ९९ मासमें घटा दिया तो ६।२६।४०।० हुए फिर इन्होंमें पांचका भाग देनेसे फल १।११।२०।० मिला फिर इसको दो स्थानोंमें धरा एक स्थानमें तो इन्होंमें ३६ ऊन किये तो ०।५।२०।० हुए और दूसरे स्थानमें ३६ युत किये तो २।१७।२०।० हुए जहां ३६ ऊन करे हैं वहां चैत्रसे उतने मास आदिमें शुक्रका पूर्व दिशामें अस्त होगा और जहां ३६ युत करे हैं वहां चैत्रसे उतने मास आदिमें शुक्रका पश्चिममें उदय हुआ ॥

अब शुक्रका पश्चिम दिशामें अस्त और पूर्व दिशामें उदय इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

नवमासभघस्रतोऽल्पपुष्टाः पृथगास्थाः क्रमश-
स्तु तैर्युतोनाः । द्वेधा युगवासरोनयुक्तास्तोया-
स्तैन्द्र्युदयौ क्रमाद् भृगोः स्तः ॥ ६ ॥

अन्वयः–(ते) पृथगास्थाः (यदि) नवमासघस्रतः अल्पपुष्टाः (स्युः तदा) तु तैः युतोनाः क्रमशः (कार्य्याः, ततः ते) द्वेधा युगवासरोनयुक्ताः क्रमात् भृगोः तोयास्तैन्द्र्युदयौ स्तः ॥ ६ ॥

भाषा–जो दो जगह धरे हुए मासादि ९ महीने २७ दिनसे कम हों तो इन्होंमें १ महीने २७ दिन युत करे और जो वह अधिक हों तो इन्होंमें ९ महीने २७ दिन घटा देवे फिर उन्होंको दो स्थानोंमें रक्खे एक स्थानमें तो चार दिन युत करे और दूसरे स्थानमें ऊन करे और जहां चार दिन घटाये जाते हैं वहां चैत्रसे उतनेही कालके पीछे शुक्रका पश्चिममें अस्त होता है और जहां

युत किये हैं वहां चैत्रसे उतने कालके पीछे शुक्रका पूर्व दिशामें उदय होता है ॥ ६ ॥

अथ उदाहरण ।

पहले अलग धरे हुए मासादि १।११।२०।० नौ महीने २७ दिनसे कम हैं इसलिये इन्होंमें ९ महीने २७ दिन युत किये तो ११।८।२०।० हुए फिर इन्होंको दो स्थानोंमें रक्खा एक स्थानमें चार दिन ऊन किये तो ११।४।२० हुए और दूसरे स्थानमें चार दिन युत किये तो ११।१२।२० हुए जहां चार ऊन किये हैं वहां शुक्रका पश्चिम दिशामें अस्त और जहां युत किये हैं वहां शुक्रका पूर्वदिशामें उदय हुआ ॥

अब शुक्र और बृहस्पति इन्होंका उदयकाल और अस्तकाल इन्होंका परिवर्त अर्थात् जो कोई ग्रह आज उदय अथवा अस्त हुआ हो तो यह फिर उदय अथवा अस्त कब होगा इस परिवर्तको कहते हैं ।

मासैर्नखैर्व्यरिदिनैरुदयास्तकालः शुक्रस्य शुद्ध्यति गुरोर्यदि सार्द्धविश्वैः। सोऽन्यो भवेन्मधुमुखादथ तैर्युतश्चेत्स्यात्तत्परोऽथ पुरतोऽपि विलोमशुद्ध्या ॥ ७ ॥

अन्वयः-नखैः मासैः व्यरिदिनैः शुक्रस्य उदयास्तकालः शुद्ध्यति यदि गुरोः (तदा) सार्द्धविश्वैः (शुद्ध्यति । अथ यदि) मधुमुखात् तैः युतः चेत् (तदा) सः अन्यः भवेत् । अथ विलोमशुद्ध्या तत्परः अथ पुरतः अपि स्यात् ॥ ७ ॥

भाषा-पहले कहा हुआ शुक्रका उदयकाल अथवा अस्तकाल पीछे १९ महीने चौवीस दिनमें होता है अर्थात् शुक्रका पूर्व दिशाके उदयसे अथवा अस्तसे फिर शुक्रका पूर्वदिशाका उदय अथवा अस्त १९ महीने २४ दिनमें होता है और बृहस्पतिके

उदयसे अथवा अस्तसे फिर बृहस्पतिका उदय अथवा अस्त १३ महीने और १५ दिनमें होता है फिर उन महीनोंको उदयकाल अथवा अस्तकालमें युत करनेसे चैत्रसे अन्य उदयकाल अथवा अस्त काल होता है फिर उसमें युत करनेसे उसके अगाडीका उदयकाल अथवा अस्तकाल होता है। और उन महीनोंको घटा देवे तो चैत्रसे पहला उदयकाल अथवा अस्तकाल होता है॥ ७॥

अब चन्द्रमाके शर बनानेके प्रकारको कहते हैं।

प्रथमे व्यगुचन्द्रदोर्गृहेंशाः स्वदलाढ्यास्त्वपरे नगाब्धियुक्ताः। चरमे दलिता नगाद्रियुक्ता व्यगुविधुदिग्विशिखोङ्गुलादिकः स्यात्॥ ८॥

अन्वयः–व्यगुचन्द्रदोर्गृहे प्रथमे अंशाः स्वदलाढ्याः (कार्य्याः) अपरे तु नगाब्धियुक्ताः (कार्य्याः) चरमे (च प्रथमं) दलिताः (ततः) नगाद्रियुक्ताः (कार्य्याः सः) अंगुलादिकः व्यगुविधुदिग्विशिखः स्यात्॥ ८॥

भाषा–चंद्रमामें राहुको घटावे जो शेष रहे वह व्यगु विधु होता है इसके भुज करे फिर जो व्यगु चन्द्र पहिली राशिमें अर्थात् मेषमें हो तो भुजके अंशोंमें अपना आधा युत करनेसे व्यगु चंद्रमा जिस गोलका हो उस दिशाका अंगुल आदि शर होता है और जो व्यगु चंद्रमा दूसरी राशि अर्थात् वृषमें हो तो उन अंशोंमें ४७ युत करनेसे व्यगु चन्द्रमा जिस गोलका हो उस दिशाका अंगुल आदि शर होता है और जो व्यगु चन्द्रमा तीसरी राशि अर्थात् मिथुनमें हो तो अंशोंको आधे करे फिर उन्होंमें ७७ अंश और युत करनेसे व्यगु चन्द्रमा जिस गोलका हो उसकी दिशाका अंगुल आदि शर होता है। यहां शर बनानेके प्रकारमें राशियोंके अंश नहीं बनावे किंतु राशिके नीचे जितने अंश हों उनको ग्रहण करे॥ ८॥

अथ उदाहरण।

शाके १५३२ मार्गशिर कृष्ण ३० बुधवार १२।५९ यहां

तिथिके अंतका चंद्रमा ८।५।२६।२० में राहु २।११।४१।१८ को घटा दिया तो व्यगु चन्द्रमा ५।२३।४५।२ हुआ इसका भुज ०। ६।१४।५८ हुआ यह भुज पहली अर्थात् मेष राशिमें है इसलिये इन ६।१४।५८ अंशोंमें इसके आधे ३।७।२९ को युत किया तो अंगुल आदि शर ९।२२।२७ हुआ यहां व्यगु चंद्रमा उत्तर गोलमें है इसलिये यह शर उत्तर दिशाका हुआ ॥

अब अन्यप्रकारसे शर बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

नृपतिथिमनुविश्वरुद्रगोऽद्रिश्रुतिवसुधाः शरखण्डकानि तैर्यत् । व्यगुविधुभुजतोऽपमोक्तिवद्वा व्यगुविधुदिग्विशिखोऽङ्गुलादिकः स्यात् ॥ ९ ॥

अन्वयः-नृपतिथिमनुविश्वरुद्रगोऽद्रिश्रुतिवसुधाः शरखण्डकानि (भवन्ति) तैः व्यगुविधुभुजतः यत् अपमोक्तिवत् (भवति तत्) अंगुलादिकः व्यगुविधुदिग्विशिखः वा स्यात् ॥ ९ ॥

भाषा-१६।१५।१४।१३।११।९।७।४ और १ ये शर बनानेके लिये खण्डे हैं और व्यगु चंद्रमाके भुजके अंशोंमें दशका भाग देनेसे जो खण्डा मिले उसका अगले खण्डेसे शेष अंश आदिको गुणा करे फिर उसमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें गत खण्डेको युत करनेसे व्यगु चंद्रमाके गोलकी दशाका अंगुल आदि शर होता है ॥ ९ ॥

अथ उदाहरण ।

व्यगु चंद्रमा ५।२३।४५।२ के भुजके अंश ६।१४।५८ हुए इनमें १० का भाग देनेसे लब्धि शून्य खण्डा मिला फिर शेष ६।१४।४८ को अगले खंड १६ से गुणा दिया तो ९९।२९।२८ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे फल ९।५९ मिला इसमें गत खण्डे० को युत किया तो अंगुल आदि उत्तरदिशाका शर ९।५९ हुआ ॥

अब उदय अस्तकी दिशा जाननेके प्रकारको कहते हैं।

लघुगोल्प इनादुदेति पूर्वे भूयान् भूरिगतिर्ग्रहः प्रतीच्याम्। भूयाल्लघुगः परत्र चास्तं प्राच्यां भूरिजवो लयं प्रयाति॥ १०॥

अन्वयः–लघुगः इनात् अल्पः ग्रहः पूर्वे उदेति। भूरिगतिः (इनात्) भूयान् (ग्रहः) प्रतीच्याम् (उदेति)। लघुगः भूयान् (ग्रहः) परत्र अस्तं (प्रयाति) भूरिजवः (अल्पः) च प्राच्यां लयं प्रयाति॥ १०॥

भाषा–जो ग्रह सूर्यसे अल्प गति हो और सूर्यसे अंशोंमेंभी कम हो वह ग्रह पूर्व दिशामें उदय होता है और जो ग्रह सूर्यसे अधिक गति हो और अंशोंमेंभी अधिक हो वह ग्रह पश्चिम दिशामें उदय होता है और जो ग्रह सूर्यसे अंशोंमें अधिक हो और सूर्यसे लघुगाते हो तो वह ग्रह पश्चिम दिशामें अस्त होता है और जो ग्रह सूर्यसे अधिक गाते हो और सूर्यसे अंशोंमें कम हो वह ग्रह पूर्वदिशामें अस्त होता है यह सूर्यका किया हुआ प्रवह नामवाले वायुके वशसे उदय अस्त होता है॥ १०॥

अब ग्रहोंका उदय अथवा अस्त जाननेके लिये कालके अंश अर्थात् कालांशोंको कहते हैं।

भास्करा नगभुवो गुणचन्द्रा भूभुवो दिविसदस्तिथयोब्जात्। प्राक्तनैर्निगदिताः समयांशा वक्रिणोर्भृगुविदोः क्षितिहीनाः॥ ११॥

अन्वयः–भास्कराः नगभुवः गुणचन्द्राः भूभुवः दिविसदः तिथयः(एते) प्राक्तनैः अब्जात् समयांशाः निगदिताः। वक्रिणोः भृगुविदोः क्षितिहीनाः (भवन्ति)॥ ११॥

भाषा–चंद्रमाके १२ कालांश मंगलके १७ कालांश बुधके १३ कालांश बृहस्पतिके ११ कालांश शुक्रके ९ कालांश और शनिके १५ कालांश होते हैं ये चंद्रमासे लेकर पूर्व आचार्योंने ग्रहोंके

कालांश कहे हैं और इन्हींको समयांशभी कहते हैं और बुध शुक्र वक्री हों तो उन्होंके कालांशोंमें एक घटाकर उन्होंका उदय अथवा अस्त बनावे ॥ ११ ॥

ग्रह	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वक्री बु	वक्री शु.
कालांश	१२	१७	१३	११	९	१५	१२	८

अब मंगल आदि सातों ग्रहोंके पातके अंशोंको कहते हैं।

खाम्बुधयः खयमाः खभुजङ्गाः खाङ्गमिताः खदृश क्रमशः स्युः । पातलवाः कुसुताद्बुधभृग्वोर्मध्यमचञ्चलकेन्द्रविहीनाः ॥ १२ ॥

अन्वयः-खाम्बुधयः खयमाः खभुजङ्गाः खाङ्गमिताः खदृश (एते) क्रमशः कुसुतात् पातलवाः स्युः । बुधभृग्वोः मध्यमचञ्चलकेंद्रविहीनाः (स्युः) ॥ १२ ॥

भाषा-मंगलके पातके अंश ४०, बुधके पातके अंश२०, बृहस्पतिके पातके अंश ८०, शुक्रके पातके अंश ६० और शनिके पातके अंश १०० और बुध शुक्रके पातके अंशोंमें मध्यम शीघ्र केन्द्र अर्थात् अहर्गणसे उत्पन्न हुए शीघ्र केंद्रको घटा देवे ॥१२॥

ग्रहोंके नाम	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
पातांश	४०	२०	८०	६०	१००

अब ग्रहोंके शर बनानेके लिये ग्रहोंके शीघ्र कर्ण बनानेके प्रकारको कहते हैं।

कुद्वित्र्यब्धियुगाश्विनो दलचयश्चेत्षड्भपुष्टं चलं केन्द्रं चक्रविशुद्धमस्य भमितार्धैक्यं लवघ्नागतात् । त्रिंशल्लब्धयुतं कुजात्कुयमलाब्धीन्द्र-

द्विभक्तं क्रमात्तद्धीना धृतिरिष्विला गुणभुवो गोब्जा इना द्राक्छ्रुतिः ॥ १३ ॥

अन्वयः-कुद्वित्र्यब्धियुगाश्विनः दलचयः (स्यात्) चलं केन्द्रं षड्भपुष्टं चेत् (तदा) चक्रांशशुद्धं (कार्य्यं) अस्य भमिताद्धैक्यं लवघ्नागतात् त्रिंशल्लब्धयुतं (कार्य्यं, ततः) कुजात् कुयमलाब्धीन्द्वद्रिभक्तं (कार्य्यं, तदा यत् फलं) तद्धीनाः क्रमात् धृतिः इष्विलाः गुणभुवः गोब्जाः इनाः द्राक्छ्रुतिः (स्यात्) ॥ १३ ॥

भाषा-एक, दो, तीन, चार, चार, दो ये ग्रहोंके शीघ्र कर्ण साधनके लिये छः खण्डे हैं जो शीघ्र केंद्र छः राशिसे अधिक हो तो उसको बारह राशिमें घटा देवे फिर जितनी ग्रहके शीघ्र केन्द्रकी राशि हों उनके समान खण्डोंको ग्रहण कर उन्होंका योग करे फिर जितने खण्डे ग्रहण किये हों उन्होंके अगले खण्डेसे शेषको गुणा करे फिर उसमें तीसका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें गत खण्ड अर्थात् उन्होंके योगको युत करे फिर उन्होंमें मंगलका शीघ्र केन्द्र हो तो एकका भाग देवे बुधका हो तो दोका भाग देवे बृहस्पतिका हो तो चारका भाग देवे शुक्रका हो तो एकका भाग देवे और शनिका हो तो सातका भाग देवे ऐसे भाग देनेसे जो फल मिले वह फल मंगलका हो तो उसको अठारहमें घटा देनेसे मंगलका शीघ्र कर्ण होता है उस फलको पंदरहमें घटानेसे बुधका शीघ्र कर्ण तथा उस फलको तेरहमें घटानेसे बृहस्पतिका शीघ्र कर्ण उस फलको उन्नीसमें घटानेसे शुक्रका शीघ्र कर्ण और उस फलको बारहमें घटानेसे शनिका शीघ्र कर्ण होता है ॥ १३ ॥

संख्या	१	२	३	४	५	६
शीघ्रांक	१	२	३	४	४	५

अथ उदाहरण।

संवत् १६६९ शाके १५३४ में वैशाख शुद्ध पूर्णिमाके दिन स्पष्ट क्रांति बनानेके लिये मंगल आदि पांचों ग्रहोंके शीघ्र केंद्रोंको

लिखते हैं। मंगलका द्वितीय शीघ्र केन्द्र ३।१।४।५७ बुधका शीघ्र केंद्र १।१६।२५।१७ बृहस्पतिका शीघ्र केन्द्र ८।२१।२०।५८ शुक्रका शीघ्र केन्द्र ३।४।२९।५२ और शनिका शीघ्र केन्द्र२।१२। ५०।० ये पांचों ग्रहोंके शीघ्र केंद्र हैं ॥

अब पहले मंगलके शीघ्र कर्ण बनानेका उदाहरण।

मंगलके शीघ्र केंद्र ३।१।४।५७ की राशिके समान गत खण्डे तीनोंका योग ६ है फिर शेष १।४।५७ को एष्य खण्डे ४ से गुणा दिया तो अंशादि ४।१९।४८ हुए फिर इन्होंमें ३० का भाग देनेसे फल ०।८।३९ मिला फिर इसमें खण्डोंके योग ६ को युत किया तो ६।८।३९ हुए फिर इन्होंमें भौमके भाज्यांक-का भाग देनेसे ६।८।३९ हुए फिर इन्होंको मंगलके शीघ्र कर्ण१८ में घटा दिया तो मंगलका शीघ्र कर्ण ११।५१।२१ हुआ फिर बुधके शीघ्र केन्द्रपरसे कही हुई रीतिसे फल २।५।४१ मिला इन्होंमें २ का भाग देनेसे १।२।५० हुए फिर इन्होंको १५ में घटा दिया तो बुधका शीघ्र कर्ण १३।५७।१० मिला फिर बृह-स्पतिके शीघ्र केन्द्रपरसे फल ७।९।१२ मिला इसमें चारका भाग दिया तो १।४७।१८ हुए फिर इन्होंको १३ में घटा दिया तो बृहस्पतिका शीघ्र कर्ण ११।१२।४२ हुआ फिर शुक्रके शीघ्र केंद्रपरसे फल ६।३५।५८ मिला इसमें एकका भाग दिया तो ६। ३५।५८ हुए फिर इन्होंको १९ में घटा दिया तो शुक्रका शीघ्र कर्ण १२।२४।२ हुआ फिर शनिके केन्द्रपरसे फल ४।१७।० मिला इसमें सातका भाग दिया तो फल ०।३६।४२ हुआ फिर इसको बारहमें घटा दिया तो शनिका शीघ्र कर्ण ११।२३।१८ हुआ ॥

अब मंगल आदि सात ग्रहोंके शर और स्पष्ट क्रांति बनानेके प्रकारको कहते हैं।

मन्दस्पष्टखगात्स्वपातरहितात्क्रान्त्यंशकाः केवलात्
कर्णात्तास्त्रियमाहता अथ गुरोश्चेल्लोचनाप्ताः पुनः।

स्वांघ्यूना असृजोंगुलादिकशरः पातोनदिक्स्यादसौ
त्रिघ्नः स्यात्कलिकादिकः स्फुटतरस्तत्संस्कृतश्चापमः॥

अन्वयः-स्वपातरहितात् मन्दस्पष्टखगात् केवलात् क्रान्त्यंशकाः (साध्याः, ते) त्रियमाहताः(ततः) कर्णाप्ताः (कार्य्याः) अथ गुरोः चेत् (तर्हि) लोचनाप्ताः (कार्य्याः) असृजः (चेत् तर्हि द्व्याप्ताः) पुनः स्वांघ्र्यूनाः (सन्तः) पातोनदिक् अंगुलादिकशरः स्यात् असौ त्रिघ्नः कलिकादिकः स्यात् तत्संस्कृतः च अपमः स्फुटतरः (भवति) ॥ १४ ॥

भाषा-मंद स्पष्ट ग्रहमें अपने अभीष्ट ग्रहके पातको घटावे फिर अयनांश संस्कारसे रहित उस परसे कही हुई रीतिसे क्रांति बनावे फिर क्रांतिके अंश आदिको २३ से गुणा करे फिर उन्हों-में अपने अपने शीघ्र कर्णका भाग देनेसे पातसे ऊन ग्रह जिस गोलका हो उसकी दिशाका अंगुल आदि शर होता है और जो बृहस्पतिका शर बनाना हो तो शीघ्र कर्णका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें दोका भाग देनेसे बृहस्पतिका शर होता है। और जो मंगलका शर बनाना हो तो अपने शीघ्र कर्णका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें अपने चतुर्थांशको ऊन करनेसे शर होता है और ग्यारहसे अल्प मंगलका शीघ्र कर्ण हो तो शीघ्र कर्णका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें दोका भाग देवे फिर उसमें अपने चौथे हिस्सेको घटानेसे मंगलका शर होता है। फिर उन शरोंको तीनसे गुणा करनेसे कला आदि शर होते हैं फिर इन्होंमें साठका भाग देनेसे अंश आदि शर होता है फिर अपने अपने शरोंको त्रिगुणित करके अपनी अपनी क्रांतियोंमें संस्कार करनेसे सब ग्रहोंकी स्पष्ट क्रांति होती है ॥ १४ ॥

अथ उदाहरण ।

मंगल १०।३।०८।४५ में राशि आदि अपने पात ४० अर्थात् ११० को घटा दिया तो पातोन मंगल ८।२३।८।४५ हुआ फिर इसपरसे कही हुई रीतिसे क्रांति २३।४३।३३ मिली फिर इसको

२३ से गुणा किया तो ५४५।४१।३९ हुए फिर इन्हींमें शीघ्र कर्ण ११।५१।२१ का भाग देनेसे फल ४६।१।३८ मिला फिर इसमें इसके चौथे हिस्से ११।३०।३४ को ऊन किया और पातसे ऊन मंद स्पष्ट मंगल दक्षिण गोलका है इसलिये अंगुल आदि मंगलका दक्षिण दिशाका शर ३४।३१।१४ हुआ। मंद स्पष्ट बुध १।५।३। १५ है राशि आदि पात ०।२०।०।० इसमें अहर्गणसे उत्पन्न हुए शीघ्र केन्द्र १।१७।१४।५० को घटा दिया तो ११।२।४५।१० हुए फिर इन्होंको मंद स्पष्ट बुध १।०५।०३।१५ में घटा दिया तो पातोन बुध २।२।१८।५ हुआ फिर इससे क्रांति बनाई तो २१। ०।५१ हुई इसको २३ से गुणा किया तो ४८३।१९।३३ हुए फिर इन्हींमें बुधके शीघ्र कर्ण १३।५७।१० का भाग दिया तो अंगुल आदि बुधका अंगुलादि शर ३४।३८।३४ हुआ पातसे ऊन बुध उत्तर गोलका है इसलिये यह शर उत्तर दिशाका हुआ। मंद स्पष्ट बृहस्पति ४।१२।५२।४४ में राशि आदि अपने पातांश ८० अर्थात् २।२०राशि आदिको घटा दिया तो पातोन गुरु १।२२। ५२।४४ हुआ फिर इससे क्रांति बनाई तो १८।४९।११ हुई इसको २३ से गुणा किया तो ४३२।५१।१३ हुए फिर इन्हींमें बृहस्पतिके शीघ्र कर्ण ११।१२।४२ का भाग देनेसे अंगुलादि फल ३८।३६।२६ मिला इसमें फिर दोका भाग देनेसे अंगुल आदि शर १९।१८।१३ मिला पातोन गुरु उत्तर गोलका है इसलिये शरभी उत्तर दिशाका हुआ फिर शुक्र. १।०५।२५।२५ है इसके राशि आदि पात २।०।० में अहर्गणसे उत्पन्न हुए शीघ्र केन्द्र ३।५।४१।३५ को घटा दिया तो १०।२४।१८।२५ हुए फिर इन्होंको मंद स्पष्ट शुक्र १।५।२५।२५ में घटा दिया तो पातोन शुक्र २।११।७।० हुआ फिर इसकी क्रांति २२।३२।२ को २३ से गुणा किया तो ५१८।१६।४६ हुए फिर इन्हींमें अपने शुक्रके शीघ्र कर्ण १२।२४।२ का भाग देनेसे शुक्रका शर ४१।४७। ४१ मिला

यहा पातस ऊन शुक्र उत्तर गोलका है इसलिये यह शरभी उत्तर दिशाका हुआ। मन्द स्पष्ट शनि १०।२१।२३।४२ में राशि आदि अपने पात ३।१० को घटा दिया तो पातोन शनि ७।११।२३।४२ हुआ फिर इसपरसे क्रांति बनाई तो १५।३१।६ हुई इसको २३ से गुणा किया तो ३५६।५५।१८ हुए फिर इन्होंमें अपने शीघ्र कर्ण ११।२३।१८ का भाग दिया तो शनिका अंगुलादि शर ३१।२०।२७ हुआ यहां पातसे ऊन शनि दक्षिण गोलमें है इसलिये यह शर दक्षिण दिशाका हुआ॥

मंगल आदि सातों ग्रहोंके अंगुल आदि शरोंको तीनसे गुणा किया तो मंगल आदि पांचों ग्रहोंके कला आदि शर इस प्रकार हुए कि मंगलका १०३।३३।४२ बुधका १०३।५५।२१ बृहस्पतिका ५७।५४।३९ शुक्रका १२५।२३।३ और शनिका ९४।१।२१ फिर इन्होंमें साठका भाग देनेसे मंगलका अंश आदि शर दक्षिण दिशाका १।४३।३३ हुआ बुधका उत्तर दिशाका अंश आदि शर १।४३।५५ बृहस्पतिका उत्तर दिशाका ०।५७।५४ शुक्रका उत्तर दिशाका २।५।२३ और शनिका दक्षिण दिशाका अंश आदि शर १।३४।१ हुआ ऐसे सब ग्रहोंके शर हुए और स्पष्ट मंगल ११।५।५६।४ स्पष्ट बुध १।१७।४।० स्पष्ट बृहस्पति ४।२।९।४९ स्पष्ट शुक्र २।१२।१५।४६ और स्पष्ट शनि १०।२६।४२।३० ये स्पष्ट ग्रह हैं अयनांशा १८।१० है इन सायन ग्रहोंसे दक्षिण दिशाकी मंगलकी क्रांति २।२१।३४ उत्तर दिशाकी बुधकी क्रांति २१।३२।३१ उत्तर दिशाकी बृहस्पतिकी क्रांति १४।५९।१५ उत्तर दिशाकी शुक्रकी क्रांति २३।५८।५८ और दक्षिण दिशाकी शनिकी क्रांति ७।३७।१ हुई पांचों ग्रहोंकी स्पष्ट क्रांति है इनमें भौमादि प्रत्येक ग्रहके तीन गुणित शरको जोडा तो भौमकी स्पष्ट दक्षिण क्रांति ४।०५।०७ हुई बुधकी उत्तर क्रांति २३।१६।२६ गुरुकी उत्तर क्रांति १५।५७।९ शुक्रकी उत्तर क्रान्ति २६।०४।२१ शनिकी दक्षिण क्रांति ७।३७।०१ यह स्पष्ट क्रांति हुई॥

अब पंचांगपरसे शर बनानेके लिये मंद स्पष्ट ग्रहोंके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

वक्रास्ताद्यं तिथिपटगतं तद्दिनेऽस्योक्तकेन्द्रं
स्यात्तच्चाल्पं त्वभिमतदिने स्वाशुकेन्द्रोक्तगत्या।
तस्मात्प्राग्वच्चलफलमिदं चालितस्पष्टखेटे
व्यस्तं देयं मृदुजफलभाक्स्यात्ततो वा शराद्यम् १५

अन्वयः-तिथिपटगतं वक्रास्ताद्यं तद्दिने अस्य उक्तकेन्द्रं स्यात्। तत् तु अभिमतदिने स्वाशुकेन्द्रोक्तगत्या चाल्पं तस्मात् प्राग्वत् चलफलं (साध्यं) इदं चालितस्पष्टखेटे व्यस्तं देयं (सः) मृदुजफलभाक् स्यात् ततः वा शराद्यं (साध्यं) ॥ १५ ॥

भाषा-जिस ग्रहका शर बनाना हो उस ग्रहका पंचांगमें वक्र अथवा अस्त अथवा उदय अथवा मार्ग इन्होंमेंसे जो पास हो वह जान लेवे फिर उस दिन उस ग्रहका वक्र आदिपरसे स्पष्टाधिकारमें कही हुई रीतिसे शीघ्र केंद्र बनावे अर्थात् वक्र अस्त आदिके अंशों-में तीसका भाग देनेसे राशि आदि शीघ्र केन्द्र होता है उसको शीघ्र केन्द्रकी कही हुई गतिसे गत एष्य दिनोंको चालन देवे फिर उस चालन दिये हुए शीघ्र केंद्रपरसे पहलेकी भांति शीघ्र फल बनावे फिर उसको चालित स्पष्ट ग्रहमें विपरीत युत करे अर्थात् धन फल हो तो ऋण और ऋण हो तो धन करे ऐसे कर-नेसे मंद स्पष्ट ग्रह होते हैं फिर इन मंद स्पष्ट ग्रहोंपरसे शर और दृक्कर्म बनावे ॥ १५ ॥

अथ उदाहरण।

संवत् १६६७ शाके १५३३ में चैत्रशुदी ८ बृहस्पतिवारके दिन शुक्रका अस्त जाननेके लिये अहर्गण आदि बनाते हैं। कही हुई रीतिसे चक्र ८ और अहर्गण ७४७ मिला इसपरसे

मध्यम सूर्य ११।२१।२२।१७ हुआ और सूर्यके मंद केन्द्र २।२६। ३७।४३ परसे मंद फल धन २।१०।३१ मिला इसका सूर्यमें संस्कार किया तो सूर्य ११।२१।२२।१७ हुआ मन्द स्पष्ट सूर्य ११।२३।३२।४८ चर फल ऋण २२ विकला हैं इसका सूर्यमें संस्कार किया तो स्पष्ट सूर्य ११।२३।३२।२६ हुआ इसकी स्पष्ट गति ५९।० हुई फिर शुक्रका शीघ्र केन्द्र ११।८।३१।५२ परसे शीघ्र फलका आधा ऋण फल ४।३०।३० मिला इसका शुक्रमें संस्कार किया तो शुक्र ११।१६।५१।४७ हुआ फिर शुक्रके मंद केन्द्र ३।१३।०८।१३ परसे धन मंद फल १।३०।० मिला इसका शुक्रमें संस्कार किया तो मंद स्पष्ट शुक्र ११।२२।५२।१७ हुआ फिर इसके शीघ्र केन्द्र ११।७।१।५२ परसे ऋण शीघ्र फल ९। ३७।४८ मिला इसका शुक्रमें संस्कार किया तो स्पष्ट शुक्र ११। १३।१४।२९ हुआ और इसकी स्पष्ट गति ७४।५३ हुई और मंद स्पष्ट ग्रहपरसे क्रांति बनाई तो उत्तरकी क्रांति २३।५६।३८ हुई फिर शीघ्र कर्ण १८।१४।४ परसे अंगुल आदि दक्षिण दिशाका शर ३०।१२ हुआ ॥

अब दृक्कर्म अर्थात् जिसका ग्रहमें संस्कार करनेसे ग्रह प्रत्यक्ष आकाशमें देख पडता है उसके और नतांशके बनानेके प्रकारको कहते हैं।

प्राक्त्रिभेण वर्जितात्संयुताच्तु पश्चिमे।
खेटतोपमोक्षयोः संस्कृतिर्नता लवाः ॥ १६ ॥

अन्वयः–प्राक् त्रिभेण वर्जितात् पश्चिमे तु संयुतात् खेटतः (क्रान्तिः साध्या) अपमोक्षयोः संस्कृतिः नताः लवाः (स्युः) ॥ १६ ॥

भाषा–ग्रहका पूर्वदिशाका उदय अथवा अस्त बनावे तो स्पष्ट ग्रहमें तीन राशि घटाकर क्रांति बनावे और पश्चिम दिशाका उदय अथवा अस्त बनाना हो तो ग्रहमें तीन राशि युत करके

क्रांति बनावे फिर उस क्रांतिका अक्षांशोंमें संस्कार करनेसे नतांश होते हैं ॥ १६ ॥

अथ उदाहरण।

स्पष्ट शुक्र ११।१३।१४।२९ है इसका पूर्व दिशाका अस्तकाल बनाना है इसलिये इसमें तीन राशि घटाई तो ८।१३।१४।२९ हुआ फिर इसपरसे दक्षिण दिशाकी क्रांति १३।५६।४२ मिली इसका अक्षांश २५।२६।४२ में संस्कार किया तो दक्षिण दिशाके नतांश ४९।२३।२४ हुए ॥

अब दृक्कर्म बनानेके प्रकारको कहते हैं।

षट्शैलाष्टनवार्कधृत्यदितिजाः खण्डानि कार्यं नतां-
शांशांशप्रमखण्डकैक्यमगतोच्छिष्टांशघाताद्युतम् ।
आशाघ्न्या रविहृच्छरांगुलहतं लिप्ता ग्रहे ता नतां-
शेष्वोः स्वर्णमभिन्नभिन्नदिशि स व्यस्तं परे दृग्ग्रहः १७॥

अन्वयः-षट्शैलाष्टनवार्कधृत्यदितिजाः (एतानि) खण्डानि नतांशांशां-शप्रमखण्डकैक्यं कार्य्यम् अगतोच्छिष्टांशघातात् आशाघ्न्या युतं शरांगुलहतं रविहृत् लिप्ताः (भवन्ति) ताः नतांशेष्वोः अभिन्नभिन्नदिशि ग्रहे स्वर्णं (देयाः) परे व्यस्तं (देयाः) सः दृग्ग्रहः (भवति) ॥ १७ ॥

भाषा-छः, सात, आठ, नौ, बारह, अठारह और ३३ ये खण्डे होते हैं फिर नतांशोंमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उसके समान गत खण्डेके योगको जान लेवे फिर उससे अगले खण्डेसे शेषको गुणा करे फिर उसमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें गत खण्डेको युत करे फिर उसको अंगुल आदि शरसे गुणा करे फिर उन्होंमें बारहका भाग देनेसे कला आदि दृक्कर्म होता है। जो पूर्व दिशाका उदय अथवा अस्त बनाना हो और नतांश शर एक दिशाके हों तो यह दृक्कर्म धन और भिन्न भिन्न दिशाके हों तो ऋण होता है और पश्चिम दिशाका उदय

अथवा अस्त बनाना हो तो विपरीत अर्थात् भिन्न दिशामें हो तो धन और एक दिशामें हो तो दृक्कर्म ऋण होता है फिर इसका ग्रहमें संस्कार करनेसे दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ ग्रह स्पष्ट होता है ॥ १७ ॥

अंकसंख्या	१	२	३	४	५	६	७
दृक्कर्मके अंक	६	७	८	९	१२	१८	३३

अथ उदाहरण।

नतांश ४९।२३।२४ इन्होंमें १० का भाग देनेसे फल ४ मिला शेष रहे ९।२३।२४ फिर फल ४ के समान गत खण्डोंका योग ३० है फिर शेष ९।२३।२४ को भोग्य खण्डे १२ से गुणा दिया तो ११२।४०।४८ हुए फिर इन्होंमें दशका भाग देनेसे फल ११। १६।४ मिला फिर इसमें गत खण्डोंके योग ३० को युत किया तो ४१।१६।४ हुए फिर इन्होंको अंगुल आदि शर ३०।१२।५ से गुणा किया तो १२४६।२०।३९ हुए फिर इन्होंमें १२ का भाग देनेसे कला आदि दृक्कर्म १०३।५१ मिला यहां नतांश और शर एक दिशाके हैं इसलिये यह दृक्कर्म कला १०३।५१ अर्थात् १। ४३।५१ धन है इसको स्पष्ट शुक्र ११।१३।१४।२९ में युत किया तो दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ स्पष्ट शुक्र ११।१४।५८।२० मिला॥

अब ग्रहका उदय अस्तका काल जाननेके प्रकारको कहते हैं।

कल्प्योऽल्पो रविरर्कदृक्खचरयोरन्यश्च लग्नं तयो-
र्मध्ये स्युर्घटिकाश्च पूर्ववदिमाः पश्चात्स चक्रार्द्धयोः।
षड्घ्नाः काललवा अमीभिरधिकैर्गम्योऽस्त ऊनैर्गतः
प्रोक्तेभ्योऽभ्यधिकैर्गतः समुदयो न्यूनैस्तु गम्यो भवेत्॥

अन्वयः-रविः अर्कदृक्खचरयोः अल्पः कल्प्यः (यः) अन्यः च (तस्य) लग्नं (कल्प्यं) तयोः मध्ये च (अयनांशान् दत्त्वा) पूर्ववत् (कालः साध्यः) पश्चात् चक्रार्द्धयोः सः (साध्यः) इमाः घटिकाः च षड्घ्नाः कालल्वाः स्युः। अमीभिः अधिकैः अस्तः गम्यः। ऊनैः गतः (भवेत्) समुदयः तु प्रोक्तेभ्यः अभ्यधिकैः गतः न्यूनैः गम्यः भवेत् ॥ १८ ॥

भाषा-सूर्य और दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ ग्रह इन्होंमें जो अल्प हो उसको सूर्य कल्पना करे और अधिक हो उसको लग्न कल्पना करे फिर लग्न और सूर्यमें अयनांशको युत करे फिर पहलेकी नाईं सूर्यका भोग्य बनावे अर्थात् एक राशिमें लग्न और सूर्य हो तो उन्होंके अंशोंका अंतर करे इस रीतिसे काल साधन करे और पश्चिमका उदय अथवा अस्त बनाना हो तो लग्न और सूर्यमें छः राशि युत करके पल आदि काल साधन करे फिर उन्होंमें साठका भाग देनेसे घडी आदि काल होता है फिर उन घडियोंको छःसे गुणा करनेसे इष्ट कालांश होते हैं और जो इन इष्ट कालांशोंसे पहले कहे हुए स्थिर कालांश अधिक हों तो अगाडी अस्त होगा और कम हों तो अस्त हो लिया ऐसा जाने और जो उदय बना हो तो इन कालांशोंसे स्थिर कालांश अधिक हों तो उदय हो लिया और कम हों तो अगाडी उदय होगा ऐसा जाने ॥ १८ ॥

अथ उदाहरण।

सूर्य ११।२३।३२।२६ है और दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ शुक्र ११।१४।५८।२० है इन्होंमें अल्प शुक्र है इसलिये इसीको सूर्य ११।१४।५८।२० कल्पना किया और सूर्यको लग्न ११।२३।३२।२६ कल्पना किया फिर इन दोनोंमें अयनांश युत किया तो सायन सूर्य ०।३।६।२० और सायन लग्न ०।११।४०।२६ हुए ये दोनों एक राशिमें हैं इसलिये इन्होंके अंशोंका अंतर किया तो ८।३४।६ हुए फिर इन्होंको मेषके उदय २२१ से गुणा किया तो १८९३।३६।६ हुए फिर इन्होंमें ३० का भाग देनेसे काल ६३

पल मिले अर्थात् घडी आदि १।३ मिला इसको छःसे गुणा किया तो इष्ट कालांश ६।१८ मिले और शुक्रके कहे हुए कालांश ९ हैं इसलिये शुक्रका अस्त हो गया ऐसा जाने ॥

अब अस्त अथवा उदय इन्होंके दिन बनानेके प्रकारको कहते हैं।

खाभ्राग्निभिर्विनिहिताः कथितेष्टकालभागान्तरस्य कलिका रविभोदयाप्ताः। तत्सप्तमेन परतोऽथ जवान्तरेण योगेन वक्रिणि दिनान्युदयास्तयोः स्युः ॥ १९ ॥

अन्वयः—कथितेष्टकालभागान्तरस्य कलिकाः खाभ्राग्निभिः विनिहिताः (ततः) रविभोदयाप्ताः अथ परतः तत्सप्तमेन (भक्ताः ततः) जवान्तरेण (भक्ताः) वक्रिणि (ग्रहे) योगेन (भक्ताः) उदयास्तयोः दिनानि स्युः ॥ १९ ॥

भाषा—कहे हुए कालांश और इष्ट कालांश इन्होंके अंतरके अंश आदिकी कला बनावे फिर उन्होंको ३०० से गुणा करे जो पूर्व दिशाका उदय अथवा अस्त बनाना हो तो सूर्यकी राशिके उदयका भाग देवे और जो पश्चिम दिशाका उदय अथवा अस्त बनाना हो तो उसमें सायन सूर्यसे जो सातवीं राशि हो उसका भाग देवे फिर उसमें सूर्य और जिस उदय अथवा अस्त बनाना हो वह ग्रह इन दोनोंकी गतियोंके अंतरका भाग देनेसे उदय अथवा अस्तके दिन होते हैं और जो वक्री ग्रहका उदय अथवा अस्त बनाना हो तो दोनों ग्रहोंकी गतियोंके योगका भाग देनेसे दिन आदि होते हैं ॥ १९ ॥

अथ उदाहरण।

कहे हुए शुक्रके कालांश ६।४६ और इष्ट कालांश ६।१८ हैं इन्होंका अंतर किया तो ०।२८ हुए फिर इसकी कला २८ को ३०० से गुणा किया तो ८४००हुए यहां पूर्व दिशाका अस्त

बनाना है इसलिये उसमें सूर्यकी राशिके उदय २२१ का भाग दिया तो ३८।०।३२ हुए फिर इन्होंमें सूर्य गति ५९।० और शुक्र गति ७४।५३ इन्होंके अंतर १५।५३ का भाग दिया तो शुक्रके अस्तके गत दिन आदि २।२३।३४ मिले अर्थात् चैत्र शुदि अष्टमीसे पहले इतने दिन आदि २।२३।३४ में शुक्रका पूर्व दिशामें अस्त हुआ ॥

अब चंद्रमा और शुक्र इन्होंके कालांशोंमें जो संस्कार आचार्यने यंत्रके वेध आदिसे देखा है उसको कहते हैं।

स्यात्खाभ्राग्न्युदयांतरं भविहृतं स्वर्णं पृथूनोदये
यत्तत्संस्कृतदृष्टिकर्म्मलवतः प्राणांशसंस्कारिताः।
पूर्वोक्ता भृगुचन्द्रयोः क्षणलवाः स्पष्टा भृगोश्चोनिता
द्वाभ्यां तैरुदयास्तदृष्टिसमता स्याल्लक्षितैषा मया २०

अन्वयः-खाभ्राग्न्युदयान्तरं भविहृतं (सत्) यत् (फलं) स्यात् (तत्) पृथूनोदये स्वर्णं (कार्य्यं) तत्संस्कृतदृष्टिकर्म्मलवतः प्राणांशसंस्कारिताः भृगुचन्द्रयोः पूर्वोक्ताः क्षणलवाः स्पष्टाः (स्युः) । भृगोः च द्वाभ्यां ऊनिताः (कार्य्याः) तैः (शुक्रचन्द्रयोः) उदयास्तदृष्टिसमता स्यात् एषा मया लक्षिता ॥ २० ॥

भाषा-अपना उदय और ३०० का अंतर करे फिर उसमें सत्ताईसका भाग देनेसे जो अंश आदि फल मिले वह तीन सौसे उदय ऊन हो तो वह फल ऋण और अधिक हो तो वह फल धन होता है फिर इसका अंश आदि दृक्कर्ममें संस्कार करे फिर इन्होंमें पांचका भाग देनेसे जो अंश आदि फल मिले उसका पहले कहे हुए शुक्र और चंद्रमाके कालांशोंमें संस्कार करे फिर शुक्रके कालांशोंमें दो और ऊन करे इन कालांशोंपरसे शुक्र चन्द्रमाका उदय और अस्त आकाशमें प्रत्यक्ष देख पडता है यह उदय अस्तके कालांशोंका अंतर मैंने यंत्रके वेध आदिसे देखा है ॥२०॥

अथ उदाहरण ।

यहां सायन शुक्रका उदय २२१ और ३०० इन्होंका अंतर किया तो ७९ हुए फिर इसमें सत्ताईसका भाग देनेसे अंश आदि फल २।५५।३३ मिला उदय तीन सौसे ऊन है इसलिये यह फल ऋण हुआ और अंश आदि दृक्कर्म धन १।४३।५१ है इन दोनोंका संस्कार किया तो १।११।४२ हुए फिर इन्होंमें पांचका भाग दिया तो अंश आदि फल ऋण ०।१४ मिला फिर कहे हुए शुक्रके कालांश ९ में इन्होंको ऊन किया तो ८।४६ हुए फिर इन्होंमें दो अंश और घटा दिये तो शुक्रके कालांश ६।४६ हुए इन कालांशोंपरसे साधन किया हुआ शुक्रका उदय अस्त आकाशमें प्रत्यक्ष देख पडता है । यहां कालांश ६।४६ और इष्ट कालांश ६।१८ है यहां कहे हुए कालांशोंसे इष्ट कालांश ऊन है इसलिये अस्त हुआ ॥

अब अगस्त्यके अस्त उदय बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

पलभाष्टवधोनसंयुता गजशैला वसुखेचरा लवाः ।
इह तावति भास्करे क्रमाद्घटजोऽस्तं ह्युदयं च गच्छति ॥ २१ ॥

अन्वयः–गजशैलाः वसुखेचराः लवाः पलभाष्टवधोनसंयुताः (कार्य्याः) तावति भास्करे(सति)इह क्रमात् घटजः हि अस्तम् उदयं च गच्छाति॥२१॥

भाषा–पलभाको आठ गुणा करनेसे अंश होते हैं इन अंशोंको २ जगह धरे एक जगह ७८ में घटा देवे दूसरी जगह इन्होंमें ९८ को युत करे फिर उसमें तीसका भाग देनेसे जो फल मिले उसकी समान जिस महीनेमें सूर्य हो क्रमसे उस महीनेमें अस्त और उदय होता है ॥ २१ ॥

अथ उदाहरण ।

पलभा ५।४५ को आठसे गुणा किया तो ४६।० हुए फिर

इन्होंको ७८ में ऊन किया तो ३२ हुए एक जगह इनमें ३० का भाग दिया तो १।०२ दूसरी जगह ४६ में ९८ अंश और युत किये तो १४४ हुए फिर इन्होंमें ३० का भाग देनेसे ४।२४ मिले ऐसे करनेसे वृषके दो अंशोंपर अगस्त्यका अस्त और सिंहके २४ अंशोंपर अगस्त्यका उदय होता है ॥

अब ग्रहोंके नित्य उदय अस्त बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

खेचरोऽर्कास्तकाले सषड्भार्कतो योऽधिकोऽल्पोऽर्कतो निश्युदेतीह सः । अस्तमेत्यन्यथाथो विधेयः क्रमात्पूर्वपश्चात्स्थदृक्कर्म्मभाक्स ग्रहः ॥ २२ ॥

अन्वयः-अर्कास्तकाले यः खेचरः सषड्भार्कतः अधिकः (वा यः केवलात्) अर्कतः अल्पः सः इह निशि उदेति अन्यथा अस्तम् एति अथो सः ग्रहः क्रमात् पूर्वपश्चात्स्थदृक्कर्मभाक् विधेयः ॥ २२ ॥

भाषा-जिस ग्रहका उदय अथवा अस्त बनाना हो तो उस ग्रहको सूर्यके अस्तकालमें स्पष्ट बनावे फिर प्रातःकालके सूर्यमें छः राशि युत करे फिर वह ग्रह छः राशि युत सूर्यसे अधिक हो और प्रातःकालके सूर्यसे अल्प हो तो वह ग्रह रात्रिमें उदय होता है और जो ग्रह छः राशिसे युत सूर्यसे अल्प हो और प्रातःकालके सूर्यसे अधिक हो तो वह ग्रह अस्त होता है फिर वह ग्रह उदयका हो तो उसमें पूर्व दिशाके दृक्कर्मका संस्कार करे और अस्तकालका हो तो उसमें पश्चिमके दृक्कर्मका संस्कार करे ॥ २२ ॥

अथ उदाहरण ।

शाके १५३४ में वैशाख शुदि पूर्णिमाके दिन बृहस्पतिका नित्य अस्त बनानेके लिये गणित करते हैं उस दिन स्पष्ट सूर्य १।५।४२।३७ और इसकी स्पष्ट गति ५७।३६ हुई स्पष्ट बृहस्पति

४।२।९।४९ और इसकी स्पष्ट गति ५।२२ हुई मंद स्पष्ट बृहस्पति ४।१२।५२।४४ और इसकी मंद स्पष्ट गति ४।४२ हुई दिनमान ३३।६ हुआ और सूर्यके अस्तकालमें सूर्य और बृहस्पतिको चालन दिया तो सूर्य १।६।१४।२३ और बृहस्पति ४।१२।५५।१९ हुए फिर चालित मंद स्पष्ट बृहस्पति ४।१२।५५।१९ में अपने पात २।२० को घटा दिया तो १।२२।५५।१९ हुए फिर इसपरसे क्रांति १८।४९ शीघ्र कर्ण ११।१२।४२ और अंगुल आदि उत्तर दिशाका शर १९।१८।५२ हुआ और यहां स्पष्ट बृहस्पति ४।२। ११।४६ छः राशिसे युत सूर्य ७।५।४२।३७ से कम है और केवल सूर्य १।५।४२।३७ से अधिक है इसलिये बृहस्पति रात्रिमें अस्त रहता है और यहां पश्चिम दिशाका अस्त बनाना है इसलिये बृहस्पतिमें ३ राशि युत करीं तो ७।२।१२।४६ हुए इसकी क्रांति दक्षिण दिशा १८।११।४१ की मिली इन्होंका अक्षांशोंमें संस्कार करनेसे दक्षिण दिशाके नतांश ४३।३८।२३ हुए और दृक्कर्म कला आदि धन ५५।१८ मिली इसका बृहस्पतिमें संस्कार किया तो दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ बृहस्पति ४।३।८।४ हुआ ॥

अब रात्रिमें ग्रहके उदय अस्तकी गत घडियोंके जाननेके प्रकारको कहते हैं।

उद्गमे यातकालः खगात्त्वस्तके षड्भयुक्तात्सषड्-भार्कभोग्यान्वितः। युक्तमध्योदयोऽस्योद्गमास्ते भवेद्रात्रियातोऽथ तत्कालखेटात्स्फुटः ॥ २३ ॥

अन्वयः—उद्गमे (सति) खगात् यातकालः (साध्यः) अस्तके तु षड्भयुक्तात् (यातकालः साध्यः) सषड्भार्कभोग्यान्वितः युक्तमध्योदयः अस्य उद्गमास्ते रात्रियातः भवेत् अथ तत्कालखेटात् स्फुटः (स्यात्)॥२३॥

भाषा—ग्रहका उदय बनाना हो तो दृक्कर्मसे संस्कार किये हुए ग्रहपरसे भुक्त काल बनावे और अस्त बनाना हो तो छः राशिसे युत ग्रहपरसे भोग्य काल बनावे फिर भोग्य कालमें भुक्तकालको

युत करे फिर इसमें मध्य कालके उदयोंको युत करे यह ग्रहके उदय अस्तमें रात्रिका गत काल होता है फिर उस कालका दृक्कर्म आदि बनाकर फिर काल बनावे ऐसे करनेसे स्पष्ट काल होता है ॥ २३ ॥

अथ उदाहरण ।

दृक्कर्म संस्कार किये हुए ग्रह गुरुपरसे भुक्त काल १७९ मिला और छः राशिसे युत सूर्य ७।६।१४।२३ परसे भोग्य काल ६४ मिला दोनों कालोंका योग किया तो २४३ हुए फिर इसमें धनका उदय ३४२ और मकरका उदय ३०४ इन्होंको युत किया तो ८८९ हुए फिर इन्होंमें साठका भाग देनेसे सूर्यको अस्तसे १४।४९ इतनी घडियोंमें बृहस्पतिका अस्त काल हुआ फिर इन घडी आदियोंका बृहस्पतिमें संस्कार किया तो बृहस्पति ४।२।१४।० हुआ और यही लग्न ४।३।९।२४ है सूर्य १।६।२८।३६ है और लग्नका भुक्त काल १७९ मिला और सूर्यका भोग्य काल ६१।३६।६ हुआ इन दोनोंका योग किया तो २४० हुए इसमें धनका उदय ३४२ और मकरका उदय ३०४ युत किया तो ८८६ हुए फिर इसमें साठका भाग देनेसे गुरुका स्पष्ट काल १४।४६ मिला ॥

अब तात्कालिक चंद्रमाके विना चन्द्रमाके स्पष्टोदयकालके स्पष्टीकरणको कहते हैं ।

इन्दोस्तु गोपलाढ्योनः कार्य्योऽथ प्रतिनाडिकम् ।
युतो द्विद्विपलैः स्पष्टः किं स्यात्तात्कालिकेन्दुना२४

अन्वयः-इन्दोः (उदयास्तकालः) गोपलाढ्योनः कार्य्यः अथ तु प्रतिनाडिकं द्विद्विपलैः युतः स्पष्टः (भवति । पुनः) तात्कालिकेन्दुना किं स्यात् ॥ २४ ॥

भाषा-चन्द्रमाके उदयकालमें नौ पल युत और अस्तकालमें नौ पल ऊन करे फिर एक एक घडीमें दोसे गुणी हुई

घडियोंके समान पलोंको पलोंमें युत करे ऐसे करनेसे स्पष्ट काल होता है फिर उस तात्कालिक चन्द्रमाका कुछ प्रयोजन नहीं ॥ २४ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत–बेरीग्रामनिवासि–गौड़वंशावतंस–विविधशास्त्रपरमपण्डित–श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां नवमः अस्तोदयाधिकारः समाप्तः ॥ ९ ॥

अथ दशमोऽधिकारः।

अब ग्रहच्छायाधिकार अर्थात् ग्रहोंकी छाया बनानेके अधिकारको कहते हैं।

प्राग्दृष्टिकर्म्मखचरस्तनुतोऽल्पकोऽस्तात्पुष्टश्च दृश्य इह खेचरभोग्यकालः। लग्नेन युक्तश्च विवरोद-ययुग्द्युयातः स्यात्खेचरस्य सितगोर्यदि गोपलोनः १॥

अन्वयः–प्राग्दृष्टिकर्म्मखचरः (यदा) तनुतः अल्पकः अस्तात् च पुष्टः (स्यात् तदा) दृश्यः इह खेचरभोग्यकालः (स्यात्)। लग्नेन युक् विवरोदययुक् च खेचरस्य द्युयातः स्यात्। यदि सितगोः (तर्हि) गोपलोनः (कार्य्यः) ॥ १ ॥

भाषा–पूर्व दिशाके दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ ग्रह इष्ट कालके लग्नसे अल्प और सप्तम लग्नसे अधिक हो तो उस समयमें ग्रह दृश्य अर्थात् देखनेके योग्य होता है और यहां ग्रहके भोग्य कालमें लग्नके भुक्त कालको युत करे फिर उसमें मध्यके उदयको युत करे ऐसे करनेसे ग्रहके उदयसे ग्रहका दिन गतकाल होता है और जो चन्द्रमाका दिन गतकाल हो तो उसमें और नौ पल घटा देवे ॥ १ ॥

अथ उदाहरण।

शाके १५३२ में वैशाख शुदि ९ शनिवारके दिन १० घडी

रात्रिको चन्द्रमाकी छायाको बनाते हैं उस दिन अहर्गण ७७७ हुआ और उस दिन प्रातःकालमें मध्यम सूर्य राश्यादि ०।२०। ५६।२२ चन्द्रमा ३।२६।५८।३ चन्द्रमाका उच्च ७।२२।४।६ और राहु २।२३।४७।३ हुए यहां सूर्यके मन्द केंद्र १।२७।३।३८ परसे धन मन्द फल १।४९।४० मिला इसका मध्यम सूर्यमें संस्कार किया तो सूर्य ०।२२।४६।२ हुआ अयनांशा १८।८ और ऋण चर ७३ मिला इस चरका सूर्यमें संस्कार किया तो स्पष्ट सूर्य ०।२२।४४। ४९ हुए और इसकी स्पष्ट गति ५७।५८ हुई और तीन फलोंसे संस्कार किया हुआ चन्द्रमा ३।२६।३५।१३ हुआ फिर इसके मन्द केन्द्र ३।२५।२८।५३ परसे धन मन्द फल ४।३२।० मिला इसका चन्द्रमामें संस्कार किया तो स्पष्ट चन्द्रमा ४।१।७।१३ हुआ और इसकी स्पष्ट गति ८१९।१९ हुई दिनमान ३२।२६ हुआ सूर्यका उदयसे गत घडी ४२।२६ के समान सूर्य चन्द्रमा राहु इन्होंको चालन दिया तो सूर्य ०।२३।२५।४८ चन्द्रमा ४।१०।४६।३९ और राहु २।२३।४४।४८ हुए और चन्द्रमामें राहुको घटा दिया तो व्यगु चन्द्रमा १।१७।१।५१ हुआ और उत्तर शर अंगुलादि ६५।४४ मिला फिर चन्द्रमा ४।१०।४६।३९ में तीन राशि घटा दीं तौ १।१०।४६।३९ हुआ इस परसे उत्तर दिशाकी क्रांति २०।१९।३९ हुई इसका अक्षांश २४।२६।४२ में संस्कार किया तो दक्षिणके नतांश ५।७।३ हुए फिर इन्होंपरसे पूर्व दृक्कर्म कला आदि ऋण १६।४९ मिली इसका चन्द्रमामें संस्कार किया तो दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ चन्द्रमा ४।१०।२९।५० मिला और १० घडी रात्रिकी लग्न ८।१६।२४।२२ हुई और पूर्व दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ चन्द्रमा इस लग्नसे अल्प और सप्तम लग्न २। १६।२४।२२ से अधिक है इसलिये १० इष्ट घडियोंपर चन्द्रमा दृश्य है और अयनांश और दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ चन्द्रमाका भोग्य काल १५ पल मिला इसमें अयनांशसे युत लग्नका

मुक्त काल ४६ है इसको युत किया तो ६१ हुए और ग्रह और लग्नके मध्यमें सिंहसे मकरतक राशि है इसलिये मकरसे सिंहतक उदयोंके योग १३५७ को ६१ में युत किया तो १४१८ पल हुए फिर इसमें साठका भाग देनेसे दिनका गत काल २३।३८ हुए अब चन्द्रमाका दिनगत काल लाना है इसलिये इसमें नौ पल और घटा दिये तौ चन्द्रमाके दिनका गत काल २३।२९ हुआ ॥

अब ग्रहकी छाया बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

जिनाप्तोऽक्षाभाघ्नोऽङ्गुलमयशरोऽनेन तु चरं
स्फुटं संस्कृत्यातो दिनमथ खगस्य द्युविगतात् ।
प्रभाद्यं संसिद्ध्येदथ खचरभादेर्निशिगतं
ब्रुवेऽथारादीनां द्युतिपरिगमं यन्त्रवशतः ॥ २ ॥

अन्वयः–अंगुलमयशरः अक्षाभाघ्नः (ततः) जिनाप्तः (कार्यः ।) अनेन तु चरं संस्कृत्य स्फुटं (कार्य्यं) अतः दिनं (साध्यम् ।) अथ खगस्य द्युविगतात् प्रभाद्यं संसिध्येत् । अथ खचरभादेः निशिगतम् अथ आरादीनां द्युतिपरिगमं यन्त्रवशतः ब्रुवे ॥ २ ॥

भाषा–अंगुल आदि शरको पलभासे गुणा करे फिर उसमें चौवीसका भाग देनेसे जो फल मिले उसका चरमें संस्कार करे अर्थात् शर और चर एक गोलके हों तो युत और भिन्न गोलके हों तो ऊन करे ऐसे करनेसे स्पष्ट चर होता है फिर इसपरसे दिनमान बनावे फिर इष्ट ग्रहके दिन गतकालपरसे त्रिप्रश्नाधिकारके अनुसार सूर्यकी तरह छाया बनावे । ग्रहकी छायाके यंत्रके अंशोंपरसे रात्रिकी गत घडियोंको अगाडी कहेंगे और मंगल आदि ग्रहोंकी छायाका ज्ञानभी यंत्रपरसे अगाडी कहेंगे ॥ २ ॥

अथ उदाहरण ।

दृक्कर्मसे संस्कार किये हुए चन्द्रमापरसे उत्तरका चर ५९ मिला

और अंगुल आदि उत्तर दिशाका शर ६५।४४ मिला फिर पलभा ५।४५ को शरसे गुणा दिया तो ३७७।५८ हुए फिर इन्होंमें २४ का भाग देनेसे उत्तर दिशाका फल १५।४४ मिला यह शरभी उत्तरका है इसलिये इसका चर ५९ में संस्कार किया तो स्पष्टचर ७४।४४ हुआ यह दक्कर्म दत्त चन्द्रके उत्तर गोलीय होनेके कारण धन है इसलिये ७४ पलमें १५ घटीको जोडा तो १६।१४ दिनार्द्ध हुआ फिर इसपरसे दिनमान ३२।२८ मिला और दिन गतकाल २३।२९ मिला इसको दिनमान ३२।२८ में घटा दिया तो शेष काल ८।५९ घटचादि मिला यह पश्चिमोन्नत है और यहां उन्नत पश्चिम कपालमें है इसलिये दिनार्द्ध १६।१४ में इसको घटा दिया तो पश्चिम नत काल ७।१५ हुआ और इससे अक्ष कर्ण १३।१९ मिला और स्पष्ट चर ७४।४४ हार १२८।५६ समाख्य ३०।१ मिला वांछित हार ७।२५ और भाज्य ११७।५५ मिले और अंगुल आदि कर्ण अंगुलादि १५।५३ और इष्ट छाया अंगुलादि १०। २४ मिली ॥

अब प्रतिज्ञा की हुई छायाको घीयंत्रसे कहते हैं।

पश्येज्जलादौ प्रतिबिम्बितं वा खेटं दृगौच्यं गणये-
च्च लम्बम्। तं लम्बपातप्रतिबिम्बमध्यं दृगौच्यहृ-
त्सूर्य्यहतं प्रभा स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः-जलादौ खेटं प्रतिबिम्बितं पश्येत् वा दृगौच्यं लम्बं च गणयेत् तं लम्बपातप्रतिबिम्बमध्यं (गणयेत्) सूर्यहतं दृगौच्यहृत् प्रभा स्यात् ॥ ३ ॥

भाषा-जल अथवा दर्पण आदिमें इष्ट ग्रहका प्रतिबिंब देखे फिर भूमिसे दृष्टिपर्य्यंत एक लंब डाले वह लंब जहां भूमिमें लगे वहांसे जलके प्रतिबिंबके मध्यमें अंगुल आदि गणना करे फिर उस अंगुल आदिको बारहसे गुणा करे फिर उसमें दृष्टिकी ऊंचाईका भाग देनेसे अंगुल आदि छाया होती है अथवा तुरीय यंत्रसे

वेध करे हुए ग्रहके नतांशोंपरसे कही हुई रीतिसे कर्ण बनावे फिर उस कर्ण और बारहके वर्गका अंतर करनेसे इष्ट छाया होती है ॥ ३ ॥

अब ग्रहकी छायासे दिनगतकाल बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

ज्ञात्वानुमानान्निशि यातनाडीस्तत्कालखेटात्क-थितैश्चराद्यैः । दृष्टप्रभादेर्द्युगतो ग्रहस्य साध्य-स्त्विहेन्दोर्यदि गोपलाढ्यः ॥ ४ ॥

अन्वयः-अनुमानात् निशि यातनाडीः ज्ञात्वा तत्कालखेटात् कथितैः चराद्यैः दृष्टप्रभादेः ग्रहस्य द्युगतः (कालः) साध्यः । यदि इन्दोः (तर्हि) तु इह गोपलाढ्यः (कार्य्यः) ॥ ४ ॥

भाषा-रात्रिमें अनुमानसे ग्रहकी स्थूल घडी जानकर उस कालके ग्रहसे कहा हुआ चर और इष्ट छाया इन्होंपरसे ग्रहका सूर्यकी नाईं दिनका गतकाल बनावे और जो दिनगतकाल चंद्रमाका हो तो नौ पल उसमें और युत करे ॥ ४ ॥

अथ उदाहरण ।

अनुमान किया कि रात्रिकी १० घडी गई हैं उस कालके चंद्रमापरसे स्पष्ट चर ७४।४४ दिनमान ३२।२८ और इष्ट छाया १०।२४ हुई इन्होंपरसे विलोम विधिसे कर्ण १५।५३ भाज्य ११७।५५ वांछित हार ७।२५ अक्ष कर्ण १३।१४ मध्य हार १२८।५६ और पश्चिम नत ७।१५ हुआ इस नतको दिनार्द्ध १६।१४ में युत किया तो ग्रहका दिनगतकाल २३।२९ घट्यादि मिला यह चंद्रमाका दिनगतकाल है इसलिये इसमें ९ पल युत किये तो चंद्रमाका दिनगतकाल २३।३८ मिला ॥

अब ग्रहोंके उदयमें दिनशेषकाल और रात्रिगतकाल इन्होंके बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

प्राग्दक्खचराङ्गभाढ्यभान्वोरल्पोऽर्कस्त्वपरस्तनु-

स्तदन्तः । कालः खगोदये द्युशेषो रात्रीतः क्रम-
शो ग्रहेऽल्पपुष्टे ॥ ९ ॥

अन्वयः-प्राग्दक्कर्मसंस्कृताभ्रभाढ्यभान्वोः अल्पः अर्कः अपरः तु तनुः तदन्तः (यः) कालः (सः) खगोदये ग्रहे अल्पपुष्टे क्रमशः द्युशेषः रात्रीतः (स्यात्) ॥ ९ ॥

भाषा-पूर्व दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ ग्रह और छः राशिसे युत सूर्य इन्होंमें जो अल्प हो उसको सूर्य कल्पना करे और अन्यको लग्न कल्पना करे फिर इन्होंके अंतरमें जो काल वह सूर्यका भोग्य काल होता है फिर उसमें लग्नका भुक्तकाल और मध्य उदय इन्होंको युत करे फिर वह ग्रह छः राशिसे युत सूर्यसे अल्प हो तो ग्रहके उदयमें दिनशेष काल और अधिक हो तो रात्रिगतकाल होता है ॥ ९ ॥

अथ उदाहरण ।

पूर्व दृक्कर्मसे संस्कार किया हुआ चन्द्रमा ४।१०।२९।५० और छः राशिसे युत सूर्य ६।२३।२५।४८ इन्होंमें चन्द्रमा अल्प है इसलिये चन्द्र ४।१०।२९।५० को सूर्य कल्पना किया और अन्य सूर्यको लग्न कल्पना किया फिर इन्होंके अंतरमें सूर्यका भोग्य काल १५ मिला इसमें और ६ राशि युक्त सूर्य ६।२३।२५।४८ को लग्न मानकर लाये हुए भुक्तकाल १३३ को युत किया तो १४८ हुए फिर मध्य उदय अर्थात् इन्होंमें कन्याका उदय ३३५ और तुलाका उदय ३३५ इन्होंको युत किया तो ८१८ पल हुए इसमें ६० का भाग दिया तो १३।३८ लब्धि हुई और चन्द्रमा ६ राशि युक्त सूर्यसे कम है इसलिये जब १३ घडी ३८ पल दिन शेष रहेगा तब चन्द्रोदय होगा ॥

अब सूर्यके अस्तसे गत रात्रिकालको कहते हैं ।

तेनोनोऽथ च सहितो ग्रहद्युयातः स्यादर्कास्तसमय-

तो निशि प्रयातः । चेद्ग्लावोऽनुमितघटीष्वतोऽ-
ल्पपुष्टं द्विघ्नं तत्समपलयुग्वियुक्स्फुटः सः ॥ ६ ॥

अन्वयः–तेन ऊनः अथ च (रात्रिगतेन) सहितः ग्रहद्युयातः अर्कास्तसमयतः निशि प्रयातः स्यात् । ग्लावः चेत् (तदा)अनुमितघटीषु अतः (यावत्) अल्पपुष्टं (तावत् एव) द्विघ्नं (पलात्मकं स्यात् ।) तत्समपलयुग्वियुक् सः स्फुटः (स्यात्) ॥ ६ ॥

भाषा–दिनशेष कालको ग्रहके दिनगत कालमें ऊन करे फिर उसमें रात्रिगत कालको युत करनेसे सूर्यके अस्तसे रात्रिगतकाल होता है और जो यह काल चंद्रमाके रात्रिगतकाल बनानेमें कल्पना की हुई घडीपरसे आई हुई जो घडी कम अधिक हों तो उन्होंके अंतरको दो गुणा करे फिर उन्होंके समान पलोंसे वह काल अल्प हो तो युत और अधिक हो तो ऊन करे ऐसे करनेसे चन्द्रमाका स्पष्ट काल होता है ॥ ६ ॥

अथ उदाहरण ।

चन्द्रमाके दिनगतकाल २३।३८ में दिनशेषकाल १३।३८ को घटा दिया तो सूर्यका अस्तसे रात्रिगतकाल १० मिला ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत–बेरीग्रामनिवासि–गौड़वंशावतंस–विविधशास्त्रपरमपण्डित–श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां दशमः ग्रहच्छायाधिकारः समाप्तः ॥ १० ॥

अथैकादशोऽधिकारः ।

अब वहां पहले नक्षत्रोंके अंश आदि ध्रुवों-
को कहते हैं ।

दास्राद्दृष्ट च मूर्छना गजगुणा नन्दाब्धयो दृग्रसाः

षट्तर्का युगखेचरा रसदिशोऽद्र्यांशा नवार्काः क्रमात्। भाग्यादष्टयुगेन्दवोऽक्षतिथयः खात्यष्ट-योंशा ध्रुवास्त्र्यष्टाब्जा गजगोभुवो रविदृशः सिद्धा-श्विनः खत्रिदृक् ॥१॥ मूलात्स्युर्द्विजिनाः शरा-शुगदृशः कृङ्गाश्विनोऽष्टेषुदृग्बाणक्षीणि रसाष्टदृ-ङ्नखगुणास्तत्त्वाग्नयोऽश्वामराः। खं दत्तायन-दृक्क्रियाः स्युरिह च क्षेपोऽक्षभाघ्नोऽर्कहृत्स्वर्णं प्राक्परतोऽन्यथोत्तरशरे ते स्युः स्वदेशे ध्रुवाः ॥२॥

अन्वयः-दास्रात् अष्ट मूर्छनाः गजगुणाः नन्दाब्धयः दृग्रसाः षट्तर्काः युगखेचराः रसदिशः अद्र्यांशाः नवार्काः भाग्यात् अष्टयुगेन्दवः अक्षति-थयः खात्यष्टयः त्र्यष्टाब्जाः गजगोभुवः रविदृशः सिद्धाश्विनः खत्रिदृक् मूलात् द्विजिनाः शराशुगदृशः कृङ्गाश्विनः अष्टेषुदृक् बाणक्षीणि रसाष्ट-दृक् नखगुणाः तत्वाग्नयः अश्वामराः खं (एते) च क्रमात् अंशाः ध्रुवाः स्युः। (इमे) दत्तायनदृक्क्रियाः स्युः इह च क्षेपः अक्षभाघ्नः (ततः) अर्क-हृत् प्राक्परतः स्वर्णं (कार्य्यं) उत्तरशरे अन्यथा (कार्य्यं) ते स्वदेशे ध्रुवाः स्युः ॥ १ ॥ २ ॥

भाषा-अश्विनीका अंश आदि ध्रुवा ८ हैं, भरणीका २० अंश, कृत्तिकाका ३८, रोहिणीका ४९, मृगशिराका ६२, आर्द्राका ६६, पुनर्वसुका ९४, पुष्यका १०६, आश्लेषाका १०७, मघाका १२९, पूर्वाफाल्गुनीका १४८, उत्तराफाल्गुनीका १५५, हस्तका १७०, चित्राका १८३, स्वातिका १९८, विशाखाका २१२, अनुराधाका २२४, ज्येष्ठाका २३०, मूलका २४२, पूर्वाषाढाका २५५, उत्तराषाढाका २६१, अभिजित्का २५८, श्रवणका २७५, धनिष्ठाका २८६, शत-भिषाका ३२०, पूर्वाभाद्रपदाका ३२५, उत्तराभाद्रपदाका ३३७ और रेवतीका शून्य ध्रुवा है। ये सम नक्षत्रोंके अंश आदि ध्रुवे हैं

और इन्होंमें ३० का भाग देनेसे अश्विनीसे आदि सब नक्षत्रोंके ध्रुवे होते हैं और ये ध्रुवे आयन दृक्कर्म संस्कार किये हुए हैं और आगे जो नक्षत्रोंमेंसे जिसका ध्रुवा लाना हो तो उस नक्षत्रके आगे कहे हुए जानेवाले शरको पलभासे गुणा करे फिर गुणन-फलमें बारहका भाग देनेसे जो अंश आदि फल मिले उसको जो दक्षिण दिशाका शर हो और पूर्व कपालमें ध्रुवा हो तो युत और पश्चिम कपालमें हो तो ऊन करे और उत्तर दिशाका शर हो तो पूर्वकपालमें ऊन और पश्चिम कपालमें युत करे ऐसे करनेसे अपने देशके नक्षत्रोंके ध्रुवे होते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

राशि आदि नक्षत्रोंके ध्रुवे लिखते हैं

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आ.	
०	०	१	१	२	२	३	३	३	
८	२०	८	१९	२	६	४	१६	१७	
००	०	०	०	०	०	०	०	०	
म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अ.	ज्ये.	
४	४	५	५	६	६	७	७	७	
९	२८	५	२०	३	१८	२	१४	२०	
००	००	००	००	००	००	००	००	००	
मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
८	८	८	८	९	९	१०	१०	११	००
२	१५	२१	१८	५	१६	२०	२५	७	००
०	०	००	००	००	००	००	००	००	००

अब नक्षत्रोंके अंश आदि शरोंको कहते हैं।

दिक्सूर्य्यैष्विषुदिक्छवाङ्गखनगाभ्राकांश्च विश्वे भवा-
स्त्वाष्ट्राद्यौ नगवह्नयः कुयमलाग्नीभाक्षबाणा द्विषट्।

कर्णांत्रिंशदरित्रयः खजिनभाभ्रं त्वाष्ट्रहस्ताहिभे
द्वीशात्षट्सु कभाभ्रयं शरलवा याम्या उदक्छेषभे ३॥

अन्वयः-दिक्सूर्य्येष्विषुदिक्छवाङ्कस्वनगाभ्राकाः विश्वे भवाः त्वाष्ट्रात् च द्वौ नगवह्नयः कुयमलाग्नीभाक्षबाणाः द्विषट् कर्णात् त्रिंशत् अरित्रयः खजिनभाभ्रम् (एते) शरलवाः (सन्ति) त्वाष्ट्रहस्ताहिभे द्वीशात् षट्सु कभात् त्रयं याम्याः शेषभे उदक् ॥ ३ ॥

भाषा-अश्विनीका दश अंश आदि, भरणीका बारह, कृत्तिकाका पांच, रोहिणीका पांच, मृगशिरका दश, आर्द्राका ग्यारह, पुनर्वसुका छः, पुष्यका शून्य, आश्लेषाका सात, मघाका शून्य, पूर्वाफाल्गुनीका बारह, उत्तराफाल्गुनीका तेरह, हस्तका ग्यारह, चित्राका दो, स्वातिका सैंतीस, विशाखाका एक, अनुराधाका दो, ज्येष्ठाका तीन, मूलका आठ, पूर्वाषाढाका पांच, उत्तराषाढाका पांच, अभिजित्का बासठ, श्रवणका तीस, धनिष्ठाका छत्तीस, शतभिषाका शून्य, पूर्वाभाद्रपदाका चौवीस, उत्तराभाद्रका सत्ताईस और रेवतीका अंश आदि शर शून्य है ये सब नक्षत्रोंके अंश आदि शर हैं चित्रा हस्त आश्लेषा और विशाखा आदि छः नक्षत्र और रोहिणीसे तीन नक्षत्र इन्होंके अंश आदि शर दक्षिण दिशाके और शेष नक्षत्रोंके उत्तर दिशाके शर हैं ॥ ३ ॥

अंश आदि नक्षत्रोंके शर लिखते हैं।													
अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.
१०	१२	५	५	१०	११	६	०	७	०	१२	१३	११	२
उ	उ	उ	द	द	द	उ	उ	द	उ	उ	उ	द	द
स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
३७	१	२	३	८	५	५	६२	३०	३६	०	२४	२७	००
उ	द	द	द	द	द	द	उ	उ	उ	द	उ	उ	उ

अब प्रजापति आदि तारोंके ध्रुवे और शरको कहते हैं।

प्रजापतिब्रह्महृदग्न्यगस्त्याऽपांवत्सलुब्धध्रुवकांशकाः स्युः। कुषट् षडक्षास्त्रिशरा नभोऽष्टौ त्र्यष्टेन्दवो भूफणिनः क्रमेण ॥ ४ ॥

अन्वयः—कुषट् षडक्षाः त्रिशराः नभोऽष्टौ त्र्यष्टेन्दवः भूफणिनः क्रमेण प्रजापतिब्रह्महृदग्न्यगस्त्याऽपांवत्सलुब्धध्रुवकांशकाः स्युः ॥ ४ ॥

भाषा—प्रजापति तारेका ध्रुवा ६१, ब्रह्महृदय तारेका ध्रुवा ५६, अग्नि तारेका ध्रुवा ५३, अगस्त्यका ध्रुवा ८०, अपांवत्सका ध्रुवा १८३ और लुब्धक तारेका अंश आदि ध्रुवा ८१ है ॥ ४ ॥

तेषां क्रमाद्गोशिखिनः खरामा अष्टौ रसाश्वाः शिशिनः खवेदाः। शरांशकाः स्युर्मुनिलुब्धयोस्तु याम्यास्तु सौम्याः परिशेषकाणाम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—गोशिखिनः खरामाः अष्टौ रसाश्वाः शिखिनः खवेदाः (इमे) क्रमात् तेषां शरांशकाः स्युः। मुनिलुब्धयोः तु याम्याः परिशेषकाणां तु सौम्याः ॥ ५ ॥

भाषा—और प्रजापति तारेका अंश आदि शर ३९, ब्रह्महृदय तारेका शर ३०, अग्नि तारेका शर ८, अगस्त्यका शर ७६, अपांवत्स तारेका शर ३ और लुब्धक तारेका शर ४० है और मुनि तथा लुब्धकका शर दक्षिण दिशाका है औरोंका शर उत्तर दिशाका है ॥ ५ ॥

प्रजापति आदि तारोंके राशि आदि ध्रुवे और शर इन्होंका चक्र ।					
प्र.	व्र.	अ.	अ.	अ.	लु.
२	१	१	२	६	२
१	२६	२३	२०	३	२१
०	०	०	००	०	००
प्र.	ब्र.	अ.	अ.	अ.	लु.
१	१	०	२	०	१
९	०	८	१६	३	१०
०	०	०	०	०	०
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	द.

अथ उदाहरण ।

अश्विनीके शर १० अंगुलको पलभा ५।४५ अंगुलादिसे गुणा दिया तो ५७।३० हुए फिर इन्होंमें १२ का भाग देनेसे अंश आदि ४।४७।३० मिले फिर यहां शर उत्तर दिशाका है इसलिये इसको अश्विनी नक्षत्रके ध्रुवे ०।८ में घटा दिया तो काशीमें अश्विनीके ध्रुवेका उदय ३।१२।३० हुआ और अश्विनीके ध्रुवे ०।८ में फल ४।४७।३० को युत किया तो अश्विनीके अस्तका ध्रुवा १२।४७।३० हुआ ऐसे करनेसे उदय अस्तके ध्रुवे हुए ॥

अब नक्षत्रोंकी छाया यंत्रके अंश और राशि इन्होंके जाननेके प्रकारको कहते हैं ।

निजदेशभवाद्ध्रुवाच्च बाणाच्छाया यंत्रलवादि खेट-वत्स्यात् । छायादेरपि चेह रात्रियातं नक्षत्रग्रह-योग उक्तवच्च ॥ ६ ॥

अन्वयः-निजदेशभवात् ध्रुवात् बाणात् च छाया यन्त्रलवादि खेटवत् स्यात् । अपि च इह छायादेः रात्रियातं (तद्वदेव स्यात् ।) नक्षत्रग्रह-योगः च उक्तवत् (ज्ञेयः) ॥ ६ ॥

भाषा–अपने देशके ध्रुवे अथवा शरपरसे नक्षत्रोंकी छाया और यंत्रके अंश आदि ग्रहकी भांति बनावे अर्थात् ग्रहच्छायाधिकारमें कही हुई रीतिके अनुसार होते हैं। और छाया आदि-परसे गत रात्रिको ग्रहकी तरह बनावे और ग्रह इन्होंका योग ग्रहोंकी युतिकी नाईं जान लेवे ॥ ६ ॥

अब नक्षत्रोंका रोहिणीके शकटका भेदन समय और उसके फलको कहते हैं।

गवि नगकुलवे खगोऽस्य चेद्यमदिग्गिषुः खशरा-ङ्गुलाधिकः। कभशटकमसौ भिनत्त्यसृक्छनिरु-डुपो यदि चेज्जनक्षयः ॥ ७ ॥

अन्वयः–(यः) खगः गवि नगकुलवे (वर्त्तमानः) चेत् अस्य इषुः (च) यमदिक् खशरांगुलाधिकः (चेत् तदा) असौ कभशकटं भिनत्ति यदि असृक् शनिः उडुपः (भेदयति) चेत् (तदा) जनक्षयः (भवति) ॥ ७ ॥

भाषा–जो ग्रह वृष राशिमें स्थित हो और उसका शर दक्षिण दिशाका १७ अंशोंमें वर्तमान हो उस कालमें वह ग्रह रोहिणी नक्षत्रके शकटको भेदन करके जाता है और मंगल शनि चंद्रमा ये जिस कालमें रोहिणीके शकटको भेदन करते हैं उस कालमें मनुष्योंका क्षय और लोकमें अति पीडा होती है ॥ ७ ॥

अब चंद्रमा रोहिणीके शकटको कब भेदन करेगा उस कालके जाननेके प्रकारको कहते हैं।

स्वर्भानावदितिभतोऽष्टऋक्षसंस्थे शीतांशुः कभ-शकटं सदा भिनत्ति। भौमार्क्योः शकटभिदा युगान्तरे स्यात्सेदानीं न हि भवतीदृशि स्वपाते ॥८॥

अन्वयः–स्वर्भानौ अदितिभतः अष्टऋक्षसंस्थे (सति) सदा शीतांशुः कभशकटं भिनत्ति। भौमार्क्योः शकटभिदा युगान्तरे स्यात् सा हि इदानीम् ईदृशि स्वपाते न भवति ॥ ८ ॥

भाषा-जिस कालमें राहु पुनर्वसु आदि आठ नक्षत्रोंमें स्थित होता है उस कालमें सदा चंद्रमा रोहिणीके शकटको भेदन करता है और मंगल शनि ये रोहिणीके शकटको अन्य युग अर्थात् बहुत कालमें भेदन करते हैं और उनका शकटभेद ऐसे पातसे नहीं होता है ॥ ८ ॥

अब आकाशके मध्यमें स्थित हुए नक्षत्रपरसे रात्रिमानको कहते हैं ।

खमध्यगर्क्षध्रुवतोऽस्फुटं चरं ततो दिनार्द्धान्निज-
भोदयैस्तनुः । भवेत्तदा लग्नमथो तदङ्गभान्वि-
तार्कमध्ये घटिका निशागताः ॥ ९ ॥

अन्वयः-खमध्यगर्क्षध्रुवतः अस्फुटं चरं (साध्यं) ततः (साधितात्) दिनार्द्धात् निजभोदयैः (साधितः) तनुः तदा लग्नं भवेत् अथो तदङ्गभान्वितार्कमध्ये निशागताः घटिकाः (स्युः) ॥ ९ ॥

भाषा-आकाशके मध्यमें वर्तमान जो नक्षत्र उसके ध्रुवोंपर शर संस्कार विना स्पष्ट चर बनावे फिर चरपरसे दिनार्द्धपरसे इष्ट काल बनावे फिर आकाशके मध्यमें स्थित हुए नक्षत्रके ध्रुवेको सूर्य कल्पना करे फिर उसमें अयनांशका संस्कार करके अपने देशके उदयोंपरसे लग्न बनावे यह खमध्यगत लग्न होता है फिर लग्न और छः राशिसे युत सूर्य इन्होंके मध्यमें रात्रिगत घडियोंको जान लेवे ॥ ९ ॥

अथ उदाहरण ।

अश्विनीके ध्रुवे ०।८ में अयनांश १८।१० को युत किया तो०। २६।१० हुए इसपरसे चर ४९ मिला और इसपरसे दिनार्द्ध १५। ४९ मिला ऐसे सबोंके दिनार्द्ध होते हैं इन्होंपरसे लग्न बनाते हैं । अश्विनीके सायन ध्रुवे ०।२६।१० परसे भोग्य काल २८ मिला फिर इष्टकी घडी पलोंमें भोग्यकालको घटा देवे इस रीतिसे

आकाशके मध्य कालका लग्न ३।१३।४४।४६ हुआ ऐसे करनेसे सबोंके मध्य लग्न होते हैं ॥

	दिनार्द्ध			लग्न				दिनार्द्ध			लग्न		
नाम	घ.	प.	रा.	अं.	क.	वि.	नाम	घ.	प.	रा.	अं.	क.	वि.
अश्विनी	१५	४१	३	१३	४४	४६	ज्येष्ठा	१३	१२	१०	१०	१७	३०
भरणी	१६	११	३	४	५३	३६	मूल	१३	५	१०	२७	३४	४७
कृत्तिका	१६	३७	४	९	३४	२०	पूर्वाषा०	१३	१	११	६	४३	१२
रोहिणी	१६	४७	४	१९	४८	१२	उत्तराषा०	१३	४	११	२५	१६	२०
मृगशिरा	१६	५५	५	२	२०	२६	अभिजित्	१३	२	११	२०	५५	४१
आर्द्रा	१६	५८	५	६	११	१९	श्रवण	१३	३	५	१५	१६	१९
पुनर्वसु	१६	४७	६	३	८	४८	घनिष्ठा	१३	२४	०	२९	१	३७
पुष्य	१६	३६	६	१४	२१	१८	शततारका	१३	१९	२	४	२	१४
आश्लेषा	१६	३६	६	१५	१८	४१	पूर्वाभाद्रप.	१४	२९	२	८	३४	३६
मघा	१६	३१	७	४	२१	१८	उत्तराभा.	१४	५१	२	१८	४०	३१
पूर्वाफा०	१५	२६	७	१९	५४	१२	रेवती	१५	३४	३	७	१६	१८
उत्तराफा.	१५	१२	७	२५	३१	३	प्रजापति	१६	५५	५	१	२६	४२
हस्त	१४	४५	८	७	५३	९	ब्रह्महृदय	१६	५१	४	२६	३१	११
चित्रा	१४	२०	८	११	१४	४	अग्नि	१६	५०	४	२३	४४	३७
स्वाती	१३	४	९	५	१९	१२	अगस्त्य	१६	५६	५	२९	४२	५०
विशाखा	१३	३३	९	१८	१४	११	अपांवत्स	१४	२०	८	१९	१४	४
अनुराधा	१३	१६	१०	२	३५	३	कुम्भक	१६	५६	५	१०	४१	५६

अब उदयकालका नक्षत्र और अस्त कालका नक्षत्र इन्होंपरसे लग्न और रात्रिगत घडी इन्होंको कहते हैं ।

उद्यद्भध्रुवकः स्वदेशजोऽस्तं वा प्राप्नुवतः सषड्ग्रहः । स्यात्तत्कालविलग्नकं ततः प्राग्वत्स्युर्घटिका निशागताः ॥ १० ॥

अन्वयः-स्वदेशजः उद्यद्ध्रुवकः वा अस्तं प्राप्नुवतः षडङ्ग्रहः (ध्रुवकः) तत्कालविलग्नकं स्यात् । ततः प्राग्वत् निशागताः घटिकाः स्युः ॥ १० ॥

भाषा-उदय हुए नक्षत्रका जो अपने देशका ध्रुवा हो वह उस कालका लग्न होता है और अस्त होनेवाले नक्षत्रके ध्रुवोंमें छः राशि युत करनेसे अस्त लग्न होता है फिर उदयलग्न अस्त-लग्न और छः राशिसे युत सूर्य इन्होंपरसे पहलेकी नाईं रात्रिकी गत घडी बनावे ॥ १० ॥

अथ उदाहरण ।

अपने देशका अश्विनीका उदयका ध्रुवा ०।३।१२।३० है यही उस कालका लग्न है और अस्तके ध्रुवे०।१२।४७।३० में छः राशि युत की तो ध्रुवा ६।१२।४७।३० हुआ ऐसे सबोंके ध्रुवे होते हैं॥

अब अपने देशके नक्षत्रोंके उदयोंकी स्थिर लग्न करे इस रीतिको कहते हैं।

इति नैजदेशपलभावशतो ह्युदयं खमध्यमथवा-स्तमयम्। व्रजदश्विभादिषु सुखार्थमिह स्थिरल-ग्नकानि विदधीत सुधीः ॥ ११ ॥

अन्वयः-इति नैजदेशपलभावशतः हि व्रजदश्विभादिषु उदयम् अथवा खमध्यम् अस्तमयं (गच्छतः नक्षत्रस्य) सुधीः इह सुखार्थं स्थिरलग्न-कानि विदधीत ॥ ११ ॥

भाषा-अपने देशके पलभाके वशसे उदय अस्त होते हुए अश्विनी आदि नक्षत्रोंकी कही हुई रीतिसे बुद्धिमान् पण्डित सु-खके लिये स्थिर लग्नोंको बनावे ॥ ११ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गौडवंशावतंस-विविधशास्त्रपरमप-ण्डित-श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघव-भाषाटीकायामेकादशः नक्षत्रच्छायाधिकारः समाप्तः ॥ ११ ॥

अथ द्वादशोऽधिकारः ।

उसमें पहले बलन साधनके लिये गत एष्य तिथियोंके बनानेके प्रकारको लिखते हैं ।

मासस्य प्रथमेऽन्तिमेऽथवांऽघ्रौ विधुशृङ्गोन्न-तिरीक्ष्यते यदह्नि । तपनास्तमयोदयेऽवगम्या-स्तिथयः सावयवाः क्रमाद्गतैष्याः ॥ १ ॥

अन्वयः–मासस्य प्रथमे अथवा अन्तिमे अंघ्रौ यदह्नि विधुशृङ्गोन्नतिः ईक्ष्यते (तद्दिवसे) तपनास्तमयोदये क्रमात् गतैष्याः तिथयः सावयवाः अवगम्याः ॥ १ ॥

भाषा–शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे अष्टमीपर्यंत पहला चरण और कृष्णपक्षकी अष्टमीसे अमावसपर्यंत पिछला चरण होता है महीनोंके पहले चरणमें अथवा पिछले चरणमें जिस दिन चन्द्रमाकी शृंगोन्नति अर्थात् शृंगकी ऊंचाई देखनी हो उस दिन शुक्ल पक्ष हो तो सूर्यके अस्तकालके सूर्य चन्द्रमापरसे घडी आदि गत तिथियोंको अवयवसहित बनावे और जो उस दिन कृष्णपक्ष हो तो सूर्यके उदयके सूर्य चन्दमापरसे घडी आदि एष्य तिथियोंको बनावे शुक्लपक्षमें सूर्यके अस्त समय शृंगोन्नति देखे और कृष्णपक्षमें सूर्यके उदयके समय शृंगोन्नति देखे अर्थात् शुक्लपक्षकी अष्टमीसे कृष्णपक्षकी अष्टमीपर्यंत इन तिथियोंमें शृंगोन्नति नहीं होती है ॥ १ ॥

अथ उदाहरण ।

शाके १५३२ में ज्येष्ठ शुदि ५ बृहस्पतिवारके दिन शृंगोन्नति देखनेके लिये चक्र ८ और अहर्गण ८०३ हुआ इसपरसे मध्यम सूर्य १।१६।३३।५४ मध्यम चन्द्रमा ३।९।३३।१० उच्च ७।२४।५७।४८ और राहु २।२२।२४।२३ हुए फिर सूर्यके मन्द केन्द्र

१।०१।२६।६ परसे मंद फल धन १।८।२२ मिला इसका मध्यम सूर्यमें संस्कार किया तो सूर्य १।१७।४२।१६ हुआ इसमें ऋण चर १०६ का संस्कार किया तो स्पष्ट सूर्य १।१७।४०।३० हुआ अयनांशा १८।८ हुआ और सूर्यकी स्पष्टगति ५७।२० हुई और तीन फलसे संस्कार किया हुआ चन्द्रमा ३।९।१।२८ हुआ इसके मन्द केन्द्र ४।१५।५६।२० परसे मन्द फल ३।२९।२१ मिला इसका चन्द्रमामें संस्कार किया तो स्पष्ट चन्द्रमा ३।१२।३०।४९ हुआ इसकी स्पष्ट गति ८३७ और दिनमान ३३।३२ मिला इन्होंमें दिनमानका चालन दिया तो सूर्यका अस्तमें सूर्य १।१८।१२।३२ चन्द्रमा ३।१९।४८।२ और राहु २।२२।२२।३८ हुए इन्होंपरसे सूर्यके अस्तकालमें अवयवसहित तिथि पंचमी ७।२० घटी आदि मिली ॥

अब गत और एष्य अवयवसहित तिथियोंपरसे और सूर्यपरसे चन्द्रमाके बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

रविहततिथयोंशास्तद्वियुग्युक् क्रमेण द्युमणिरपरपूर्वे मासपादे विधुः स्यात् । नृपगुणतिथिरूना स्वघ्नतिथ्याक्षभाघ्नी शरकुहृदुदगाशा संस्कृतार्कापमांशैः ॥२॥चन्द्रस्य च व्यस्तशरापमांशैर्द्विनिघ्नतिथ्या विहताङ्गुलाद्यम् । संस्कारदिक्कं वलनं स्फुटं स्यात्स्वेष्वंशहीनास्तिथयः सितं स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः-रविहततिथयः अंशाः तद्वियुग्युक् द्युमणिः क्रमेण अपरपूर्वे मासपादे विधुः स्यात् । नृपगुणतिथिः स्वघ्नतिथ्या ऊना अक्षभाघ्नी (ततः) शरकुहृत उदगाशा (स्यात् सा) अर्कापमांशैः चन्द्रस्य व्यस्तशरापमांशैः च संस्कृता (ततः)द्विनिघ्नतिथ्या विहता अंगुलाद्यं संस्कारदिक्कं वलनं स्फुटं स्यात् । स्वेष्वंशहीनाः तिथयः सितं स्यात् ॥ २ ॥ ३ ॥

भाषा–तिथियोंको बारहसे गुणा करनेसे अंश होते हैं उन अंशोंको महीनेके पिछले चरणमें सूर्य हो तो उसमें ऊन और पहले चरणमें सूर्य हो तो युत करे ऐसा करनेसे चन्द्रमा होता है। शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे अष्टमीतक प्रथम चरण और कृष्णपक्षकी अष्टमीसे अमावसतक उत्तर चरण होता है अन्य तिथियोंमें शृंगोन्नति नहीं होती और तिथियोंको सोलहसे गुणा करे फिर उसमें अवयवसहित तिथिके वर्गको घटा देवे फिर उसको पलभासे गुणा करे फिर उसमें पंदरहका भाग देनेसे उत्तर दिशाका अंश आदि फल होता है फिर इसमें सूर्यकी क्रांतिका संस्कार करे और यहां सर्वत्र संस्कार करनेमें एक दिशामें योग भिन्न दिशामें अंतर होता है यह बात प्रसिद्ध है परन्तु चन्द्रमाके व्यस्त दिशाके शरको दूसरी दिशाकी क्रांतिमें संस्कार करे फिर उसमें दोसे गुणी हुई तिथिका भाग देनेसे संस्कारकी दिशाका अंगुल आदि स्पष्ट वलन होता है और अवयवसहित तिथियोंमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसको तिथियोंमें घटानेसे चन्द्रमाका अंगुल आदि सित होता है ॥ २ ॥ ३ ॥

अथ उदाहरण।

सूर्यके अस्तकी तिथि ५।७।२० इसको बारहसे गुणा किया तो अंश ६१।२८ हुए और यहां अपने अस्तकालका सूर्य १।१८।१२।३२ महीनेके पहले चरणमें है इसलिये सूर्यमें ६१।२८ अंशोंको युत किया तो चन्द्रमा ३।१९।४०।३२ हुआ और अहर्गणपरसे चन्द्रमा बनाते हैं तो गत तिथिका प्रयोजन नहीं है गत तिथि ५।७।२० को सोलहसे गुणा किया तो ८१।५७।२० हुए फिर इन्होंमें तिथिके वर्ग २६।१४।१३ को ऊन किया तो ५५।४३।७ हुए फिर इसको पलभा ५।४५ से गुणा किया तो ३२०।२२।५५ हुए फिर इन्होंमें पंदरहका भाग देनेसे अंश आदि उत्तर दिशाका फल २१।२१।३१ मिला फिर इसके वर्ग २१।२१।३१ में सूर्यकी उत्तर दिशाके क्रांतिके अंशों २१।४४।२९ को संस्कार

किया तो उत्तर दिशाका फल ४३।६।० हुआ और व्यगु विधु अर्थात् चन्द्रमामें घटे हुए राहु ०।२७।२५।२४ इसपरसे कही हुई रीतिसे अंगुल आदि उत्तर दिशाका शर ४१।२३।३५ हुआ इसको तीनसे गुणा किया तो अंश आदि उत्तर दिशाका शर २।४।१० हुआ और यहां चंद्रमाकी क्रांति उत्तर दिशाकी १८।३६।५९ है और पहले आया हुआ अंश आदि उत्तर दिशाका फल ४३।६।० है इसमें व्यस्त दिशाके शरके अंशोंका संस्कार किया तो ४१।१।५० हुए फिर इन्होंमें चंद्रमाकी व्यस्त क्रांतिका संस्कार किया तो फल उत्तर दिशाका २२।२४।५१ हुआ इन्होंमें दोसे गुणी हुई तिथि १०।१४।४० का भाग दिया तो अंगुल आदि स्पष्ट वलन २।११।६ हुआ संस्कार उत्तर दिशाका है इसलिये यहभी उत्तर दिशाका हुआ और अवयवसे सहित तिथि ०५।७।२० इन्होंमें अपने पांचवें हिस्से १।१।२८ को ऊन किया तो चंद्रमाका सित ४।५।५२ हुआ ॥

अब शृंगकी उन्नत और नत इन्होंकी दिशा जाननेके प्रकारको कहते हैं ।

उन्नतं वलनाशायामन्यस्यां स्यान्नतं विधोः ।
वलनस्याङ्गुलैः शृङ्गं किमत्र परिलेखतः ॥ ४ ॥

अन्वयः-विधोः शृङ्गं वलनाशायाम् उन्नतम् अन्यस्यां नतं वलनस्य अंगुलैः (तुल्यं) स्यात् अत्र परिलेखतः किम् ? ॥ ४ ॥

भाषा-वलनकी दिशामें चंद्रमाका शृंग उन्नत और अन्य दिशामें चंद्रमाका शृंग नत होता है और जितनी अंगुल वलन हो उतने अंगुल शृंगका उन्नत होता है और यहां परिलेख बनानेसे कुछ प्रयोजन नहीं है और यहां वलन उत्तर दिशाका है इसलिये उत्तर दिशामें शृंग उन्नत है ॥ ४ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गौड़वंशावतंस-विविधशास्त्रपरमपण्डित-श्रीराविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां द्वादशश्चन्द्रशृङ्गोन्नत्यधिकारः समाप्तः ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशोऽधिकारः।

अब ग्रहयुति अर्थात् ग्रहोंके युद्धके अधिकारको कहते हैं।

पञ्चर्त्वगाङ्कविशिखाः पृथगीशकर्णायोगाहताः प्रकृतिभान्वरिसिद्धरामैः। भक्ताः फलोनसहिताः श्रवणेऽधिकोने ते त्र्युद्धृताः स्युरसृजो वपुरङ्गुलानि ॥ १ ॥

अन्वयः-पञ्चर्त्वगाङ्कविशिखाः (अङ्काः) पृथक् ईशकर्णायोगाहताः (ततः) प्रकृतिभान्वरिसिद्धरामैः भक्ताः श्रवणे अधिकोने फलोनसहिताः ते त्र्युद्धृताः असृजः वपुरंगुलानि स्युः ॥ १ ॥

भाषा-पांच छः सात नौ पांच ये मंगल आदि पांचों ग्रहोंके बिंब अंक हैं इन्होंको जुदा रक्खे फिर ग्यारह और कर्ण इन्होंका अंतर करे फिर जिस ग्रहका बिंब स्पष्ट बनाना हो उस ग्रहके बिंबांकको गुणा देवे।फिर उसमें २१।१२।१६।२४।३ का क्रमसे भाग दे अर्थात् मंगलका बिंब बनाना हो तो २१ का भाग देवे बुधका बनाना हो तो १२ का बृहस्पतिका बनाना हो तो १६ का शुक्रका बनाना हो तो २४ का और शनिका बिंब बनाना हो तो ३ का भाग देवे ऐसे भाग देनेसे जो अंगुल आदि फल मिले उसको ग्यारहसे अधिक कर्ण हो तो अलग रक्खे हुए बिम्बांकमें ऊन करे और ग्यारहसे कर्ण ऊन हो तो उस लब्धिको बिंबांकमें युत करे फिर उसमें तीनका भाग देनेसे जो फल मिले वह मंगल आदि पांचों ग्रहोंके अंगुल आदि बिंब होते हैं ॥ १ ॥

ग्रह	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
बिंबाङ्क	५	६	७	९	५
भाज्यांक	२१	१२	१६	२४	३

अथ उदाहरण।

संवत् १६६७ शाके १५३२ में वैशाख शुदि १० रविवारके दिन मंगल और शनि इन ग्रहोंकी युति बनानेके लिये चक्र ८ और अहर्गण ७७८ मिला फिर इसपरसे मध्यम सूर्य ०।२१।५५।३० मध्यम मंगल ९।०।३३।५१ और मध्यम शनि १०।५।४५।५९ हुए फिर सूर्यके मंद केन्द्र १।२६।४।३० परसे मंद फल धन १।४८।२६ मिला इसका सूर्यमें संस्कार किया तो सूर्य ०।२३।४३।५६ हुआ अयनांशा १८।८ हुआ फिर इसमें ऋण चर ७५ का संस्कार किया तो स्पष्ट सूर्य ०।२३।४२।४१ हुआ और इसकी स्पष्ट गति ५७।५६ हुई। फिर मंगलके शीघ्र केन्द्र ३।२१।२१।३९ परसे शीघ्र फलका आधा धन फल १८।५०।३७ मिला इसका मंगलमें संस्कार किया तो मंगल ९।१९।२४।२८ हुआ फिर इसके मन्द केंद्र ६।१०।३५।३२ परसे मन्द फल ऋण २।२।५२ मिला इसका मंगलमें संस्कार किया तो मंद स्पष्ट मंगल ८।२८।३०।५९ हुआ फिर इसके शीघ्र केन्द्र ३।२३।२४।३१ परसे शीघ्र फल धन ३८।४।१० मिला इसका मंगलमें संस्कार किया तो स्पष्ट मंगल १०।६।३५।९ और इसकी स्पष्ट गति ४२।५० हुई फिर शनिके शीघ्र केन्द्र २।१६।९।३१ परसे शीघ्र फलार्द्ध २।४२।४१ मिला इसका शनिमें संस्कार किया तो शनि १०।८।२८।४० हुआ फिर इसके मंद केन्द्र ९।२१।३१।२० परसे मंद फल ऋण ८।२२।४१ मिला इसका शनिमें संस्कार किया तो मंद स्पष्ट शनि ९।२७।३३।१८ हुआ फिर इसके शीघ्र केन्द्र २।२४।३३।१६ परसे शीघ्र फल धन ५।३८।३६ मिला इसका शनिमें संस्कार किया तो स्पष्ट शनि १०।२।५८।४४ और इसकी स्पष्ट गति ३।३ हुई और दिनमान ३२।३० हुआ और कही हुई रीतिसे मंगलका शीघ्र कर्ण ८।५२ और शनिका शीघ्र कर्ण ११।१३ मिला॥

अब बिंब बनानेका उदाहरण ।

मंगलके कला आदि बिंब ५ को ११ और कर्ण ८।५ अंतरके २।८ अंशादिसे गुणा दिया तो १०।४० हुए फिर इन्होंमें २१ का भाग देनेसे फल ०।३० मिला यहां कर्ण ११ से ऊन है इसलिये इस फल ०।३० को मंगलके बिंबांक ५ में युत किया तो ५।३० हुए फिर इन्होंमें ३ का भाग देनेसे अंगुल आदि मंगलका बिंब १।५० हुआ फिर शनिके बिंब ५ को ११ और कर्ण ११।१३ इन्होंके अंतर ०।१३ से गुणा दिया तो १।५ हुए फिर इन्होंमें तीनका भाग देनेसे फल ०।२१ मिला यहां कर्ण ११ से अधिक है इसलिये इस फलको शनिके बिंबांक ५ में घटा दिया तो ४।३९ हुए फिर इन्होंमें तीनका भाग देनेसे अंगुल आदि शनिका स्पष्ट बिंब १।३३ हुआ ॥

अब ग्रहोंकी युति अर्थात् युद्गत एष्य अर्थात् हो लिया कि होगा इसके जाननेके प्रकारको कहते हैं ।

अधिकजवखगेऽधिकेऽल्पभुक्तेरथ कुटिलेऽल्पतरेऽनुलोमतो वा । अनृजुगखगयोस्तु शीघ्रगेऽल्पे युतिरनयोः प्रगतान्यथा तु गम्या ॥ २ ॥

अन्वयः—अनयोः अधिकजवखगे अल्पभुक्तेः अधिके अथ वा कुटिले अनुलोमतः अल्पतरे अनृजुगखगयोः तु शीघ्रगे अल्पे (सति) युतिः प्रगता अन्यथा तु गम्या (वाच्या) ॥ २ ॥

भाषा—जिन दो ग्रहोंका युति बनाना हो और उन्होंमें जो अधिक गतिवाला ग्रह हो और वह ग्रह अल्प गतिवाले ग्रहसे अंश आदिमें अधिक हो तो उन्होंकी युति गत अर्थात् हो चुकी ऐसे जाने अथवा मार्गी ग्रहसे वक्री ग्रह अल्प हो तो गत युति जाने अथवा जिन ग्रहोंकी युति बनाना होय और उन्होंमें शीघ्र गतिवाला ग्रह अल्प हो तो युतिको गत जाने और अधिकगति ग्रह

अल्पगति यहांसे अंश आदिमें कम हो तो उन्होंकी युति गम्य अर्थात् अगाडी होगी ऐसे जाने अथवा वक्री ग्रह मार्गी ग्रहसे अधिक हो तोभी गम्य युति जाने अथवा दोनों वक्री ग्रहोंमें शीघ्र गतिवाला ग्रह अंश आदिसे अधिक हो तोभी गम्य युति जाने ॥ २ ॥

अथ उदाहरण ।

अल्प गति शनि १०।२।५८।४४ से अधिक गति मंगल १०।६।३५।९ से अधिक है इसलिये गत युति अर्थात् इन्होंकी गत युति हुई अर्थात् इनका युद्ध हो लिया ऐसे जाने ॥

अब ग्रहयुतिके दिन जाननेके प्रकारको कहते हैं ।

ऋजुगतिखगयोस्तु वक्रयोर्वा विवरकला गतिजा-
न्तरेण भक्ताः । गतिजयुतिहृता यदैकवक्री यु-
तिरगता प्रगताप्तवासरैः स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः-ऋजुगतिखगयोः तु वक्रयोः विवरकलाः गतिजान्तरेण भक्ताः यदा एकवक्री (तदा) गतिजयुतिहृता आप्तवासरैः अगता प्रगता वा युतिः स्यात् ॥ ३ ॥

भाषा-जो दोनों ग्रह मार्गी अथवा वक्री हों तो दोनों मार्गी ग्रहोंका अथवा वक्री ग्रहोंका अंतर करके कला बना लेवे फिर उन्होंमें दोनों ग्रहोंकी गतियोंके अंतरका भाग देवे और एक वक्री हो और दूसरा ग्रह मार्गी हो तो दोनों ग्रहोंके अंतरकी कलाओंमें दोनों ग्रहोंकी गतियोंके योगका भाग देवे ऐसे भाग देनेसे जो दिन मिले उन दिनोंमें पहले कही हुई रीतिसे गम्य अथवा गत युतिके दिन जान लेवे ॥ ३ ॥

अथ उदाहरण ।

मार्गी मंगल १०।०६।३५।०९ और शनि १०।२।५८।४४ है इन्होंका अंतर किया तो ०।३।३६।२५ हुए फिर इन्होंकी कला बनाई तो कला २१६।२५ हुई फिर इन्होंमें मंगलकी गति ४२।

५० और शनिकी गति ३।०३ है इन दोनों ग्रहोंकी गतियोंके अंतर ३९।४७ का भाग देनेसे गत दिन ५।२६।२३ मिले फिर इन्होंको वैशाख शुदि दशमीमें घटा दिया तो वैशाख शुदि चौथके दिन सूर्यके उदयसे गत घडी ३३।३७´ अथवा रात्रिकी गत घडी २।७ में शनि मंगलका युद्ध हो लिया ऐसा जाने ॥

अब ग्रहोंके दक्षिण उत्तर दिशाकी स्थित और उन्हों-का अंतर इन्होंके जाननेके प्रकारको कहते हैं ।

चाल्यौ खेटौ समौ स्तो ग्रहयुतिदिवसैश्चन्द्रबाणः स्वनत्या संस्कार्योऽत्र ग्रहौ स्वेषुदिशि समदिशोस्त्वल्पबाणः परस्याम् । एकान्याशौ यदेषू विरहितसहितौ खेटमध्येऽन्तरं स्याद्भेदो मानैक्य-खण्डादिह लघुनि तदाऽल्पं हि किं लम्बनाद्यम्॥४॥

अन्वयः–ग्रहयुतिदिवसैः खेटौ चाल्यौ (तौ) समौ स्तः (तयोः शरः साध्यः) चन्द्रबाणः (चेत् तदा) स्वनत्या संस्कार्य्यः । अत्र ग्रहौ स्वेषु-दिशि (भवतः) समदिशोः तु अल्पबाणः परस्यां (स्यात्) । यदा इषू एकान्याशौ (तदा) विरहितसहितौ (कार्य्यौ, तदा) खेटमध्ये (अंगु-लाद्यम्) अन्तरं स्यात् । इह मानैक्यखण्डात् लघुनि भेदः (स्यात्) तदा हि अल्पं लम्बनाद्यम् (अत्र) किं (कर्त्तव्यम्) ॥ ४ ॥

भाषा–ग्रहोंके युद्धके जितने दिन मिले हों उन्होंपरसे अपनी२ गतिसे ग्रहोंको चालन देवे ऐसे चालन देनेसे वह राशि अंश आ-दिसे समान होते हैं और यहां चंद्रमाका जो युद्ध हो तो चन्द्रमाके शरमें सूर्यग्रहणमें कही हुई रीतिसे अपनी गतिका संस्कार करे और जिस ग्रहका शर उत्तर दिशाका हो वह ग्रह उत्तर दिशामें होता है और जिस ग्रहका दक्षिण दिशाका शर हो वह ग्रह दक्षिण दिशामें होता है और जो दोनों ग्रहोंके शर एक दिशाके हों तो जिस ग्रहका अल्प शर हो वह ग्रह अधिक शरवाले ग्रहसे

अन्य दिशामें होता है और जो दोनों ग्रहोंके शर एक दिशाके हों तो उन्होंका अंतर और भिन्न दिशाके हों तो उन्होंका योग करे ऐसे करनेसे उन ग्रहोंमें अंगुल आदि दक्षिण उत्तर अंतर होता है फिर इसमें चौवीसका भाग देनेसे हाथ आदि अंतर होता है और यहां शरोंका अंतर ग्रहोंके मानैक्यखंडसे अल्प हो तौ ग्रहोंके बिंबोंका भेद योग होता है फिर उस भेदयोगमें सूर्य-ग्रहणमें कही हुई रीतिकी नाईं अल्प लंबन आदि बनावे और यहां ग्रहोंके अल्प बिंब होनेसे स्पर्श आदि नहीं होते इसलिये लंबन आदि जडकर्मकोभी नहीं करे ॥ ४ ॥

अथ उदाहरण ।

मंगल है १०।०६।३५।०९ और पूर्व स्पष्ट ५।२६।२३ इन दिन आदिपरसे मंगलका ऋण चालन ३।५३।० हुआ और शनि है १०।२।५८।४४ इसका ऋण चालन०।१६।३५ मिला इन्होंका मंगल शनिमें संस्कार किया तो मंगल १०।२।४२।९ और शनि १०।२।४२।९ हुए इन ग्रहोंमें आयन दृक्कर्मका संस्कार करके फिर इन्होंपरसे ग्रहोंकी अंतर कलाओंमें गतियोंके अंतरका भाग देवे इस रीतिसे दिन आदि बनावे फिर इन्होंको पहले कहे हुए दिन आदिमें कही हुई रीतिसे ऊन युत करनेसे ग्रहोंके युद्धका स्पष्ट दिन आदि काल होता है। और पहले कहे हुए दिन आदि-की अपेक्षासे जितने अधिक अथवा कम दिन आदि हों उतने दिन आदिपरसे ग्रहोंको चालन देनेसे समान होते हैं यह सिद्धां-न्ताशिरोमणिमें कहा है परंतु आचार्यको अल्प अंतर होनेसे अपेक्षित नहीं है । अब मन्द स्पष्ट ग्रहोंपरसे शर बनानेके लिये मंगलका मन्द स्पष्ट चालन ३।२२।३२ और शनिका मंद स्पष्ट चालन ०।१०।३ हुआ इन्होंका मंद स्पष्ट मंगल और शनिमें संस्कार करनेसे मंद स्पष्ट मंगल ८।२५।८।२७ और मंद स्पष्ट शनि ९।२७।१३।१५ हुए मंगलमें पात ११।१०।०।० को घटा

दिया तो मंगल ७।१५।८।२७ हुआ और क्रांतिके अंश दक्षिण दिशाके १६।३८।२२ हैं इन्होंको २३ से गुणा किया तो २८२।४६।१६ हुए फिर इन्होंमें शीघ्र कर्ण ८।५२ का भाग दिया तो ४३।१० हुआ फिर इसमें अपने चौथे हिस्से १०।४७ को घटा दिया तौ ३२।२३ हुए फिर इन्होंमें दोका भाग देनेसे पातसे ऊन मंगल दक्षिण दिशाका है इसलिये अंगुल आदि दक्षिण दिशाका मंगलका शर १६।११ हुआ फिर शनिमें पात ३।१० को घटा दिया तो शनि ६।१७।१३।१५ हुआ फिर इसकी क्रांतिके अंश ६।५३।१८ को २३ से गुणा दिया तो १५८।२५।५४ हुए फिर इन्होंमें कर्ण ११।१३ का भाग देनेसे अंगुल आदि दक्षिण दिशाका शर १४।७ हुआ और यहां मंगल शनि इन्होंके शर एक दिशाके हैं और इन्होंमें अल्प शरवाला शनि है इसलिये उत्तरदिशामें शनि जानना और यहां जो एक दिशाके शरोंका अंतर मानैक्यखंडके समान २।४१ मिला मंगलका बिंब १।५० और शनिका बिंब १।३३ इन्होंके योग ३।१३ इसका आधा मानैक्यखण्ड १।४१ मिला इससे ग्रहोंका अंतर अधिक है इसलिये भेदयोग नहीं है और लंबन आदि नहीं बनावे और भेदयोग हो तोभी अल्प अंतर होनेसे लंबन आदि नहीं बनावे जो बनावे तो बनानेके प्रकारको कहते हैं । दोनों ग्रहोंमें जो नीचेकी कक्षामें स्थित हो उसको चंद्रमा कल्पना करे और उससे ऊपर कक्षामें स्थित हो उसको सूर्य कल्पना करे और जो ग्रहोंका युद्ध रात्रिके समयमें हो तो उस समयमें केवल सूर्यपरसे लग्न बनावे कल्पित सूर्यपरसे लग्न नहीं बनावे उस लग्नकी वित्रिभसंज्ञा है फिर उसपरसे नतांश और नतांशोंपरसे सूर्यग्रहणमें कही हुई रीतिसे हार बनावे फिर कही हुई रीतिसे घडी आदि लंबन बनावे फिर उस लंबनको कल्पित सूर्यसे वित्रिभ अधिक हो तो युत और कम हो तो ऊन करे ऐसे करनेसे

स्पष्ट काल होता है फिर लंबनको छःसे गुणा करे इस कही हुई रीतिसे नति बनावे किर कल्पित चन्द्रमाका शर नतिके समयमें बनावे ऐसे काल स्पष्ट होता है यह पहले कह आये हैं और उन ग्रहोंका अंगुल आदि अंतर भेदयोगमें शर होता है और ग्रहोंका मानैक्यार्द्ध शरसे ऊन ग्रास होता है इसलिये पहलेकी नाईं स्थिति और उस स्थितिपरसे सूर्यग्रहणमें कही हुई रीतिसे स्पर्श मोक्ष लंबनोंपरसे स्पर्शकाल मोक्षकाल होता है और परिलेख वलन आदि पहलेकी नाईं बनावे उसमें कुछेक विशेष है जो मंदाक्रांत और शीघ्र गतिवालाका बाध स्थित हो तो पूर्व दिशामें स्पर्श और जो वक्री ग्रहका बाध स्थित हो तोभी पूर्वदिशामें स्पर्श होता है और पश्चिम दिशामें मोक्ष होता है और मंद गति जो वक्री ग्रह हो उसको सूर्य कल्पना करे और जो शीघ्र गति ग्रह हो उसको चंद्रमा कल्पना करे फिर ग्रहोंके युद्धके समयमें दृश्य अथवा अदृश्य युद्ध जाननेके लिये पूर्व दृक्कर्मका ग्रहमें संस्कार करे और इस रीतिसे जान लेवे ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गौड़वंशावतंस-विविधशास्त्रपरमपण्डित-श्रीराविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां त्रयोदशो ग्रहयुत्यधिकारः समाप्तः ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशोऽधिकारः ।

यहां चंद्रमा सूर्यकी क्रांतिकी साम्यताको पात कहते हैं ।

नन्दघ्नायनभागतुल्यघटिकोनाः सार्द्धविश्वे तथा
तारास्तावति साग्रयोगविगमे पातो व्यतीपा-

तकः। ज्ञेयो वैधृतिरत्र यातघटिकाः सर्वर्क्षनाडी-हृताः स्पष्टाः स्युः शरषड्हृता इह तमोर्कौ सा-यनांशौ कुरु ॥ १ ॥

अन्वयः–सार्द्धविश्वे तथा तारा: नन्दघ्नायनभागतुल्यघटिकोनाः(कार्य्याः) तावति साग्रयोगविगमे व्यतीपातकः वैधृतिः (च) पातः ज्ञेयः। अत्र यातघटिकाः सर्वर्क्षनाडीहताः शरषड्हृताः स्पष्टाः स्युः। इह तमोर्कौ सायनांशौ कुरु ॥ १ ॥

भाषा–अयनांशको ९ से गुणा करनेसे घडी होती हैं फिर जो घडी ६० से अधिक हों तो उन्होंमें ६० से भाग देनेसे जो फल मिले उसको उससे ऊपरले भागमें रक्खे ऐसे करनेसे योग होते हैं फिर इन्होंको १३।४० योगोंमें घटा देनेसे उतने गत योगमें व्यतिपातका संभव होता है। फिर प्रथम गुणनफलको २७ योगोंमें ऊन करनेसे जो फल मिले उसके समान गतयोगमें वैधृतिका संभव होता है फिर गतयोगकी घडियोंको योगकी गत एष्य नक्षत्रकी घडियोंके योगसे गुणा करे फिर उसमें ६५ का भाग देनेसे पातयोगकी स्पष्ट घडी होती है फिर सूर्य राहुमें अयनांश युत करे ॥ १ ॥

अथ उदाहरण।

संवत् १६७० शाके १५३५ में वैशाख शुदी ७ शनिवारके दिन घडी ११।३५ है धनिष्ठा नक्षत्रकी घडी ५९।०३ और ब्रह्मयोगकी घडी २८।४६ है उस दिन पात जाननेके लिये चक्र ८ और अहर्गण १८८३ मिला इसपरसे प्रातःकालका मध्यम सूर्य १।१।०।५९ मध्यम चंद्रमा ९।२०।०।४४ चंद्रमाका उच्च १।२५।१३।१४ और राहु ०।२५।९।५२ हुए फिर सूर्यके मंद केन्द्र १।१६।५९।१ परसे धन मंद फल १।३५।३५ मिला इसका सूर्यमें संस्कार किया तो सूर्य १।२।३६।३४ हुआ अयनांशा १८।११ सायन सूर्य १।२०।४७।३४ फिर सूर्यमें ऋण चर ८८ का संस्कार किया तो स्पष्ट

सूर्य १।२।३५।६ हुआ और इसकी स्पष्ट गति ५७।३३ हुई फिर मध्यम चन्द्र ९।२०।००।४४ उच्च ११।२५।१३।१४ राहु ०।२५।९।५२ त्रिफल संस्कृत चंद्र ९।१९।३४।३ हुआ फिर चंद्रमाके मंद केंद्र २।५।३९।११ परसे मंद फल धन ४।३४।३२ मिला इसका चंद्रमामें संस्कार किया तो स्पष्ट चंद्रमा ९।२४।८।३५ और इसकी स्पष्ट गति ७६२।४९ हुई फिर धनिष्ठा नक्षत्रकी गत घडी ३।४९ और एष्य घडी ५९।६ इन्होंका योग किया तो गत एष्य घडियोंका योग ६२।५५ हुआ (मध्यम पातकी रीति) अयनांशा १८।११ को नौसे गुणा किया तो १६३।३९ हुए फिर इन्होंमें ६० का भाग देनेसे योगादि २।४३।३९ हुए इनको १३।३० योगोंमें घटा दिया तो १०।४६।२१ हुए फिर इसके समान अवयवसे सहित योगमें व्यतिपातका संभव है । अथवा फिर उन्हीं २।४३।३९ को २७ में घटा दिया तो २४।१६।२१ हुए फिर इनके समान अवयवसहित गत योगमें वैधृति पातका संभव है और यहां ब्रह्मयोगकी घडी १६।२१ इन्होंको उस कालके नक्षत्रकी गत एष्य घडियोंके योग ६२।५५ से गुणा दिया तो १०२८।४१ हुए फिर इन्होंमें ६५ का भाग देनेसे स्पष्ट घडी १५।५९ मिली यह ब्रह्मयोगकी गत घटिका हुई और शुक्रवारके दिन शुक्ल योगकी घडी ३०।१ है इन्होंको ब्रह्मयोगकी गत घडी १५।४९ में युत किया तो ४५।५० हुए यहां इसको ६० में घटाया तो शेष १४।१० रहे मध्यम क्रांतिकी साम्यताका काल है इस काल ४५।५० का और सूर्यके उदयका १४।१० यह अंतर है और शनिवारके दिनके उदयकालके सूर्य और राहुको १०।१४ इतनी घडियोंके पीछेको चालन दिया तो मध्यम क्रांतिके समान कालके सूर्य १।२।२१।३१ राहु ०।२५।१०।३७ हुए फिर सूर्य राहुमें अयनांश युत किया तो सूर्य १।२।३३।३१ राहु १।१३।२१।३७ हुए ॥

अब पातका संभव असंभव अर्थात् पात होगा कि नहीं इसके जाननेके प्रकारको कहते हैं।

गोलैक्ये सार्ग्वर्कभान्वोः सदा स्यात्पातोऽन्यत्वे चेद्रवेर्बाहुभागाः। पञ्चेषुभ्योऽल्पास्तदास्त्येव पातः पुष्टाश्चेत्तत्संशयस्तं च भिन्नः॥ २॥

अन्वयः-सार्ग्वर्कभान्वोः गोलैक्ये (सति) सदा पातः स्यात् चेत् अन्यत्वे रवेः बाहुभागाः (कार्य्याः, ते) पञ्चेषुभ्यः अल्पाः तदा पातः अस्ति एव। पुष्टाः चेत् (तदा) तत्संशयः तं च (वक्ष्यमाणप्रकारेण वयं) भिन्नः॥ २॥

भाषा-सूर्यसे युत राहु और सूर्य एक गोलमें हों तो सर्वदा पात होता है और जो राहुसे युत सूर्य भिन्न २ अर्थात् दूसरे गोलमें हो तो सायन सूर्यके भुजके अंश बनावे फिर वह अंश ५५ से अल्प हो तो पात होता है और अधिक हो तो पातका संशय है इसको अगाडी हम कहेंगे॥ २॥

अथ उदाहरण।

सूर्यसे युत राहु ३।३।४४।८ और अयनांशसे युत सूर्य १।२०। ३२।३१ ये एक गोलमें स्थित हैं इसलिये पात है॥

अब पातके संभवकी भ्रांति दूर करनेके लिये संधि बनानेके प्रकारको कहते हैं।

खाब्रेन्दुद्विरसा धृतिर्नगशराः सार्ग्वर्कभान्वोः पदैक्येऽर्द्धानि त्र्यगरुद्रभूपतिनखास्त्र्यक्षीणि भेदे क्रमात्। क्षेपः षड् दश चार्ककोटिजलवेष्वंशप्रमार्द्धैक्यकं शेषांशैष्यवधेषुभागसहितं सन्धिर्भवेत्क्षेपयुक्॥ ३॥ सार्ग्वर्कभुजांशका यदाल्पाः सन्धेः क्रान्तिसमत्वमस्ति चेत्। अधिका न तदा भुजांशसंध्यंतरसादृश्यमिहापमान्तरं स्यात्॥ ४॥

अन्वयः-सार्ग्वर्कभान्वोः पदैक्ये खाभ्रेन्दुद्विरसाः धृतिः नगशराः भेदे त्र्यगरुद्रभूपतिनखाः त्र्यक्षीणि अर्द्धानि (स्युः) षट् दश च क्रमात् क्षेपः अर्ककोटिजलवेषंशप्रमार्द्धैक्यकं शेषांशैष्ववधेषुभागसहितं (ततः) क्षेपयुक् सन्धिः भवेत् । यदा सार्ग्वर्कभुजांशकाः सन्धेः अल्पाः (तदा) क्रान्तिसमत्वम् अस्ति । अधिकाः चेत् तदा न इह भुजांशसन्ध्यन्तरसादृश्यम् अपमान्तरं स्यात् ॥ ३ ॥ ४ ॥

भाषा-तीन तीन राशियोंके सम असम भेदोंसे चक्रमें चार पाद होते हैं ये पहले कह चुके हैं और सूर्यसें युत राहु और सूर्य एक पादमें हों तो शून्य, शून्य, एक, दो, छः, अठारह और सतावन ये खण्डे और छः क्षेपक होते हैं और अन्य २ पदोंमें हों तो तीन, सात, ग्यारह, सोलह, वीस, तेईस ये खण्डे और १० क्षेपक होते हैं फिर अयनांशसे युत सूर्यकी कोटिके अंश बनावे फिर उन्होंमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसके प्रमाण खण्डोंका योग करे फिर शेष अंशोंको उससे अगले खण्डेसे गुणा करे फिर उसमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसको खण्डोंके योगमें युत करे फिर उसमें क्षेपक युत करनेसे संधि होती है और जो सायन सूर्यके भुजके अंश ५५ से अल्प हों तो संधिको नहीं बनावे और सूर्यसे युत राहुके भुजके अंश संधिसे अल्प हों तो क्रांतिसाम्य अर्थात् पात होता है और संधिसे अधिक हो तो क्रांतिसाम्य नहीं होता है और यहां भुजके अंशोंकी क्रांतिका जो अंतर उसके समान चन्द्रमा सूर्यकी क्रांतियोंका अंतर होता है ॥ ३ ॥ ४ ॥

खण्ड	१	२	३	४	५	६	७
पदैक्यखंड	०	०	१	२	६	१८	५७
पदभेद खंड	३	७	११	१६	२०	२३	०

यहां कल्पित उदाहरण ।

सूर्य १।२७ और राहु ६।१५ यहां राहुमें सूर्यको युत किया

तो ८।१२ हुए और यहां सूर्यके भुजके अंश ५७।५५ से अधिक हैं इसलिये सूर्यकी कोटिके अंश ३३ इन्होंमें पांचका भाग दिया तो फल ६ मिला इनके समान खण्डोंका योग २७ हुआ फिर इससे अगले खण्डे २७ को शेष ३ से गुणा दिया तो १७१ हुए फिर इन्होंमें पांचका भाग देनेसे फल ३४।१२ मिला इसमें गत खण्डोंके योग २७ को युत किया तो ६१।१२ हुए फिर इन्होंमें क्षेपकांक ६ युत किया तो संधि ६७।१२ हुई इससे सूर्यसे युत राहुके भुजके अंश ७२ अधिक हैं इसलिये क्रांतिकी साम्यता नहीं है परंतु भुजके अंश ७२ और संधिके ६७।१२ इन्होंके अंतर ४।४८ के समान मध्यम क्रांतियोंका समान काल और सूर्य चंद्रमाकी स्पष्ट क्रांतियोंका अंतर होता है । यह प्रकार शिष्यको दिखला देवे ॥

अब पात हो लिया कि होगा इन्होंके लक्षण कहते हैं ।

पदे युग्मौजेऽर्कः समविषमगोलः सतमसस्तदा यातः पातस्त्वगत इतरत्वे निगदितात् । विभिन्ने गोले चेदिह कृतशरांघ्रेर्लघुतरा रवेर्दोर्भागाः स्यादिह रविपदान्यत्वमुचितम् ॥ ९ ॥

अन्वयः–सतमसः अर्कः (यदि) युग्मौजे पदे समविषमगोलः तदा पातः यातः (स्यात्) । निगदितात् इतरत्वे तु अगतः (स्यात्) । इह विभिन्ने गोले चेत् कृतशरांघ्रेः रवेः दोर्भागाः लघुतराः (तदा) इह रविपदान्यत्वम् उचितं स्यात् ॥ ९ ॥

भाषा–सूर्यसे युत राहुसे सायन सूर्य समान गोलमें और समानपदमें स्थित हो तो गत पात अर्थात् पात हो लिया अथवा सूर्यसे युत राहुसे सायन सूर्य भिन्न गोल और विषम पदमें हो तोभी गत पात होता है और सूर्यसे युत राहु और सायन सूर्य समान गोलमें और विषम पदमें हो तो एष्य पात अर्थात् अगाडी

पात होगा ऐसे जाने अथवा विषम गोलमें और समान पदमें सूर्यसे युत राहु और सायन सूर्य हों तोभी एष्य पात होता है फिर राहुसे युत सूर्य और सायन सूर्य भिन्न भिन्न गोलमें हों तो अगाडी जो प्रकार कहेंगे उस प्रकारसे शर बनाके उसमें चारका भाग देवे ऐसे जो फल मिले उससे सायन सूर्यके भुजके अंश अल्प हों तो सूर्यके पदको अन्यत्र कल्पना करे अर्थात् समान पदमें स्थित हो तो विषम पदमें जान लेवे और विषम पदमें हो तो समान पदमें जान लेवे फिर गत एष्य पातको जाने ॥ ५ ॥

अथ उदाहरण।

यहां सूर्य १।२०।३२।३१ विषम पदमें है और राहुसे युत सूर्य ३।०३।५४।०८ समान गोलमें है इसलिये एष्य वैधृतिपात हुआ॥

अब शरके खण्डे और शर बनानेके प्रकारको कहते हैं।

पञ्चधा सागराः पञ्चधा वह्नयो द्वौ चतुर्धा कुभूखा-
भ्रमङ्का इषोः । साग्विनाद्दोर्लवेष्वंशतुल्यैक्यकं
शेषभोग्याहृतीष्वंशयुक्स्याच्छरः ॥ ६ ॥

अन्वयः-सागराः पञ्चधा वह्नयः पञ्चधा द्वौ चतुर्धा (ततः) कुभूखाभ्रम् इषोः अङ्काः (स्युः) साग्विनात् दोर्लवेष्वंशतुल्यैक्यकं शेषभोग्याहतीष्वंशयुक् शरः स्यात् ॥ ६ ॥

भाषा-क्रमसे पांच वार चार २ फिर पांच वार तीन २ फिर चार वार दो दो फिर दो वार एक एक फिर दो वार शून्य शून्य ये क्रमसे खण्डे होते हैं सो नीचे चक्रमें देखो फिर राहुसें युत सूर्यके भुजके अंशोंमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसके समान गत खण्डोंका योग करे फिर शेषको उससे अगले खण्डेसे गुणा करे फिर उसमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसको गत खण्डोंके योगमें युत करनेसे शर होता है ॥ ६ ॥

अंकसंख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
शरांक	४	४	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	१	१	०	०	

अथ उदाहरण ।

साम्वर्क अर्थात् राहुसे युत सूर्य ३।३।५४।८ इसके भुजके अंश ८६।५।५२ हुए इन्होंमें पांचका भाग दिया तो फल १७ मिला इसके समान गत खंडोंका योग किया तो ४५ हुए फिर शेष १। ५।५२ को इससे अगले खण्डेसे गुणा किया तो ०।०।० हुए फिर इसमें ५ का भाग देनेसे फल ०।० मिला इसको खण्डोंके योग ४५ में युत किया तो उत्तर दिशाका शर ४५ मिला यहां भिन्न गोलको कल्पना करके अन्य कल्पना करे। इसका उदाहरण यहां शर ४५ में चारका भाग दिया तो फल ११।१५ मिला इससे सायन सूर्यके भुजके अंश अल्प हैं इसलिये यहां अन्य पद नहीं होता है ॥

अब हार और स्पष्ट शर बनानेके प्रकारको कहते हैं।

खैकादिके रविभुजांशदशांशके स्याद्धारोऽर्कविश्वमनुधृत्युडवोऽङ्गरामाः। खाश्वा द्विशत्युडुगुणास्तु शराद्धरात्या हीनोऽत्र स ह्यपमसंस्कृतये स्फुटः स्यात् ॥७॥

अन्वयः–रविभुजांशदशांशके तु खैकादिके (सति) अर्कविश्वमनुधृत्युडवः अङ्गरामाः खाश्वाः द्विशती उडुगुणाः (क्रमात्) हारः स्यात् अत्र हि शरात् हरात्या हीनः सः अपमसंस्कृतये स्फुटः स्यात् ॥ ७ ॥

भाषा–सायन सूर्यके भुजके अंशोंमें दशका भाग देनेसे जो शून्य आदि फल मिले क्रमसे १२।१३।१४।१८।२७।३६।७०। २००।३२७ ये हार होते हैं अर्थात् सूर्यके भुजके अंशोंमें दशका भाग देनेसे शून्य मिले तो १२ हार और एक मिले तो १३ हार होते हैं और दो मिले तो चौदह हार होते हैं ऐसे जाने फिर गत हार और एष्य हार इन्होंके अंतरसे शेषको गुणा करे फिर उसमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उसको हारमें युत करनेसे स्पष्ट हार होता है फिर शरका हारमें भाग देनेसे जो फल मिले उसको शरमें ऊन करनेसे स्पष्ट शर होता है ॥ ७ ॥

लब्धांक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
हारांक	१२	१३	१४	१८	२७	३६	७०	२००	३२७	०

अथ उदाहरण ।

सायन सूर्य १।२०।३२।३१ इसके भुजके अंश ५०।३२।३१ में दशका भाग देनेसे फल ५ मिला इसके समान गत हार ३६ मिला फिर शेष अंश आदि ०।३२।३१ इसको गत हार ३६ और एष्य हार ७० इन्होंके अंतर ३४ से गुणा किया तो १८।२५।३४ हुए फिर इसमें दशका भाग देनेसे फल १।५० हार मिला इसको हार ३६ में युत किया तो स्पष्ट हार ३७।५० हुआ फिर इसका शर ४५।० में भाग दिया तो फल १।११ मिला इसको शरमें ऊन किया तो उत्तर दिशाका स्पष्ट शर ४३।४९ हुआ ॥

अब खण्डोंपरसे क्रांति बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

चतुर्धा नखा गोभुवो द्विर्गजाब्जा नृपाष्टीन्द्रवि-
श्वार्कदिग्वस्वगाक्षाः । त्रयः क्ष्मापमाङ्काः क्रमाद-
र्कबाहोर्लवेष्वंशतुल्यो गतोऽन्यस्य शेषम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—नखाः चतुर्धा गोभुवः द्विः गजाब्जाः नृपाष्टीन्द्रविश्वार्कदिग्वस्वगाक्षाः त्रयः क्ष्मा (एते) क्रमात् अपमाङ्काः (सन्ति) अर्कबाहोः लवेष्वंशतुल्यः गतः शेषम् अन्यस्य (स्यात्) ॥ ८ ॥

भाषा—चार वार वीस, उन्नीस, दो वार अठारह, फिर दो वार सोलह, चौदह, तेरह, बारह, दश, आठ, सात, पांच, तीन, एक ये क्रमसे क्रांतिके अंश होते हैं सो चक्रमें देखो और सायन सूर्यके भुजके अंशोंमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसके समान गत अंक होता है फिर शेषको एकांतमें रख देवे ॥ ८ ॥

लब्धांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९
क्रांति अंक	२०	२०	२०	२०	१९	१८	१८	१६	१६
लब्धांक	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
क्रांति अंक	१४	१३	१२	१०	८	७	५	३	१

अथ उदाहरण ।

सायन सूर्य १।२०।३२।३१ के भुजके अंश ५०।३२।३१ में पांचका भाग दिया तो फल १० मिला इसके समान गत अंक १४ हुआ फिर शेष ०।३२।३१ को अलग रक्खा इसका प्रयोजन अगाडी पडेगा ॥

अब क्रांतिके खण्डे और शरके खण्डे इन्होंकी स्थितिका क्रम और उन्होंमें संस्कार करनेको कहते हैं ।

क्रमोत्क्रमादुक्तशरापमाङ्कान्संख्याहि भोग्यात्क्रमतः षडङ्काः । स्थाप्या गतैष्या गतगम्यपाते युग्मेऽन्यथौजे स्युरिमेऽयनांशाः ॥९॥ अन्त्याद्विलोमा यदि तेऽन्यदिक्का अथापमाङ्काः क्रमशः शराङ्कैः । सुसंस्कृतास्त्रीन्दुहृतापमैष्याङ्केनापि ते स्पष्टतरा भवेयुः ॥ १० ॥

अन्वयः–(हे गणक) उक्तशरापमाङ्कान् क्रमोत्क्रमात् संख्याहि भोग्यात् क्रमतः गतगम्यपाते गतैष्याः षट् अङ्काः स्थाप्याः । (एवं) युग्मे ओजे अन्यथा इमे अयनांशाः स्युः । यदि ते अन्त्यात् विलोमाः (तदा) अन्यदिक्काः (ज्ञेयाः) अथ क्रमशः शराङ्कैः अपमांकाः सुसंस्कृताः (ततः) त्रीन्दुहृतापमैष्याङ्केन अपि (संस्कृताः) ते स्पष्टतराः भवेयुः ॥ ९ ॥ १० ॥

भाषा–कहे हुए शरके अंक और क्रांतिके अंक इन्होंको क्रमसे और उत्क्रम अर्थात् विपरीत गणना करे फिर भोग्य अंकसे क्रम करके गत पात हो तो गत छः अंकको रक्खे और एष्य पात हो तो एष्य छः अंकोंको रक्खे यह प्रकार समान पदमें सूर्य और राहुसे युत सूर्य हो तो होता है और जो राहुसे युत सूर्य विषमपदमें हो तो गत पातमें एष्य और एष्य पात हो तो ये अयनांशकी दिशाके गत अंक होते हैं अर्थात् सूर्य जिस अयनमें

हो उस दिशाके क्रांतिके अंक होते हैं और राहुसे युत सूर्य जिस अयनमें हो उस दिशाके शरके अंक होते हैं अर्थात् उत्तरायणमें उत्तर दिशाके अंक और दक्षिणायनमें दक्षिण दिशाके अंक होते हैं अंत्यक अर्थात् क्रमसे रक्खे हुए अंकोंमें जो अंत्यका अंक हो उससे जो अंक विलोम अंकके मध्यमें आवे उन्होंको अन्य दिशाका कल्पना करे अर्थात् उत्तर दिशाके हों तो दक्षिण दिशाके माने और दक्षिण दिशाके हों तो उत्तरके माने फिर क्रांतिके अंकोंमें शरके अंकोंका संस्कार करे अर्थात् समान दिशामें योग और भिन्न दिशामें अंतर करे फिर इन्होंमें तेरहका भाग देवे फिर इसमें क्रांतिके एष्य अंकोंका संस्कार करनेसे स्पष्ट अंक होते हैं ॥ ९ ॥ १० ॥

अथ उदाहरण ।

यहां क्रमसे क्रांतिके अंक २०।२०।२०।२०।१९।१८।१८।१६। १६।१४।१३।१२।१०।८।७।५।३।१ रक्खे और उलटे क्रांतिके अंक क्रमसे १।३।५।७।८।१०।१२।१३।१४।१६।१६।१८।१८।१९।२०। २०।२०।२० रक्खे और यहां शरके अंक क्रमसे ४।४।४।४।४।३। ३।३।३।३।२।२।२।२।१।१।०।० रक्खे और ये उलटे ०।०।१।१।२। २।२।२।३।३।३।३।३।४।४।४।४।४ शरके अंक रक्खे यहां सायन सूर्य १।२०।३२।३१ विषम पदमें है इसलिये एष्य पातमें क्रांतिके भोग्य गत खण्डे १३।१४।१६।१६।१८।१८ रक्खे और यहां सूर्य उत्तर अयनमें है इसलिये ये उत्तर दिशाके हुए और यहां राहुसे युत सूर्य ३।०३।५४।०८ समान पदमें है इसलिये एष्य पातमें एष्य शरके खण्डे ०।०।१।१।२ हुए ये दक्षिण दिशाके हैं क्योंकि यहां राहुसे युत सूर्य दक्षिणके अयनमें है और शरके अंकोंमें पहले अंक छोडकर ०।०।१।१।२ रक्खे इन्होंका क्रांतिके गत खण्डोंमें संस्कार किया तो उत्तर दिशाके १३।१४।१६।१७।१९। २० हुए फिर इन्होंमें तेरहका भाग देनेसे एक एक फल मिलता है वही क्रांतिका एष्य अंक है और वह सूर्यके अयनकी दिशाका

है इसलिये उसको इन्होंमें युत किया तो स्पष्ट अंक १४।१५।१७। १८।२०।२१ हुए ॥

अब पातके मध्यकाल बनानेके प्रकारको कहते हैं।

प्राक्स्थापिताः शेषलवाः शरान्ता रूपाद्विशुद्धा लघुसंज्ञकः स्यात्। आद्यः स्फुटाङ्को लघुना हतो यस्तेनाढ्यबाणात्क्रमशोऽथ जह्यात् ॥११॥ तानङ्ककाञ्छेषमशुद्धभक्तं विशुद्धसंख्यासहितं लघूनम्। त्रिघ्नं भनाडीघ्नमिभाप्तमाप्तयातैष्य-नाडीष्विह पातमध्यम् ॥ १२ ॥

अन्वयः–प्राक् स्थापिताः शेषलवाः शरान्ताः (ततः) रूपात् विशुद्धाः लघुसंज्ञकः स्यात्। यः आद्यः स्फुटाङ्कः (सः) लघुना हतः (कार्य्यः) अथ तेन आढ्यबाणात् क्रमशः जह्यात्। तान् अंककान् शेषम् अशुद्धभक्तं (ततः) विशुद्धसंख्यासहितं (ततः) लघूनं (ततः) त्रिघ्नं (ततः) भनाडीघ्नं (ततः) इभाप्तं (सत्) आप्तयातैष्यनाडीषु इह पातमध्यं (स्यात्) ॥ ११ ॥ १२ ॥

भाषा–पहले क्रांतिके प्रकारमें जो एकांतमें अंक रख आये हैं उसमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें एक ऊन करनेसे गत पातमें उसकी लघु संज्ञा है और एष्य पातमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसकी लघु संज्ञा है फिर पहले जो छः अंक कह आये हैं उन्होंमें पहले स्पष्ट अंकको लघुसे गुणा करे फिर उसमें स्पष्ट शरको युत करे फिर उसमें स्पष्ट क्रांतिके अंक जितने घटें उतने घटा देवे फिर शेषमें अशुद्ध अंक अर्थात् जो अंक नहीं घटे उसका भाग देनेसे जो फल मिले उसमें जितने अंक घटे हों उतनी संख्याको युत करे फिर उसमें लघु संज्ञावालेको ऊन करे फिर उसको तीनसे गुणा करे फिर उसमें आठका भाग देनेसे गत एष्य घडी मिलती हैं इन घडियोंमें पातका मध्यकाल होता है ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथ उदाहरण ।

पहले रक्खे हुए शेष अंश ०।३२।३१ में पांचका भाग देनेसे फल ०।६।३० मिला फिर इसको पहले स्पष्ट अंक १४ से गुणा दिया तो १।३१।० हुए फिर इन्होंमें पहले बनाया हुआ स्पष्ट शर ४३।४९ युत किया तो ४५।२०।० हुए फिर इन्होंमें क्रांतिके पहले अंक १४ को घटा दिया तो शेष ३१।२०।० रहे फिर इन्होंमें क्रांतिके दूसरे अंक १५ को घटा दिया तो शेष १६।२०।० हुए फिर इन्होंमें तीसरा अंक १७ नहीं घटता इसलिये शेष १६।२०।० में अशुद्ध १७ का भाग दिया तो फल ०।५७।३८ मिला इसमें शुद्ध संख्या २ को युत किया तो २।५७।३८ हुए फिर इसमें लघु-संज्ञावाले ०।६।३० को घटा दिया तो २।५१।८ रहे फिर इन्होंको तीनसे गुणा किया तो ८।३३।२४ हुए फिर इन्होंको नक्षत्रकी सब घडी ६२।५५ इन्होंसे गुणा किया तो ५३८।२१ हुए फिर इन्होंमें आठका भाग देनेसे फल ६७।१७ मिला क्रांतिकी साम्यताके मध्य काल ४५।५० से ६७।१७ घडी आदि ये पातका मध्य काल हुआ अर्थात् वैशाख शुदि सप्तमी शनिवारके दिन घडी ५३ पल ७ इन घडियोंमें पातका मध्यकाल हुआ ॥

अब पातकी स्थितिके कालको कहते हैं ।

अविशुद्धहृता यमार्कनाड्यः प्राक्पश्चात्स्थितिरत्र पातमध्यात् । शुद्धाः क्वचिदत्र चेत्षडङ्काः संस्कार्य्याश्च तदग्रतस्त्रयोऽङ्काः ॥ १३ ॥

अन्वयः-यमार्कनाड्यः अविशुद्धहृताः (कार्य्याः । फलघट्किाभिः) पातमध्यात् अत्र प्राक् पश्चात् स्थितिः (स्यात्) अत्र क्वचित् षट् अङ्काः शुद्धाः चेत् (तदा) च तदग्रतः त्रयः अङ्काः संस्कार्य्याः ॥ १३ ॥

भाषा-१२२ घडियोंमें अशुद्ध अंकका भाग देनेसे जो फल मिले उतनी घडी पातके मध्यसे पहले अथवा अगाडी पातकी स्थिति अर्थात् उतना काल पर्यंत पातकाल होता है और कहीं

कहीं छः अंक शरसे शुद्ध हों तो उन्होंमें अन्य तीन अंकोंकी कही हुई रीतिसे संस्कार करे फिर उन्होंपरसे पहलेकी नाईं पातका मध्य बनावे ॥ १३ ॥

अथ उदाहरण।

१२२ में अशुद्ध १७ का भाग दिया तो पातका मध्यसे पहले पिछले घडी आदि स्थिति ७।१० मिलीं यहां पातके मध्य ५३।७ से ४५।५७ इतनी घडी पहले पातका प्रवेशकाल और अंतवारको ० घडी १७ पल विषे पातका निर्गमकाल अर्थात् पात हुआ ॥

अब क्रांति साम्यकालमें सूर्यपरसे चंद्रमा बनानेके प्रकारको कहते हैं।

षड्भार्कभच्युतरविस्त्विह सावनाब्जोऽथार्के घटीस-मकलाश्चलनं त्वथेन्दोः। भुक्त्यंशका भघटिकाप्तख-खा हयः स्युस्तच्चालितापमसमत्वमिह प्रतीत्यै ॥१४॥

अन्वयः—इह तु षड्भार्कभच्युतरविः सावनाब्जः (स्यात्) अथ अर्के घटीसमकलाः चलनं (देयं) अथ तु भघटिकाप्तखखाः हयः इन्दोः भुक्त्यंशकाः स्युः। तच्चालितापमसमत्वम् इह प्रतीत्यै (स्यात्) ॥ १४ ॥

भाषा—व्यतिपात पातमें सायन सूर्यमें छः राशि घटानेसे अयनांशसे युत चंद्रमा और वैधृतिपातमें सायन सूर्यमें बारह राशि घटानेसे सायन चंद्रमा होता है फिर सूर्यमें क्रांतिसाम्यके कालसे पातके मध्यकालतक जितनी घडी हों उनके समान चालन देवे और आठ सौमें नक्षत्रकी सब घडियोंका भाग देनेसे चंद्रमाकी गतिके अंश होते हैं इस गतिका चंद्रमामें चालन देवे फिर इसकी क्रांतिमें स्पष्ट शरका संस्कार करे ऐसे करनेसे सूर्यकी क्रांतिके समान चंद्रमाकी क्रांति होती है ॥ १४ ॥

अथ उदाहरण।

वैधृतिपातमें अयनांशसे युत सूर्य १।२०।३२।३१ है इसको १२ राशिमें घटा दिया तो सायन चंद्रमा अर्थात् अयनांशसे युत

चंद्रमा १०।९।२७।२९ हुआ फिर क्रांतिसाम्यकालसे पातके मध्य कालतककी घडी ६७ का सूर्यमें चालन दिया तो सूर्य १।२१। ३९।४८ हुआ फिर ८०० में नक्षत्रकी सब घडियों ६२।५५ का भाग दिया तो अंश आदि चंद्रमाकी गति १२।४२।५५ हुई इस गतिसे चंद्रमाको चालन दिया तो चंद्रमा १०।२३।४३।० हुआ और अपनी गतिसे राहुको चालन दिया तो राहु ०।२५।७।३ हुआ सूर्यकी क्रांति १८।३०।५७ हुई और चंद्रमाकी क्रांति १३। ५०।१० हुई और चंद्रमामें घटा हुआ राहु ९।१०।२४।५७ हुआ फिर कही हुई रीतिसे दक्षिणदिशाका शर ४४।५५ और हार ४१। ३९।१९ मिला फिर स्पष्ट शर ४३।५०।१९ हुआ इसमें १० का भाग देनेसे अंश आदि शर ४।२३।१ हुआ इसको अपनी दिशाकी क्रांतिमें युत किया तो स्पष्ट चंद्रमाकी क्रांति १८।१३।११ हुई और यहां क्रांतिकी घडियोंमें कुछ अंतर है परंतु स्वल्प अंतर होनेसे दोष नहीं है ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-बेरीग्रामनिवासि-गौड़वंशावतंस-विविधशास्त्रपरमपण्डित-श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषाटीकायां चतुर्दशः पाताधिकारः समाप्तः ॥ १४ ॥

अथ पञ्चदशोऽधिकारः ।

अब पंचांगपरसे चंद्रमाके ग्रहण बनानेके अधिकारको कहते हैं ।

प्रथम तिथिसाधन कहते हैं ।

मासाः स्वार्द्धयुतास्तिथेर्दिनाद्यं तावत्यो घटिकाश्च मासंघात् । त्र्यंशाढ्याः सहितं द्वयत्र-याभ्यां चक्राक्षनवाङ्कवर्गयुक्तम् ॥ १ ॥

अन्वयः–स्वार्द्धयुताः मासाः तिथेः दिनाद्यं (स्यात्) तावत्यः घटिकाः च मासंसंघात् त्र्यंशाढ्याः (ततः तत्) द्वयत्रयाभ्यां सहितं (ततः) चक्रघ्नाक्षनवाङ्कवर्गयुक्तम् ॥ १ ॥

भाषा–इष्ट महीनेका जो मासगण अर्थात् महीनोंका समूह उसमें अपने आधेको युत करनेसे तिथिके वार आदि होते हैं फिर उतनी घडियोंमें मासगणके तीसरे हिस्सेको युत करे फिर ऊपरले और नीचेके अंकमें क्रमसे दो तीन युत करे फिर इन्होंमें चक्रसे गुणे हुए पांच नौ छत्तीस इस ध्रुवेको युत करे ॥ १ ॥

अथ उदाहरण ।

शाके १५३४ में कार्तिक शुदी १५ बृहस्पतिवारके दिन मासगण ५७ इसमें अपने आधे २८।३० को युत करनेसे तिथिके दिन आदि ८५।३० हुए फिर इसके समान घडियोंके नीचे रक्खा ८५। ११५।३० इन घडियोंमें मासगण ५७ के तीसरे हिस्से १९ को युत किया तो ८५।११४।३० हुए फिर क्रमसे ऊपरले और नीचेके अंकमें दो तीन युत किये तो ८७।१३७।३० हुए फिर इन्होंमें चक्र ८ से गुणे हुए ५।९।३६ के वर्ग ४१।१६।४८ को युत किया तो १२८।१५४।१८ हुए फिर इन्होंमें ६० का भाग देवे फिर वारके स्थानमें सातसे तष्टित करनेसे ४।३४।१८ हुए इसमें देशांतर पल ४८ को युत किया तो कार्तिक शुदी प्रतिपदाके दिन वार आदि ४।३५।६ मिले ॥

अब नक्षत्रके ध्रुवेको कहते हैं ।

खं सप्ताष्टयमाश्च चक्रनिघ्ना नागाम्भोधिघटियुता भशुद्धाः । द्वाभ्यां धूर्जटिभिर्विनिघ्नमासैर्युक्ता भध्रुवको भपूर्वकः स्यात् ॥ २ ॥

अन्वयः–चक्रनिघ्नाः खं सप्त अष्टयमाः नागाम्भोधिघटीयुताः (कार्य्याः) (ततः) च भशुद्धाः (ततः) द्वाभ्यां धूर्जटिभिः विनिघ्नमासैः युक्ताः भपूर्वकः भध्रुवकः स्यात् ॥ २ ॥

भाषा-शून्य सात अट्ठाईस अर्थात् ०।०७।२८ घटी आदि-को चक्रसे गुणा करे फिर उन्होंमें ४८ घडी युत करे फिर इन्हों-को २७ में घटा देवे फिर मासगणको दोसे गुणा करे फिर उसको ग्यारहसे गुणा करे फिर इन्होंको सत्ताईसमें घटे हुएमें युत करे फिर इसको सत्ताईससे तष्ट करनेसे नक्षत्रका ध्रुवा होता है ॥ २ ॥

अथ उदाहरण।

०।७।२८ को चक्र ८ से गुणा किया तो ०।५९।४४ हुए फिर इन्होंमें ४८ घडीको युत किया तो १।४७।४४ हुए फिर इन्होंको २७ में घटा दिया तो २५।१२।१६ हुए फिर महीनोंके समूह ५७ को दोसे और ११ से गुणा दिया तो १२४।२७ हुत फिर इन्हों-को २७ में घटे हुएमें युत किया तो १४९।३९।१६ हुए फिर इन्होंको २७ से तष्ट किया तो नक्षत्रका ध्रुवा १४।३९।१६ हुआ ॥

अब पिंड बनानेके प्रकारको कहते हैं।

स्वर्गाः शरा नव च चक्रहता द्विनिघ्नमासान्विता द्विहृतमासयुता घटीषु । पिण्डो भवेद्युगकुभिः खचरैः समेतास्तष्टो गजाश्विभिरिदं भवतीह चक्रम् ॥ ३ ॥

अन्वयः-स्वर्गाः शराः नव च चक्रहताः (ततः) द्विनिघ्नमासान्विताः घटीषु द्विहृतमासयुताः युगकुभिः खचरैः समेताः पिण्डः भवेत् गजाश्विभिः तष्टः (कार्य्यः) इदं चक्रम् इह (अष्टाविंशतिमितं) भवति ॥ ३ ॥

भाषा-इक्कीस, पांच, नौ इन्होंको चक्रसे गुणा करे फिर इसमें दो गुणित महीनोंके समूह ११४ को युत करे फिर मासगणमें दोका भाग देनेसे जो फल मिले उसको दुगुने मासगणसे युत की घडियोंमें युत करे फिर ऊपरले अंकमें चौदह और नीचेके अंकमें नौ युत करे फिर ऊपरले अंकको अट्ठाईससे तष्ट करनेसे पिंड होता है और यहां पिंडमें अट्ठाईस चक्र है ॥ ३ ॥

अथ उदाहरण ।

२१।५।९ इन्होंको चक्र ८ से गुणा किया तो १६८।४१।१२ हुए इन्होंमें फिर दोसे गुणे हुए मासगण ११४ को युत किया तो २८२।४१।१२ हुए फिर इसकी घडियोंमें मासगणके आधे २८।३० को युत किया तो २८३।९।४२ हुए फिर ऊपरले अंकमें १४ और घडियोंमें ९ युत किये तो २९७।१८।४२ हुए फिर ऊपरले अंकको २८ से तष्टित किया तो पिंड १७।१८।४२ हुआ यहां इस पिंडमें २८ चक्र हैं ॥

अब सूर्यके नक्षत्रपरसे घडियोंके फलको कहते हैं ।

शिवदशवसुषट्काब्ध्यश्विनाड्योऽश्विभात्स्वं खगुण-
शरनगाङ्काशेशदिग्दिङ्नवाष्टौ । रसगुणखमि-
नर्क्षादादितेयाद्दणं स्युर्द्वियुगरसगजाङ्काशेश्वरा
वैश्वतः स्वम् ॥ ४ ॥

अन्वयः–इनर्क्षात् अश्विभात् शिवदशवसुषट्काब्ध्यश्विनाड्यः स्वम् आदितेयात् खगुणशरनगाङ्काशेशदिग्दिङ्नवाष्टौ रसगुणखं ऋणं वैश्वतः द्वियुगरसगजाङ्काशेश्वराः स्वं स्युः ॥ ४ ॥

भाषा–अश्विनी नक्षत्रसे आर्द्रा पर्यंत क्रमसे धन घडी ११। १०।८।६।४।२ होती हैं फिर पुनर्वसुसे पूर्वाषाढपर्यंत क्रमसे शून्य आदि ऋण घडी ०।३।५।७।९।१०।११।१०।१०।९।८।६।३।० ये होती हैं फिर उत्तराषाढसे रेवती पर्यंत दो आदि धन घडी २।४। ६।८।९।१०।११ ये क्रमसे होती हैं ॥ ४ ॥

अब सूर्यका नक्षत्र बनानेके प्रकारको कहते हैं ।

वेदघ्नेष्टतिथिर्युतार्कभागा योज्या भध्रुवनाडिकासु
तत्स्यात् । सूर्य्यर्क्षं विगतं ततोऽर्कजाख्यनाडी-
हीनयुतं स्फुटं भवेत्तत् ॥ ५ ॥

अन्वयः-युतार्कभागा वेदघ्नेष्टतिथिः भधुवनाडिकासु योज्या तत् विगतं सूर्य्यर्क्षं स्यात् ततः तत् अर्कजाख्यनाडीहीनयुतं स्फुटं भवेत् ॥ ५ ॥

भाषा-इष्ट तिथिको चारसे गुणा करे फिर उसमें अपने बारहवें हिस्सेको युत करे फिर युत करनेसे जो फल मिले उसको नक्षत्रके ध्रुवेकी घडियोंमें युत करनेसे घडी आदि मध्यम सूर्यका नक्षत्र होता है फिर उसमें सूर्यकी घडियोंको ऊन युत करनेसे स्पष्ट सूर्यका नक्षत्र होता है ॥ ५ ॥

अथ उदाहरण ।

इष्ट तिथि १५ को चारसे गुणा किया तो ६० हुए फिर इसमें अपने बारहवें हिस्से ५ को युत किया तो ६५ हुए फिर इसको नक्षत्रके ध्रुवे १४।३९।१६ की घडियोंमें युत किया तो गत सूर्यका नक्षत्र १५।४४।१६ हुआ और यहां सूर्य विशाखा नक्षत्रमें है इसलिये सूर्यकी घडी ऋण ९ हैं ॥

अब सूर्यकी घडियोंका स्पष्टीकरण कहते हैं ।

विशाखानक्षत्रकी घडी ९ और अनुराधाकी घडी ८ इन्हों-का अंतर किया तो १ हुआ इससे घडी आदि सूर्यके नक्षत्र ४४।१६ से गुणा दिया तो ४४।१६ हुए फिर इसमें साठका भाग देनेसे फल ०।४४ मिला अगला ऋण है इसलिये ऋण फल हुआ इन्होंका स्पष्ट घडी ९ में संस्कार किया तो ऋण फल ८।१६ हुआ इन्होंको सूर्यके नक्षत्र १५।४४।१६ में ऊन किया तो स्पष्ट सूर्यका नक्षत्र १५।३६।० हुआ ॥

अब पिंडके फलको कहते हैं ।

पिण्डे युक्ततिथौ तदाद्यमनुषु स्वं शेषपिंडेष्वृणं
विश्वेन्द्वोश्च शरा दशार्कयमयोः पञ्चेन्दवस्त्रीशयोः ।
गोचन्द्रा दशवेदयोर्यमयमाः पञ्चाङ्कयोः स्युर्जिनाः
षड्स्वोश्च नगे तु तत्त्वघटिकाः शक्रे च खं पिण्डजाः ६

अन्वयः-युक्ततिथौ पिण्डे विश्वेन्दोः (तुल्ये सति) शराः च अर्कयमयोः (तुल्ये सति) दश त्रीशयोः (तुल्ये सति) पञ्चेन्दवः दशवेदयोः (तुल्ये सति) गोचन्द्राः पञ्चाङ्क्योः (तुल्ये सति) यमयमाः षड्वस्वोः च (तुल्ये सति) जिनाः नगे तु (तुल्ये सति) तत्त्वघटिकाः शक्रे च (तुल्ये सति) स्वं पिण्डजाः आद्यमनुषु (चेत्) तदा स्वं शेषपिण्डेषु (चेत् तदा) ऋणं स्युः ॥ ६ ॥

भाषा-वर्तमान तिथिमें पिंडको युत करनेसे जो फल मिले वह तेरह अथवा एकके समान हो तो पिंडकी पांच घडी ग्रहण करे, जो बारह दोके समान हो तो दश घडी, तीन ग्यारहके समान हो तो पंदरह घडी, दश चारके समान हो तो उन्नीस घडी, पांच नौके समान हो तो बाईस घडी, छः आठके समान हो तो चौवीस घडी, सातके समान हो तो पचीस घडी और चौदहके समान हो तो शून्य घडी ग्रहण करे और तिथिसे युत पिंडका ऊपरला अंक एकसे चौदह पर्यंत हो तो उन घडियोंकी धन संज्ञा और उससे अधिक अट्ठाईस पर्यंत हो तो घडियोंकी ऋण संज्ञा होती है और जो पिंडसे युत तिथि अट्ठाईससे अधिक हो तो उसको अट्ठाईससे तष्टित करे ॥ ६ ॥

अथ उदाहरण।

पिंड १७।१८।४२ में इष्ट तिथि १५ को युत किया तो ३२।१८।४२ हुए यहां अट्ठाईससे चक्रसे अधिक है इसलिये इन्होंको अट्ठाईससे तष्टित किया तो ४।१८।४२ हुए यह चारके समान है इसलिये पिंडकी घडी १९ मिलीं और यहां पिंडका ऊपरला अंक एक चौदहके मध्यमें है इसलिये ये घडी धन हैं ॥

अब पिंडकी घडियोंका स्पष्टीकरण।

पिंडकी घडी १९ इससे अगली पिंडकी घडी २२ इन्होंके अंतर ३ से पिंडके नीचेकी घडी १८।४२ इन्होंको गुणा दिया तो ५६।६ हुए फिर इन्होंमें साठका भाग देनेसे फल ०।५६ मिला यहां अगली पिंडकी घडी अधिक हैं इसलिये यह फल धन है

इसको पिंडकी घडियोंमें युत किया तो स्पष्ट पिंडकी घडी १९। ५६ हुई ॥

तिथियुक्तपिंडोर्ध्वांक	१३	१	१२	२	३	११	१०	४	५	९	६	८	७	१४
पिण्डजघटिका	५		१०		१५		१९		२२		२४		२५	०

अब तिथिके स्पष्ट करनेके प्रकारको कहते हैं।

वारेषु तिथिर्देया हेया नाडीषु जायते मध्या। रविजापिण्डफलाभ्यां सुसंस्कृता स्पष्टतां याति ॥७॥

अन्वयः-तिथिः वारेषु देया नाडीषु हेया (तदा) मध्या जायते (सा) रविजापिण्डफलाभ्यां सुसंस्कृता स्पष्टतां याति ॥ ७ ॥

भाषा-जो मासगणपरसे तिथिके वार आदि बना चुके हैं उन वारोंमें वर्तमान तिथिको युत करे फिर उन वार आदिकी घडियोंमें वर्तमान तिथिको ऊन करनेसे मध्यम तिथि होती है फिर उसमें सूर्यकी घडी और पिंडकी घडी इन्होंका संस्कार करनेसे स्पष्ट तिथि होती है ॥ ७ ॥

अथ उदाहरण।

वार आदि ४।३५।६ के वारोंमें वर्तमान तिथि १५ को युत किया तो १९।३५।६ हुए फिर ३५ घडियोंमें तिथि १५ को ऊन किया तो १९।२०।६ हुए फिर वारोंको सातसे ताडित किया तो मध्यम तिथि ५।२०।६ हुई फिर घडियोंमें सूर्यकी घडी ८।१६ को ऊन किया तो ५।११।५० हुए फिर इन्होंमें पिंडकी घडी १९। ५६ को युत करनेसे स्पष्ट तिथि ५।३१।४६ हुई ॥

अब नक्षत्र बनानेके प्रकारको कहते हैं।

स्याद्गं केवलयोस्तिथिध्रुवभयोर्योगे तिथेर्नाडिका युक्ता व्यङ्गलवाद्विनिघ्नतिथिना व्यस्तार्कजासंस्कृताः। नाडीभिर्ध्रुवभस्य चेन्न वियुतास्तद्धीन-

षष्ट्यन्विताः सैकं भं घटिका वियत्षडधिकाः षष्ट्यूनिता व्येकभम् ॥ ८ ॥

अन्वयः–केवलयोः तिथिध्रुवभयोः योगे भं स्यात् तिथेः नाडिकाः व्यङ्गलवद्विनिघ्नतिथिना युक्ताः व्यस्तार्कजासंस्कृताः ध्रुवभस्य नाडीभिः वियुताः (कार्याः) न चेत् तद्धीनषष्ट्यन्विताः (कार्य्याः) भं सैकं (कर्त्तव्यं) घटिकाः वियत्षडधिकाः (चेत्) षष्ट्यूनिताः (कार्य्याः) व्येकभं (च कार्य्यम्) ॥ ८ ॥

भाषा–इष्ट तिथिमें नक्षत्रके ध्रुवेका योग करे फिर उन्होंको २७ से तष्टित करनेसे नक्षत्र होता है फिर द्विगुणित तिथिमें अपने छठे हिस्सेको ऊन करनेसे जो फल मिले उसको तिथिकी घडियोंमें युत करे फिर उसमें सूर्यकी घडियोंका विपरीत संस्कार करे अर्थात् सूर्यकी घडी ऋण हों तो युत करे और धन हों तो ऊन करे फिर उसमें नक्षत्रके ध्रुवेकी घडियोंको ऊन करनेसे नक्षत्रकी घडी होती हैं और जो नक्षत्रके ध्रुवेकी घडी नहीं घटे तो नक्षत्रके ध्रुवेकी घडियोंको साठमें ऊन करे ऐसे करनेसे जो शेष रहे उसको उसमें युत करनेसे नक्षत्र होता है। फिर उसमें एक युत करे जो साठ घडियोंसे अधिक हो तो उसमें साठ ऊन करके एक ऊन करे ऐसे करनेसे नक्षत्र होता है ॥ ८ ॥

अथ उदाहरण।

नक्षत्रके ध्रुवे १४ में इष्ट तिथि १५ को युत किया तो २९ हुए फिर इन्होंको २७ से तष्टित किया तो २ भरणी नक्षत्र हुआ फिर तिथिकी घडी ३१।४६ तिथि १५ को दोसे गुणा किया तो ३० हुए इसमें अपने छठे हिस्से ५ को ऊन किया तो २५ हुए फिर इन्होंको तिथिकी घडियोंमें युत किया तो ५६।४६ हुए और सूर्यकी घडी ऋण ८।१६ हुए हैं इसलिये इसको धन मानके युत किया तो ६५।२ हुए फिर इसमें नक्षत्रके ध्रुवेकी घडी ३९।१६ को ऊन करनेसे नक्षत्रकी घडी २५।४६ हुई ॥

अब योग बनानेके प्रकारको कहते हैं।

सूर्य्यभेन्दुभयुतिर्भवेद्युतिस्तद्घटीविवरमत्र नाडिकाः। चेद्द्युभेऽल्पघटिकास्तदा सकुर्योगकोऽस्य घटिकाः खषट्च्युताः ॥ ९ ॥

अन्वयः-सूर्य्यभेन्दुभयुतिः युतिः भवेत् । तद्घटीविवरम् अत्र नाडिकाः (स्युः) द्युभे अल्पघटिकाः चेत् तदा योगकः सकुः (कार्य्यः) अस्य घटिकाः खषट्च्युताः (कार्य्याः) ॥ ९ ॥

भाषा-सूर्यका नक्षत्र और चंद्रमाका नक्षत्र इन्होंका योग करनेसे योग होता है फिर सूर्यके नक्षत्रकी घडी और चंद्रमाके नक्षत्रकी घडी इन्होंका अंतर करनेसे योगकी घडी होती है और उस दिनके नक्षत्रकी घडी योगकी घडियोंसे अल्प हों तो नक्षत्रोंके योगमें एक युत करके योगकी घडियोंको ६० में घटा देवे ऐसे करनेसे उस दिन वर्तमान योग होता है ॥ ९ ॥

अथ उदाहरण।

सूर्यका नक्षत्र १५ और चंद्रमाका नक्षत्र दो इन्होंका योग किया तो व्यतिपात योग १७ हुआ फिर सूर्य नक्षत्रकी घडी ३६।० और चंद्रमाके नक्षत्रकी घडी २५।४६ इन्होंका अंतर किया तो योगकी घडी १०।१४ हुई और यहां योगकी घडियोंसे उस दिनके नक्षत्रकी घडी अल्प हैं इसलिये सूर्य चंद्रमाके नक्षत्रोंके योगमें एक युत किया तो वरीयान योग हुआ फिर योगकी घडी १०।१४ को ६० घडीमें घटा दिया तो परिघ योगकी घडी ४९।४६ हुई ॥

अब पूर्णिमाके अंतकालमें राहु बनानेके प्रकारको कहते हैं।

चक्राहताः सप्त यमौ खबाणा मासाहताः खं क्षितिरब्धिरामाः। भाद्यानयोः संयुतिरर्कशुद्धा भांशैर्युता शुक्लगते तमः स्यात् ॥ १० ॥

अन्वयः-सप्त यमौ खबाणाः चक्राहताः (कार्य्याः) खं क्षितिः अब्धिरामाः मासाहताः (कार्य्याः)अनयोः भाद्या संयुतिः अर्कशुद्धा भांशैः युता शुक्लगते तमः स्यात् ॥ १० ॥

भाषा-सात, दो, पचास, इन्होंको चक्रसे गुणा करे और शून्य एक चौंतीस इन्होंको मासगणसे गुणा करे फिर इन्होंका राशि आदि योग करे फिर इन्होंके योगको बारहमें घटा देवे फिर इन्होंमें सत्ताईस अंश युत करनेसे पूर्णिमाके अंतमें राहु होता है ॥ १० ॥

अथ उदाहरण ।

७।२।५० इन्होंको चक्र ८ से गुणा किया तो ५६।२२।४० हुए फिर ०।१।३४ इन्होंको मासगण ५७ से गुणा दिया तो ०।५७।१९।३८ हुए फिर नीचेके अंकमें साठका भाग और ऊपरले अंकमें ३० का भाग देनेसे राशि आदि २।२९।१८ हुए फिर इन्होंको चक्रसे गुणे हुओंमें युत किया तो राशि आदि योग ११।२१।५८ हुआ फिर इन्होंको १२ में घटा दिया तो ०।८।२ हुए फिर इन्होंमें २७ अंश युत करनेसे पूर्णिमाके अंतमें राहु १।५।२।० हुआ ॥

अब सूर्य बनाने और ग्रहणसंभवके प्रकारको कहते हैं ।

वेदघ्नगोद्भविभुक्तधिष्ण्यं तिथ्यन्तजोऽर्कौ गृहपूर्वकः सः । राहूनितः पर्वणि तद्भुजांशा मन्वल्पकाश्चेद् गृहसंभवः स्यात् ॥ ११ ॥

अन्वयः-रविभुक्तधिष्ण्यं वेदघ्नगोहत् गृहपूर्वकः तिथ्यन्तजः अर्कः (भवेत्) । सः पर्वणि राहूनितः (कार्य्यः) तद्भुजांशाः मन्वल्पकाः चेत् (तदा) ग्रहसम्भवः स्यात् ॥ ११ ॥

भाषा-सूर्यके भुक्तनक्षत्रको चारसे गुणा करे फिर उसमें नौका भाग देनेसे जो फल मिले वह तिथिके अंतमें राशि आदि सूर्य होता है फिर सूर्यमें राहुको घटा देवे फिर सूर्यमें घटे हुए राहुके भुजके अंश चौदहसे अल्प हों तो ग्रहणका संभव होता है ॥११॥

अथ उदाहरण।

सूर्यके भुक्त नक्षत्र १५।३६।० को ४ से गुणा किया तो ६२। २४।० हुए फिर ऊपर अंकमें ९ का भाग देनेसे राशि ६ मिली फिर शेष ८।२४।० को ३० से गुणा दिया तो २५२।०।० हुए फिर इन्होंमें ९ का भाग देनेसे अंश २८ हुए फिर शेष० को ६० से गुणा किया तो कला ० और विकला० हुई ऐसे तिथिके अंतमें राशि आदि सूर्य ६।२८।०।० हुआ फिर सूर्य ६।२८।०।० में राहु १।५।२।० को घटा दिया तो ५।२२।५८।० हुए और यहां इसके भुजके अंश ७।२।० चौदहसे अल्प हैं इसलिये ग्रहणका संभव है॥

अब ग्रास बनानेके प्रकारको कहते हैं।

पिण्डनाड्यन्तरांड्यूनयुक्ता इनाः स्वर्गपिण्डाद्रि-पिण्डात्क्रमाद्वर्जिताः। व्यग्विनाद्दोर्लवैः स्वार्धयु-क्ता भवेच्छन्नमिन्दो रविच्छन्नकाद्युक्तवत् ॥ १२ ॥

अन्वयः-क्रमात् स्वर्गपिण्डाद्रिपिण्डात् पिण्डनाडचन्तरांड्यूनयुक्ताः इनाः व्यग्विनात् (जातैः) दोर्लवैः वर्जिताः (ततः) स्वार्धयुक्ताः इन्दोः छन्नं भवेत्। रविच्छन्नकादि उक्तवत् (ज्ञेयम्) ॥ १२ ॥

भाषा-पहले कहा हुआ गत पिंड और एष्य पिंड इन्होंका अंतर करे फिर उस अंतरमें चारका भाग देनेसे जो फल मिले उसको बारहमें जो इक्कीस पिंडसे छः पिंड पर्यंत पिंड हो तो ऊन करे और सात पिंडसे वीस पिंड पर्यंत पिंड हो तो बारहमें उसको युत करे फिर उसमें सूर्यमें घटे हुए राहुके भुजके अंशोंको घटा देवे फिर उसमें अपने आधेको युत करनेसे चंद्रमाका ग्रास होता है और सूर्यका ग्रास पहलेकी नाईं बनावे ॥ १२ ॥

अथ उदाहरण।

पिंडोंकी घडियोंके अंतर ३ में ४ का भाग दिया तो ०।४५ हुए और यहां सात पिंड और वीस पिंड इन्होंके मध्यमें साधन किया हुआ विद्यमान पिंड है इसलिये इस फल ०।४५ को १२ में

युत किया तो १२।४५ हुए फिर इन्होंको सूर्यमें घटे हुए राहुके भुजके अंश ७।२ में घटा दिया तो ५।४३ हुए फिर इसमें अपने आधे २।५१ को युत किया तो चंद्रमा ग्रास ८।३४ हुआ ॥

अब चंद्रमाके बिंब और भूमिकी छाया बनानेके प्रकारको कहते हैं।

विंश्यंशेशाः पिण्डनाड्यन्तरस्य षष्ठोनाढ्याः स्वर्ग-पिण्डाद्रिपिण्डात्। ग्लौबिम्बं स्यात्तद्वदुर्वीप्रभा स्यात्त्रिघ्नस्याक्षांशोनयुक्तानि भानि॥ १३ ॥

अन्वयः—स्वर्गपिण्डाद्रिपिण्डात् पिण्डनाडयन्तरस्य षष्ठोनाढ्याः विंश्यंशेशाः ग्लौबिम्बं स्यात्। तद्वत् त्रिघ्नस्य अक्षांशोनयुक्तानि भानि उर्वीप्रभा स्यात् ॥ १३ ॥

भाषा—एकके तीसरे हिस्सेसे ऊन ग्यारह अर्थात् १०।४० में पिंडोंके घाडियोंके अंतरको इक्कीससे छः पिंड पर्यंत पिंड हो तो ऊन और सात पिंडसे वीस पिंडपर्यंत पिंड हो तो युत करे ऐसा करनेसे चन्द्रमाका बिंब होता है और पिंडोंके अंतरको तीनसे गुणा करे फिर इसमें पांचका भाग देनेसे जो फल मिले उसको सत्ताईसमें इक्कीससे छः पिंडपर्यंत पिंड हो तो ऊन और सात पिंडसे बीस पिंडपर्यंत पिंड हो तो युत करे ऐसे करनेसे भूमिकी छाया होती है ॥ १३ ॥

अथ उदाहरण।

पिंडकी घडियोंके अंतर ३ में छःका भाग देनेसे फल ०।३०मिला इसको यहां सात वीसके मध्यमें पिंड है इसलिये एकके तीसरे हिस्सेसे ऊन ग्यारह अर्थात् १०।४० में युत किया तो चंद्रमाका बिंब ११।१० हुआ फिर पिंडोंकी घडियोंके अंतर ३ को तीनसे गुणा दिया तो ९ हुए फिर इन्होंमें पांचका भाग देनेसे फल १। ४८ मिला यहां सात वीस पिंडके मध्यमें पिंड है इसलिये इसको २७ में युत किया तो भूमिकी छाया २८।४८ हुई ॥

अब एक एक महीनेके वार आदि चालनको कहते हैं।

वारादिके भूः कुगुणाः खबाणाः पिण्डे द्वयं भे द्व-यमीशनाड्यः। क्षेप्याः क्रमेण प्रतिमासमत्र राहौ युगाङ्काः कलिका वियोज्याः ॥ १४ ॥

अन्वयः-प्रतिमासं वारादिके क्रमेण भूः कुगुणाः खबाणाः क्षेप्याः पिण्डे द्वयं भे (च) द्वयं (क्षेप्यं घटिकासु) ईशनाड्यः (क्षेप्याः) अत्र राहौ युगाङ्काः कलिकाः वियोज्याः ॥ १४ ॥

भाषा-वार आदिमें एक, इकतीस, पचास युत करनेसे अगले महीनेमें वार आदि होते हैं। पिंडमें २ युत करनेसे अगले महीनेमें पिंड होता है नक्षत्रके ध्रुवेमें दो ग्यारह युत करनेसे अगले महीनेमें नक्षत्रका ध्रुवा होता है और राहुमें ९४ कला युत करनेसे अगले महीनेमें राहु होता है ॥ १४ ॥

अथ उदाहरण।

कार्तिक शुदि प्रतिपदाके दिन वार आदि ४।३५।६ वार घडी पल हैं इन्होंमें क्रमसे १।३१।५० को युत किया तो मार्गशिर शुदि प्रतिपदाको वार आदि ६।६।५६ हुए महीनेकी आदिमें पिंड १७।१८।४२ इसके ऊपरले अंकमें दो युत किया तो अगले महीनेकी आदिमें पिंड १९।१८।४२ हुआ महीनेकी आदिमें नक्षत्र-का ध्रुवा १४।३९।१६ इसके ऊपरले अंकमें दो और ग्यारह घडी युत किया तो अगले महीनेमें नक्षत्रका ध्रुवा १६।५०।१६ हुआ और राहु १।५।२।० में ९४ कला घटा दीं तो अगले महीनेमें राहु १।३।२८।० हुआ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गौडवंशावतंस-विविधशास्त्रपरमप-ण्डित-श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघव-भाषाटीकायां पंचदशश्चन्द्रग्रहणानयनाधिकारः समाप्तः ॥ १५ ॥

अथ षोडशोऽधिकारः ।

अब १४४२ से अल्प शाकेमें ग्रह जाननेके लिये अहर्गण बनानेके प्रकारको कहते हैं।

द्व्यब्धीन्द्राः शकरहितास्ततो भवाप्तं चक्राख्यं र-
विहतशेषकं तु हीनम्।चैत्राद्यैः पृथगमुतः सदग्न-
चक्रात्सिद्धाढ्यादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ १ ॥
खत्रिघ्नं तिथिरहितं निरग्रचक्राङ्गांशाढ्यं पृथगमु-
तोऽब्धिषट्कलब्धैः । ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्वै
वारः प्राक्छरहतचक्रयुग्गणोऽब्जात् ॥ २ ॥

अन्वयः-द्व्यब्धीन्द्राः शकरहिताः (कार्य्याः) ततः भवाप्तं चक्राख्यं (स्यात्)। रविहतशेषकं तु चैत्राद्यैः हीनं पृथक् (स्थाप्यं) सदग्नचक्रात् सिद्धाढ्यात् अमुतः अमरफलाधिमासयुक्तं खत्रिघ्नं तिथिरहितं निरग्रचक्राङ्गांशाढ्यं पृथक् (स्थाप्यं) अमुतः अब्धिषट्कलब्धैः ऊनाहैः वियुतं अहर्गणः भवेत्। शरहतचक्रयुग्गणः वै प्राक् अब्जात् वारः (भवेत्)॥१॥२॥

भाषा-१४४२ में शाकेको ऊन करे फिर शेषमें ग्यारहका भाग देनेसे जो फल मिले उसकी चक्र संज्ञा है फिर शेषको बारहसे गुणा करे फिर उन्होंमें चैत्र शुक्ल प्रतिपदादिसे इष्ट मासतक गतमासको ऊन करे फिर उसको दो स्थानमें रक्खे दूसरे स्थानमें दूना चक्र और २४ युक्त करके ३३ का भाग देनेसे अधिमास होते हैं फिर उसको पहले स्थानमें युत करे फिर उसको ३० से गुणा करके उसमें शुक्ल प्रतिपदादि गत तिथिको ऊन करे फिर शेष रहित चक्रका अंगांश याने षडंश युक्त करके दो स्थानोंमें रक्खे फिर दूसरे स्थानमें ६४ का भाग देनेसे क्षय दिन मिलते हैं उसको प्रथम स्थानमें हीन करनेसे अहर्गण होता है। उस अह-

र्गणको शुद्ध अशुद्ध जाननेके लिये चक्रको ५ से गुणा करके अहर्गणमें युक्त करे फिर ७ का भाग देनेसे अपना वार मिले तो शुद्ध अन्यथा अशुद्ध जानना। परंतु यहां वार चंद्र आदि जानना शून्य बचे तो सोम एक बचे तो मंगल ऐसे जानें ॥ १ ॥ २ ॥

अथ उदाहरण।

१४४२ में शाके १४४१ को ऊन किया तो १ रहा इसमें ११ का भाग देनेसे लब्धि ० चक्र ० मिला फिर शेष अंकको १२ से गुणा दिया तो १२ हुए फिर इन्होंमें चैत्रसे गत महीने ३ को ऊन किया तो ९ हुए फिर इसको दो जगह रक्खा दूसरे स्थानमें चक्रको युत किया तो ९ हुए फिर इसमें २४ को युत किया तो ३३ हुए फिर उसमें ३३ का भाग देनेसे फल अधिमास १ मिला इसको पहले स्थानमें युत किया तो मासगण १० हुआ फिर इसको ३० से गुणा किया तो ३०० हुए फिर इन्होंमें गत तिथि १४ को घटा दिया तो २८६ हुए फिर इसमें चक्र ० के छठे हिस्सेको युत किया तो २८६ हुए फिर इसको दो स्थानोंमें रक्खा फिर एक स्थानमें ६४ का भाग देनेसे लब्धि क्षय दिन ४ मिले इसको दूसरे स्थानमें ऊन किया तो अहर्गण २८२ हुआ फिर इसमें पांचसे गुणे हुए चक्र ० को युत किया तो २८२ हुए फिर इन्होंको ७ से तष्टित किया तो बुधवार मिला ॥

अब ग्रह बनानेके प्रकारको कहते हैं।

चक्रनिघ्नध्रुवोपेताः सक्षेपा द्युगणोद्भवैः।
खेटैरूनाः स्युरिष्टाहे द्व्यब्धीन्द्वल्पः शको यदा॥३॥

अन्वयः-यदा इष्टाहे शकः द्व्यब्धीन्द्वल्पः (तदा) चक्रनिघ्नध्रुवोपेताः सक्षेपाः द्युगणोद्भवैः खेटैः ऊनाः (इष्टखेटाः) स्युः ॥ ३ ॥

भाषा-ध्रुवेको चक्रसे गुणा करे फिर उसको अपने क्षेपकमें युत करे फिर उसमें अहर्गणसे उत्पन्न हुए ग्रहोंको घटानेसे इष्ट दिनमें १४४२ से अल्पशाका हो तो ग्रह होते हैं ॥ ३ ॥

अथ उदाहरण ।

सूर्यके ध्रुवे ०।१।४९।११ को चक्रसे गुणा किया तो ०।०। ० हुए इसको सूर्यके क्षेपकमें युत किया तो ११।१९।४१।० हुआ फिर इसमें अहर्गणसे उत्पन्न हुए सूर्य ९।७।५६।२६ को घटा दिया तो सूर्य २।११।४४।३४ हुआ ऐसे सब ग्रहोंको बनावे ॥

अब पहले आचार्योंका अहंकार और अपनी नम्रता कहते हैं ।

पूर्वे प्रौढतराः क्वचित्किमपि यच्चक्रुर्धनुज्ये विना ते तेनैव महातिगर्वकुभृदुच्चृङ्गेऽधिरोहन्ति हि । सिद्धान्तोक्तमिहाखिलं लघु कृतं हित्वा धनुर्ज्ये मया तद्गर्वो मयि मास्तु किं न यदहं तच्छास्त्रतो वृद्धधीः ॥ ४ ॥

अन्वयः-क्वचित् धनुर्ज्ये विना यत् किम् अपि पूर्वे प्रौढतराः चक्रुः ते तेन एव हि महातिगर्वकुभृदुच्चृङ्गे अधिरोहन्ति। इह मया धनुर्ज्ये हित्वा अखिलं सिद्धान्तोक्तं लघु कृतं तद्गर्वः मयि मा अस्तु यत् अहं किं तच्छास्त्रतः वृद्धधीः न (अस्मि) ॥ ४ ॥

भाषा-पहिले जो सिद्धान्तवेत्ता बड़े २ भास्कराचार्य आदि हो गये हैं उन्होंने किसी २ स्थलमें अर्थात् त्रिप्रश्न आदिमें ग्रह छाया आदि ज्या और चापको छोडकर जो कुछ किया है उससे वे बडे भारी अभिमानरूपी पर्वतके शिखरपर चढे हुए हैं अर्थात् वे गणितज्ञोंमें अपनेको ऐसा मानते हैं कि " न भूतो न भविष्यति " परंतु इस ग्रन्थमें मैंने जो चाप और ज्याके विना सिद्धान्तकथित सम्पूर्ण गणित सुगमतासे की है उसका गर्व मुझे अधिक होना चाहिये था परंतु वह न हो यही चाहता हूं। क्योंकि मेरी जो बुद्धि विस्तारको प्राप्त हुई है सो सब उसी शास्त्रके पढनेसे हुई है ॥ ४ ॥

नन्दिग्राम इहापरान्तविषये शिष्यादिगीतस्तुति-
र्योभूत्कौशिकवंशजः सकलसच्छास्त्रार्थवित्केश-
वः । सूनुस्तस्य तदंघ्रिपद्मभजनाल्लब्ध्वाबबो-
धांशकं स्पष्टं वृत्तविचित्रमल्पकरणं चैतद्गणेशोऽ-
करोत् ॥ ५ ॥

अन्वयः-इह अपरान्तविषये नंदिग्रामे यः शिष्यादिगीतस्तुतिः सकलस-
च्छास्त्रवित् कौशिकवंशजः केशवः अभूत् तस्य सूनुः गणेशः तदंघ्रिपद्मभज-
नात् अवबोधांशकं लब्ध्वा वृत्तविचित्रं स्पष्टं च एतत् अल्पकरणम् अकरोत्५॥

भाषा-समुद्रतटके समीप पश्चिम दिशामें नन्दिग्राम विषें शिष्या-
दिकोंसे स्तुति किये गये, सम्पूर्ण शास्त्रोंके जाननेवाले, कौशिकगो-
त्रमें उत्पन्न ऐसे केशव पण्डित हुए । उनके चरणकमलोंके सेवन
करनेसे ज्ञानको प्राप्त होकर उनके पुत्र मुझ गणेश दैवज्ञने स्पष्ट
अर्थवाले नानाप्रकारके छन्दोंसे विचित्र और बहुत अर्थसे भरे हुए
ऐसे इस कर्णग्रन्थको रचा है ॥ ५ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गौडवंशावतंस-विविधशास्त्रपरमप-
ण्डित-श्रीरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यपुत्रजियारामशास्त्रिविरचितायां ग्रहलाघवभाषा-
टीकायाम् अहर्गणाद्यानयनप्रकारो नाम षोडशोऽधिकारः ॥ १६ ॥

श्लोक-रूपबाणाङ्कभूम्यब्दे मासि फाल्गुनके शुभे ॥
बदरीपत्तने टीका रचिता बालसंपदे ॥ १ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

अपने नगरके अक्षांश और देशान्तर जाननेके लिये नीचे चक्र देते हैं।

नाम नगर	अक्षांश		देशान्तर		नाम नगर	अक्षांश		देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला		अंश	कला	अंश	कला
अजमेर	२६	३३	०१	१९ प	किशनगढ	२६	३८	१	४ प
अटक	३३	४८	०३	३० प	कूंचबिहार	२६	२०	१३	२८ पू
अनूपशहर	२८	२१	०२	२० पू	केकडी	२६	१	१	० प
अमरावती	२०	५२	१	२४ पू	कोटा	२५	१३	०	१२ प
अमरोहा	२८	५७	२	२७ पू	कोलापुर	१६	४६	१	४८ प
अमृतसर	३१	३६	१	४ प	कोहाट	३३	३४	४	३५ प
अम्बाला	३०	२३	०	५२ पू	खंडवा	२१	४४	०	२१ प
अयोध्या	२६	४५	६	३० पू	खैरागढ	२१	३५	५	५ पू
अलमोडा	२९	३८	३	४१ पू	खैरपुर	२७	३६	७	१७ प
अलवर	२७	३३	०	४० पू	गया	२४	४७	५	० प
अलीगढ	२७	५७	२	१० पू	गाजीपुर	२५	३९	७	३९ पू
अहमदाबाद	२३	५	३	२६ प	गुजरानवाला	३२	७	१	५२ प
आगरा	२७	१२	२	१० पू	गुरदासपुर	३२	४	०	३७ प
आजमगढ	२६	६	७	१५ पू	गोआ	१५	३०	२	१० प
आबू	२४	४६	३	११ प	गोंडा	२७	८	६	० पू
आरा	२५	३५	८	४० पू	गोरखपुर	२६	४६	७	१४ पू
इटावा	२६	४६	०२	५७ पू	गोहाटी	२६	१०	१५	५८ पू
इन्दौर	२२	४५	००	१२ प	ग्वालियर	२६	१६	२	६ पू
इलाहाबाद	२५	२८	६	६ पू	चटगांव	२२	२२	१५	५१ पू
इस्लामाबाद	३३	४६	०	५२ प	चन्द्रनगर	२२	४८	१२	२२ पू
उजैन	२६	१०	००	००	चेरापूंजी	२५	२०	१४	३८ पू
उदयपुर	२४	३९	२	१४ प	छत्तरपुर	२४	५४	१०	५८ पू
उन्नाव	२६	३१	४	३५ पू	छपरा	२५	४५	१४	४२ पू
ओटकमण्ड	११	२६	०	४० पू	छोटानागपुर	२३	१८	८	१५ पू
औरङ्गाबाद	१९	५३	०	३१ प	जब्बलपुर	२३	७	३	५८ पू
कटक	२०	२८	९	५७ पू	जम्बू	३२	४६	१	१८ प
कन्नौज	२७	४	३	५८ पू	जयपुर	२६	५७	०	२४ प
किराँची	२४	५२	८	५२ प	जलालपुर	२५	५२	३	४९ प
करौली	२६	३१	१	४ पू	जालन्धर	३१	१९	०	२७ प
कलकत्ता	२२	३३	१२	२३ पू	जालौन	२६	१०	३	१८ पू
काठमांडू	२७	३३	९	१३ पू	जींध	२९	२०	०	१६ पू
कानपुर	२६	२८	४	२४ पू	जूनागढ	२१	३०	५	७ प
कालीकट	११	१८	०	१८ प	जैसलमेर	२६	५६	५	१२ प

नाम नगर	अक्षांश		देशान्तर		नाम नगर	अक्षांश		देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला		अंश	कला	अंश	कला
जैसोर	२३	१०	१३	१८ पू	नीमच	२४	३१	१	८ प
जोधपुर	२६	२४	२	५८ प	नैनीताल	२९	२०	३	१२ पू
जौनपुर	२५	४६	६	४२ पू	पटना	२५	३६	९	१८ पू
झालरापाटन	२४	३९	००	५ पू	पटियाला	३०	२०	०	३० पू
झांसी	२५	२७	२	२८ पू	पन्ना	२४	४५	४	१० पू
झेलम	३३	००	२	१८ प	प्रतापगढ	२४	५	१	१४ प
टिकारी	२४	४८	८	४२ पू	प्रतापगढअवध	२५	५१	५	५७ पू
टेहरी	२४	४७	२	५३ पू	पाण्डुचेरी	११	५९	३	४७ पू
टोक	२६	११	०	११ प	पानीपत	२९	२६	१	० पू
ट्रावनकोर	११	०४	३	४८ पू	पालनपुर	२४	१६	३	१७ प
डुमराव	२५	३४	८	६ पू	पाली	२५	४८	२	४० प
डूंगरपुर	२३	५५	२	१२ प	पीलीभीत	२८	३९	३	४८ प
ढाका	२३	४२	१४	३३ पू	पुरीजगन्नाथ	१९	४९	९	५५ पू
त्रिचनापल्ली	१०	४८	२	४१ पू	पूना	१८	३२	२	२ प
थानेसर	२९	५८	०	४५ पू	पेशावर	३४	१	४	३० प
दतिया	२५	४०	२	२० पू	फ़तहपुर	२५	५५	४	४३ पू
दमोह	२३	४९	३	३० पू	फतेहाबाद	२९	३३	०	३४ प
दर्भंगा	२६	९	१०	० पू	फर्रुखाबाद	२७	२९	३	३४ पू
दहली	२८	४०	१	१४ पू	फरीदपुर	२३	३५	१३	४८ पू
दार्जिलिङ्ग	२७	५	१३	१६ पू	फीरोजपुर	३०	५४	१	२४ प
दिनाजपुर	२५	४०	१२	४५ पू	फैजाबाद	२६	४६	६	६ पू
देराइस्माईलखां	३१	५२	५	३ प	बदाऊं	२८	५	३	७ प
देरागाजीखां	३०	४	५	१० प	बनारस	२५	१८	७	० पू
देवगढ	२१	५०	२	४५ पू	बरेली	२८	२७	३	२६ पू
देहरादून	३०	१८	२	० पू	बम्बई	१८	५७	३	१४ प
द्वारका	१२	१७	७	० प	बर्दवान	२३	१५	११	४८ पू
धार	२२	३१	०	३९ प	बल्लारी	१५	५	०	५८ पू
धारवार	१५	३०	१	० प	बहराइच	२७	३५	५	२८ पू
धौलपुर	२६	४२	१	५१ पू	बाकरगंज	२२	३३	१४	१९ पू
नगर	१३	५२	१	० प	बांदा	२५	३२	४	२४ पू
नदिया	२३	२४	१२	५६ पू	बिजावर	२४	३९	३	२६ पू
नरसिंहगढ	२३	४३	१	३ पू	बिलासपुर	२२	४	६	९ पू
नवानगर	२२	३६	५	५२ प	बिहार	२५	१०	९	८ पू
नसीराबाद	२६	२२	१	१७ प	बीकानेर	२८	२	२	४० प
नागौर	२७	१५	२	२२ प	बीजापुर	२७	०	११	२१ पू
नागपुर	२१	१०	३	५ पू	बुलन्दशहर	२८	३३	२	० पू
नासिक	१९	५४	२	१२ प	बूंदी	२५	२६	०	१७ प

नाम नगर	अक्षांश अंश	अक्षांश कला	देशान्तर अंश	देशान्तर कला	नाम नगर	अक्षांश अंश	अक्षांश कला	देशान्तर अंश	देशान्तर कला
बेतिआ	२६	४८	८	३१ पू	रामपुर	२८	५१	३	३ पू
बेंगलोर	१३	१	१	३९ पू	रामेश्वर	९	१५	३	१७ पू
भंडोच	२१	४५	३	० प	राजकोट	२२	१५	५	१२ प
भरतपुर	२७	१५	१	३० पू	रायबरेली	२६	१७	५	४ पू
भागलपुर	२५	११	११	० पू	रावलपिंडी	३३	३४	२	५७ प
भावनगर	२१	४६	३	४७ प	रीवा	२४	३२	५	३० पू
भावलपुर	२९	२६	४	२० प	रेवाडी	२८	१४	०	३५ पू
भिन्ड	२६	३६	३	० पू	रोहतक	२८	५६	०	३१ पू
भिलसा	२३	३१	१	५४ पू	लखनऊ	२६	४८	३	३८ पू
भुज	२३	२१	६	१५ प	ललितपुर	२४	३८	२	२७ पू
भूपाल	२३	१५	१	२३ प	लाहौर	३१	३५	१	२६ प
मऊ	२२	३९	०	१७ प	लुधियाना	३०	५७	०	२ प
मण्डले	२२	००	२०	१२ पू	विजयनगर	१८	०	७	१८ प
मथुरा	२७	२८	१	४० पू	विजिगापटम	१७	४१	७	२१ पू
मदरास	१३	५	४	१७ पू	शाहजांपुर	२७	५५	३	८ पू
मदुरा	९	५८	२	५ पू	शाहाबाद	२७	३५	३	५६ पू
मर्नापुर	२४	४४	१८	३ पू	शिकारपुर	२८	१	७	१२ प
मसूरी	३०	२९	२	० पू	शिमला	३१	१०	१	४७ पू
माधोपुर सवाई	२६	५	०	७ पू	शोलापुर	१७	४०	०	४ पू
मालदा	२५	१	१२	८ पू	श्रीनगर	३४	३	१	१३ प
मिर्जापुर	२५	८	६	३३ पू	श्रीरंगपत्तन	१२	२६	०	४७ पू
मुंगेर	२५	२२	१०	४५ पू	सम्बलपुर	२१	२८	७	५१ पू
मुजफ्फर नगर	२९	५२	१	४६ पू	सहारनपुर	२९	५९	१	२९ पू
मुजफ्फरपुर	२६	७	९	२९ पू	सिरोज	२४	६	१	२४ पू
मुरादाबाद	२८	४८	२	४६ पू	सिरोही	२४	५९	३	१ प
मुर्शिदाबाद	२४	१३	१२	२५ पू	सिलहट	२४	५१	१५	४८ पू
मुल्तान	३०	१३	४	३२ प	सीतापुर	२७	३६	४	४५ पू
मेरठ	२८	५८	१	४३ पू	सिद्धपुर	२३	४८	३	४७ प
मैंगलोर	१३	५	१	१३ प	सूरत	२१	१४	२	१५ प
मैनपुरी	२७	१०	२	३५ पू	सोंहपुर	२०	५२	८	५३ पू
मैनसिंह	२४	४०	१४	२६ पू	हमीरपुर	२५	५९	४	१० पू
मैसूर	१२	२५	०	४१ पू	हरद्वार	२९	५८	२	० पू
रङ्गपुर	२५	४३	१३	१५ पू	हाथरस	२७	३२	२	१ पू
रंगून	१६	४८	२०	२३ पू	हिसार	२९	१२	०	१५ पू
रतलाम	२३	२४	०	५६ प	हुशंगाबाद	२२	३८	१	४३ पू
राजागढी	१९	१२	७	२४ पू	हैदराबाद द०	१७	२४	२	२५ पू
रानीगंज	२३	३७	११	०० पू	हैदराबाद सिं०	२५	२४	७	२२ प

नूतन पुस्तकें

मरहटासरदार और रौशनआरा औरंगजेबकी पुत्रीका प्रेम ०–७
बारामासीया लावणीसंग्रह ०–५
जीवनचरित्र तुलसीदासजीका ०–८
गूजरगीत मंगल.... .... ०–५
सूर्यकवच ०–१
शिवकवच ०–१
जगन्नाथमाहात्म्य छोटा.... ०–६
संगीत सुधानिधि द्वितीय भाग ०–३
भक्तिविलास ०–२
वैद्यावतंस भाषाटीका ०–३
हितोपदेश भा० टी० .... १–४
भोजप्रबंध भा० टी० .... १–४
भैरवसहस्रनाम ०–२
संवत्सरफलदीपिका ०–३
काव्यमंजरी १–८
नासिकेत भाषा वार्तिक.... ०–४
संतानगोपालस्तोत्र ०–२
विवाहविचार ०–१
संकल्पकल्पना ०–८
चौतालचंद्रिका ०–४
समासकुसुमावलि ०–२
भूलोकरहस्य ०–४
वौम्यनीति भाषाटीका ०–४
मदनपालनिघंटु भाषाटीका २–४
मूर्खशतक-निंदकनामा ०–४
आत्मबोध भा०टी० .... ०–४
श्रीपराशरस्मृति छोटी ०–३
षट्पंचाशिका भाषाटीका.... ०–६
मुक्तिकोपनिषद् भाषाटीका ०–५
रामाश्वमेध अक्षर बडा मूल २–८
ग्रहगोचरज्योतिष भा० टी० ०–२
जगन्नाथमाहात्म्य बडा ४९ अध्यायका १–४
राधागोपालपंचाङ्ग ०–१२
वियोगवैराग्यशतक ०–१
मैत्रीधर्मप्रकाश भाषाटीका ०–४
पूरनमलभक्तका सांगीत १–४
भजनसागर ग्लेज १–०
" रफ्.... .... ०–१
मासचिंतामणि भा० टी० ०–३
श्राद्धविधान भाषाटीका.... ०–६
केवल गीता भाषाटीका पाकेटबुक ०–८
तर्कसंग्रह भाषाटीका ०–६
स्वरतालसमूह (सितारका पुस्तक) १–८
हारीतसंहिता भाषाटीका... ३–०
बृहदवकहडाचक्र (होडाचक्र) भाषाटीका ०–४
राजवल्लभनिघण्टु भाषाटीका १–८
गीतामृतधारा भाषा ०–८
भागवत भाषा खुलापत्रा.... ६–०
लघुजातक भा० टी० .... ०–८
पद्मकोश भा० टी० .... ०–४
बिरबर अकबरका उपहास....०–८
आल्हारामायण (आरण्यकांड) ०–६
भोजप्रबंध भाषा ०–१२
गोविंदगुणवृंदाकर १–०
दिल्लगीकीपुडिया ५ भाग प्रत्येक भागकी कीमत ०–२
सूर्यकवच भा०टीका ०–१
आदित्यव्रतकथा भा०टी० ०–२

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना, कल्याण–मुंबई.

00042011

Digitized with financial assistance from

Hemendra Kothari

on 06 November, 2019